बेग'ळेव'ब्रॅं'ब्रॅंन'नत्न'सेवे'

ब्रेन्यं।



यद्दिप्यायाँ। यद्द्रसायद्देशकाले साम्बर्धना

न्गामःळग

यर्केन् निह्न
म्रुव् क्युन् ग्री अव न्या हम्म श्रुप्ते व कुष्
र्श्वेर प्रतिः क्षेत्र म्यान्य विष्य प्रति । म्यान्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विषय
यदुःश्चीयोश्चरःश्चयाश्चाःहेवःर्याश्चाः
सर्केन्यम्पि सेन्यम्यरं वर्षायायमिन्यस् सहस्य सम्यन्यस्य ५
वाश्वासाः श्रृतः वदे वात्याः श्रुशः वात्र ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५
भुन्यादम् सेययानभुन् कुन्निर्दर्दर्द्यस्यास्यास्यान् 6
শুন্ম-খেল-লাম্ল-লান্ন-খা
नवि'स'र्केम् राविद्यार्थयान्यान्याया
यःतःतश्याशःश्चरःमीःयावरःतश्वशःयः थःतःतश्याशःश्चरःमीःयावरःतश्वशःयः
মঙ্গুত্রত্বত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্
त्वारायार्शेषायायदेवसायास्य स्वाप्तिव्य सुन्दर्यः
देश' श 'ग्र'ग्
गहेशमादिशमादिन्य १५ मा

न्गार क्या

८८ मार्थेय प्राचित्र प्रमेष्ट्र प्राचे स्वर प्राच प्रमास स्वर प्राचित्र प्रमास स्वर प्राचित्र प्रमास स्वर प्राचीत स्वर प्र	
गहिरामा अपने हेत्र मदि हेरा प्रेमाराम विष्या	5
বাপ্তর্ম'ম'স্ক"ন'ব্ব'ম'শ্রুদ'না	6
चवि'स'चगाद'देव'हे'शु'देव'सदे'गुरू'स'र्श्वेस'र्ख्या	0
कृ.स.ब्र्रे र.चश.भ्रेश्न.स.ब्रैच.क्ष्ता	3
गशुस्रायात्ह्रमा.पुःहे.क्षेत्र.ची.या	5
गहेशमा मुद्रासळंसरा सुरहे सुर हु न हु	6
মঙ্গিন্দ্র্রির ক্রিটির ক্রমাননি নমমাক্রিয়া	7
गिरेशमान्यावर्री मार्ने वाके नमानश्रस्य स्थान्य स्थान्य	
श्रेमशःश्रुमःयानभुमःया	9
गशुस्रामान्यादर्वे माह्ने नानानानामस्यस्य स्थान् नामीः	
शेसशःश्वेंसःमःयःनश्चरःन।	4
गहिरायायके ना से ह्या पायसस्य स्या स्या स्या स्या स्या स्या स्य	
र्श्वेयायायात्रभूमा	8

वक्रे'न'ईव'मवे'मव'र्षेवा50
মাপ্রমান্যক্রমান্যক্রমান্যক্রম্প্রির্মান্ত্র্রান্ত্র্রান্ত্র
ম্বাম্যান্ত্র নাত্ব্যান্ত্র্যা
न्ध्रयानदे सूनानस्य नश्यस्य स्य स्टि ह्में त्रा गुर कुन ग्री शेस्य
क्षें सम्भाग्याम् राज्या
বাইশ্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্র্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্বান্ত্ব্ব্ব্বান্ত্ব্ব্বান্ত্ব্ব্ব্ব্বান্ত্ব্ব্ব্ব্ব্ব্বান্ত্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্ব্
त्रुट्राकुर्वा क्री से सम्बंधारा या नमुखार्या
वाश्वास:र्र्रावर्षेत्रभूवानस्यानस्यानस्यान्त्रेत्र्भ्वत्रान्त्रः
র্মার্মার্ম্র্র্র্মার্মার্মার্মার্মার্মা
गहिरामान्त्रीं व सर्के गामा शुरामा शुराया शुरायों निर्देश से वर्षा
গ্রহ'ক্তুন'গ্রি'মৌমম'র্ম্ব্রিম'দ'ম'নস্ক্রীম'ন
गशुस्रानायमायन्त्रमात्रमायमायन्यात्रम् । यस्य स्वाप्तान्यस्य
গ্রহ'ক্তুন'গ্রী'ঝ৾ঝঝ'র্শ্বীঝ'ঘ'অ'ন্সূর্ব্ব'ন' 72
অমান্ত্রমামাস্কৃত্র প্রান্ত্র বিক্রে অবম্যম্যমা

न्गार क्या

नवि'रा'विर्नर्नेर'हेश'न्येग्रा'न्य्यस्य रादे हैं द्रा गुर हुन	<u>.</u>
য়য়য়য়ৢয়	83
गहिरापा मुद्रासळंसरा सुम्हे सूर गुणा	99
	122
धीन्दिन्नी नुस्रामानुन्यम् उत्सुत्र खुर्या	132
गिहेशमान्वताम्डेशम्हेत्मी स्वर्णेत्रम्थाः कृषा	149
गशुस्रान्यन्यायाववःसहस्य हे श्रेसिस्ह्या	162
गहिरायान्य महिराकुन देव गहिरा मी के स्वी के स्वी किया विषय	210
गहिरामा मुद्रासळंसरा सुन्हे सूर गुन्न	222
गहिरामासेसरामस्त्रीत्वराम्यास्याम् । स्त्रीत्वराम्याम्यास्याम्	230
गशुस्रायाष्ट्रप्रमार्देवाद्यासेस्राश्चरावेशातुःवाववासेत्तुः	बादे.
মুন্ত্র্প	248
गिरेश्यापार्वित्राचित्रः चित्रः सामान्यः स्वापारः स्वितः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः	ਮੂ.ਧ.
मुन्यः भेन् न्द्रा	259

न्गामःळग

यिष्टेश.स.क्ष्र.मी.यट्या.स्ट्रीस.क्ष्या	263
गहिरायायन् राया गुरा ग्री के राम्यया महाया विदासे नामर	
শ্লুমাঞ্না	272
गहिरापा मुत्र सळस्य राष्ट्र हि सूर जु न	275
मुर्दर्द्द्र निर्द्ध्य मुर्द्द्र । मुर्द्द्र । मुर्द्द्र ।	278
गिरुश्रामाः क्षुन्तिः क्ष्रांन्य शक्ति व्यामेन्द्राच्या प्राप्ति व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति	282
यिष्ठेश.त.श्चे र.घश.ताश.री.यश्चे र.क्षा	285
गशुस्रामानेव नगोग्रायागित्र स्था से नवे श्री रागा	286
नवि'म'ळे'गिडेग्'गी'सहसायेद'द्रेय'ग	289
ग्रिशमायके।प्रदेशस्त्रमाये म्युम्	291
য়ৄ'য়য়ৣ৾য়য়ৣ৾ৼয়'য়য়ৢয়ড়ঀ	296
त्र्याः भं क्वें हिं हो ह्या केंया	303
र्त्ते क्षेट्र के के रामा	304
र्त्वे द्वित्र राज्य स्ट्रिय व्यास्ट्र स्वा	305

य म्हाराज्य श्रुत्र विद्रास्त्र क्षेत्र अर्थे न्या स्त्र क्षेत्र क्षे

शेर-श्रूप-प्रय-प्रह्य-प्रग्नुप्रश्नार्थेप-त्रयथाग्रीश

รุ่มเลี้มเลิงเหลี่มหมังและรุ่มโพละรุ่ม สู่รุ่มหนังเลี้ม รุ่มเลี้มาสุมมาสังเล่าสามารถ รามเลาสังเลิงเล่าสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามารถ รามา

वेगा के दार्से श्रुट नित्र है दे श्रुट से

२०। विया के दार्से श्री मानिय भी विया यह मानिया के दार्स स्थान विया के दार्स स्थान विया के दार्स स्थान के दार स्थान के दार्स स्थान के दार स्था के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्था के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्था के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्थान के दार स्था

अर्केन् नहेंन्।

२७। | हे नड्व न्नु सन्यान्य न्य न्य स्थित्य स्थित्। हे के त् र्म न्द्र स्थित न्य स्था क्षेत्र स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित । न हे स्थित स्थित

 पश्चित्वां स्वान्त्र स्वा

ने त्यायने स्वाधित स्

म्नुन मुन्गी सन नगा देश रा शा होने दिया

वेगा के तर हैं। श्रुँ र न तु तर है वे श्रु र भें

युः तहं त्या के वा विद्या के त्या के वा क

त्रां श्री रावते के अविश्वास्त्री वाष्ट्र वाष

हेव न्याया पति। र पार नुः श्रुव पा हो न पति पाव या प्राप्त पति । स्रिव पति पति । स्रिव पति न्नर्भेदेः भुन्दर्हे में हे न्दरहे बस्र अठन् सिव्य सन्दर्भ नि सन्दर्भ । यदः भुः र्रो वा यः भुः वा शुदः श्रुवा यः हेत् छे । व्ये दः हेवा यः ये हेवा यः ये हैं वा यः ये हैं वा यः ये हैं र्क्षा । ने प्यर मात्र शावर त्य श्वमा नि र शुक्र राम्य र र मी से सम्र र र नि र होत्रयन्ता मान्यसी सेससन्तरम् होत्यन्ता नगरार्धेमसारी स्थ इसस-न्यादःनसःसन्तर्भः सेन्त्रेयासः होन् सःस्यासः वर्षः नःस्र गश्रद्यारादे सद र्पेद इस्य र इत सर ग्राविट । कुय श्रय हग हि द्या वसवार्थायः के रावसवार्थावाटः र्नुः के राष्ट्रेत्रः यदेः स्ट्रमः कवाः कवाः दटः स्ववाः नन्रानुशास्यार्क्षेत्रायात्व्वयारकेत्रार्हेत्र्यायाः विटानेते सम्मुयार्वे दायते । वि हराहिरायराठवानहेशायाद्या नर्डेयाय्वायर्थात्र्यात्र्यात्र्या युगानन्म ग्री ग्रान्स्य प्रमानस्र्य त्या ग्रीन् न्य स्वाप्त्या व्यस स्वाप्त्या त्रुवः परिः चगायः चित्रं चत्रुवसः हे स्युवा चन् रायः वन् रायः स्या स्या स्या स्या र्वेग्यायविवर्, प्रेनेवर्यायर्वेर्यायस्य विश्वर्याय्ये वर्षेया सेवर्ये केया हें र्रेदे ना वेसरा प्रदानी 'से 'रा इसरा द नवरा सुनारा केरा रा नार से रा इैलाष्ट्रीयानुयामयायदिनानेयाकुः केत्रार्धाः सामायायान्यान्यान्या र्शेषाश्रार्श्व मुं चुरान इस्रया ग्रार इत्रायर ग्रुयाया ग्रुर कुन ग्री सेस्रया रेत्रस्रिस्तिस्तियोग्रास्त्रम्यराश्चित्रः स्ययाश्चितः यस्ति स्तितः स्ति नर्भेन् न्ययान्यम् नार्श्वेन स्त्रास्त्र स्त्राम् स्त्राम् स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त

वेगा के तर हैं। श्रुँ र न तु तर है वे श्रु र भें

ब्रिन्द्रिम् अप्ति व्यायम् अर्थः ब्रिन्द्रिम् अप्ति व्यायम् विष्यम् विष्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्यम् विषयम् विषयम्य

मर्केन्यम्पि मेन्यम् नर्वायाया नर्गेन्या महिषा सम्मन्य न्याया

मित्रेश्वासासकेंद्रायाणि सेद्रायम् नर्यायायामीद्रायासहेशायमः नन्यामनी भुगाश्रम् मुगाश्रम् मुगाश्रम् मिन्दिन ने नियामी सर्व नुमाश्रम् थे र्नेग'र्रा नर्ग'र्शेश'र्रा श्रूर'ग्रथ'र्रा वय'व्य'व्य'र्शेग्र्यंयर्थेर् ठे.५र्त्रेर.४स्थरायावय.ग्री.भ्रया.रूर.सहेस्य.क्र्या.८८.यालस्या.क्रुया.८८. वियायह्याद्रायव्यव्यवस्थे अभागें वाषाग्वावः भ्रेतः भ्रेत्रे व उदाद् से दायायायी व धर-५५-ग्राय केव सेवि क्षे वया वह नित्र वी दार में दार सह या पर प्रमा दे षर:विर:य:वें रेंगागी:धेर:शें त्रयायायगर्यायया वर्रेर्या उत्रेंद्र वर्केयान्य कें यान्य ये दान वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर नवरःर्'गोर्हेरःनःर्गे नदेःनलेशःगहेरःसुःकुरःनदेःइसःवरःसूरःनक्ष्रनः में। सुःकुरःनवेःवयान्या रयादरार्धे सुरार्धे या सुःकं हैरारे नास्या हे वयारेटातुःववे श्रुरियारराशेटावाद्यया कु तुरा दाक्षाया दु दूरा रु: भ्रात्यः श्रेवाश्वारा नश्चरः केटाटे वर्त्वत्या वर्त्वसः देवारी केदे विवा वया नर्रेयारी या या वैवाया न्याया विवाया न्याया विवाया व्याया विवाया विवाया विवाया विवाया विवाया विवाया विवाया

ग्रीश्रायमान्तरामह्माम्बरादेश

गशुस्रामाञ्चत निर्माणा खुर्सामात्र निर्माण्य स्थानित । वर्ते सेस्रान्त्रीत कुत्त्र प्रदेश देश सु गु गति स्ट मी स्ट मि स्ट मे न्गरम्भ्याध्राप्ताध्रार्द्धराद्वेश्वर्ष्ट्यार् यात्रवियायात्रात्रा देवे केट. रे. केव. के. रेट. बेट. रेट. केट. रेट. क्षेट्र-ट्र-वर्षाख्यायावे क्यायूट्यो केंयानत्व प्राप्त ख्वायर ग्रुक्षे म्राप्त भ्रुवागुरार्धेरमास्य क्षां भ्रुवागुरास्रे द्वारायाया गहेशक्षेक्षेत्रानुष्ठाम्बन्यामी स्रमाक्त्रा सेमान् उटासे न न नर्द्वस्थानास्रीत्राचरास्रुदे हे से रागान्ता सुर्यान् उटा कुन तुन् ने ने ना यत्तर्रात्र्वाः वास्रीत्रायस्य इत्रायस्य । स्रायाः वाहिशान्नत्यान्या अर्वे से सर्वे से न्यर विट र्से ग्रायायर ग्रेवर र स्था नर स्टूर वर गुगारेट इट में र ग्वावय । र्रे इट सकुर र निवस राष्ट्र ग्वावय । श्रे हे पार्से दे 'इर्, नावर त्य इर् प्रवर र नवना है तर्ना प्रराह्य दे निम ग्रह्म वुरक्षे वु नर तु स्राया विन हु न स्राया स्राय हु या दे या दे या स्राया स्राय स ने सूर सुरा जातर निरुद्ध तर राज्य में के राजा वहुना मदे के ना सर रट कुट या नहना या त्या गुव ह्यें ट प्टर्के या पा भी व रह ना या के है। ह्ये ट प्यया र्श्वेर मी नश्या सदे सर्व प्येत विदा वेगा स सर्वे द्या पर ग्राव र्श्वेर मी नश्रयायि विद्रायम् हित्योव हो। वेगाय केवार्य विश्वावायम् सिव्यानिक स्वाप्ति स्वाप्ति । स्वाप्ति स्वाप्ति । स्वाप वर्षिर्यायश्वरावरावर्षित्रायां वेषायां वेरावाधेव। रदाधयावरार्द्रिरा वसारोसरा उदावसरा उदाविसाय राव बुदा है। दे दसरा शी दें दर् वस्रकारुन्सित्ते स्वरे में वस्रम् विनासम् वर्देन स्वरे नक्षस्य ने वह नका गुव वयान सुर्या है । दव सूरिया बव कर्या विवा सुव प्रायदा सुवा स्रया ग्रे.ब्रेट्र-स.ब्रेश-चे.चर्य-स.श्र.वर्ग्ने.क्ष रट.च्रिया-सं.वर्ट्ट्र-ग्रे. न्ययान्याग्वाद्यान्यान्यान्यान्ते । स्ट्रिंटान्यायुयाग्री स्रोधया उदावयया उदाया वर्क्ष:नःश्वरःणरःक्रवःश्वराग्रेःश्वरःपरःश्वःवयुर्गःनरःगश्वर्गःह। श्वेतः ॻॖढ़॓ॱॾॣॺॱख़ॱॸ॓ॱ४॔ॺॱॻॖऀॱक़॓ॱक़ॖॸॱऄ॔ॸॱॻॖॸॱग़ॖढ़ॱऄॗॕॸॱॸॏॱॸॺॺॱय़ढ़॓ॱॻॖॸॱॻॖऀॺऻ [ृ]ष्ट्रास्थाङ्कराकुरान्।रंसान्चित्रायापराक्षनशाकेतान्नी।नशॅन्वस्थान्। र्शरक्षे हैं निया प्रति ग्रह क्वा ग्री क्रू र ग्रु र या श्री अया ह्या क्रु केव में दे इंस.चुव.लट.गुव.श्चॅट.ची.चश्चश.च.चश्चश.च.चश्चश.च.चश्चश.स.

देशव र्च्चा सर गुव र्र्सेट ख लेग्न श सर नहग्र स्व श गुव र्र्सेट <u> द्यापदे द्यर त्या श्रॅ र यर द्यो श्रेयश ह्य पर उव यश्चे दृष्ठे श्रुय हुः</u> न्वें राषा नेवे द्वारा स्थान निवास मान्य स्थान स्थ याही भूरावळरा नहग्राया है। कें पदी सूरागी सूराना रे दिंग्या ग्री नयसाया र्मर्मरमानेगायर्गामरोक्षेर्धेरार्धेशाचेन्यमानुश्राया ह्रीम्प्रायर् नश्चन्याः विषाः संभित्रः स्वरादाः स्वर्धः नमः विस्वराया सुसाय विमः नायदिमः स्वार्तिय वित्रम्भार्यायम् रामित्रम्भार्या वित्रम्भार्या मंदे निक्रामहेत न्याम निम्या विमाम केत में दे त्या या के वर्षे निम् नक्षन हु र्षे द्र पदे क्षून्य वदे र प्यट क्षे प्रत्ने य नद्या नक्ष्य केट वेद <u> बेदावयादयादार्सेटालेंगानु बेदार्देश्वयाद् केंद्रसेट्यायदे वयसपादे ।</u> न्यात्यार्वेदान्। न्युराद्या न्युवाकन्युं स्वायन्येत्रान्यरान्युः अन्येवायरा भेगान्दर्देग्नश्रुअ:५:धे:५अ:नठशाय:कुट:धेर:५गा:५:वर्त्,५:५८:५८:अ३अ: र्फ़ेर्रिंद्रार्केट्यायदे प्रथयाया हे द्वाप्युवाद्याय के वर्षेद्राय है से या प्रदान हुन वस्रश्चर्द्धर्त्त्रम् श्रायदेश्चर्रायाच्या देवस्य क्रुट्टर्त्त्वस्य शुःकुः तथा नह्ना रेट नग्रस्य द्या येयया न तुर क्षे रेना पा नुरस्य सु पह्ना रेटा सेस्रमाम्ययाविटारेगापिराटटार्गम्यस्रित्या नेतिर्टारम्या

वेगाळेदार्बे सुन्यत्तु दान्यत्तु स्वा

वर्चे र रें व के हे र र गव व व व के रे या के र ग्री कुवा व या या या या के वरे वर्चर्यात्रयायारात्रसुर्वासे दाया द्वारा विकास विता विकास वि यशःह्रेव् मुक्तान्वर्यात्र्यास्यान्यस्यामुः स्टानिव उवायशासायद्याः यदे द्धयानससस्य दसायिं र नाया वेदायें वा ही निस्तर हो निस्तर हो । वयःररःगीःसवदःर्भेरःर्'र्वेगःसेरःवयःर्देवःग्रीयःवश्चरयःसदेःसःम्वः शेश्रयाद्य विश्वयाद्य विश्वयाद्य द्रियाया है स्टाइययायाद्य विश्वया नन्गानी देव उव ग्री अ म्वर से प्रदे प्रस्थ उन प्रस हैं व ग्री स रम न्वर येद्रान्य विद्या सूना वस्याना सुर्या ना सुर्या वरी द्रवा श्वेर रे हे श्वेश द् जिस्रा श्वेर हे श्वार द्वा ह त्र श्वेदा सक्त सेससाउत्पदि इससार्श्वयानि । तुरादे । तुरादे । प्राप्त पान ना गुराद । सूरी पान सा भूतरायदी युःत्रारा को सर्वा उदा मस्या उदा ग्री में दायू क्रिया ग्राम के दार्गिया सेसस उत्पारिया यी दित प्यट समर द्वित पर हो द त्र स पर से पद्य है कें न अपि मिरा से सरा उदा वसरा उदा धर द्वा पर हैं वारा पदे सरसः मुरुषः ग्रीः वे त्यदः त्यः वर्षे दः पदे त्यः यः से द्वा दे व्यः त्यः त्यः सः सुः यःलूर्यः त्रातर्र्याः तर्म्याश्चात्रः श्रद्धः श्रदः श् अ.श्रेत्रश्न.वर्यः वर्षश्चर.वर्तः श्चे.प्रे.प्रच्यः स्ट्रेयः श्वर्यः श्वर्यः श्वर्यः श्वर्यः श्वर्यः श्वर्यः श्व য়ৢ৽ঀ৾৽ঀয়ৼ৽ৼ৾৾ঀ৽ৼ৾৽৾৾৾৾৽৳৽য়৽৽য়ৼ৽য়৾ৼ৽য়ৼ৽য়ৢয়৽৻ৢ৽য়ৢৼ৽৻ড়ৢঀ৽য়ৢ৽ केशकेर्न्न होत्। देण्य केश्व विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व

ने सूर्ग्त्र ह्या निर्मात्र वा निर्मा वे अर्रे कुर्र्त्रोर्श्यायशेषाद्रायहर्श्याये देवाधेव वेदा भ्राप्य हे सु यदेःसूत्रं कुन्वदेत्रायदेःन्यायः इययात्रत्रात्र्त्रात्रं ययाः विद्यादेःवा र्हे र्ने प्यन श्रुश ग्री ग्रुर नर्गे श ग्री श ग्रुर रेश स न श्रे र यर सहर है। हैं र्ने हे त्य हेत्र प्रित्र प्रित्र प्रायम प्र ग्वराया पि.स्रि.स्रियारार्द्रवाळेवास्यास्रियास्त्री स्रियाउवानस्रियया मश्चर्याप्राप्तान्द्राह्र सेवास्यार्थे प्रियं सेस्यास्य हेर्यस्थ्रियाया धेवा क्षेत्रारं व क्षे नदे कु अर्के अवर न वृत् वृत् ख्रा अर्के वा वी अर्वेव नहनःशेश्रयान्। शेश्रयाद्यान् विनानुश्रायदे नशेन् द्रश्यान्य स्त्रा सम्मरक्षे क्रियाश्वरा नगे नकेश क्र्रिं या यन व गम्से क्रियं मर मिर् नव्यान्य अप्पेन प्रदेशके। से में नदे त्रुवाय नवीं न्याया वहेवाय यम क्रेय स्राच्यात्राचा विवादिराचावर्वाचार्यात्राचात्रेवास्रुस्याचार्या श्रुवा ळन:मॅर्नरवे:इन्स्यरहेषाचीयातुरानान्ने निक्रार्वेदाययास्तिर वया दयाहिन् ग्री हेव या शुष्पर या सर्वे र प्रस्त कन प्रास्त या स्व कर्षः सर्कः कर्रः न्युरः वार्टः केशा र्वो विदेश्य नेशः वाहेर् सर्वे स्था

वेषा ळेव क्वें क्वें र न तु न हिये खेट कें।

शुन्याध्ययाम्ययान्नाम्

ग्रीभानक्क्रीरात्रभागत्वग्रभागा दे प्रगाप्तराया भारता अत्वावा प्राप्त । रदानिव उव मी में हिये ह्या पर पेंदा मुन्य सुवय सुव दे व्यव उदा मुन् रट्ट्रियाम्बर्थेययाउव्ह्यययायाच हे नदे श्रुव्र श्रुव्याचेवायानिवर न्नरः सेन्-नु-नर्वेद्रसः व्रसः सूना-नस्यः न्युसः ग्रीसः सव्यः स्वः प्रस्यस्यः वरायहेग्रास्तिम्भूग्रास्त्रा देख्यार्भूग्रास्तिव्यः नत्यायायाये त्रायाप्तीत् यकेवा मासुयायापितायावावत सुरायदर सेद यथा रे अपावव व से प्रते हैं में अप्या में वरद विदा हिन पर सम् शेशशाउदायदी इशशार्श्वेषायदे तिरार्टा पायरा ग्राटा देश त्राया सेटा मभा अयावाविर्यं अभातुः कुरः कुर्याहोरः नः अर्घरः नाविर्यायः रः अर्यः म्रवापा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वा र्श्वेष'नदे' भ्रेर'भ्रेर'भ्रा'प'त्रा'भूनर्थ'दर्शेष'नर'न्ययययं प्रा'प सवदः भ्रें र ग्री : शेस्र शं उत् : वस्य शं उत् : ग्री शं सम्रीतः ग्री वा 'तृ : वर्हे द : धरः नसससान्या नन्गान्दावर्षे नान्यासानि सम्यान्यास्य सम्यान्य स्थान उदावस्था उद्या मिटायाहेश इस्था ग्री सर्ह्या सद्या मुरायाहेस खूदा वर्यात्रम्ययायाञ्चन्यात्रायकेत्। क्रियात्रम्ययाग्चीयकेतात्वे नावर्द्र क्यायान्द्राच्यान्ते केयाया भूनया सुरमकेदी कियाया समया ग्री सकेया वसम्बार्थान्य सुद्रा स्वेस्र स्वार स इसरायाश्चित्रराश्चित्रराष्ट्रिया विरायम्यारासराम्ह्री नर्नः श्रुटःश्रेग्राशः चुःवरःश्रें वर्धुरःषयव्यव्याद्युटः चःष्ट्ररः चुःदुटः वाश्रुटः। वार्डेः र्वेर-वे-नर्गेव-सर्केना-नशुस-र्थ-र्थ-र्भुनस-शु-वहेव-सवे-न्धेनस-इस-ल्यायाद्याः हु: विदा दे: पदः क्रेंद्रः या यदया क्रुयाया क्रेंद्रः वया या द्रया भुन्यासु पहें व रहे द से समा उव वसमा उद गी देव द दे वे में प्यद सहित र् होर पर्रेर् छै नगम प्रमास सुनम सुर्मेर में सुनम प्रमास सुनम मिहेश'गिदे'मिद्र'र्क्रं मिश्रा केंश'य'श्रुनश'शु'दर्गे नदे'र्के निवेश' गहेत्रनहेत्रद्धयात्र्यान त्रान त्राम्य स्थान रादे के अवस्था उर् ता क्षेर व्या भुग्य शुरादि व केरा व्या पर गुरा कुरा यस ग्री देस परे भ्रेट में जुट कुन से सस क्रेंट गी ग्राट्स स ट्या परे भ्रेज অৠৢৼয়য়ৢ৽য়য়ৼৢয়ৼৣ৸য়ৣৼড়ৢয়য়ড়য়য়ড়ৢয়য়ৼয়ৣয়ৼয়ৢৼ वहें वारामावर धेवामा र्मे वर्त वार्म निष्ठ वर्ष से वर्षे वर्ष से र वेवारावाश्वराग्री:द्वो त्द्वावस्य उद्या श्वेदावस्य गुरानीया वेदा स्वाप्य र मुर्भे भूवा मदे मुर्द्ध करो से समार्द्ध समार्थ समार्थ समार्थ मुन्द्र में विकास शु'न बुद'न्य भ'द्दे श्रेन् चुद'कुन'स'र्वेन'नर'त् स्रेस्य प्रदार केत्र'र्से देन्ता गी हे अ शुः श्चें न प्रते प्रत्व पा भ्वा अ इया हो द प्रायाव द प्येव या शुद दि। रोसरान्भेर्प्यते। ग्रमरान्द्रिप्ट्रिय्यम्यस्य पुरायाद्रम् ह याययः नहनः तथा द्वियायः नद्वः नत्यायः भद्देः यह यः क्रुयः न्यायः व

यद्गयामी से स्वाराह्य सार्थ साराह्य साराह्य साराह्य साराह्य स्वीर साराह्य साराह्य साराह्य साराह्य साराह्य साराह्य सहस्राह्य साराह्य साराह ग्वित प्रावित प्राप्त श्रे ते प्रति स्राप्त वित प्राप्त श्रे स्राप्त श्रे स्राप्त श्रे स्राप्त श्रे स्राप्त स् निवर्द्यान्यक्षेत्रम्यान्यदे स्टानिवर्गी द्वी निवर्षः स्टानिक निर्मे स्टान्य नग्रीत् नुः सुत्य नन्ता नग्री अपाया हे अरु प्योप्य स्टानि ने निवेर हान नेशा हे सूर र्श्वेन क्री ने निवेद माने मुस्य प्राप्त मार्चे स्याप प्राप्त मार्थ स्थाप स्था ह्रियायायदे यदया क्रुयाह्मययाद्दा या के देशे त्या द्या तुर्वायायदे ह्रियाश्वास्तरे ह्याद्या कुन हुन्य श्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास् गुर-कुन-श्रेद-र्स-यासकेश-ग्री-नर-र्-न्नान्तेद-सेद-सायद-द्वार्यर-ह्वारा यदे ग्रुट कुन के द में त्या शेश्रश्रान भ्रुट पर न श्री वि । शेश्रश रहत सान भ्रूया नः इसरान्युयानरान्यीर्वे । सार्चेयानः इसरान्येयानरान्यीर्वे । न्त्रम्यासास्रीत्रास्ययान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्य नरदर्दर्द्द्रामः भुग्रामः इग्राः हुः वीदः यदः ग्रादः सदः निर्दे । दिदेवेः भूनर्थाशुःस्टावीर्थाशेश्रयानभ्रेत्रान्दासहस्यान् स्वास्त्रयान्दा नठर्भारादे मुग्रमा हे दे न् रासमुर्यासम् मूर्यो साम् रासेसरा उत् वस्रश्राह्म त्राह्म क्रिया ग्री स्रोध्या देव दे के क्रिया स्रोध्या स्रोध्य

वेगाळे व क्वें क्वें र व तु त हिये क्षेत्र कें

श्रुश्चर्त्रद्र्वर्थः श्वायाः वार्षः हर्ते।

निव संक्षेत्र स्वीतः म्याया मान्यः स

यः दर्। भुष्विभः मर्शेषः यः दर्। वः यवयः दरः क्विवः यत्यः यः प्रदे। विष्यं भः विदः दः प्रवेषः यः प्रदे। विषयः

थ्यान्यम् । व्यव्यान् ।

थ्रायान्यमाञ्चरमी मात्र न्यस्याया प्रत्यमा मनुत्राया सह्या दर नडर्भायायनुषानाने। यसाकुनायास्त्रीनितेसश्चन्तेन्स्त्रीन्साम्राज्यास्त्राम् ८८। याया मेव श्वेन पार्श्वे रानवे श्वेन हेना हे रामेव ५८८ थे । स्वापार्थे रा येव भी मुं न्येग या इया श्रुं न या उंया या या न मुं न या श्रुं । नः नेवः हुः नगवः नश्रा नश्रा श्रु रः नी ग्वन् नश्रुशः पः प्यवः व्यनाः नत्वः पशः कुर्ञुर्द्रमें अत्या यद्यमान्त्र्वास्त्री हे स्रेर्त्यास्मार्थम् वहिमान्हेरास्। वेशासास्या वस्रशास्त्रमानीयास्त्रान्धेरास्ट्रि । विश्वास्ति नराम निष्या । विश्वास्ति । विश्वास्ति । विश्वास्ति । विश्वासि । विश्वासि । विश्वासि । विश्वासि । विश्वसि । विश्व नः इस्रशः ग्रीशः देः श्रीतः वह्या द्रशः याश्रद्धः प्यदः प्यवा यत् द्रायः श्रीः यः न बुद द्याप हैं त्र नु चुय द्या चुद क्ष्य ग्री से स्यादेत में के त्या हैं हैं द नवे वनशस्य हो द रहे व दिया निया स्थान स्था क्रुनशःग्रीःळंदःगःभिदः एःळेदें।

ग्वित्। प्राप्त श्रुद्दान्य भ्वायान्य मुन्ति । स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत

इमान्यम्भियानायने नमान्यम् नमान्यम् नम् निम्नु न्यान्यम् नम्

त्र्वायावार्श्वयात्रायदेवर्यायात्रवित्रक्तृत्रात्र्वे सात्रे सात

न्ययाध्वास्त्रचित्रः स्वारे त्रासारे वार्षे । विन्वा वी श्रे विस्पन हिता से न नव्यायाया । नगरदेव केव सेवे क्षेत्र वया हेया न हर है। । भुगा सुर विग्राग्री दूर्या ग्रीय क्षेता री ग्रीया ग्र याववर नवा यो या । वर्ष या सम्भाव सम्भी या या निष्ठ या । व्यव । नहें नवे क्रेंन्य मुग्राक्ष हें उन्ना विदेन मास्रस्य से मुग्र कुया हैं या विदेन मास्रस्य हैं गर्रेयः नः वरेन्यः र्रे न्या कुर्ने नेव की या किययः मं विवयः यो न न्दीमामहेत्रः इस में वास्री । सर्केमास्रेन्यानवे स्रेन्द्रम्यायायाये स्री । क्रियायाः इस्रयाया । यार्थियाः यायदेनयाः र्से निष्णाः सुन् हित्र ही यार्थे निया । वह्रसार्वे प्रत्राप्त मान्या स्थान । यह साम् साम्या स्थान स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ह्म न म्यायायाय दे वियया | देयायाय दे ति श्रुया ह्याया हेयाया रेयायाया | वनः र्रो क्षुन् कुन् त्रुं र त्रुं र र्रे वाया क्ष्ययाया वार्ये वया र्रो वन्या क्रून्चेव क्रीय क्रून्य। विह्यायंदेन्च्यान्त्र क्रुयाञ्चय विष्वा थ्री। याङ्गरीर्पयार्थिः हे दिन्। क्रियाश्रश्चरित क्रेत्रप्याद्रम्यार्थर स्त्रीर म । क्रिन्यः केत् र्श्वे द्रान्य क्रुद्रः क्षः यथे रिष्टं वायः क्ष्ययाय। । वार्ययः वादे वयः श्रें नद्या कुद् ने हे द हो स हैं नश्रा हिं में अ है नि द ह कुया न दे हैं सा हिं हैं न्तर्वक्रावायार्श्ववायाया । देवरकेवरशेययायकेवा श्ववायाद्यायाया क्षेत्रत्। विहेत्रसहत्त्रमायम्बर्भात्रस्य स्वरे स्वार्थः स्वर्थः या । वार्रेवः वः वर्नेनशःश्रॅं नद्गाः कुर् नेव्रेवः क्रीशः र्हेनशा क्षंद्रायाः अर्देरायाया नवदः श्रेया चल्या अस्ति चित्रं व्यक्ष्य स्वार्धे द्वारा स्वार्थ विश्वार्थ स्वार्थ विश्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार

मर्भागविष्याविष्याचे भारावे ज्ञान् कुना ग्री से सर्भाने व र्में के सुरान् कुना थे नवे मर्शेषान मन्नाम है। हेन नगव पेंत्र हत स्व मवे नय वर्षे र वरी नर्हेन'वर्गुर्थ'ग्रीश वित्र'सळ्न'ळेंश'ग्रीश'वनवन्तरं हीन ग्रीश हेंनश |कु:तुर-क्ष:तुर-भे:हग:खुर्य-श्रेंग:वरी | त्रयःवहेग:देयःयः सेट्यर-हेंग्यः ग्रीम् त्रा । क्रि.पर्ने प्र.स्व.क्र्यायाञ्चायाये प्रयाया श्रीम् । इता । श्रीम् । हिना उयापर सेरामर ही वाही या केरा शिरामदे निर्माण स्थापर से विवा डिटा । नरिंदेन वि.च र्ने व.र्ने अ.योहेर नरा । वर्चे ग्रावर्ने व.र्ने अरम मुमा श्चन'रा'णे। |नशय'र्श्वेर'कुन'शे'वळन्'रार'त्रीन'शेर'र्ह्वेन'शे श'र्ह्हेनशा |र्वेग'शेर' नुसन्सन्मनेत्रम् । स्वाप्तस्य मुन्यानस्य मुन्यानस्य मुन्यानस्य । गुरक्ष। । तुः सूगा कुः धेश होर निर्देश निर्देश से व से दि हो हो नरः होतः हो अः र्क्केनश । रदः नदे व्यद्देदः व्यक्षः हे अः यः गुतः वहुदः विदा

|गावर सर से सरायराणें राहर गुर पर्युट भेरा ।गावर भेरें राजनगाया येव केट निर्मा केट थी। निर्दे द्यो मानव त्य महिट निर्मे के से कि निर्मे | स्ट केट वाडे अ धर वहें व धवे प्रचार्ते विष्ण | विवा सेट र् अ व अ स्ट ग्वित् स्वा नस्य नुरा । धित कर नुर क्व से सरा महिरा सूर्य साम वया । नन्गायहें व सन्वयः वेव प्यनः चेव खेया हैनया । वर्षे प्यने यः विवा मेर्-रुअवयायवानम्यायान्ति । विरःक्ष्यःभ्रवःसदरःदर्नेःयःस्याःययः मया क्रियानानवित्रात्रम्यतानदेवे क्रूरायर्षेत्रम्य । गुरामया श्रे मेर येव'सर विव क्री अ र्क्केन या । यश हव हन हम हम स्थित स्थित स्थान स्थित । क्रॅशःश्रुनःद्वरःश्रेःगद्वरम् । मुन्दःद्वःषयः दुःर्वेद्यःयः चित्रः चित्रः क्रेंनश् । नरे सूना मन नर्ने पर्वे र सुर हे चुर पर । । क्रे यस पुरा ही . वर्चे र स्नू र हे र विव र तु। अद्भर प्यर य र वे व र य र ये द र य र वे व र य र इयशर्गे न'दर। किराज क्रीदरक्षेत्राय सबर होवाय। गुवाही इत्य हेगा सर्क्रेया निर्मेश विच्या निर्मेश निर्मेश में में भी निर्मेश में में भी निर्मेश में में में में में में में में डिसम्बर्धयः चः श्वासः इवाः हः वाद्वः वि

दे'त्रशःर्क्षेण्याविदःह्रस्यास्यवद्यसःदेशःश्रीशःर्वेदःदुःत्यस्यादेतः सः श्रुवःसदेःद्वदःसें त्याविस्य ह्या ह्यास्याद्यवदःसें स्दःगेःश्रुःसेवे दिवः इतःहावदे ह्यास्याविस्यायस्य स्दःगेःश्रुःसेन्द्रसः श्रुव्यसःहे केवःसेवे ह्या

यः उत्रः वारुवः वहनः वा भूनरुः वारुवः अः स्वरः वद्वाः हेट्रः व्या न्त्रायार्यदेवार्यदेवार्या यारायी देवारीयायरे केवारीया । अप देवार्यायाया वे वे न प्रमुन्न । व्रायमेव केव क्षेत्र भी । वे वे उदावन या प्रमुन्। न्द्रभामन्यभाषीन् श्रुवासकेन्या श्रिवासेन्यभा चर्यायार्श्वेचाः भूटः वस्यया उद्गान्याया । भ्रीः दस्यायः द्यो : यः इस्ययः यः हेशाधी प्रदा विद्यार सार्थे रशायर प्रायेष या विद्याया क्रॅंश ग्री विर्मेर के निर्मेर निर्मा विर्माणविष्ठ निर्मे स्थय ग्रीट स्थ्र स्थेत स्थेत र्यरानर्शे । ग्लीरानविष्ठे त्तुःरीरानारी के ताले वाले वाले वाले ह्या ग्रावा नवर सर्केर सदे सेंग्या विस्तर हो रेंग्य स्थान में विस्तर हो विस्तर रास्रह्याद्रावर्यायस्रित्र्यस्यास्याते। त्याव्यस्भूवयाव्या गुवादन्याग्री देने त्राया देवारी के त्या वर्षिया वादने वया थे। वियायवा यार सर या रे विया या यह वा से विया के कि विया यो कि सुर समय द्वारा प्रयापा था ८८। ब्रेवर्डेरअर्वेग्रायदेर्बेञ्चरअवयर्गायने स्मार्छ्ये यर्दा क्रेव्रब्धे वरमी नरक्र वस्र रह है नर वि नर है न से के न क्र न हिन धर-तुःष्पर-ह्यःअन्वो नदेःनिक्षामिक्षेत्र-रेत्र-र्थे के निक्कृत्यन्तर्गरम् इस्रथानी श्रीयाया केंद्राया है स्थान श्रेयश्चर्यत्रम्यश्चर्यात्रीः श्चित्राश्चर्याः हेश्वर्यात्रा हेश्वर्यते हेत्रः स्वीः यर्रे शेरेतर्ये के इसस्य ग्री नहें न हिरे दें त्री संवेषा ग्राव है न न न दें त द्रमाहेश्वास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्

महिरामाने मन्या

गहिश्यानिर्देशमानिः वी निश्चानिहेन् निश्चेन मिन्नेन म

न्दः में निक्रामिक्र निष्ट्रेत् न

प्राक्षेत्रं प्रतिक्षात्रेव प्रति । भ्रेत्रं प्रति । भ्रेत्रं प्रति । भ्रेत्रं प्रति । भ्रेत्रं प्रति । भ्रेत्

र्यदे यय य र्स्नेन पर पर्दे द पा इसरा ग्रीया दे 'बेंगा सर ये गया से किया वस्र राष्ट्र मि स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास वया इसर्ग्यास्त्रम्यायास्यास्यायायास्यायाः स्वेष्ट्रीयाः स्वेष्ट्रीयाः स्वायायाः स्वायाः स्वयाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयाः स्वयः स्व नक्ष्रात्र राज्यात्र केवा राज्य दर्शेन स्वापन से राज्य स्वापन से राज्य स्वापन से राज्य स्वापन से राज्य য়৾৾ঢ়ঀয়ড়৾ঢ়য়য়য়য়৸য়ড়ৗৢ৾য়ড়ৣ৾ঢ়ঢ়ঢ়য়য়য়ড়৾ঢ়য়য়য়৾ঢ়য়য় गानिःद्राम्बरानाः स्राप्ता विष्यालरामारा चेरामे अस्ति। क्षेत्रप्तरः विवादमें अः श्री दिः वास्तरः कुत्रे सर्दे से वे सुत्र वासा ॻऻॹॖॸॺॱय़ॱॺॢॸॱख़ॖ॔ख़ॱॿॖॎ॓য়ॺॱॾॖॺॱय़ॱॸॖॻॱय़ॱख़ॱऄ॔ॻऻॺॱय़ढ़ॆॱऄ॔ढ़ॱॸॖढ़ॱॸड़ॖॱ लूर्अ.श्र.ह्याश्वासपु.धि.श.पे.क्षे.ये.श.धेर.क्षेट्र.क्षेट्राश्वासवतःक्षेत्वः विस्रश्चार्याः हिटा सः सःमूट्यायान्याक्षेतानी सेयासेन्या स्यानसूट्याये सम्पन न्यस्वाया क्षेत्रायाळे वर्ते वे ग्रायाया थे क्षेत्रायम् भ्री यावे में वाया क्षेत्राया विगारेशस्य द्वेषाम्बर्म व्यामित्र विष्य विषय विषय विषय विषय वर्दे नश्राष्ट्री समायाके बेरान विनाद्रों श्रा के द्वी सम्बन्ध के वर्दे नायाके नरः हो दः प्रश्नास्त्रास्य से प्यानिता । वर्षे सः देवः से विदेश विद्या वर्षा । वेदाः ळेत्रची त्रु सार्च प्राचन्त्र प्राचन्त्र स्त्रु स्वर्थ स्त्र येव'स'व'नश्रुव'संदे'श्र'स'यापापाद्यव'न्द्र'श्रद्र'ग्रन्द्रेव'न्'ग्राद्युर्द्रेव' राविवादवीं अवाशुद्रा द्वो नदे नवे अवाहे द निरानदे विवादशा श्रूपः रायायहेयाची वरावेरादुरावर्षयायदराये सुपालेगाया सुयावेराता त्रध्यात्रात्रात्रात्रहेत्। विवा देश्यात्रात्रहेत्। विवा प्रत्यत्रहेत्। विवा प्रत्यत्रहेत्।

ने भूर प्रयास में रावर क्रेंब प्रवेश्व ने शावित सक्व के राक्षर वा विगानर्याया नमसार्भे रागहेगाग्रीमार्खयानविदार् नस्देनदादीयदा धॅवरळद्रासेद्रायराम्स्रुद्रसाते। देण्यदार्स्स्रियासार्स्स्रूद्रास्त्रियामीसायसासा र्देर्यरः क्रेंद्रयये न ने शामाहेद र्याया दुष्य न विदर् रामक्रेद्रया द दिम् श नदुवे कुषान श्रमान्दान उसाया बसमा उदा श्रमाया मिदान साद्यो सा धराग्नुराने। अवायाद्रायराधराभ्रेवावयाञ्चायादेवात्ययाव्याव्यावा र्श्वेद्र निर्मा के ति स्वास्त्र निर्मे के ति स्वास्त्र में स्वास्त्र स्वास् क्रियायायात्राम् विवास्त्रियास्ययास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्वास्त्रास्य स्व यन्ता वर्षाणरन्त्रो नदीन्वेशनाहेवः श्रीश्वासी स्वरूपान्ता सेन्त्रसी यापीत्राची पळे नया थे रहुं न्याया प्राप्त में विष्तु । या प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र लर.श्च.जम.र्.श्चर.च.क्म.श्चेम.र्या.सम.यश्चर.य.र्या. श्वेषामाय श्वेर. <u> अरअ मु अ वस्र अरु र अर्के र प्र नश्च मुत्र मुत्रे मुत्र मुत्र मुत्र मुत्र मुत्र मुत्र मुत्र मु</u> नर्शेन् दस्र राक्षेत्र राक्षेत्र राज्य स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक स्वराधिक र्भर्भाक्त्र्याणे में त्यर सूर्यायाया सुर्भित स्वाय हिं र हिंद् सुर यस सर्हेग

वेग के द में क्विं र न तु त है ते खे र में

णिव्यान्य अर्थेव्या प्रति अर्थेव्या प्रत्य व्या अर्थेव्या अर्थेव्य

गहिरायासाम्बेनामिते हेरान्सेनासाम्बन्धा

महिश्रास्यानक्षेत्रायि हेशन् सेम्यान्ते । चलेशमहित्र नुस्यान्त्र । चक्षेत्र स्वास्यानक्षेत्र प्रदेश नित्र न्याने स्वास्य प्रश्ने । क्षेत्र स्वास्य प्रस्य प

यशन्तर्भवे सम्भाष्ट्र हिंत् सेंद्र स्थानी व कि स्वाराय ने साम हेत् न हेत द्धयाश्ची मान्द्राक्षा भीषाभीद्या दुदा बदारे भीषा श्वादा द्धया प्रविदा की हो दा यर गट वुट वुट ल के अ १९५ य इस्र अ ल ज्ञु साथ महेन पदि वि द सार्थ न न्यगः हुः सेन्य वर्षः विद्या ने न्याययदायळग्रस्य न्यः स्रेस्य सेते स्रेस् न्गवान्यकाहेकात्रुरामेकाकुन्कुर् कुर्नेकालेटास्ट्रान्यसाम्या सूरान्यन् यः सूर् मी सव धेव द्र है अ द्री वा श इस्र अ ले अ सर मुराया धर द्र नविद्यान् साम्यान्य स्थेत्र विष्या स्थित स्थान स्थ श्रेंगानी भ्रेरायर शे यद्यायर ख्याय विव र् प्यक्षय यर मुदे । दि स्र वेद्राच्यायम् स्थाय्या स्थायः स्थायः विष्णा विष्णायः विषणायः विष्णायः विष्ण ल्यायाद्याः त्याद्यः वै।

ग्रुस्य:इ:न:५५:अुर:न

यश्चाराङ्ग्याद्वार्याः श्चार्याः श्ची श्ची राणिवाः त्वार्याः श्ची राणिवाः त्वार्यः श्ची राणिवाः त्वार्याः त्वार्याः श्ची राणिवाः त्वार्याः त्वार्याः

धेन्गीरानश्चेरान्मेरार्शे । व्रायायन्नामे हिस्स्रेर्स्यास्याने। व्राया इस्रथः सर्वः रु. वार्ययः वर्राय्यः वर्षाः वर्षः गहेत्रवि:इस्र अवि: प्यटः द्वाः यरः हे वा अः यदेः सहस्र कु अः इस्र अः ग्री अः नन्गारमा अर्था क्रियान्रेया शुर्था विष्युः प्रति भ्रायाना सेन्य सहिया शुर ग्राह्मरायदे हिरात्रात्रे प्राचित्र के राग्ने देश हो सुदि स्यापरा प्रस्ताय धेता धराम्बुर्यास्यायर्या कुरान्द्रियार्रा धेवासूयान् नर्स्या ने प्यरा यरयाम्यास्य विष्यति देविष्ये। हे स्ट्रिम् यरयाम्य विषयम् विषय दि । श्चेंत्रहेंगानी हैं से श्चे विदा श्चें वस्य राउदात्र राषेत्र हत्र सेस्य राविमाद्र वीश्वर्युट्याक्ष्म र्याची ह्वासायवर क्रिन्दियाची ह्वायाया वशार्थे वस्र रूप्त वर्षा वर्षे व प्रवासे स्वर प्रवास के प्रवास के विष्ट्री । क्रिन हैं पा गी र्ह्से : १ न्या ने देरे : १ राज्य वा राज्य वा राज्य वा निवास के स्वाप्त वा निवास सेससारितें क्वें र्जु सार्या सुरसार्या निर्मा हे त्रेया होते।

धेव प्रथा न्यव नर वर्शे नवे हिर हे वह व शे अहे वशा नहें अ खूव वन्यायार्दिन् सुर्या केत्रार्धेयात्या वन्यादी सेस्या उत्वस्य उत्तय मन्दर्या श्रीत मानार पीत प्रक्षिया ना सा सके सामित श्रून पुर्वी वे सामा सुरसा राष्ट्रमा श्री मार्शेस्र अवस्था उत्ताया श्री द्वारा है ता है <u> ५८। घट क्रुन सेसस ५५६ हें २ चुदे सेट न यस। यस ५८ में पदे सेसस </u> उदाया । द्वित्रायदे पद्गुने का मञ्जे दान राष्ट्री । विकाम सुद्या स्वा धरःकेंशःश्चेरःवृग्रथःयः इस्रथःयः श्वेतःयदेः वर्षः वश्चेतः वर्षः द्राः र्श्वेटर्निश्रायरामश्रद्यात्रा स्टामी त्रायायाय हे से श्री त्रायाय प्राप्ता स्टाया ब्रैंट नदे के दें हे पकट दया ब्रन मदे भूदे हया माने नु के सार्ते नु या ग्रा र्शे से र हैं गा सदे ले स र र ग्री स र शुरु त स श्रें त हैं गा सदे हैं । दर्गे गा रे र ल्यान्त्रस्थारावे क्विंद्रम् नियाया विया से दात्र क्विंत किया ये किया विया से दार क्विंत क्विंत किया विया से दा गुर-र्-१४-नदे के नग्वा मुन सं भेत हुन्गद नश्व मुः सन्दे सहर्पः र्राने हैं सुयर्, ११ राज्यस्य यो दर्ष्य हैया हिस्या प्रदानदस्य र्वेशनःकेन्नव्य र्रेन्यायायन्त्रेयस्यकेन्त्रस्य स्वादान्त्रम्य यान्यायायदी यार्थेव न्वायदी न्यायदी भू तु यदि ।

ने'णर'र्रा श्रयापायि हैं'ण'श्रूर'र्कें ए'र्स्स'णेत् ही। र्नेत'तु'त' सरस कुरा दें सार्रा स्वापायि हैं 'पा श्रूर'र्कें प्रायायित ही। र्नेत'तु स

ने ॱक्ष्ररःवेषियः पातः क्रेंति । वतः व्रुवः सर्वेरः प्यरः रहः वी । नृतः पायः वीवायः सुः सेः वर्त्ते न विवार्वेद है। द्येर वर्र र से अपर्देद न विर्धे वा र प्याप्यें व हव सर में ल्रिन्सर्अर्घरालरः भ्रुवि अर्घरावि म्रिन्य अर्थन्य प्रमास्य स्वि प्रवास मिर् यदः र्से : वेयः ग्री राज्येत याद्वा प्राप्ता प्राप्ता स्थानेत विकास स्थानेत स् ग्रीशाम्बेर्त्रायान्वेदार्देश । स्टायान्नायाधेनादात्वास्यान्याः स्टायान्याः स्टायान्याः स्टायाः स्टायाः स्टाया न्रेंशायानहेत्राग्रम्पेत्राहत्ये अर्घेम्लिम्भ्रेत्यार्घेम्यम्प्रम् येग्ररायदे भ्रम् स्रारा भ्रम् व ना नर्डे साध्य प्रम्याया वे सर से दे नम् न् न्देशस्यानहेन्छेन। यर्नेस्थायन्सेन्स्यान्त्राच्यान्त्राच्या र्भेव मी में दाय अर्थे दाय विवाधित मान्य मान्य प्राय में दाय स् कुलानार्हे हे पळटाची यास्रेग्यायायदे त्यासुन स्थापन पदे द्वापन पस्ति है रोस्र १ वर्षी देव सहत् प्रमान मुद्र स्य प्राप्त प्रमान स्था स्य स्था सहया स्रोत स्रोत र्शेग्रायर्देर्', यात्रायर्था क्रुया क्रीया सेस्राय उत्त्रस्य या स्टास्टा वी भ्रवासाद्यात्रक्ष्यास्य वास्रवास्य वास्य वर्ते विश्वास्त्र स्थानि स इस्रायर नमून न्या कें या गुरा ना यदी यह मुग्या है रे के सूस्र हु या या ग्री न शुःख्रा भेगान्यायके यादिया । निन्यायि निन्यायि यादाया हुर:वी:वर:र्;प्यर:५र:प्यर:र्;श्रॅं:श्रॅंर:हॅवा:यंदे:वेश:र्वा:ग्रेश:५८५:वश: धॅव निव क्सराय प्रसंस विट निव मार्से नियम स्थान

सर्देर्-वर्रेवरसेंद्रशासदेगाहेवरसें प्राचित्वरायेंवरसेंवरसे क्रॅंशक्षेत्रा'यांडेवा'डंब्र'यांट'बया'शुदे'वि'त्र्या सुट'प्पट'क्षेत्रा'टे'य्यट्य'क्तुर्य' ग्री माश्रुर प्रेव राया मार वार ने यह या कुया हुया ग्रीय ग्रीव ग्रीया नक्षन्यान्द्रा देवे कुट्यायह्या कुया क्षया क्षेत्रा के या बुवायाया ग्राह्मरुष्या वेग्।याळेद्रासेदेख्याळद्रायासार्देरावाङ्ग्रह्मरादेख्या गठेगारु नसूर्य प्रते दें ने दें दें दें दें सूर्य दु स्ट्रेट मान स्राप्त राज्य स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त विरा ने सूर नर्रे अ से दा की निर्मा से निरम से अ से अ की वार्य का की निर्मा गर्रेषा वेरागर्रेषानः श्वाराद्याः हुःगद्रनः र्वा।

निवे मानगदिने हे शु देव मिरे गुराम हैं या द्वा

नवि'स'नगदिन हे अ'शु' इव'सदे'गु अ'स' श्रें अ'र्ख्य दी श्रु' अ'र्य देव स्थ्य अ'र्य देव स्थ्य अ'र्य देव स्थ्य अ'र्य देव स्थ्य स्

न्यवःग्ववः वस्र अः उन् ग्री अः वन् वः सन् । व्याः । व्याः सन् । व्याः । व्याः सन् । व्याः सन् । व्याः । व् बेट्रपन्यस्थ्रीरविर्यन्द्रम् क्षेत्रप्रत्यस्य विद्यास्य विद्यास्य বাব্রা-র্মম্য শ্র-বেন্ত্রিম্ম নেন্ত্রিম্ম ন্র্ম ন্র্ম নেন্ট ক্রেম্য শ্রী শ্রু ক্রম এন ম र्वेश्वराम् सूर्वा नस्यानम् स्वराह्म इत्राह्म स्वराह्म स्वराहम स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराहम स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराहम स्वराह विवाश हे यं से दे खुरा हे दे विवा यह या कुरा ही वसूद पान्य सहा हिंद यासर्वेर्यनिस्राचार्त्राय्ते स्मानुस्रा सरसा मुरान्रेस सुर्गे वितायर वर्रे वश्यासहर कु से वर्गा समानगव देव वर्षिय से र यह पर्वा । यह न्दः भूयः नः अष्ठः यः ग्वितः यः नः वृत्रः त्रादः न्त्रः अदेः नगवः देवः वर्षे रः अदः र्नेशन्त्राने। विभायदेर्भान्यस्यीकेर्केर्वेयास्टर्ट्या क्रमान्ता रत्नी में त्रु पें त्रार्य राष्ट्र के नर क्रिया क्रमा मुस्मा गुर्द क्ष्रानम्ग्रायायाः केरास्यानस्यानस्यानस्यान् स्यान् स्यास्य स्य स्य स्य से में दिए न शुर-न-वर् न-भूग-ए-वर्गानाया नन्ग-त्रु-अवे-बुग्रास्याहियाद्या हुर है खुराय कें रावें राववें या हवा द्राय राज्य का की वार्य राव वर्देवा धेन् यावहिषा हेव द्ये अवे देव से अस निम्म ने विषय है सुवाव इटार्श्रेटानी श्रें ट्राइंपानी शान्य शार्केना यायदे यहान है सु अवे है व से वाव शुदे देव भेव। रमनी रेश वस नमर्गे सूर्य साम्री न भारा विवा लिन्स्नि त्रुःस्राध्यायात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र मीर्थापी मोदे नह नसून्या विवाद विवामी या सुन्वर मुदि ह्या पार् या नक्ष्रात्राक्षेत्राक्षेत्र्याक्षात्र्यान्या सत्त्राक्षेत्र्या सत्त्रात्र्याः

क्टर-वर-अह्टी त्वायाक्रीत् क्षीं अवदः न्वाय्येत्र स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स

वेगा के तर हैं। श्रुँ र न तु तर है वे श्रु र भें

नगलदेव पर्ने प्यदः है १८ म्या कि स्वा कि स्व क्षा कि

यःमार्श्वेरानशास्त्रेशमाञ्चनाद्धया

त्त्रयान्त् | निःयानगायान्त्रेम् द्वान्त्र्यान्त्रेम् स्थान्त्रेम् स्यान्त्रेम् स्थान्त्रेम् स्थान्त्रेम् स्थान्त्रेम् स्थान्त्रेम् स्

नगवनिवन्तुः अन्यस्य सहस्य न्या । ने प्यतः भ्रास्य स्व हेन्द्रा भ्रम्भ स्वाप्त विवा प्रियम् विवा प्रियम स्वाप्त विवा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत र्वेश नश्रम स्वार्थिय तार्थिय न्या स्वार्थिय न्या स्वार्थिय न्या स्वार्थिय स्वार्य स्वार्थिय स्व यर्ट्योर्ट्यद्यान्यदेनगद्यविवर्त्युवर्यक्षेट्रस्य त्रुप्ति वि यहेशरादेशकेंगाधेदाही क्रेशर्म्यश्रायमा यदारादेखदार् यकेंद्राया हा नदी । नर्से नदे के ना निव कुस्य राखे व राधिवा वे या गुर्य साम्रूर र्रे । स्थिर्यान्वीयानश्चेत्रानगुरानवरावन्यन्यस् सुनान्वीयाने। सुःसदेः मुंग्राश्राद्यायावाचे भुदावस्रायदाळेषायाव्यायाद्यायाचे द्या नवे वनशक्तेन में मानकूम निमा क्रिं की मान सम्मान स्वापित करें र्'न्यादःश्रुन्'केव'र्ये नुष्राम्या व्ययावीन्'यादे हेवायापान्यन्'य नहेश्रामाश्रीम्थार्थे क्रुश्यास्त्र भूतानाष्ट्र दे वत्वेतास्त्र स्त गी'वर्चेर'म'डे'र्थेर'ग्री'श्रेर'त्रशासु'स'सहेश'मर'ग्र| बर'बेर'गी'सर्केर'म' इट वट में निवेश मा हुट पट नगय देव भीव हु के निवे पर् भी या मुहि ने प्यटा क्षु सान से दावस्था मार्से मा प्रवेश विटास में दिन से दास प्रवेश समास है। कुर्ग्युव्यक्षाकु केर्याशुर्यायय। दर्या संस्थित् र्वेर्या विषय त्यः अदे र्सु ग्रायः शु ग्राप्ते र रहे र त्या वि र या त्या अधित । या अधित वदेनश्रासदे के वर्ते चेरश्रास्त्रा स्थान हिंदा ग्रीट स्टास मिता नि वर्याविटादे त्यासर देवा ग्रीया पश्चार्या प्रदेशवर्ता क्या पार्या श्री रदा भी देवा

वेगाळे दार्जे स्थ्री राच तुन् स्टेश स्थ्री रासे

हैन्न् सेस्र निन्दिन्ने वा स्वाप्य प्याप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्व सासर्केन्यवराने भूरान् नभूरान्य हुने सर्म्य नन्यायी सान्यो नदे निनेयामहेत्रवि इस्या शिष्टी र दुः स्या र्रेषा वित्या र्रेष्ट्र र स्या र्रेषा या र नर्हें अः यः से दः यक्ता विदः यक्ता विदः यक्ता विदः यक्ति । यह यह विदः यक्ति । यह विदः यक्ति । यह विदः यक्ति य मयायहेयामराग्रुपायार्वे में प्येतायया त्रायया है सूराग्रुपायानवितार् तःविरा त्रः अत्रस्थराग्रे प्रवेदः प्राते स्याम् तः सेस्य एतः स्ययाप्ये रापिरः प्रदे नर्डें दःरःदशःन्रेंदःहे अदशःकुशःग्रेश्यरःदिविदःयरःनवेदःयःहेदःधेदः म्या स्याम्ययाग्रीः श्वायाग्रीः प्रवेदः याद्रायाद्रीयः यथाग्रीः हिरः वस्रथं उर् वर्षा वी शास्र र् वर्षा है। सम्बर्धे स्राथं उद्देस्स्रथं सुर्वः <u> शुरावरार्श्वेलावदे भ्रिराग्चरास्त्रवाग्ची सेससारेदार्ये स्टेश्वायाद्वार्</u> नश्चिम्यास्य स्विति।

गश्यायायह्याः पुःहे सूराग्राना

ययानतुत्रः द्वाप्तान्तः श्रुं न्यह्न श्रुं त्यया श्रं व्याया व्यायन्त्रः श्रुं त्याया श्रं व्याया श्रं व्याय श्रं व्याया श्रं व्याय श्रं व्याया श्रं व्याय व्याय श्रं व्याय व

गहेशमाश्रुव अळअशाश्राहे खूरागुना

पानिकारम् स्वास्त्र स्वस्य स्वर्थः स्वरं स्वर

र्श्वाम्यः म्हान्यः व्याप्तः व्यापतः व

गहेशमार्ध्व पर्चिते केंशमित नश्या द्ध्या

यहिश्रामार्श्वेदावर्श्वेदाळेद्यान्यस्थात्त्वे न्यावर्श्वेदार्द्वेद्वः के म्हेदाद्यावानस्थान्यस्थात्त्वान्तः क्ष्याण्णे स्थास्त्रस्थान्यान्त्रमुष्यानः वक्षः नाभाः म्याद्यस्थानस्थास्य स्थान्त्रम् क्ष्याणे स्थासार्थ्यस्भुष्यानः द्वा वर्षेत्रः नवेदे हेश्याद्येयास्य स्थान्त्रम् क्ष्याणे स्थासार्थ्यस्भुष्यानः द्वा वर्षेत्रः नवेदे हेश्याद्येयास्य स्थान्त्रम् क्ष्याणे स्थासार्थ्यस्भुष्यानः व्यानभूष्यानवेद्ये।

र्ट्रास्ट्रियामिक्षेत्र। ब्रुव्यामि । इत्राह्मेरान्त्रान्त्रिक्षा ब्रुव्यामि ।

न्दः में त्यः श्चे रः न्देशः सह्याः यश्वाः यश्वाः न्दः में श्चे रः न्वे रः स्वाः स्वाः यश्वाः स्वाः यश्वाः स्व ज्ञाः हे ः श्वरः ज्ञाः न्वे रः स्वे शः यश्विः स्वयः श्चे रः स्वे रः स्वे रः स्वे रः स्वे रः स्वे रः स्वे रः स्व न्वि रः सः स्वरः स्वाः यश्वरः स्वाः यश्वरः स्वाः स्व

 ग्री सेसमार्सेसामायानसूयानदे।

न्दःस्त्री श्रुं र्नेन्त्रःस्युःश्चित्रानिव्यत्ते प्रदे प्रदे स्ट्रान्यस्य क्षे श्रु निवह्यायम् नयवर्षेत्रवने ने केन्यर नेन कुन्याय भ्रिमान्ये र्देवःश्चरः व्याप्तरः शुरुष्या । यायः हे त्यरे त्यः यव स्यायश्चर्या । श्रिकः वर्राधराद्यायर्भेरावरायायायम् विशादरा रेरावियार्थेदाद्यापा नरे अर्केन विनाम प्राप्त प्राप्त निमान विभाग स्था निमान प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प्राप्त प्र प्र प् रेशन्यादर्हेरः विनायदे भ्रम्य अधिव यार्टः विश्वायर गुरुषाया विनाया सेन नःवशानस्थान्यश्वान्त्रीःवर्षिरःच वर्षेरःवर्षिरःवशास्याःवर्षः विवार्श्वेद्राविद्या सूवायस्यात्री सुनुस्वायायाया भारत्यायाया न्यामदे रें अञ्चन माला वियामदे अन्य या शुराना पा नारे अल्य हेगा न्यानार्द्यनायां वर्दे सुद्रासार्द्यसान्या विवान् नुप्ति साम्रुसानु स्टानी सास्टाया नश्चयान्वीयाने। स्टाउवाक्षेक्षेक्षेक्षेत्र्यस्य क्षेत्राचुराचुर्याच्या क्षेत्रा यार्त्तें गान्त्रत्र्यां शे तर्ते न्यारे तर्ते विष्ट्रा न्या न्या विष्ट्रा हे स्टर्ने न वे पर्ने पर्वते मान्न सामस्यस्य स्थापन पर्यम् न प्रमु स्ट उगा मी प्रस्य रात्यः कुर्वायः हिंग्रयः या अक्रेश्वायः विदे । क्रिंश्वायः विद्याः या चुरात्रयः विद्याः या चुरात्रयः विद्याः य स्रुस्रायाधितास्री सर्वारमामी मार्क् १८५ १८५ सामिका स्वरामी मार्वे । <u> न्यावर्ज्जेर्जी क्रेंन्या क्षेप्यन्यम्यस्य वीत्राया मेत्राण्यः कुन्याक्षे</u> नःशे'र्षेदःबिदा यथाची'मवि'यदे'क्षश्रायःश्वेदःवशायनद्वंगेदःशः इस्रशः ग्रदः सुरः तुः सुरः तः भी नरः वशुरः दे।

वेगा के दार्ते श्रु रावर्त्र हिया श्रु राये

न्वो निविश्वेष्य म्या न्याय हिंद्र हो निक्षेष्य म्याय है स्तर्भ स्तर्भ

न्ने निर्मेश्वर्मित्र विश्वरायम् । विश्वर्मे स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्था

गहेशनान्यावर्षेत्रमें वाके न्यान्यस्थान्यान्य क्राच्यान्य स्थान्य व्यक्ष्यम्

यश्रिमः प्रत्यात्वर्ध्यः में त्रात्यात्वर्ध्यः में त्रात्यः प्रत्यः स्त्रात्यः प्रत्यः स्त्रात्यः सत्यः स्त्रात्यः सत्यः स्त्रात्यः सत्यः सत्यः सत्यः सत्यः सत्यः सत

 ने स्ट्रिन्यात्र अञ्चन अयन विष्ट्र अपि देव के निम्या अयन विष् यानिहें यात्रयाग्राम्द्रितानितानु के स्री व्यव्यान्त्रया व्यव्यान्त्रया विस्रराधिताया क्रियाया इस्राया हेता परित्या क्री पा विस्ता पात्रा विस्ता विस्ता विस्ता विस्ता विस्ता विस्ता विस् श्चेति । ने प्यम् श्रीमः वमः प्रवेश्चेयायः श्चीः नमा नेवे वमः वया यक्षेताः हुः गुरामान्नी श्वेरानी श्वें या पाने और हेन या गरिंग्या दर्शे न ग्वन गरानी हेव पा पार भी भी या भेरे वर वया ग्राट ग्राट भी भी भी पार में भी प्रिया रुराया न्यास्यायायार्थान्या त्रायायरार्धेत्यीः स्रयायार वेंद्रशर्श्वेंद्रिक्त्रर्धेश्वर्क्षेष्यदार्श्वेर्ध्यम्भेजार्षदे नेयार्यः न्यास्त्रास्त्र यय केर सुव विद यस सुव पाय स सिंद कुर वस र उना वह स तु ब्रीट मदे से दे रहेत त्या बें नां माद्य नां विना हेत नावत नाट त्या पट से बें नां ने नि वेग्रायाकेत्र रिवे क्रियाया पर सेवे हेत्या क्रे नावराया विगाहेता श्री-त्रान्त्र तर्ह्न क्षेत्र क्षेत्र

ने क्ष्मरम् वस्य भूतस्य न्य स्त्र स

बेर्'राधेवा वव नव के वर्रे क्रिंट न वा बे नव नव के न वर्षे र्'ल्रियाश्रर्य र्'र्योदे से रिया वर्षे के से प्राप्त के सिंद में प्राप्त के सिंद में प्राप्त के सिंद में प्रा र्शे । म्रामी अरके म्या र्शेष्ट्र अरम् अरा सुर्मे निये मिले अरमि हेत् विमा प्रा सहया नर्सेन्द्रसम्बन्धः केत्रनमग्रम् न्यादर्हेन्त्रे से सुमाहनः धर उद वरे व्राप्त वें नामर शुर वे ना वे मार्श्वेद व्यवायर प्राप्त प्राप्त व वर्चर्यानुः सुन राष्ट्रेराधेन् प्रविदः सुने स्तुर्यान् प्रवास्त्र हुन्यायया सुन ख्र्वा परे हेत्र न वर में परे पर्न कि न परि के परे के न के न र्द्वेदार्यम् पुरस्ति द्वयार्यस्थित् निवेदानी र्देर् नुः हेद्दर्यस्थासः शुन्यम् श्रूम्यान्य। देव में केदे श्रीम्य राष्ट्रिम में मान्य राष्ट्रिया स्थाय श्रीया न्वेर्-से-सेन्-प्रमानीत्र-तु-सर्मार्से-सूस्र-नु-प्यर-न्-प्यर-नु-प्यस्य-न्-नु-ह्री निगेनियने नियामित्रे से मिनिया नियानिया हेन् मिन्से स्था मिन्से स्था से स्था से स्था से स्था से स्था से स कुः भेरः मशः वें प्याया रहे सा भेर्त्र स्ट्रा स यशिषामुभार्भेयः वर चेषायथ। यः खरार्ज्या श्रुरार्ज्या हेरारे या वियाः ग्रीशर्विःस्टाम्रीः बदः भ्रायः क्रुतः तुः श्रुशः दश् यः दार्टः सुः देविः बदः यशः वेशः यथा विरूप्ताची वर क्वियात्र था हियाहितात्र यथा दुर्था वर हिथाहिताया है। वस्यासार् । वस्यायम् वस्यायम् विषानी स्रेतः वस्ते। विषाहिसाहिसान वेरावें। दे नविवर्त्रस्य उपायार दव र्येट पाशुयर्त्र पात्रव प्राध्यय नविवर र् नश्रून नश्रून भाविषा नया वर्षेत्र स्त्री नश्रू न भावि । स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स् ब्रॅट्यायदे हि या या सुर हि वा वा श्रुट या सुर है।

मशुक्षासान्यावर्श्वे सहेन्द्रमाद्राचनस्य स्थान्य स्था

गुरर्वे वार्वे रार्के रार्वे हेव विषे विष्ठा में विष्ठा है न न न विष्ठा विष्ठा विष्ठा रदाह्रेदादगावाना है पीतासूस्रात्र द्या दिया वर्जे सामिता है । से दिया वर्जे सामिता है । से दिया सामिता है वर्चरःचर्याक्तुःविवाद्वीय। कुःषरःवाव्वःग्रीयःचर्यायायःचदेःवयःग्रीयः रदायाधी सर्पा रदावी देशात्र क्षा कु विवा सूर्या देशी शाया कु हे वाद लिव-स्रुस्य हिंच-द्रिव-सु-हिंच-हिंच स्राम्य हिंद-प्रस्ति हिंद्य स्राम्य हिंद-हिंस्य स्राम्य हिंद-हिंस्य स्राम्य नदी वेशमाशुर्श्या र्स्या र्स्या विष्याविष्यशाह्या स्थान्य द्वा स्थान्य हिन वहिते कु 'धेव त्या है 'या डेया सुश्रा के या है। विहाय के तिया विद्वार प्राया कुः अः तें त्राचिषाः सुअः श्रेः कें वाः यरः अः नृदः कुः नृदः तें नृषे नः सुअअः वहें अः न्वीयायाक्ष्म न्यावर्द्धिमाची हेराक्षेत्रायायायायाया स्वावेता कुरी वार्षे र्ने कुंय विस्र मुस्य प्रमान्य विया प्रा देवे क्षेर पुर में त्र सर्वे या सर्वे प यायार्सेन्यायायस्त्रित्वस्यास्त्रव्यास्त्रेत्र्यस्यास्त्रित्यास्त्रा यसंदे सामे दारा दक्षा स्थान स् रदारेते क्वित्राया विश्वान स्थान क्वित्रा विश्वान का विश्वान कि स्थान स् सूर है। दुंय विस्र इस सर द्या य विस्र गु न वे से पासुस य द्वा के स व्यःस्यः वर्षेवःवयः स्टःवीयः वियः त्रुट्यः यदेः वठयः सळ्सयः वयः दुरः बर्ग्यारक्षेत्राधेषाबेटा नक्कुषाद्धराबर्भेष्यस्य स्थरप्रदेग्राम् য়ৣঀৢৢৢৢ৸৻ঽ৻য়য়য়৾য়য়৾ঀৢয়৻ঀ৾৾৻য়৻য়ঀৢঢ়৻য়ৢ৾য়৻য়ৢয়৻ঀ৾ঢ়য়য়৻ঢ়৾৽য়ৄঀ৾৻ <u> सूर-५८-१५मा-५-से प्रस्तिम् अन्य विमान्य वेर-५-धिद विश्वास्य सेद-सें के ।</u> ग्रास्ता नेयावानाक्षार्या रे इस्यावी स्वया केराव्या येवा के त्या दुस्या येवा नेशन्दान्ध्राणम् कर्दान्यानः क्ष्र्राच्यानः हुन्दान्यानः हुन्दान्यान्य हुन्दान्य हुन्दाय हुन्दान्य हुन्दान्य हुन्दान्य हुन्दान्य हुन्दान्य हुन्दान्य हुन

क्रॅर-रर-भ्रे.योर्यक्षयाश्वाश्वर-राष्ट्रमा र्यायर्चेर-ग्री-हेर्यन वर्रास्य ठेगाः र्वेन प्रवे स्नुन्य पदि र गुहेर र र स्रू या यथार र र रें व से र गुयेर निये न्नरः नुः भ्रमः केषाः ग्रमः भ्रोतः निर्मा स्रोतः यदे वन्य अळें न , त् सूर या वेना या अळें न ने त्य असी क्षेर में निर्नाय य ग्वित ग्रिक रायदे ग्रुट कुन ग्री सेसस देत में के क्वेंस राय क्रे स ग्रुदे ह्या डे·र्धेर[्]ग्रेशव्यर्यस्य । देश्वर्ग्नेर्व्यस्य स्थाय्या स्थाये नक्षनः हुः नार्शेषा वेशः नार्शेषः नः भ्वाशः इनाः हुः नद्भः निः भूरः द्यः वर्चे र में क्रें र वरे व्यय में माने प्येत प्रथा र में क्रुं में या या र में प्रथा र में र्से र् सन्यान्यस्य हे से हे जिल्ला होते । दे स्ट्रिस स्वर् न्यान स्थान नशःक्वित्रायाः अक्षेत्रात्रवरात्रे त्वेत्रात् स्थानम्त्रायाः व्यापायाः व्यापायाः व नःगन्ना नेदेःगोग्राशःश्चेनःपःश्चेनः। नेःश्वेनःपदेःनगदःन्नर्गेन्सः वर्त्रोयः दे से दे स्वर्धायाः स्वरं स्वर्धायाः स्वर्यायः स्वर्धायाः स्वर्धायः स्वर्यायः स्वर विगान यस ग्री मवि परी नगाय हैं या से न ग्री हीं मान हैं न प विगारें मानूस र् क्रिंव यम क्रंव कर ग्री भावन पर ग्रेलें।

वस्र स्ट्रा क्रिंग क्र

त्रशुर्ग्

गहिरायावके ना श्री ह्मायान्यस्य त्या ग्रीट क्रिया ग्री सेस्या श्री सामायान सुराना

गहेशपादके न से ह्वापानसस्य र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्य स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत रायानभ्रयानायामहेश। शुक् ग्रीमें में याहे सूर ग्रुन ग्रुक सर्वस्थ शुःहै क्ष्र्यः गुःचते रुंवा वे। । ५८ में वा श्रुंयः ५६ मा ग्रुंश वशा ५८ । र्रे ह्रिं र नवे के अनुवा ने स्र र न न र प्रायम्य प्रेस पा वि स र र र र र वि वि दे। दे पर र वक्के सूस्राय र स विवा न से स्राय स्त्रा है दे विवय दे र सामे न:इव:म:अ:नर्झेअअ:मदे:हेअ:न्येग्अ:न्नः। नर्झेअअ:मदे:मव:पेव: इस्रयान्यसान्त्रीयायय। सान्ध्रीयसायदे हेयान्से वायाने स्टाउवान सू क्षेट्रात्र राक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यविष्ट विकास विता विकास वि श्चेरःवर्गःइवःमःविनाः हुरःवःदःकृतेः श्चेतःमःदवःमःवदेःवदः व्यार्धरः देवः सेदा ८.की.पर, प्राप्त त्राया वियात्य क्या शायश्या शास्य वा शास्य वा शास्य वा शास्य विद्यायार्द्रेयाया वियाविदार्द्रेयाया यात्रयाद्याद्रेयाया द्याया स्वायाद्रियाया गहेत्रः अ: हिंदः देवा अ: श्रेवा अ: देः देवा अ: ग्रेः न अ अ: दत्रः न कु: श्रवाः हेवाः श्लेः नः वर्रे न्रस्य राउद विकेषा सार्व स्वरं स्वरं स्वरं राष्ट्रे राष्ट्रे रायदे रायस्य सार्व वर्षे वा मीर्यायदाराधिदाय। भ्रेमासूराहे स्रेत्रित हेमाम्बर्मायार प्रायदे म्रम्या ग्राम हें वर्देरःश्रृंद्रायदेः नश्रयायायदे । वित्रश्राह्य स्थान्य स्थान्य । वित्रो श्रृंद्राचे । वित्रो श्रृंद्राचे । वित्रो श्रृंद्राचे ।

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्त्रा हेवास्थ्रीतार्थे।

ग्राम्य भीत्र विश्व स्थान भीत्र के नायत्र स्थान भीत्र स्थान स्थान

धुव-रेट-र्-गवर्गस्य-रे-वदे-ह्या-वहेंव-वर्गमानस्य-विट-नेर्-नेर-वर्ग रदाध्ययाहे दुः वेदशा ह्रे दुः ददः वठशायाया वेदाळवाशाद्या से दिरा योग्रायाञ्चरायाञ्चर होत्र प्रमेर्वायायास्य स्टायाद्यार्थे प्रमा दे प्रवासी हेरा न्भेग्रायायार्सेन्यायियार्ते। सुग्नान्ता हेन्यग्रायायायायाः सुन्वरा हुर-द-दे-द्रमामीश्र-र-कुत्य-च-द्रमा माल्द-त्यः श्रमाद्रमा-द्रमाद्र-श्रेसशः यःश्रेवाश्वार्यदेःहेत्रसेंद्रशावस्रश्वर्द्यादसःश्वार्यश्चेशःभ्रेष्य। हेत् र्बेट्शन्दे न्या वीश्वास्त्र स्या प्येद्र या शुक्ष स्थी न्यो प्यवे प्यक्ष वित्र प्यायमें व्य हे[.]द्रयःवर्द्धेरःकुर्ग्वार्डेद्रःयरःग्रुयःद्रयःग्रेष्टःयःद्र्यःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रःस्त्रः बेर्यस्य विद्यस्य होर्यकात्। श्वेर्यक्ष कें राहेर्याय कें यदिस् ळग्रास्तिःह्नाव्यहेन्दिःवर्दे व्ययान्ति द्वार्ये नाम् व्यवस्थाने विद्वार्थे । नदुन पोर पानदे वियान्य। सूर्ते से ह्या पाया सन्त न हे सा से दान रहे वर्ने मरावळवा है साम्रेन्य से ह्या सासाइत तर्ने रासे नरा के वर्ने सर वळवा कें विने वर्ष स्वारे के मुका कें का कु से विकेष में विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के र्हे निवे वियान्या वके नायान्त्रायमाके वर्षे व्यक्त वियाने वित्रे हे नित्राम्य

यानम्यासान्दात्व्या के ज्ञानात्रक्ष्यात्री विका महाद्या प्राप्त विकानियात्र व

वक्रे न देव न वे न वे न

वक्रे न इत मदे मद प्रविदेश वक्रे न श्रेट श्री मान स्वाप्त स्वाप स्वापत श्रूरश्यायाविवार् दिर्भे श्रुराव्यायावश्यदियाहेवाधीयर वर्षे प्रे रादुःकुलःइवाद्याद्युदिःकुःभ्रेगाःक्ष्रःश्चिताःन्। श्वेःसानदेःदर्योः वि हीराकुषादिस्यानसूरानाद्या वर्षिरानासम्यासेरामी सूनानस्यायसः बर्ग्यदे के न् न् व्याप्त स्वराया मुख्याया स्वराया निवासे स्वराय स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराया स्वराय इ. क्रेब. मू. च. च. क्रिंग व्याया कर त्या पर दे चर चंदे चर वा खेर पर हैंग्रयायिष्ट्राचा सुरात् सुराया सुरावा से ग्रायाया समया उदा ग्री सि से । नरत्यूरर्से । मेर्ने नदेख्यक्षा देन् ग्रे सूर्ये या से म्याया स्वापा वर्रे र्रा धेव हे हे वड़े वर्रे वर्रे वर्ष हुर् वर्षे वर्ष वर्ष वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे नर्यान्य स्टर्म हिमासु महिया खु से दास के स से या हु से दा में या वि नरः नेशर्उं व्या केंश्रित्रं राष्ट्रिश्चारा चुरः से द्रास्त्र स्वात्रं विदेश्या

वेगाळे दार्जे स्थ्री राच तुन् स्टेश स्थ्री रासे

विषाक्षात्रात्वेषामिर्देन्द्रिन्याधेष्ठ विष्ठ क्षेत्रात्रात्वेष्ठ विष्ठ क्षेत्र विष्ठ क्षेत्र क्षेत्र

दे । यदः व्रेचा अरः क्रेश्वा यद्वा पाद्वा यद्वा । यद्वा यद्वा । न्वीं वर्त्रा वर्त्रव्यवायेवार्वेदायमेयान् वर्वे वायदायने वार्वेद्रा व्यवरा वज्ञश्रास्त्रात् ज्ञेत्रायात्राध्यायद्ग्रियात्रभूषावितायदेवे स्तायविता सर्विन् नुनिन्निकार्से । श्रिव् श्रीन् मान्न स्रवे मान् निम् स्रकार्य प्यापन् स्री धेन्या गुरुष्त्र अर्भे अप्यान्ता वज्ञ अर्गु र्वेन प्रवेर के प्यान भे रही प्रान्ति प्रवेर प्र स्ग्रास्त्रसेट्रियसक्स्रास्य वेत्रस्य स्याप्तरस्य स्वाप्तरस्य स्व हुःग्रायः के न्तरः श्रुनः वनसः गुतः नव्दः न्दः श्रुं नः नव्यूसः श्रुं तः से ग्रासः स्ग्रामा वी प्रविद्या स्मिन्स प्रमास्य वर्षे स्वर्धित स्मिन्स स्वर्धित स्वर्य स्वर्या स्वर्य स् भ्रे ग्रा बुद न्य भ्रें या अवय य र ग्रा शु अ र प्रयो अ ख्रा य अ र प्र भे र प्र भ गुर्दे॥

ने भूम न्याययय विवाधित प्रति प्रति स्वाधित स्

व्हरमागुरारेमामायके नार्देर। धुवानारातु नमूत् गुरावके नायमाभे बर्ग ग्रम्थान्द्रियः ग्रह्ये व्यव्यात्यस्य स्थान्य वर्षात्राम्य यतः श्रुवः न्धुनः नेयः में स्यायः ग्रीयः श्रुः ग्रुवः वयः गर्ययः विनः नश्रुन्यः ग्रम्धिः वर्षो क्रेवापार वी याग्रम् वर्ह्से पा से ख्रुवा यस से या समायके प्रवित्रा धरासर्वि सुसान् सर्वेदाचा वदी सुराधेवा रदारुगा इससान सुपार्शेवा यदे पात्र शः भ्रम्म शः यदे । यः यहे पाः हेत् : श्रेः अरः श्रेः वर्शे । यद्ये । यरः श्रें प्रायः श्रे अर्थः हे। रटाउगासदेःसदयादयास्रोत्राउसाहेट्यसास्र्र्नाउँगाग्रहादयादर्शेः व्यूर्अर्भरत्रकुः यर्गामी दूर्र् वर्मे प्रविष्य भीव स्र म्या शुर् ठमा इसमा ग्री के समा केर दी प्रम्या बेता के ख्रमा खुर बर प्रमा पर ह्यूर्न्, वहर्न्याया केवा या सेन्यम् नियम् नियम् अर्थेन सेवि हे न्या में खूरा नन्दर्यानर्भे सेन्यम् बुम्न्यन्य हो बद्द्र्या सुद्रान्य सेन्य ५८। रे.चाबर.की.के.तयय.स.२८। के.प्रीट.च्या.सुष्ट.क्ये.प.ह्य.सूर.सूर डेग्'रे'रेश्'ग्रुट'रय'नशॅं'शेट्'यर'वळे'न्न्ग्गे'तुट'र्'पर्में'नदे'ळ्य' इस्र क्षे क्षु के वार्य द्राया राज्य स्था है। देवा से द्राये देवा त्र के विकास की कार्य है। र्अंगित्रं वर्केशक्षात्वाकेवार्ष्वित्रं व्या नदेः न्याधेव । यथा नेवा । या केव । यदि । या न यथा । यदे । यु न । यु न । यु न । यु न शेसशरेत्रिं के नर्से साराया भ्रेट वर्गा रात्र शायन रामर हरि । दे स्ट्रिस त्रेन्'त्र'यर'त्रुः अ'युर्य'त्रेत्र'त्रीय'नक्ष्य' ह्रिय'र्सेन्य विय'र्सेन्य यार्सेय' नःश्वाराद्याः तुःवाद्वः विषायरादक्वेःवरः सः वद्या वसादक्वेःयः देशः

वेगा केव क्वें क्वें र न तु तु है वे खे र वें

मासेना वक्के निवे क्रेन के समा मार्सेन मिन के के किए। ने प्यम्म मार्सिन क्रिया वह्रमानुः ब्रीटायदे कें वादेशाया से दायाद्या नुश्रामा धेन पदि वके क्रीन निवाहास्यान्य में जुराहेटात् से प्रकेष्य में प्रवाद मार्पा से प्रका त्यायाधीवायवे प्रके मेवाद्या पाश्यामा स्यया ग्री व्याप्ता स्या रदः ठमा इस्र भागी खु भा हेव पदी वे खु तुरा नवेव दु मेव खुदा बदा रेश गुरादिवारायाळेवारायोदायरादाराव्यायावरी विवाहायायळेवा न्दे ने ने ने न्या अर्थ विषय के निष्य क सकेंगाने जुर कुन ग्री सेसस देन में के पीन प्रमा सेसस देन में के पदे नर्झें अप्राया क्रे अप्तुवे इया है प्पेंद्र ग्री अप्यन्य प्रम्य ग्रीवें । दे प्रूर ग्रीद्र त्रा धरः तुः अः खूर्यः चित्रः चीर्यः वर्त्तः वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः गन्नार्ने। विकेष्विः नियासि के स्थायि के सामानि मार्था मानामी सामाना से स्वराने। याहेत्रहेर्द्रहेर्ज्याग्रीयायवरान्र्रीराग्रदारायां विवास्ररावर्गे विवेखें शु लराईशाश्चार्या वेराग्ची सुरासे है से पार्वे गार्वे पारा हवा स्वारं सा विगा हिरान्नर सेना सदे सम्यान्य स्था द्वार हेगा स्रे सार पार सार पार स्था पर वर्देर-दर्गेशन्यविवाक्षिके हें श्री देशन हें वाकदासानि वासामानि अर्केगामी मुग्राश हेर पर्मा

स्वायान्त्री होत्त्रीय स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्य

यश्वा प्राच्या यश्वा विष्या विषया वि

मुन्यःशुःवर्त्ते नदेःश्चे नयः ग्रुटः कुनः ग्रे सेस्यः श्चे स्यान्यः नश्चे स्यान्यः नश्चे स्यान्यः नश्चे स्यान्यः नश्चे स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यानः स्यान्यः स्यायः स्यान्यः स्यान्यः स्यान्यः स्यायः स्याय

षश्चर्यश्चर्यायाः निष्ठुं नःसेन् प्रदे रहेषा नश्यश्चरा नुषा गुन रहेन ग्री शेशश्रीयापायानभूयानवि । १८८१ ते श्री विस्ताता साम्याद्वीयानवितापवे ८८.वर्षायदी.क्षेत्र.चर्षात्राक्षी हेट.सर.ट्याय.ब्रेट.हेट.व.ट्र्य.क्ष.चयु.ट्य. वर्चेर्न्स्यी हेन वर्षे सुर्न् दिया केरा विया परि देया हु प्यार न सामाय व श्चेत्रनेत्रायात्रयायम् यो नि नानित्रम्म नी मह्म निया कुत्र कन्यम थी। वशुरावराष्ट्रास्त्रे वालेवालेवाद्वीया क्षेत्राया प्राप्ता विवासी गहिरायरायायन्यानिता देगाहिरामात्र्युः महायास्तर्वात्ये । यशनगरवग्यीशग्रान्यस्यायाविवः हुः श्लेष्ट्रात्येव नर्गे अया रहः नमन्भामा हुन। नना में दे त्यमा झार्से मे भा ग्रामा मह से मार हो न ठे तर् विग हित्र शुरा दुर्द वर्षे वे स्वा नर्षे वा नर्षे वा तर्षे वा नर्षे धरः गुःद्रों सः यः दे।

विश्वाश्वर्षः संभित्रं विश्व स्वार्धिकः विद्यार्थः स्वार्धिकः स्वर्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वरं स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वार्धिकः स्वरं स्वरं स्वार्धिकः स्वरं स्वर

वश्यश्यावद्यी देव कुं भ्रेगाय श्रूर विर प्रो प्रश्चाय श्रूय प्राप्त विष्ठ विर प्रो ।

देशन्त्रत्यात्र्यात्र्यात्र्याः इत्राचायात्रम्यात्र्यात्र्यात्र्या

नशुरान। नश्यानश्याम्यानश्याम्यान्य नशुरान। नश्चरान्य नशुरान।

नुष्यान्तरे सूचा नस्यानस्यानस्य न्यान्तर्था न्यानस्य न्य

गश्रम्याया कंन्ध्यानकुन्संने प्रस्याउन्ग्रह्में पावि स्वाया नश्चेन्यार्थाः श्वादि से वनराना भाष्या मी सेटा न सुवा सुरावहिन्या सुर रुट्यासटार्सेसाम्बेर्पायापटाचा इसाया श्रुकेषासाम्रीसावकेषा प्रमुख नदे सुरा ने व र तृ के ने द र पद न द हुय सुद हरा र ही र सर्कें व क सूर क्रियाश्वास्थान् स्रान् स्रिट्र्यानेवाया व्याव्यवेवायुवाश्चारा देवियन्त्र्र् दक्षेत्राचा वयावानेयात्रुयात्राची यातृत्राच्यात्र्यात्राच्यात्र्यात्राच्या विगान्यार्से नहनात्र अप्तात्र सूर्य प्राची विगाया विगायुग्य अपिय र्से से त्वर न्या सुरा द्याय विया स्वाय विया स्वाय राष्ट्रीय राष्ट्री से दर्ग त्याय विया स्वाय विया स्वाय राष्ट्रीय मिल.री.पश्ची ल.प्रशास्त्र.की.त्यर.यातर.कैयात्रासी त्यातः व्यातः व्यातः व्यातः व्यातः व्यातः व्यातः ब्रिट्यार्चित्यः वर्चरः त्रसः स्राचा वर्चावः विचाः श्रुचार्यः विदः स्रें स्रेट् स्रे वर्चरः वर्षः वर-र्-नश्चेग्ना यायाधुग्रम्भाषर-रे-वर्-हेश-रेशमी-वर-र्-नश्च्याः हे-नश्चेनामा वनावः वेना भुनारा ग्री नारायः वेट मेरा वर्षेट्र राज्या शुः नेदेः नरःस्वाःक्षेःवार्ययःविरःययःसे वनरःनर्यःस्याः स्वाःन्येवाः या वनावःविनाःभ्रम्भः बद्भः क्षेत्रः मिं क्ष्यः नदः नदे नदः न् उना त्राः नः रुषानुषानुः र्रेट्ट नेवायर पर्केट या विवाय नेवाय सेवाय सरसेदेर्श्रेट्युग्विव्युर्श्याष्ट्रस्य स्था उत्ये प्रवर्णित्य विव्युर्श्येट चर्या अप्रेन्द्रन्त्रम् वर्षा वर्षे वार्षा स्त्रेन्द्रम् व्यापा स्त्रम् स्त्रेम् उदार् ने याना उसा यया नुस्या निये से नाम निया से न क्षे स्वान्त्रस्य न्याः स्वान्त्र स्वान्य स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्व

ने प्यट अपदि त्र अप्तर्भागाः क्ष्य शुर्भा वि है अ क्ष्रिंट मी दिया व रहा तुर उदा ने द्रश्रान्यवा कन है शा हैं महिन वी शा केंन्य द कु तुम है वा वा श्रीविष्णविष्णात्री क्षेत्रमा क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्ष्र-वार्याया वज्ञ-क्ष्र-क्षेर-वार्य-स्रे-वार-नुश्रुव्य-वज्जुन-वित्र-धर-यश्रिर्याय। य्रारात्र्ययात्रम् नार्याते प्रमान्य विष्या में स्वापार्ये । ग्री-द्विश्वासु-कुद्र-या विवाश वस्रश्वर-वाद्य-देश-वर्भेर-वा स्ट्रेट-द्याप नःतुःधुगाःवर्द्धनःनिविःम। सुवःमःनिवःतुःगवनगःमशःस्टःमीःयगःमः नमुद्रनभुअ। अदिद्या वहिन्य अरु दुद्रन्य अद्रान्य विश्व विश्व दिर स्या भीत्र हु के न विवार्स्य दर्द वार निवेश स्वा न स्या न स्या न बेर्'यस्यान्द्रस्याने ख्रान्स्यान् स्ट्रिंट प्राच्याया विद्या देश ही हिंद् द्रा श्रेव र तु ' भ्रुवा य र ग्री ' य कु ' उ व ' तु ' य य ' शु य ' शु य । श्रे प तु य ' श्रे य य ' तु य । श्रे य । वी निरा वा निरा के विषय के वा निर्मा निर्मा के विषय के শৃথ্যুদ্য

सर्देर्द्रान्सुयानवे जात्र भारे दाधी दार्द्रित ने देश हैं । स्यास्त्र द्यालर.सुर.कुर्। यर्.यदु.स्रयश्चर.कुर्य.क्य.कर.सुर.स् नकुःस्रमानुःस्रमास्रम् मान्याः स्रमान्याः स्रमाः नश्यादे नश्रयानामार्वि स्टामी अष्ठश्रश्रश्चितायामार्वितः ग्रीशनहें न्राम् भी तुर्वा प्रमाण्या भी ध्याया ग्री स्वा नस्या सम्भाउन नर्देशश्राम्यान्य श्रियानिष्य स्वाप्त्र स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स न्ह्ययाना इस्रायायी ध्युवानी से सारे गान कर्नान स्याग् र् गर्हेर्रानाक्षानुवेरनश्चानवेरहस्याधेर्पान्यराम् हेरवर्गनेश्चा नदेःग्वस्थःशुः भूरःदे भूर् छेग् छं या परः नरे नदेः भूनसः सेर् छेर। क्रॅंशक्षेत्रा पाठिया सेस्र सार्या प्रयो सेस्र सार्थी में प्या से स्वार स्वार से स्वार से स्वार से स्वार से स <u>ढ़ॱॿ॓ॻॱय़ॱख़ढ़ॕॻॱॻॊॱख़य़ॱॻॖऀॱॺॢॆॸॱॸॕॱॻॖॸॱख़ॖॸॱॻॖऀॱऄय़ॺॱॸॆढ़ॱय़ॕॱख़ॆॱय़ॱॸॣॕॱ</u> र्श्वेट्ट नियं भूत्रयायायायाया देशन्य देश्य त्या वर्श्वेट सुत्र शुया र्र्शे वार्था यदे अन्य वर्दे र वेवा य सर्केवा वी त्यस श्री श्वेर से श्वर कुव श्री से सम रेव में के नक्षेयायाया क्षेया नुवे ह्या है प्यें न ग्रीयावन पर नुवें। दे सूर हो द त्रायर हु या सूर्य हो व हो या न हा न हिंचा के या गर्सेवानः भुग्रास्यान्तः मान्यः ने।।

गहेशनाधिन न्याया गुः स्वानस्या नस्या नस्या नस्या निर्देश न्या गुर खुना गुः सेस्या ।

गहेशायाधी द्वायाधी स्वाप्तस्या तसस्या तसस्य तसा गुरा क्वा छी। वर्ने भूर नश्र भी रम है निर्ने से म्थू नुः भी नश्र प्रश्न स्व स्व प्रव निर्मा धी-द्वायाची-वावयासु-भूवा-वस्यावर्षिन-स्वाययास्य स्वायायास्य स्वायायास्य स्वायायास्य स्वायायास्य स्वायायास्य स्व न्हें अ'से' दुर बन् गुर सेन्'या वार्वेन पाइस सम्बन्ध साम प्राप्त वार्वेर र्रेट बन से जारे के मार्थ के मार्य के मार्थ के म अज्ञेव राहर रंग मर यना वहना या रंग पेंदर्ग अर्गे विव हु के ना भूभासुभावसभाउदाविनभाषा र्वेटानुसासेशास्त्रानाः सुन्तुः विदानुष्पटा नवे खुराउदा मदाया वी राखुरा हो वा पर राया वहे हैं वा हेट हु। वा पि.पिय.शुची.श्रमात्मभाभीट.ता यग्रमाभूभाग्नी.सैची.यर्कताग्रीमाक्रमः गर्रसाने विराधान्या ये नकु दे नर्तु वर्षा गर्या गर्या विग्रायाया नकुष्याक्षरास्त्रम् नकुष्याकुरास्य स्थास्त्रम् स्थास्य स्था नरपर्देर्वशर्से वार्या देरसिव पाद कुः सेर्परस्य केंद्र करे करप्या यद्रा वर्गविषायः भूविष्य अः सः भूः भूः भूरः दे । यरः वर्गवा ग्रारः वर्षा रवः वर्षः

वेगा के त क्षें क्षें र न तु त हि ते खें र में

ने श्वेन अप्राचन कु इन विन हुन हुन र न न न अर्केन कि सेर में र विन र न र्शेवाशणारानाः १ सूवा हु त्युरानश कु से र्शेटानदे विरादि वाशाना मर्वेद्रायान्त्रम् अवाद्याप्त्रम्यान्य विद्याप्त्रम्यान्य विद्याप्त्रम्यान्य विद्याप्त्रम्या नवे के त है नवे दें न व के व का का का का का का कि त क्षुनुदेरेनेग् चुः नेव हुः कं नरः चुरः वयः ख्यान्दरः नः न्त्र प्राव द्या म्राम्यते के ते ते ते ते त्या राष्ट्र मा निष्य वा निष्य मा निष्य म सुर्यान्य निर्मान्य गुर्वा द्राया नुष्य में नुष्य निर्मा निर श्चाय्या श्चित्र वर्षे अया स्वायम् स्वायम् स्वाप्त्र वर्षे व नन'न'रे'रुंग'रोन्। गन्र भ'ने र'सूर'न'रे स्गा'नस्थ'न वे र सुग्रा रासे र मशः कुत्र-तुः अत्र-त्रार्गे शेश्रशः श्रीः रेयरः कुत्रायः श्रीः नात्रायः त्रा इरक्ष्राची सेससर्दे में के त्या हैं हैं दान दे ती सूनसामा वा पेर्टी देस द नःक्षन्यवर्षेत्रस्त्रस्त्रस्य राष्ट्रम्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य स्तर्भन्य ग्री भ्रेट में ग्रूट कुन ग्री सेसस देन में के नर्भे सामाय भ्रेस ग्री के न्या है। नक्षन हुनार्रेया वेरानार्रेय न भूगरा ह्या हुना न न ने।।

गश्यामान्त्र वर्षेत्र सूगामस्यामसस्य प्रति र्स्ने व्यान्त स्थान

यशिषातारीर तम्तुत्र सैयायकतायश्वश्वर प्राचिर क्या ग्री श्री श्री श्री

नससाक्षे रूटा हेटा देटा क्षेत्र से निष्य स्वाप्य स्वापित स्वाप स्वापित स्वाप स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स त्युंदिःश्चे विषयःशुःश्चर्वः वे श्ववा वर्षयः वर्डे दः वर्षायः वर्षे यः वर्षे यः वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व है। रूर्वि: हिर्याणी: पात्र्याम् अर्कें केत्र से दे त्र स्व कर पी ह र्रें र त यावर्यायते स्वराया विवर् सुर्या हे याव्याया र्राया है र वर्षे के या कु सेवाया श्रेवाशास्त्राकुटानावनुस्रास्वास्यास्त्रीत्राविवात्यात्रानात्ता कुटाना इसराग्रीराके नदेखारासुना है जन्दा से खुया दान्य रापदे न्द्रि इस्रमाने वार्से दारा दि दि । विद्यापान वार्षे वार्या वार्षे वार्या वार्षे वार्या वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे व ८८। शुःष्ट्रेयायः ५८। ह्रवः यश्यः वळे च ५८। वटः यवः द्वं व वार्वेया यी शः गठिगा वराया श्रेंगाश्रास्या रास्या रास्या रास्या रास्या श्री श्री रास्य रास्य रास्य स्था ग्री सेना त्या सूर न तदे न विवाधित त्या सूना न स्वाम्य न विवाधित स्वाधित । स्टारे दे श्रेवा ता श्रूद विदेशे दिन्तु श्रूवा वा उद क्रुवा श्रम्भ उद समाविद्या है । इवा विना कुन कर सेर पर पर्या गण्डा र दुर विश्व स्तरेर स्निर हेन । न्नरः सेन् प्रमास्य भीव रहा भीवा सामे विकास से वा सामे से वा सामे साम से वा सामे साम साम साम साम साम साम साम स नन्याने सूना नस्यान वेन सूनाया या यो ना र सिंह ना पर्ने प्यता स्ट से पे वि न सिंह मा प्र ननः व डि डिंग हो । न द्वार रेते खुराया शु तत्र राष्ट्र से से सूर प्यार ने यानेवा हु से नर्वे स्वान्यस्य यदी यदा विवाह न्रेस्यासुःस्टान्द्रः विज्ञान्ते ने त्यन्तः विज्ञान्से व्यवस्य स्टान्य स्टान्य स्टान्य स्टान्य स्टान्य स्टान्य ग्रवशने वर्षा है । वर्षा विष्य है । वर्षे वर्षा के वर्षा ग्राप्त के वर्य के वर्षा ग्राप्त के वर्षा ग्राप्त के वर्षा ग्राप्त के वर्य के वर्षा ग्राप्त के वर्षा के वर्षा ग्राप्त के वर्षा के वर्य के वर्य के वर्षा के वर्य के वर्य के वर्य के वर्य के वर्य के वर्य के वर के वर्य के वर्य के वर्य के वर के वर्य के वर्य के वर्य के वर के वर्य के वर्य के वर्य के वर्य के वर के वर्य के वर्य के वर के वर्य के वर्य के वर्य के वर क

वेषा के दार्से क्षेट्र न तुन् के दे खेट से

इत्। द्वो श्रेस्य द्वार्य द्वार द्वार्य द्वार्य द्वार्य द्वार्य द्वार्य द्वार्य द्वार्य द्वार द्वार्य द्वार द्वार्य द

गहिरामान्ग्रीत्रासकेंगागर्यसायाश्चर्याम् । सेर्थान्यस्त्राम् स्राम्यस्त्राम् । सेर्थान्यस्त्राम् स्राम्यस्त्राम् । सेर्थान्यस्त्राम् स्राम्यस्त्राम् ।

यहिश्यान्त्रींद्रिः क्रुंक्टाः या ने यहिश्यानाः दुनः हिना सेन्द्रस्य स्त्रीं विश्वास्त्र स्त्रीं विश्वास्त्र स्त्रीं विश्वास्त्र स्त्र स्

वर्वेदि कु से र्कंट नम सुनमा वर्वे क्या द्या हु से वर्वे र दें।

रें प्यट वर्षिर न न्दर द्वर श्रेंट नी सूना न सूवा वर वित्र शास से द न शुन्रायमें हो न् सिया है। ह्या ग्राम किया है या देश है। सम्पर्वे स्वी स्व र्क्षेण्याय भ्रेट वया वेव पविव पुरा प्रेर प्यया न भून पुरा न स्था न स्था न क्षेत्रान्ध्रात्य्रशाद्यात्राच्यात्रा द्वार्त्यात्राचे स्वार्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या ने प्रदायान्गे विस्र के वायी ही वास्त्र नाया प्रायह्या । से स्र शक्ते प्रदेशि स्रेन नगुर-भूव-ग्राम्थ-त्य-क्रम्थ-व्याः है । हो दः देवे । व्यायः शु । हो दः प्रवेव । दः । वि व्यायविरावाययात्ररावरायह्रात्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या वर्ग । नुःक्षःस्टःसे खुंषः वर्क्षेशः ग्रीः दः न वर्षः न श्वीनशः या निष्यं । ग्रथयः सॅरान्रस्त्रताल्युः इ.स.त् प्राय्याम् स्ता दे ते से त्राप्ता स्त्रास्त्र र्दे निर्देश्यान्त्र निर्देश न <u> इ.च.चर्चर, सेरी ब्रिट. ३.ज.२.घश्यात्रा २.६्य.य.५८.कु.ली.</u>ज.य. वरक्षे द्वस्थ से देशे द्वस्य स्था स्था से से ते हिन दे ते हिन दे ते हिन दे ते हिन दे ते हैं ते हिन दे ते हैं त यरयामुयापादरामु अर्राद्रास्त्र स्वरायापाद्र स्वरायया वित्र से स्वर अन्दर्भन्यव्यानेरावे ने निवित्रन्य स्वाग्यम् विश्वायाया गर्नेग्राश्रेयश्यीः स्वाराविंद्राष्ट्रायरावें व्येत् कें वदेवे सेगा हे सार्थे रे'अर्बेट'र्ड'त्र र्कें अ'र्बे अ'योर्नेट'र्सेट्'स'यदे'या'धेत्र सेंट्र यावत् क्षु र्वेग विंद्राया रेपान्य स्थ्री वायद्या रिंद्रा के या विया यी राया विवा के या या राया रे राये विगायार्वेशावा रदामी द्वी सुँ र र्ह्नेशायहर द्वा यहिर हे दायव्या

वेगा के दार्ते श्रु रावर्त्र हिया श्रु राये

यद्भा विवास निवास निवास

देश्यत्र चित्रास्य सुन्य प्रमेति कु गिहेश से प्रदे प्य प्रवद्य पान्य प्र कुर्त्। विट.ज.भैचर्याश्चरम् यदुःलीज.वू। र्हेच.य.सरमाभियादी देश. नसूत्रासदे सुर हें न्या राष्ट्री रहें या निवास के राष्ट्रीय स्वीत रहें सुन सदे र वसमार्था प्रदे । द्रमे । वर्ष म्हार्थ । वि. व रह्य न स्थे द । स्थे द । स्थि । स्थ । स्थि । स्य । स्थि । स्थ । स्थि । स्थि । स्थि । स्थि । स्थि । स्थ । वहिना हेत ही ख़्य शु के इसस ५८। दे ५१ ना भुनस शु वहित पवे सु स्रेग्र भारत स्रम्भ नित्र के राज्य वा सम्स्रित संदे से प्रवी नित्र प्रवेश वाहेत इसराद्रा देद्राचीरावस्वायदेक्ष्यास्य स्वरास्यराद्रा केरावदे यश्रिःर्या, तृः शुरारादेः र्शेषाया रदा ह्रयया या सुनया शुः शेषा तुरा से। सबर विवानी सुन्य शुर्ववूर न यार्ट हेर् यहेवायारा वस्य उर्पय स मुजा यावयः यह यायः सः यायः श्रीयः यप्तः व्यययः याय्यायाया ग्रायः ययायः हेः केव में हे मेर से द सम्प्रम्य सव महमाया स्राम्य स्राम स्रा यहर्मा विवादवीयाया देन्ध्र तुवे प्येत प्रताहित पर उत्तर स्थया कराव दे र्द्भेव:रा:अर्था:क्रुया:पठिया:पेव:क्री व्हिया:हेव:क्री:ख्रु:अत्रु:र्ते:केः र्शेनाश्रात्याधेवानुवाने प्रवासी वरावश्यात्री विष्यात्र स्थिता स्थान स्थान रास्त्रामुस्तित्रवस्तुत्राचे सेन्यते सुनस्य सुन्साया ने देस्या ने से साम ग्रम्भूत्र शुः धेद् के शायर विद्यूर तथा दर्गे व सके वा वा शुया ग्री अंतर हर्राक्केर्न् साम्यान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त धीर के अप्रादे रद्दा पर हे विशेषा ह्या विदेश अप्राद्दा स्था में अप्राद्धा वयानक्षरयाने ने याववन व ये दाये कें से यावर्ष या से दाया पायया भुन्याशुर्वो निःधूरःभुन्याशुर्वो हेग्रेन्सर्वेगः गशुस्रार्से सेंदे पेंद्र हदा इससा ने सामा ग्रुसाया पर दर पर दुः पेराया गुरु हे र ले र के पर्दे दर्भ दर धीर के र गी दर पर के हे द गी द गी व र्शे श्रें र गुरु या है 'क्षेर निर्देश या प्राप्त श्रें श्रें र अर्के द या है 'क्षेर है जा प्राप्त <u> न्रों व अर्क्च ना ना शुस्र न्दर ने त्यस्र भ्रे सें त्य पृ श्रुस्य प्रमुस्य स्थारी अर्क्च ना न्यदः </u> ग्री वित्र प्रमाह्म अरावित हुन्वे अर्थम ग्रुअर्था अर्थे महिना प्रवे वियम् ॻॖऀॴॸॖॾॖॸॖॱढ़ॴॸ॓ॴॴॸहढ़ॱय़ॕॱॸड़॔ॴॴॸॸॖज़ॸॸॾॣ॓ॴॳढ़ॱॺॖॕॴॴऄॱ र्सेम्या ग्रीया र्से मान्त्र प्राच्यू र से स्वाप्य निमा स्वीपा स्

ने भूम में अप्यायद्वर में विवा हुर व वे भीव हु नश्चा अहे। र्षेत्रा अेट व्याय अप्याय विवाहीं नर्षे अप्याय विवाहीं विवासी विवाहीं विवासी विवासी

व्यामें अयापाव निर्मेव सकेंगा मार्थ या है या शुः इव पाया पर निष् यद्रा हेशःशुःइवःयदेः सर्यः कुरुदेः विवायद्याः वीर्यः ग्रुटः विवायद्याः के.स.र्-अंस.रं.वेर.केय.ग्री.स्रस्याश्री.य.रेटा हेय.सक्य.गीय.धे.सरस. कुर्राणिन खुरान् सुरावर विद्युराव निवासी क्रेव के तुरा धरान में वासकेंगा गुरुषः हे अःशुः इत्रः यथाः शे कुस्रशः यरः वयुरः तः सँग्रयः पेत्रः कृतः सम्रयः प्रभारा विवासिं प्रभावासुरमा ने सूर रेशाया नहतारी वर्षाया सूर्याया য়ৼয়৾য়য়য়য়য়ৼয়য়য়ৢয়য়ৣ৽য়ৼ৽ঀয়ৢ৾ৼ৽ঢ়ঢ়৽য়য়ৠৢ৾য়৽য়য়৾য়য়য়ঢ়৽ नक्षुःनः सेन् प्रदे क्षुन्या सुः दहेत् केन स्मार् केन् ग्राम्य क्षेत्र स्मार स्मार स्मार स्मार स्मार स्मार स्म इस्रयाणी देवर् अर्था क्रियाणी में त्यर दे भ्रात् विवा हे व्या ग्रार विवा धरातुःश्रुसातुःधिःत्रायदय। रदावीसावादःत्रस्रसासुः ह्यूदेः वेवादाः केत्रसेंदे यस ग्री देस पादन्या तुर्के या ग्री सूर्य प्रस्ति या मार्य प्रस्ति विष व्र-तिहेत्रकेट भ्रेट वर्गा राज्य अ भ्रुत्य शु त्व व्र स्रे त्य य त्व य त्र त्र नरुरान्दे द्वास्त्रित् तु नु निर्दे भी द्वारा से स्वास्त्रित्व से स्वास्त्रित्व से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स न्यवः केतः संस्थायायायाय श्रुतः यदेः त्रीं ग्रायः न्याया श्रुः वहेतः यः सँरः न बुद्दान्य श्रीदावना यात्र या सुन्य शुद्धीं विद्या से स्रयाद्वय के त्र से दि न्यायी हे शर्श क्षेत्र सदे थे न्या नह्त से नडवा

नर्गेव् सर्केवा वाश्रुस्य भीत्र श्रुत्य स्ति स्ति स्त्र स्त

पावद्गायात्ता कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्यात्र कृष्य क

<u> न्नो पन्तु व पा भुन्य शुः शॅर न्य शन्नों व सर्के ना नाशु य प्य पी न से रहे या </u> यदे में वार्यात्र प्रत्ये वार्या वार्या वित्र वित्र में वार्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स राध्यत्रक्षत्रात्र्यत्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र्यं द्वीयत्त्र्वात्रात्र्यत् क्ष्रात्रात्रेत्र रोर-र्से-रे-दर्गे स-रिदे-सर-पेर्-रा-पर-से-दर्गे स-रर-सून्या स-र्यः स गड्र अर भुषान पर्चे अरे द से किये सुमा खेद सूर न भून में । पावद गुर्भाकेत्र से साञ्चन्या पर्यो प्यार प्राची वर्गाय हैत केत्र से है साखु इवास्यान्यान्त्राम्यान्त्र्यकेन्यायान्त्रेवास्यान्त्राविता नवयानान्तान्य नवे सुन् ग्रीका ग्राम् अर्केन पाका कवा पर नुवे । । नुः क्षुरम् रवा नकेन वस्रानिवः हुन् स्वार्थ्य रहें श्रामी हिं हु न्याय विदा इत स्वार् हे से स्वार्थ षरःन्गे श्रूरःषयःनु वर्षे नःन्राययर ध्रिनः भीतः हुन्गवः नया नर्गेतः सर्केगा रेत रें के गशुसाया सर्के र हिर श्वेर त्र सार्वे या न वरे न सारा नित्रः त्राया के स्रे। हे रेत में किया विरागी सर्के गाया शसया मंदे विरागी। सर्वेद्रास्यायद्रास्य विष्ट्रीया सूद्रमान वद्या स्तर्वा प्रमान में व सक्या सक्रियायात्यात्या वस्य वित्राचित्रा वित्राचित्रा

 कुट नवे न्या शु विट मी अञ्च त्या नहेव या अव द्या धेव माशुट न सूर र्हे । र्रिन्निन्निसर्केनायासर्केन्छेन्सुन्यस्युप्रमेनिननिन्निन्नस्य उदान्विदायदारे व्यामीयाद्यीदायर्षेना नास्यायास्त्रायस्यास् सर्केन्यार्भेग्रायायायेस्यान्ते न्याय्योन्ते मुना वु वानाम् वेन्यार न्गॅ्रवासकेंगानेवार्ये केनाम्बर्धायानानन्यव्यानेन्छेन्। क्रेवानवरान्वः *ैं जुर*: धर: दर्गे व : अर्ळे ग: रेव: यें : केर: अर्ळे द: ठेर: गर्शे य: न: यदे नर्श: यः शः गर्नेग्रार्भेत्रकेंग्रार्भ्यायात्र्यात्रात्र्य्ययात्रीत्रात्र्येत्र <u> इसरा र्व तरा हेव यव पार्य सम्बद्ध यव पार्य सर्वे स्थल हों सास्याः</u> यरः ह्या देः क्षरः भ्रुवयः वर्षे स्यायरः द्याः यः विवा ह्यरः वे यरयः क्युयः ही । नभूत रावे र्भू र रहुं ५ 'दे रदाया अदया क्रुयाया बेया ग्रुप्त ग्रुप्त शुप्त ग्रुप्त वा अनुस्रावर्शे ने वर्त्त विवासे न कि विवास के निवास के कि विवास के कि वि विवास के कि विवा नस्रव परि र्से र से रहा है। विश्व र से रहे रहे रहे रहे र वा श्वस्या पर्देव पर <u> न्रों तः अर्क्षे वाः वाशुः यः भूनशः शुः वर्षे ः वा ने व्यनः विवाः भेनः तः र्क्षेशः श्रम्शः</u> कुरु:ग्रे:केंरु:प्रेत्र:प्रेत्र:क्षे:प्रम् वाट:बवा:वि:स्ट:वट:घ:यट्य:कुरु:पर् याकुना क्षेत्रानवराष्ट्रेन्यययाम्वर्गविनार्वेन्यर्भेन्यन्त्र्यस्य नमगासेन खेन ग्रमा नर्गे व सर्के मा मा सुसाया हैं। वियान विरोधेन व ही। र्रेषासुः श्रेम्यायायदे द्वरः श्रेरः इयया नविव द्वर् द्वर् यद्या सुया ग्रे या सूवः यदे श्रें वर र् या कुर र्रे।।

न्नो नदे न ने अ निहेत में हिं नदे निय तथा निव अ नहत निय सर

वेगा के दार्ते क्वें रावत्त्र के ते क्वेर के

यश्चिम्राः भिनाः वर्गाः पः त्यः द्राः स्ट्राः स्ट्राः

ने भूर सव र्षेव प्राप्त के अप्रक्षेत्र स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वर्य स् वर्षान्गेविः सर्केनाः नशुसः श्रेनाः नीः भ्रेनः प्यान्यः वीतः। वावः नविनः यान् ग्री भ्रिम् न्याप्त प्राप्त कर्षेया या हिन्य विकास व য়ৣয়য়৽ঀয়৾ঀ৾৽য়য়ৢঀৼয়য়৽ঀয়৽য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৣয়য়৽য়ৢ৽ঀয়৾৽য়য়৽য়ৢ৽ र्नेदे त्रु साध्रदे समद र्भू र र ्भू नय पुषा मसया उर् साळ र नर से र पा नव्यायान्यायायान्या रदायी सवतः भ्रीतः तु से सवा उत्वायस्य उत् र्धेन्यम्याश्रयः वमः निष्याश्रयः महावादिवाः सः स्वादः सः स्वतः वर्ते द्रों भा अम्बद्धे अश्वर्षे अश्वर्षे द्वार्थ द्वार्थ स्ट्रा श्वर्षे व्याद्वे द्वार्थ द्वार्थ स्ट्रा स्ट्रा व्याया येदायया दर्गेवायळें वारेवाये के वासुयाया देरें देर वेया व्या नरःगर्शेषानावरेनमा रदामेशाग्रदासेस्राउतारे प्राधुरात् क्षेषानि ध्रेर: ग्रुर: कुरा ग्री: श्रेस्रश: देत 'सें 'के 'भ्राश द्वा 'हु र श्रें स्था द्वा 'हूं द र र शरशःमुशःग्रेःगें तयरःशुरुत् वें तायरः ह्या केंशःशेः वावशः पदेः शुरः न्ययः इस्रशः ग्रेः हे सः शुः नक्ष्रनः यरः ग्रु। में व्ययः सर्के गः ने व्यनः विवासः र्वेनः गुशुश्रानायश्वत्रश्वराष्ट्रान्त्रश्चरायान्त्रभूयानः

गुरुमाराष्यराद्ययाद्यसायरान्सूर्यासे द्वारायस्य स्वर न्तरक्तानी के सम्बद्धारायान सुतान है। के में महासाक्ष्में सामित्र यदे रदा मार्थ रहे स्थान मार्थ हो। दे स्थान प्रति हेन परि शुन र परि वा विरा निःवदेःदेवाः हुःवारः श्लेः वार्यस्य निवरः सेदः स्थार्वः सेदः वाश्वसः दः भ्रेश्वान्य्यान्य्यान्य्यान्यायायाः स्ट्रीत्राम्यायायाः वहेग्रअः भ्रुग् वर्षः नुगेवः अर्केगः ग्रुष्ठाः तः भ्रुन्यः शुः सेनः नः वः नुगेवः यक्तान्त्र्यास्य स्त्रान्त्र्यास्य यह्यास्य यह्यास्य स्त्रान्य न्ग्रीव अर्केग है। श्रूट हैं ग्रथ श्री खें व एवं अवस् श्रुप पदे के अन्यों व सर्केगाने कें नाम ताम विषय मान्य प्राप्त मान्य मान्य मान्य मान्य प्राप्त मान्य मान्य प्राप्त मान्य मान्य मान्य वर्गुर-र्रे । श्वर-हेन्यश्राध्यर श्वापायि केश दर्गे व अकेंगा दे प्यारायश्रादर र्रे पदे त्या ग्रे क्रिंव से वाया से स्या क्षेत्र पदे क्षित्र या पदि । विकास से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त स

वेग के द क्वें क्वें र न तु त के दे के के दे हैं

र्श्विम् भारत्य में में स्वास्त्र में में स्वास्त्र में स्वास्त्र स्वास्त्र

नेशन्यस्तरं रेश्यश्चर्टार्से सम्बस्तरं श्रीशः क्षेत्रः सम्बद्धाः सुरुषः भुन्यानर्रेषात्यानेवे नगवानित्र, नभूनामर गुन्ये रेस्याने व्यया <u> नगरः दगः नरः ने : त्यारा तत्रा रा से : क्षेत्रः तत्रुं रः नवे : क्षंत्रः क्रु व्यः क्रु व्यः नवे : नगवः </u> यशहे सूर वर्तुर न सूर ने शायर तुशाय धेर के शारी रदाय सुर वश्रश्चरःस्र्रायः विवाद्यात्रायः विवाधिवात्री देःस्रानुदेःयशायन्त्रशायः धेर्क्रिंग्री:रूर्यानह्रवःर्रे ह्रोर्याया यश्रादेशमार्या यश्राद्येयाके नन्दा वर्षामञ्जान्दाके स्वत्यन्ता वर्षानुष्राम स्कृत्रिके नन निवेदे द्वीं त्र राज्य सन्वे राज्य र वै। कुर्नोर्अञ्चर्यायसायन्त्रसातुः नदेः नार्वित्यत्वुद्रावेदा द्रनोर्वायसा स्वा नस्य वर्ष प्राचित्र वर्ष स्वा कु से प्रो न में प्राचित्र स्वा प्राचित्र न्रस्यावित्रावर्द्धाः के प्रमो नायस्य नि नायस्य नि नायस्य स्थाने देशव्याध्याप्याञ्च विदाञ्च यत्या श्रुद्य द्यो प्राच विदाञ्च यत्य श्रुप्य पर्वे निःसूर्य्यरादेरासदेः द्ध्यायादेरा सावद्रात्यादे निदः तृत्वाया के से या वा देशमिते सुयावदी यादेशमावर्दे दश्य त्यश्च यश्चे या से नाया श्रेष्य ग्वितः इस्र रायः देशः यः द्वान् सेन् न् सेन् स्यान्या हिनाः यायर्देरयात्राप्यतात्र्वातात्राव्यायात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र देश'मदे'र्द्ध्य'रे'प्यर'र्र्राची कुर्नेर'रु क्षेर'र् श्रुर्ने र त्रान्ययार्गे यापर गुरुद्रमः प्रमा दःक्षुः स्टः उगाः यः र्हेस्याः मेरे । इस स्वानाः उत् ग्रीः नदेः नः वः वःकःनवेःन्याशुःह्यदःनश्रेयःनःयदशःमःयःनहेवःवशःननेःनवेःश्रूदःनः इट वर क्रेश पायम कर्या नरे न दे के के न विकास कर के र्वशर्भेवासम्बर्धात्री विष्या स्वाप्ति विष्या स्वाप्ति स्व विष्या वर्ष्यान्त्री । भ्री नियो निये व्याया वर्षा नियं निया वर्षा वरवर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष न्दासी समुद्रासी कु पाव्यायसाय सुद्रान्य पाय्या सम्भागा सुद्राया क्रॅं र न मर्द न न है । इस मार कर ही स्मान स्थान है साम कि स्थान है । इस साम क्रिया मार साम क्रि विगान्यायम् स्वाप्तस्याद्देश्वेत्रित्रवाप्तत्वुत्तात्रम्यस्य स्वार्थः र्बे्द्रायाम्ययासुरसे द्वो नदीरयया रे नयवायायते सम्दि सम्दि त्ययाद्वुर मी । दमो नदे प्रश्राप्यशासूमा नसूषा दमुद्दा नाम् सासे द हिए । कु से द द वर्ज्यूट्राचार्याः स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य वर्षिरः नवे ग्वान्यान् नने न न्दर्भुग नस्य हे स्रेत्रित हे गार्थे द सम्बर्ध उद्राथश्राद्यो सी द्योदे स्त्रश्च हिंदा यश सुद्रा बद्रा ग्राट सा दर्के या यह सिं र्शेन्द्रम्द्रात्रवेष्यश्वव्यव्यक्षात्रेश्वात्रव्यक्ष्यात्रम्याधेन्द्रव्या यानह्रवारी हेत्यमान्न ने व्हानुदेश्ययादन्ययायाधीत केयायादने सेत्व य.रेथ.त.श.पूर्व वर्ष्ट्र.य.रेट.रथ.श्रूट.यी.र्वेय.यर्ष.य.श.वह्यश केंशायादेवामहेराक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राचे भागहेवाच हेवा द्वापा द्वापा केंद्राच हेवा द्वापा द्वापा हेवा विश्व विश्

वेगाळे व क्वें क्वें र न तु त हिये क्षेत्र कें

न्त्रःक्रॅंशः क्रुंशः क्रुंशः क्रुंशः विवाधितः विवाधितः

ग्री प्रयान् (बुनाय प्रान्य या सेन केन सेन सेन में । ने सूर के या नम्म सुन न अटशः क्रुशः ग्रीः नश्रूवः प्रवेः श्रूवः प्रवेदः श्रीवः प्रवेदः भीवः पुः न्यावः प्रवेदः स्था । प्र *ॺॢॱॹॖॺॱॸढ़॓ॱॸॻढ़ॱॸॸॱऄॸॱढ़ऄढ़ॱऄऀढ़॓ॱॻऻढ़ॖॸॱॺॺॱॾॗॸॺॱॸढ़॓ॱक़ॗॕॱढ़ॖॸॱ* वमाय विमामी हिमा साया यस वर्ष साया धीन स्री स्रेस स्राधीन स्राप्त वर्षायाधिन के यात्र या के या त्र या धित से निष्ठ या प्राप्त या प्र या धित से निष्ठ या प्र प्र या प्र या प्र या बन्यसुः पर से पेंदर विदा र्या पेवर सेवर वे सेंसर सम्बूद पदा बना ग्री है वर्षित्रः त्वरः स्रे वर्षेषाः सरः कुरः तेरः त्वसेषा त्वाः वी वाषवः उसः षरः वसः यायदेशदेवाशवशहेवालियाहे उसालेवा होता दे प्रलेव दुरायशायद्वरा याधीन के अप्पेन व वे दी अपनु श्रुयान वे से वन न् क्षून ने वा अपन अप्यु अप न्याधिन्याशुर्वा शुं नुःसन्द्रायानायद्राश्चितान्द्रावश्चिताने वशुरा बन्दाबे र्क्के साबाना इससाययदा द्वी निये निये निया मुद्रासाय साम्या ह्या <u> इरःभेः इरःदेशः वयः ग्रेरःयः यार्ने गयः क्यः कें यः दःगान्वः वयः भेः</u> वह्रमान्यःविमार्द्रदाद्म्याकुःया दाक्ष्रस्टाने क्रियान् स्थायसायन् स्था क्रॅंश हे र अ विवा न नि र र वी । व त र ग्रा र य र य र य र य र ये र के र हे र द्रसःविवात्त्र्वा यश्चत्रशङ्ग्र्वासदेः वाश्चरः र्याहे द्रसःविवा न्यस्याशः ग्रमा क्षेरम्श्रम्भे द्वाराया विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया ग्रे श्रें न पायन्यान न से सम्बन्ध न से पायन स ह्रवः श्राः अर्थेन द्वाः प्रायिष्ट श्री स्वाः श्री नायः श्री नायः

द्योग्यत्वेशः र्ह्रेन्यते व्याप्त्यः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वयाप

र्स्यान्यविद्वत्येत्। याव्यान्यः विद्वत्यः स्वान्यः विद्यान्यः वि

स्तर्भात्मा स्वर्त्ता स्व

त्रवी त्र के स्या के

वेगाळे दार्से स्ट्रीट नित्र है दे स्ट्रीट से

यशः गुरुषः सः कुन् से । वन् । नवे । कुषः नरुस्या ।

यश्चित्राचार्क्षत्रः श्रेः वात्राचे स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

यशकी निया विश्वास्य स्था यशाना मुस्य यशाना मुस्य स्था मुस्य ८८.घ८.छ्य.श्रेष्रश्चर्यव्यव्यथ्यः १८.घ्रेश्चर्यः १८.घर्ष्येयाश्वरः व्यापटा से प्रास्ति । स्टान्टा प्रविवाया परिना प्रास्ति । स्टान्टा प्राप्ति । स्टान्टा । स्टान्टा प्राप्ति । स्टान्टा । स्टान्टा प्राप्ति । स्टान्टा । स्टान्ट न्वायाशुस्रामीर्भाग्वाद्यायश्चर्यायदे यस इस्यादे से प्रवीया वसस यन्त्रो सेस्र राष्ट्रेस ग्राम स्वर्भ निस्स स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर यश्राह्मस्रश्राह्मे प्रमाण्यात्र स्थात्र विष्यात्र विष्यात्र विष्या स्थान्य स् विगार्थेर्ग्यूर्ग नस्नुन्त्रस्य स्त्रेर्ग्यूर्य रग्नुस्यय नसूर्विर धेर ग्रीसार्यात्रस्यसाने । सिसाग्रीसासी रामे वार्यासी ग्रीति हिरा । वासायसा गशुस्रार्भे पदी द्राप्त्र शुरुषात्र । । इटार्सेट गशुरुषा पदि प्यस्ति । वर्षेत्र धरादगुरा विशागशुरशाधारा क्षेत्रा क्षेत्रागुरा श्री विशाग्यागुरा र वर्षा क्रेंग्रुअपार्ज्य इत्रारं हे नर नव्या द्र अपार द्रायह प्रम्या अहे क्षेग्रायाञ्चालेराञ्चात्रवर्षाञ्चर्या प्रमेश्वराञ्चलेराञ्चात्रवर्षातञ्चत्रायायावर्षेत्र धर:बुर्दे।

ने स्वर्ष्ट्र मान्य ने स्वर्ण मान्य मान्य ने स्वर्ण मान्य मान

वेगाळे दार्बे सुंदान्तु दार्च देश सुंदार्थे।

यक्ष्याची विष्याची विषया प्रत्या विषया वि

देशक्रिंदिरे विद्यालया हिन्दे से विद्यालया हिन्दे से क्षेत्र क्षेत्र

इवःसरः ग्रुशः हे वद्यवः वद्यवः दुः च श्वाशः श्रृशः ग्रीशः द्याः धरः ग्रुशः व इस्रथानी वरावसाम्या वारावनुराहे ना इस्रथाया इता वेसावस्रेतायाया केर्दे । १२.७४८.घश्रमायायश्चरावयश्चरात्राधीराक्रमाग्री.४८८.घा.ची देशमञ्जूर बर मेर हेर भारा सारा सारा से सारा उत्तर समारा ग्राम परि १ है। मुदी श्रीटाहे द्रमा तु नश्लीय। येयया उदाह्मयया दिन्दा नदी सूमा नस्यायया श्लीया नःयः स्टः हेर्य्यसः हतः परिः द्वारः दुः सेटः त्वाव्यव्यः हेः सूरः सूर्यः तुर्या देशः <u> दःचन्याःग्रीश्रःश्चेयाःयःखंदिःद्यःचःदशःश्वनःन्योःचःद्यःविनःद्यःचःदशःचञ्च</u>नः धरः गुर्दे । द्वो वाष्ठ्रश्रास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास् शेयशःरेत्रार्यः के पोत्रायशायद्यायी शाग्चराकुता ग्रीः शेयशःरेत्रार्यः के क्षेत्रामायाचे त्रामायामायामायाम् स्त्राम् स्त्र ग्रीसनक्षतः हुः वार्सेवा वेसः वार्सवः नः न्वासः इवाः हुः वाद्यः दे॥

गश्चामा सह जा हिंदि स्ट्रम् च न्वा के स्ट्रम्य च न्वा के स्ट्रम्य च न्वा के स्ट्रम् च न्वा के स्ट्रम्य च न्वा के स्ट्रम् च न्वा के स्ट्रम

वेगा के दार्ते क्विं राय प्राप्त के दार्थी प्राप्त के दार्थी के दा

नवे न प्रिंग्न ने के मान्य मान

निवे मान्दिर निवे हे या द्येन या न्याययय न्या नुर कुन ग्री से यय ब्रैंबर्ग्यायायात्रभ्यायायात्रेया शुक्रीटेंर्नेयाहेर्भ्या शुक्रा यक्षयश्रुःहेः भूरः ग्रुः नवेः रुवाः वे । । न्दः से ताः श्रुं रः न्देशः सह्याः याशुसः यथा रटार्स र्रेट्र रावे र्क्ष शहुमाने स्र राविन धेन या महेश राद्रिया गिविन्दे। शुःर्नेरः त्रः अः शुःर्श्वेअः पविवः पवेः प्रतः वर्षः वर्षः स्वरः प्रयासे। सूरः नन्दाराष्ट्रमाह्नेदारम्प्राद्यावावीदाह्नेदावादेवात्वे निवादि हुन्द्र वहिना हिन्। निवसनाम भ्रेष्य मन्द्रन्त सेन्य मन्त्र सेन्त भ्रम् नर्यान्वेर्त्त्राम्यायेर्द्रियान्यस्यान्यस्यान्द्रियायाः विदास्यान्यसः न्गॅ्रेन्सर्क्रेनाम्स्रुसायास्र्रेन्स्यापान्स्यास्रुन्सास्युर्धाःस्रिन्। यसाय्यसा व्यायन् न्यान् प्रमेति हेत् इसायन न्याया विवार्भिन ने साम्या प्रमा वर्षेर्यान्यकासाबराबेटा वर्षेरानरास्ने कास्त्रीतास्वानस्वानी रहा नविवायकासायन्काने। यविनानवे वरावकासर्वे नानने पर्वेदि हेवाधेवा या नेराक्षे ना विवासिर्यासिया निर्मातिया विवासिया विवासिय विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिय विवासिय व भे विषा उदाविषा कुषारे दि विस्रास्य प्रस्ति वुदाद्या परिष्ठ विषय ८८.कैया.ची अ.च र्षे अ.स.२८.अक्ट्र्य.ची अ.चर् च अ.स.च.श्र्या अ.स.च. रूपा. नष्यानुःस्रश्रास्त्रस्य स्वान्त्रस्य स्वान्

ने स्यान्त्रस्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

वेगा के दार्ते श्रु रावर्त्र हिया श्रु राये

त्या अत्या क्षे निष्ठा स्थान निष्ठ निष्ठ

याववः प्यरः श्रुः नः स्वाः व्यवः विवाः श्रुः नः विवाः विवाः

ने 'श्रेन 'श्रे

अन्यान्ति प्रस्ति स्वर्णा स्व

न्यारम् स्वारम्याया मिन्द्रस्य स्वारम्ये वर्षे स्वारम्य स्वरम्य स्वारम्य स्वरम्य स्वरम

वस्यात्विर्यात्वेर् त्विर्यात्वेर क्षे क्ष्यास्य क्ष्यात्वे स्थात्वे स्यात्वे स्थात्वे स्थात्वे स्थात्ये स्थात्वे स्थात्वे स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात्ये स्थात

र्शेवारामित्र मित्र प्रिया हेरामित्र प्राया हवारामित्र या हेर या ने रासु य हता नः इस्रश्रः कें रत्रश्राम्बदः त्रायदः द्धंदः महिमामी श्रामहिमायः यहेमा सः प्रः गर्भेर्-प्रःभेग्रयम्रेर्न्-प्रःभ्रःकेष्य्राभः होर्-प्रदेन्य्ये द्वादे द्वर्यः सरः दशुरः विदा धराह्मसाराग्वाद्यसाम्बर्दिन्याचेन्यादेन्द्रस्य स्टेन्यसा ग्वित : ५ : रूट : मी : मु : व्य : व्य व्य ळग्रानिर वेत्र प्रशाणे ग्रुन् हे हे न ने त्य हे न न म ग्रेन् प्रमा पर गहेत्र:५:न.बु८:न:दे:इस्रशःळें:र्न्यशःध्रे:स्राम्वद:५:५म्:स्राध्ये:नव५:सरः वश्चरानाना कें विनेरायर कें क्रेंन् श्चेन् श्चेन विदःकें र्रेट् ग्री महेत कें र्र्यू न त्या न या न त्या न त्या न ते र स व न है। सारे रे प्रमुद्र है वा रे रे खदर प्रवागिहें व त्यू र व रा वर्षे प्रविर परि कें अप्यार्क्के यात्र न्यु अप्यादा प्यारा से दारा से देश प्राय से अपय से अपय से अपय से अपय से अपय नश्चेत्रकरा गान्तर्त्रह्मां गान्त्र श्वापान्तर्वे त्यापवे हें या वित्रापी हें या यःग्वः हुः से निह्नुः विदः सवः यः वे खुदः कुवः ग्रीः से सर्यः देवः यें के प्दिः धेवः यथा व्हारकुन ग्री सेसस देन में के नर्से सामाया क्रेस न्तरि हता है जिंदा ग्रीशायन दर्गा।

 वर्दर्भाषरामात्यार्विदा देग्विवर्त्राश्चेश्वराष्ठवर्ष्वस्थार्यद्वराधिकासायद <u>५८.लट.२.घेश.५.चे.चे.५.४८.११८.१८००.चेर्थात्त्री</u> हुर:बिरा दे:नबिद:र्:पर्विर:न:पर्देर:बशः वेंश:मःदर:वेंशः क्रेंत्र:संवाशः रे.रे.व्यावयायावराधे.विटाचाविषाःवेट्याञ्चू प्राम्ट्रिययापाद्राक्ष्या मः अञ्चर। अर्देरः दार्वेरः नवेः सुद्रः स्वायान्यः वित्रः नवेः नद्यः नद्यः नि नायादिने सार्श्वेदानु ना सेदा गुराकें सामासेदा सरा सदी सहे उता श्रेता तुर्भाकेत्रमासे त्यानर्से नान्दा नायत्रमासुनामन्दा क्रीसम्बन्धन्त्रम राक्षंकुःवशुद्रानाः सूर्भ्यासूर्यायाः स्रोद्रायाः केषाः केरावियाः ने सूर्याः वस्या वदः बेन्शुॅर्नित्वे दुवावने वारे यावतुरा र्रे नियात्वा हुन र्रेटा देसया यन्दरक्षेत्रायम् वशुम्याने नियानि के सार्वि क्या वित्राची नियानि नियानि सार्वि क्या वित्राची नियानि सार्वि क्या য়ৢ৴য়ৢ৴ড়ৢ৾৾ঀ৾য়৾য়য়ৼ৾৾ঀৼ৾৾৽৾৾৾য়৾৽ঀ৾৽৴৴ৼঢ়ৼয়য়৾য়য়য়ড়ঀ৽য়য়য়ড়ঢ়৽ क्षेत्रायम् होन् प्रवे नत्न हिते सके नाधिव प्रया हान कुन ही से स्थानित र्रे के नश्चिमायायायायायाया के प्राप्त निष्टि में अपन्त निष्टि

श्रुवःश्विःव्यव्यव्या हैं तें श्रृंवःया विवाययये न्यव्या छैं यह वे ख्या विवाययये न्यायय के व्यव्यायय के व्यव्याय के व्यव्यायय के व्यव्याय व्यव्याय व्यव्याय व्यव्याय व्यव्याय व्यव्यय व्यव्यय व्यव्यय व्यव्यय व्यव्यय व्यव्यय

संसेन्यते स्ति स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्

र्रे हें नदे वियान्या सूर हे उस विवायह्मसारायार हो वास हुरक्ष्व राषरम्रद्येवाक्षेक्ष्यम्बर्वेवाद्वेषा व्रिवायदेत्राहर <u>५.५४,५७,५३५,५५५,५७५,५७५,५०५,५५५ । १८८,५८,०८,५</u> हेन्'वळस्रमार्श्वे र'नदे'सूग्'नस्यादे। यम्पन्टिं क्रिंद्रस्य पिते प्रमान गैर्यादिर्मर्यादिरः भ्री न सुर्यापि सम्बद्धी सर्मित विद्या रहा में छे वर्दितः सन्तरार्देते सान्ता देते प्यतः सन्तर्भाग्यः समान्यम् मदे अवद भर के अर्दे व सर दि र नदे कुव दमम मे अ अ भर न न व दि न्गवःनवे सूना नस्य सूर्या अन्ति राग् निर्दे राग् रास्ति । वर्षिरः नवे वर्षे वा नवे वा सक्ते वा से स्वा क्रिया में विवादा क्रिया के विवादा क्रिया क वर्षेत्रःचदेः द्धवावदे वा क्रें विश्वादेशावद्यू ए वृत्ताशाद्या हु वक्रें द्राया रहा न्दः या अध्यया उत् । वस्य उत् ग्री भ्री मात्र प्रकेते देस्य या त्र सेया निर য়ৢয়য়৾ঽয়ৢয়ৢয়ৢয়ড়য়য়ৣ৽য়য়য়ৼ৾য়ৼ৾য়ড়৾৽ড়৾৽ড়ঀঢ়য়য়য়ৼয়৾য়য়ঢ়৽ श्रे म्यायेट नर हे माठेग हुन र्से अपर हुदे।

लट्टिलट्टि. अड्टि. ट्रियेटि. ट्रियेटि. युवेटि. क्रिये. युवेटि. ड्रिये. अ

बेद्रायात्रवादिरावादिराविराविराते श्रीदाक्षेत्रववाववरा बेदाग्री वरावा वर्दरायाञ्चे या द्वापार निरास्त्र या हेता वर्षे या सुर्या द्वापार या वेता ग्राम्य येता रेशादग्वादावग्वरुराग्ची पर्शेन् द्रस्य रेदे सबुरार्ट्य रापान्य वर्ष विवाद्यायियाये अपवश्चरायि प्राया अवायाय विवादिवा नेवा गुवा की अपवर्दा केट अर्केट प्रदेश्वाद्य शुः होट प्रान्दा श्रेट पर्हेर हु के दर्श में ना ग्रह देव बेर्-कुर-वेंब-शु-र्शेट-श्रे यक्ष-पवर-रेवि-व्येद-पावर्-द्रवासूर-प्यर-यक्ष-त्वरावे अशु नह्याने प्वर्थे दर् भूदाव्य भाग वे दर्गावे सूना नस्या ही दर नन्ता धरक्षेत्रेत्रर्र्नेवर्षुक्षयन्यवन्त्रव्याच्या र्वेन के दिन ग्री अपदिया हेत अवदन्या सूर नर ग्रीन ग्रामा वित्र वित्र ञ्चरः क्षे न्रीरः नरः ची खुव सदे वरः वी रुपः दर्वी प्रराक्षे विवासी खेव सुर र्शेन्यश्रुभेशने र्राम्यायन्य नमुद्रान्यस्य प्राप्य से सर्वेद्रान्य देश विश्वयासीत्रवयायायागुरागीतामी प्रायम् न्याप्तम् न्याप्तम् न्यायामी स्वयासी बार्साक्षराचार्या स्रमायदेशकार्याच्याचार्या योश्वासदेशकार्यादक्षीया श्र्याशायित्रः यदः सुद्रः स्वाशायश्रायः सुन्। यथः सुन्। यदे प्रायः सुन्। यदे प्रायः स्वारः सुन्। यदे प्रायः स्व कुषायदी याधीद महिदान का क्रीं नर नुकाया रदाद्दाया के क्रा के का करा वस्र राज्य के स्वादा के स् नर्रः है जुर कुन ग्रे सेसस देत में के क्षेत्र मायायन पर जुटें।

ग्रभरासु नवे व्याप्तमा वर्षे रामा वर्षे रामा माना स्वाप्त स्वापति । न्वीयायायने क्रियायायो स्थानना वास्तराहिता । विवाया सेन्याया विवा न्वीं अर्धिः स्वा नस्याने। यशन्दर्हेन् सेंद्र अर्धिन्तर वी अर्धिन्त वर्दराग्राट्युं के यहा रहा ने विषय के यो निर्माण का के दिन के विषय के र्राची यश्चा वर्षा वर्षा के प्रमान के स्थान के विकास के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान के स यव या से दाया वके विते के वितर रहा मी इस ने या मि मारी या है। वर्त्ते.यासामहिषासाम्याचिषाः ग्राटा हे सासुः वर्त्तराया दाः द्वाराया हेता निनेशन्दर्भेषाश्रायाळग्राय्यस्य स्वायश्चर्यस्य स्वायायायाः देवे व्यवस्य स्ट्रा ट्य.श्रूट.री.क्षेट.यश.र्मच.चर्चत.श्रुट.य.यु.कु.च्यूच्याश्रुभ.ग्रीट.र्मच.यर्चत. त्रीःभ्रवःतःसेःवेदःहरःसूग्।नस्वःदेःसेवःनदेःबनसःत्रेदःसदरःसुःषरः येन्यम् वर्षेत्रः वर्षेत्रायाः योन्य वह्रव्यः यान्य यान्य योन्य विष्यं नशस्यायादेशाववुदार्श्वे लेयानश्चेत्रित्रा द्यापदानश्चातासेत्रास्त्रे न्यायदे के अवित्यो नेदे वर वया ग्राम्स मारा से स्था उत् वस्रश्चर ग्री वहिवासाय प्राप्त स्वाप्त सुन्दे नुम्कुन ग्री सेसस मेद में के प्दी पीद प्रसा सेसस मेद में के प्दी শ্বীমানামারমমারমমারদাশীমানমমারিদার্মানারি ঐেদ্শীমাননদ धरः हुर्दे । दे व्हरः वर्षेरः वर्षेरा वह राषदे राषे दः वह वादः षटः हुः राहेरः मन्द्रा वर्षेत्रमदेग्वदेश्वदेश्वर्षेत्रस्थात्रुत्यम् स्वा

वेगा के तर हैं। श्रुँ र न तु तर है वे श्रु र भें

नक्ष्यः हे त्ययेषा हु सर्वी निर्म् नवि स्वर्धः स्वर्धः सर्वे प्रति स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः

लट.पर्ट्र-पट्ट.र्रेया.यर्जा.वश्या.वट्ट.र्रिया.यर्जा.य्रेया.यर्जा. त्रा वशुरावदेःसूनावस्याद्रा वर्षेत्रेत्रेत्रेत्रावस्यान्। नसूर्यात्रयाम् नस्यायाम् नस्या निर्देर निर्देश श्रृवा नश्र्या नश्रया वर्षा वर्षा स्त्रेत्र केवा वित्र वा स्वर्या नित्र वर्षेत्र वर्षा स्वर्था नित्र वर्षेत्र वर्षा स्वर्था स्वर्था वर्षेत्र वर्षा स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या नरःश्रूरःनः इस्राग्यूरः दें तें सूना नस्यायश्रास्य वर्षापदे रहेवा प्रा वस्रभाउन् ग्राम् वस्य भेर्त्व मी प्रवादित प्रमाय विकास स्वादित ग्रे.र्म्या.यर्षा.ग्रे.रट.यध्य.री.यीर.राषु.क्ष्य. स्ममालट.लट.यस्ममार्था नरः लेवः सः १० श्रृताः स्र सः स्पाः निष्यः स्र से दे निष्यः स्र से से ताः नश्यः निस्ताक्षे निरम्भायान्य होत्त्र स्वान्य स्वान्य केर क्षेत्र स्वान्य केर के म्नें भ्रें विटा क्र.चते स्वा चस्य में देवा क्वा राष्ट्रे वा राष्ट ळं'न'ने'ळेर'वसेव्यनंत्रळं'नशाहेत्र'मंदे'सूग्'नस्व्यंभे'नर्डेन्'राकेरःह्रो' नःश्रिंदःनशःगुनःमःनिवःर्वे। ।देःश्रेंदःवगुरःनवेःश्रृगानश्यःनदः यक्षयश्चेन्द्रप्रथायव्यवित्। बर्वित्वी खेँ बुन्द्रीयं वार्षेन्। खुन् मी सूना नस्या न्त्रया न्त्रया न्त्रया नस्या मुर्गा नस्या मुर्गा नस्य । सक्सस्य से द्राय प्राप्त द्राय है नि दे नि नि नि स्था से द्राय स्था है व ही नि वि न्नरः उत्रः नुः र्रोटः नशः स्टः न्नदः ग्नाटः ष्यदः श्रेनः स्टः श्रेनः नुः सुः स्टः स्ट्राः सुः स्टः स्ट्राः सु ८८। श्रेश्रयात्रहें वर्श्वरश्रम्यात्रा देशन श्रेत्रात्रश्चा वर्षण श्चित्रा वर्षाः भूटः नः न्दा अप्तः देवाः रेः रेः निवरः वर्षः रः विदः वावर्षः प्रवेदः निवरः सेदः मःश्रेम्राश्रासद्वःश्रुसः नुश्चिदः न्याम् । सूनाः नश्यानने नर वहें व परे द्वेव है ने विवानी के निरायशादव की अहु श नश्चेनमानम्या ५:५८:भे५:वर्ष्ट्रद्राभे भ्रे नरःस्यानस्यानस्या ग्री कु हिन्य से अयो न अर से दे दिन या सर्के न या न विव न न कु न परि न न कुंवावदी वाधीन वर्गुम के क्षे निमा वाम् वासे वासे वस समा ग्राम ने विस् र् स्वाप्तस्य ग्रीस द्रमा प्रते रहेषा तसस्य या ग्रह रहेन ग्री सेसस रेव में के क्षेत्रामायायन मारा होये। नि सुर हो न तुरा मर हा सा सुरा चैव ग्रीय नक्ष्य हुनार्थेया वेय मार्थेय य भुगय इमा हु गद्य से ।दे

वेगा के दार्ते श्रु रावर्त्र हिया श्रु रायें।

स्र-तिर्मानस्यायः हे अप्तिवायायायस्य स्थायि ही निर्मान स्थाय स्था

नेश्वाद्यात्राचेत्रः नवेर्ष्याः नश्वाद्याः नश्वाद्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्व नन्गायहें वायने धोवासरक्त्यानये नगयान्त्री ह्यायक्रेयान्या वर्षाया वस्र १८८ वस वासुर संस्थित देवास स्य ग्राट द्युव संधित है। वद्या वहें व वरे थें प्रधेव रूप खाळग्रा य प्र राग्वव ला स्र राग्य प्र राग्य से प्र राग्य राग्य राग्य राग्य राग्य राग्य ह्ये। ने पिष्ठेश ग्रीश यश पार्शिया । यश ग्रीश पिर निर्म न स्क्री न प्यार श त्रा स्वानस्यानस्यानस्य अर्थेरान्वे रायस्य वर्षेरानदे स्वानस्य से पर्दे र वं ने वे कु प्यश्न न हें व से न्या के श श्वन न वो राष्ट्र श की यह व राष्ट्र श ग्राम् हें त्र सिम्सामा वार्षे के हो। हें त्र सिम्सासे म्यासे म्यास है से मार्थिन ग्राम्प्रिम्प्रम्भुं नावयेवासे त्राम्प्री न्येम्प्रम्थं स्थित डेगार्षेत्रग्रम् क्रुव्यत्मारा अपाया अपाया सेत्र व्युग्गु स्रोधि सेत्र या प्रविव र्वे। । यशसे दार्य हें वर्से दशसा पे दाव दे दे से सामा यश प्रश्ना राष्ट्र स्वानस्याम् स्वानस्याम् वर्षेत्राच्या वर्षेत्राच्यास्य स्वराच्याः वर्षेत्राम् मुन्ते क्रेंब्राब्रेंट्यायायदे पर्ट्यायायायाचे हेंब्रायम् नुप्तियाया महाव्यायाया न्यग्रायायात्र्यास्त्रात्रायायायात्रात्रायायात्रात्रायायायात्रात्रात्रायायायात्रात्रायायायायायाया बेन्यम्य विद्या भिन्यू या वर्षेया वर्षे ख्या

न्तुःसायायह्याःसायस्। न्दार्सेन्दालेसानन्यायालेत्यून्रिन्। नन्गामी पर्ने विशान्स्यायाळग्या मुन्ने न्या वि कुन पश्चन भून स्र न्नरसेन्यणी विर्मेष्यसेन्हेरहेरम्यूरम्परनेष्यवित्व हेराम्बुरस्य क्षरावर्षस्यात्राक्षेटाहे भ्वायाद्या वक्षेट्र हेटा ह्या हुन हो से स्या क्षेत्र रायायह्यायराग्रेषे । देग्धराग्रेद्रास्य स्थायम् स्थायः स्थायः तृःगर्शेषा वेशःगर्शेषःचः श्वाशःइगः तुःगद्यः में ।देःक्ष्रः हेंद्रः सेंद्रशः यदे न्वर वी अ विवस्तर वर विवस्त स्वा के अ सर हु अ वा कें द से र स र स दे गहेत्रसं नक्षेत्रत्रशहेत्रसं स्थार्केत्रस्य क्षेत्रस्य स्वत् प्रमेश्वर ब्रॅट्य.स.स्ययाग्री.ध्रेय.ट्यायात्रात्यरात्रयात्रयास्यात्रयाः वःश्वेदःवर्देदःशेःवश्वदःवय। हेवःश्वेद्यःयवेःहेयःद्येग्यये। हेवःश्वेद्यः मश्रास्टासुरावेरामाववायाधरामार्वेरासाद्या यदे से दे ते यो वा रहे मार्था वस्र १८८ वर्षे स्र १८५ में । श्रेस्रश्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राम् इत्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र नरनर्वेद्राधरानुश्वादिष्ट्वीःगुवाहुःसवाया हैवार्वेदशादिःस्टाचीःश्वेदः यःग्रव्याद्याद्याद्याःगुवः हुःग्रविदः यः दरः सूगः वस्यः दवदः विगः यः श्री रः नमा हें दर्शेट्यापदे प्राप्ते या प्रतिया परिताय वित्राय हे दर्श संस्था स्वर वस्र राज्य निर्मा स्थान का स्थान के निर्माण हे सूर कुर रेट अट के बुट खुट रंबर वर्त वे रेट अव की। हें द रेट अप वि न्यायने असे योग्रामा स्वासी प्रमासी प्

वेगा के दार्ते श्रु रावर्त्र हिया श्रु राये

ह्रायदेवित्तर्त्रं स्वर्ध्यात्रस्य स्वर्ध्यात्रस्य स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्

म्बद्धां ।

ब्रिक्ष स्त्रा विक्रा स्त्रा स्त्र स्त

ने प्यतः त्व श्रॅतः वाशुश्चः तुः श्वृतः वित्व श्व श्वृतः वित्व श्व श्वृतः वित्व श्व श्वितः वित्व श्व श्वितः वित्व श्व श्वृतः वित्व श्वितः वित्व श्वितः वित्व श्व श्वितः वित्व श्व श्वितः वित्व श्व श्वितः वित्व श्वतः वित्व श्वतः वित्व श्वितः वित्व श्वतः वित्व श्वितः वित्व श्वतः व

न्नेव पर पावशक्ष क्ष कें व से न्या पर्टे स्य र पदे विषय । प्राप्त प्र प्र प्र प्र ममा वर्देर्यान्द्रव्द्रवेशेशन्त्रेग्रायाण्यायम्भस्यायान्वेद्रायः यःर्श्वे नःनश्चे नःत्रभा सःम्वःसेस्रभः उतः स्यरःश्वे नःस्वारः सुः नद्वाःयः नः ग्रम् न्या स्टा बदे रहे त्या पुर से स्विमा स्टा क्रुप्त में हिंदा क्षें द्र का त्युवा नावा त्या त्या प्र न्वीं अःसरः वाशुरः। ने : व्यरः ग्रुरः नुः वो : विवा वी : नुः अः नृतुः वे स्यः न ववः श्रे स्यर् द्वा विवा या त्र स्था न्या त्र वा विवा वा वे वा विवा या से वा विवा वा वे वा विवा वा वे वा विवा वा व ८४। धुवानाव्याद्यात्र्याद्यात्रात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या ग्री पर्के निर्वे त्र राष्ट्र प्राया प्रति । प्राया प्राया वित्र त्र प्रीय वित्र वित्र वित्र प्राया वित्र प्रीय वरक्षेत्रे द्वस्य वार्थे याद्वा विंत्वते रस्य हिन् उवा वरक्षे द्वस्य यात्व ग्राबुग्।दे स्था ब्रीक् स्वरादार्द्रा में शाबिरावादे । ब्रिदा ख्या स्वरादा से स्वरादा स्वरादा स्वरादा स्वरादा भेता दशाहीद्रारुणार्स्स्रिंशासार्वेदसायरायर्कें नायदी सूरानर्यायाधीता वेरा वैं। दमे दे निवत र वें क्रिया पर से समा उन मी देन र मा समे पाद्र सम रमान्त्रमा व्याक्ष्य देश कें वायर देशेवायर विकाय वहवाय वें शेस्रश्राह्म क्री देव हो दार्वो श्राध्य प्राध्य क्रिय श्रुश ह्म श्राध्य हो श्राह्म वा सरर्द्ध द्वर्यायायायवद्दिक्रायादी

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्त्रा हेवार्श्वेतार्थे।

श्चर्यत्रीं न अवतर्वा व्याकायान्वया अहर्षिक्षा । रे किया नर्वा हेरा अ र्षानिक्षान्त्र्यान्य न्त्राधियान्त्रिक्षायायाया वियापासुर्यापासूरार्ये। १ने १६८ ५ ने व १ पवे १ वाव या सुराव या व या के १ व ने वे १ सुव के वा या सुव १ पवे १ नस्यार्श्वेरावस्यारुट् र्हेस्ट्रिंस्ट्रिं हे नद्वा नुस्यायामें वर्षेस्यार्थे मेदे मुत्र-तु न्या सुर्य देश के स्था सुर्य मुत्र मुत्र स्था स्था सुर्य मुत्र सुर्य स हुःयसःनक्षुनःमःरेदःमें के गुरुसःयः द्ध्यः निवेदः नुः नक्षुनः मर्से सः <u> ५८:सुव्य ५८:वार्डे : वॅर क्यूर प्राधेव प्रमा ५ रेम वार्डे : वेसमा सु सुरा</u> वेशप्रवृह्याकृष्य कें बुह्य प्रेष्य वृह्य कुर्या ग्री सेस्र से देश के प्रायमा ळण्याचे चेत्रया निषा चे त्रया ग्राम होते । निष्ट्रम हो म् त्रया सम्भास स्था त्रेव में अपन्त के व्यापार्थ विष्णाय के अपन्त्रीय प्राप्त के विष्णाय के अपने के विष्णाय के विष्णाय के विष्णाय के अपने के अपने के विष्णाय के अपने के विष्णाय के अपने के विष्णाय के अपने के अपने के विष्णाय के अपने के विष्णाय के अपने के गशुस्रामासह्या हुन्दे सूरा गुनि देखा वे सूरा निव वे ।

गहेशमाश्रुव सळस्य शाही सूरा गुरा

याहेश्याम् श्रुव्यास्त्रस्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

यःश्वीयाश्वाववः इस्रयाने स्रम्यविवन्ते। । ने स्रमः विवस्य निवन्ते सः भ्रीवः भ्री नुः अवस्य देवा पर गुराय थेन प्रमुद्ध स्वाय दिवेदः यदे ग्रावसासु रूट कुट पर्याय या वर्षेत्र यर ग्राट में सार्ख्य व्याप्त पर्या नन्द्राचे द्रमाया हैं में अर्क्टा द्रायमद विमादि सूसा द्रायमिं नदि है स <u> न्रीम्थान्यस्थयात्र्यातेषात्र्यः भ्रीत्याः ग्रीयान्नेदारमः भ्रेन्याने १९५०</u> र्वेशःग्रीःख्रम्याध्येदःग्री वेगाःयःकेदःर्येःयाद्येःम्वदःर्देदःग्रुःद्वेश्याययः <u> न्वेव पर क्रेंन्य के नेवाक के सूक्षा ने वे वाक्षर रच के नेव सामें वा</u> धेव है। व्हार कुन सेसस न्यय इसस वे क्वर वेस यस ग्राम प्रिमान श्चें निया के ना विवाद में या या दी। क्ष्या महास्यया है महा विवादी विवादी विवादी विवादी विवादी विवादी विवादी व र्श्वेरावर्रेन्याधेनाया ह्या ह्या सेससान्यवास्यस्य दे रामा सेससाउदावसमाउदाविंदावायसावस्याविः द्वेदाविंदाविंदाविः हेसार्स्ति सवत्रन्यारियात्रमा ने श्वें र निवेष्वन मार्श्वे न् सात्रमा से समा निवा से समा उव विस्तिर नर विद्याया स्या स्या विस्ति र नि विस्ता निस्ता ने प्रति । यवरःद्धयः यवयः न्याः इव वका श्वेरः हे केव रें भे ने न्यों रायश ववः विरा के न विवादमें अध्य प्रास्ट्रिस्य स्त्री।

स्यमाग्रीमायित्रात्वाक्ष्मीं निमाने क्षेत्रात्वीमाग्ये व्यम्पाने विष्यमे व्यम्पाने व्यम्पाने व्यम्पाने व्यम्पाने विष्यमे व्यम्पाने विष्यमे विष्यमे विष्यमे विष्यमे विषयमे व

न्नासेन्गी प्रसान् लुग्यापदे नुम्भेस्य स्स्या ग्रीयाने सूम्भेस्य न्वीं राशें सुरात्। वार्यार स्वारा त्रु सेन् ग्री वार्यान् विवार परि द्वारा परि मः इस्र अः ग्री अः ग्रामः विष्टा निर्मा निर् वर्द्ध्याद्रभेषाद्रभाष्ट्री याचा केवा खु असे सा केवा से सा हे न दुवा है हि इस वर्चेरःसम् म्राम्यानम्दर्भायाश्चरमान्त्री विर्वेरःनवे सर्गानवृग र्देर:वर्थ:श्रु। हिंहे:श्रेस्रश्राद्यवाकुवार्धे:ह्ये। विदाद्याप्याद्युवार्यः ह्या विश्वास्ति स्त्री स्त्रीय निष्टा विदायिक्त ना स्वर्थ निष्टा विदाय व क्चिं-१४१८८ वर्षेत्रया भुवाय द्वा रेदि क्चें त्या क्षुव द्वीय पर वर्षेता वरी न्गवः श्रुनः वः नहेत्र त्र श्रुनः चः सहनः प्रशः ग्रुनः धः विनः पः न्दा ग्रुनः केतः देल'तु'मश'ग्रद'द्वेत'मवे'त्ववाश'हिंद'रु'द्ववाद'श्चुद'द्ववारेंवे'श्चें'त्वश' श्रुवाराः अह्दायराम् श्रुदा दे निष्ठे व निर्मे स्थानि स्था न्वेव रवि याव शास्त्रें वान्याव श्वाप्य श्वाप्य विवास श्वाप्य श्वाप श्वाप्य श्वाप श्वाप्य श्वाप्य श्वाप्य श्वाप्य श्वाप्य श्वा यह्र न्य म्युन पर्वे न र्श्वेद्रान्यस्यार्श्वेद्रास्यायात्यात्रा देसायायदेसान्वेद्रार्श्वेद्रास्यासेद्रास्यार्थेद्रा यायायह्वायम् जुर्वे । नेते मेश्रायायने प्येत्र हे। ने यान्म में विष्त्र सुन <u> द्यायश्वत्रायदे पर्ने प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । प्रति प</u> नरः गुःबेरा वात्र मुला श्रेराग्री प्राप्त सूना प्रम्या गर्या भी । यह । नेयानक्कें यायर होते । वेयानासुरयानेटा देवारे द्वापाय दर्गेरया स्था हे वसरा उर् सिंद्र राया नरे सर्वे ना नी र्सेंद्र प्यया न्तर ने पीया है नर नसूत्रमदे न्यान्स्रस्य स्था वित्रासदे न्या वर्षे में ने के हे न न्या व न्दा विह्नेनास्य श्चान्द्र वर्षेति सूना नस्य प्राप्त विषय श्चित्र स्वी शुन्रायर्वे यथायन्त्र स्यया विग्रायरान्य स्यययाययाने या नहता र्रेनि ।हेरन्यश्रापराद्याययाची यवि वेदार्येय । हेराद्यायर्चे राहेरा न्गय वक्रेन्स्य म्याया वयाक्तुःवत्रया वित्राचित्रेयात्रेयायाः इस्रायसम्भानि मानि मानस्यायाने मानि सम्याय हिंदा में स्वित सुन्ता स्वराय हिंदा स्वराय हिंदा स्वराय हिंदा स्वराय गुरा देरे दर्दे त्रेया अर्केया द्याद क्रें व श्रेंद र विर के । यस अर्केया दरे धिशक्षित्रः सळ्त्रः से १८८ वर्षः वर्षः । भिरामी र्स्केट् १५ वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः । १८८ र्रे ग्राटाधेत्र श्रायम् व्याप्त । विष्टे विष्ट्रित विष्युम् विष्युम् विष्युम् विष्युम् विषयः र्थेन्। श्रुवःमःवश्रुवःत्यःगुवःवयःवननःमःनविव। श्रिनःर्यः स्रेन्।मर्थः ग्रुःनयः गणेटमःगणेटमःत्रम । दिवः केवः भूनः मः शः विगाणयः नरः वर्देन । विमः म्रास्त्रिः म्यादर्भेराम्स्रस्य संग्रेसः मृत्रित्ते स्वर्धः म्रास्य स्वर्धः म्रास्य स्वर्धः स्वरं स् न्वेत्रसंदेः वात्र शास्त्रः वाद्यवास्त्र नार्वे शास्त्रः वास्त्र स्था स्था स्थाने स्था इयादर्रेराध्याग्रहाययाग्री माने हे द्वायायादवह द्वीयार्थे।

न्दा हिन्यम्द्रित्याद्या। अदेःक्षानायार्श्वेत्राद्धयार्थे।

न्वायानभ्रेत्याद्या येययार्भेत्यक्षयाद्र्यार्थे। । द्रार्थाते स्राचन्द्र रास्त्रा न्यावर्त्ते माहे न्याया विकेषा स्वासी म्वावर्त्ते विस्वानस्या इस्रयान्यस्यान्या के प्रदेश्ययार्त्ते विवासे प्रहेगा हेत ही स्रे दें तानवा विगास्त्रनायर पर्नेता यस त्रसात्रसायर निसु नासे दिया प्रतादि र नदे हे य दशे न य के द्वार के विष्ट न व यानित्रव्यासे वर्षा से वर्षा के वर्षा के प्राया के प्राय के प्राया धुः वरः नदे : केर् : रु. व्ययः वः दह्याः धरः से : रेया यः ग्री यः म् वः से स्याः उदः इस्र ग्रीट विद्र निया नर्ष या श्री श्राष्ट्र स्वा नर्ष या नर्ष स्वा नर्ष स्व ने न्या क्वें या नवे सिन् हिन् त्र शहेया या के वा से वि यस न्य वि या निवि साति। रराग्रेग्।सुःबराग्रे केरात्राम्बराग्रे त्यसात्।त्याम् न्यान्यां वर्षा र्वेनःग्रहः श्रुवः वरः यः श्रुवाकः रेः नः दरः प्यवः प्रवः श्रुवाकः रेः नः र्वेनः यः प्येवः म्री श्रुवः वस्र अर उदः बदः केदः धेवः प्रवः वस्र अर उदः है वा अर धेवः वी वसदः विवः यः भेतः प्रथा रदः में दिश्वस्य ग्रदः भ्रुत् अववः द्याः सः वदः स्टिः प्रविः हतः सन्दर्भासार्वेनाया सम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धसम्बद्धाः ग्रीःसःन् भूषाधितः याया दे द्वस्य अध्ययः वर देर हे र र प्रविषा सु हे वर होत्रपादी होवा सेत्रस्य स्वरा ही होत्र प्रस्ति होत्र होत्

वेगान्यवाग्री त्ययानु तुग्रयान्य साध्य त्यायान्य साध्य त्यायान्य साध्य स सवरः वृषाः सर्वे नः सवरः देः वः सद्यः कुर्यः ग्रीयः वेदः वेदः ग्रीयः नभ्रयात्रमाचेनामा केत्रसँ सायह्नाम् नेति साय। देति के म्हार्मे त्रमाचेना ळेत्र-त्र्वार्यास्य-दर्धाःवर्यन्यस्त्रेयाःयः ळेत्र-सेविःयसः क्रें) चः वित्रः हुः द्यावः है। यर द्या सदे सबद दे यस हैं र य की त तुन हु द्याद या व की या सहस कुर्याग्री व्याया हेते रेंद्र वेर ग्रीया ने त्यया नक्षरया ग्राट प्येट कें या ग्री <u> न्दीत्रायः हे ज्ञिना हु ल्ज्ञारा ने यः द्वित्रायः द्वारा स्याः </u> नश्याग्रीसासदरानायान्यास्यान्याचे नावे स्ट्रीटा हे केदारी स्ट्रीना नेदारु न्गायः नरः वाशुरशः भेरः। वेवा केवः ग्रीः रेवाशः ठवः न्श्रुयः नरः श्रूरः नः नरः वेगामान्यम् मदे व्ययान् । वृग्यायाम्य मने दे व्यवसानु स्यर्मे मन् । गहैशः धैः सरावर्द्धः क्रुनः यान्यः न्यः पुर्विदः याद्यः न्युवान्यः स्रुरायः दे रहा के मार्के द सम्मान् के दिश्व सम्मान स्वास्त्र मार्थ स्वास्त्र स्वास्त न्वें या गुरायरा ने न्या वराने हो ने वा के वा ग्री व्यया न सुन्य या विवा ८८.घट.क्य.ग्री.श्रेस्थ.श्रूचाश्र.ग्री.८श्चिमश.इस.ल्य.ग्री८.त.ची८.स.ची८.स. न्यायः नर्या न्याये व्याये व्य

नेश्व द्वो निर्व नेश्व विश्व विश्व

चहुंगा हे अग्वश्रद्दश्या प्रस्ति विद्व से विद्व

न्या क्ष्या में अस्तर क्षेत्र क्ष्या में स्वर र्रे के परी सुरमात्रा पर्टेमा साधित पातिया कुराया सुमात प्रता प्रत नययाग्रीयाथी। विनायान्दाय्वाने। येययानेवार्ये के ने भ्रेया देयाने न्या वेगायके तर्भे दे क्षेत्र कुत्र यात्रा वृत्र कुत्र से ससात्र पदा वे सावात्र तरा कुलानदेःश्रभारीः विश्वानुः नदेः क्षेरार्षेना भारता कुरास्यान्य स्थानियाः ৡ৾**৴**ॱড়৾৾৾৾৾৾৾৾৾য়য়য়৾৽য়ৢ৾৾৴ৼ৾য়য়৾৽য়ৢ৾ৼয়য়৽য়ৢয়৽য়৾য়৽য়ৢয়৽য়৾য়য়য়ঢ়য়য় यन्ता वर्ते नायुन्तरवरुषायदे सर्वे निर्यं वित्रायम् वर्त्यम् न ५८। व्हेंगशन्दे स्वारह हैंगश्राय ५५। हैगा हैन हुर ५, उट न ५८। र्दाम्बन्धीर्देन् बस्य ४ उद्दायन् से दृत्युव सद्दा मोर्देन् सद्दा नरःळन्यारःगीर्थाग्रहःश्रेःद्धंग्रथःयन्ता वर्जेःनवेःननेःश्चेन्यस्याउनः गुर-दे-त्य-स्या-त्यश्र-स्थ-स्य-स्ट्री-सा-स्थान्यदे-विद-श-द्या-स्य-द्या-स्य-८८। अ.जम.बमभ.१८.श्रें ४.२. ह्र्योश.तर.५र्के ४.४.ज.स्योश.तप्र. ल्य अध्यात्र त्या भीत्र भीत्र

ने स्यान्य स्थान्य स्

न्नो न्न ने अः क्षृत् न न व्याद हुँ म न छेत् न स्याद हुँ म न छेत् न छेत् न छ के न स्याद हुँ म न छेत् न छ के न स्याद हुँ म न छेत् न छ के न स्याद हुँ म न छेत् न छ के न स्याद हुँ म न छेत् न छ के न स्याद हुँ म न छेत् न छ न स्याद हुँ म न छेत् न छ न स्याद हुँ म न छेत् न छ न स्याद हुँ म न छ के न स्याद हुँ म न स्याद

कुनः से ससाद्याद्याद्याद्याद्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्यात्रात्या वह्रायश व्हारक्ष्यः सेस्रार्भे अः क्यूर्यः स्नुरः हेगाः वीया विद्रार्यदेः नर्देन रम् नर्यस्थरा प्रदेष्य वना द्वस्य । । नरे निने निर्मा स्थरा ग्री स्थरा वेशन्त्र्रिन् मुल्या विद्याहेत्य्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य विशा ८८। टे.इ८.अ८अ.केअ.इवाअ.श्.भ्रेश । अ८अ.केअ.श्रय.श्र.८.वीर.हा । वेशमाशुर्श्रासाः धूरार्से । शेश्रश्रासेतार्से के प्यति क्रीशाउं शाहित् वशाहतः रटर्ग्य नर्डे अरन्न निर्दे केतर्से इस्र अरग्रट रेग्य ग्री क्रेंन अरग्रे अने वर यक्षवान्द्राध्वामा विषा ह्या दे त्या ह्वेंबा से क्षित्र ही ही का द्राप्य स्था गुरायाद्दे स्रेत्रित्रेवार्थेत्रयादे त्वा वस्य यह ग्रीयागुराकुयारेवि तु छूरा इन्देवे महासाया सर्वे वे सावर्द्दा सरा होता दे त्या इसाया गुरु दसाव गुरा क्षेप्रमाने असे प्रमाने के प्रमाने के प्रमाने के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के <u> इन्योर्थन के वाञ्चान स्वाया स्वाया मुस्य स्वाया मुस्य स्वाया मुस्य स्वाया मुस्य स्वाया मुस्य स्वाया स्वाया स</u>्व देशरेग्राशः भ्रेंनशः ग्रेशः विषः ग्रेशः अववः पः प्येव। क्वें में श्रें प्राप्तः प्राप्तः इशन्तुः द्धरः दुः श्रे अः अः वयाः यः देशः त्त्वे वः येः त्त्व वः यः यावशः यः देः द्याः यः याराध्यरानश्चर्त्राचेरान्त्री । देरविदानु ग्रुटा कुवा ग्री शेस्र से देश के श्लेश अप्रमाप्ताने अप्रवास्तान्य वर्षे अप्तत्मा केत्र केवा से स्वया क्षेत्र केवा से स्वया क्षेत्र केवा से स्वया क्षेत्र स्वया स क्रॅनर्भाग्रीर्भानेत्राम्येत्रामेत्राम्य न्यायाम्य निवायाम्य स्वायाम्य ग्रीभागार्देवायाधीवार्दे। । सेस्राप्टेवार्दे के दे से साम्राप्ता का प्राप्ता विकास मिला के स्वाप्ता के स्वाप्त नरुश्यादी सर्केन्य वित्तर् प्रमुक्ति। सेस्था मेन्ये के प्रमुक्ति वित्र स्त्री मिनास्य भ्रेशासादार्स्य मान्य द्वीता सार्वा स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स् विरावस्था उदार्या पुराविष्य वरावयुरा दे सूरायुराया वर्षा साम्या सुर्था इस्रा श्री रायदी है विवा वी व्हेरा धेर सूस्र र् द्वी र स्वा वहेवा हेर शी पिस्रसादिने वेसा ग्रानर रेगाया ग्री गुरदि वेसा ग्रान्स ग्रुट कुन हु सेस्रस नश्चेत्रप्रभारेतिःस्रव्रितःस्रुस्यःत्र्रात्मेत्र्यःस्य स्यूत्रात्र्यस्य स्यूत्रः नदे कुषार्चे त्यानु पार्ने विषा सुरान सूर्य कुषा न स्रथा सी पार्टर वर्क्षेत्र तुर वर द्वेरियात्र या श्रुवाया द्वीयाया केत्र से या तुर कुता ये यया न्ययने त्याची वार्ती वार्यम् सहित्। च्याः क्षेत्राः से सकान्ययः वन्याः हेनः केत्रसं वस्र उर् क्रिया कर्र देवे से स्र रेत्रसं के स्र राज्य स्र वित यदे बुग्र र्श्वेद अह्य क्र राय द्र वक्क विद्या स्वाप्त व्याप्त वि वस्र १४८ ग्राम् ग्रम् क्षेत्र से स्र भ्रम् प्रताने दे मित्र प्राप्त ही में स्र मित्र प्राप्त हो है । खुरायावी होत् क्षेत्रप्राद्राचर्यस्य प्राचस्य उद्देश्य प्राचेत्र धराम्बुर्यार्थे । दे र्वयात् । व्याप्ता व्याप्त । व्यापत । वार व्यः व्येत्र सन्ते व्यः वे क्वियः वः इस्र शः ग्राम् वर्ग् मः क्षे प्रमः मे स्वरं सहित्यमः नवेट्रा गवर्म्ययाक्षेत्रेया ट्रेयान्हेट्र्याम्सूर्याम्यायान्या

वर्देन्द्राध्यान्तुन्कुनानी सेस्रान्देन्दें के ह्वेसायाने वा हेन्त्रग्रम्सूत म्याया मुं के तर्रे दे रहे संविद्या विद्या प्रमुद्र मी । के प्यति वे सुत्र के प्राया कपाया व्याक्रेत्रवगुराववत्ययावस्ववयाग्यतात्वर्देवारेष्यतावत्वत्त्व विरःक्ष्राःग्रेःशेश्रशःदेवःद्रःकेःवदेःखेन्यःक्ष्याश्रानदेःस्याः हःह्याश्रासरः वश्य रहे। ह्य क्ष्य श्री से समार्थ र में के पर्दे मा सा से दाप हो ना सुराया भुभावात्रमानवाद्यात्रमानवेशानवेशमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवात्रमानवा नश्चर्या नदे नश्चर्या उद्दर्दर खूदर्य विमा होता नदे नदे वद वद स्था ग्राहर सर्केग्। ५८: २२: ५८: वें ८: दे से ५: ५: कें रा से साम का साम का नर्डेअः धून्यत्र्यः ग्रीः वे प्ययम् व्यविष्यम् वर्षे न्यमः वर्षे न्य वर्षे न्यमः वे स्वीतः वे व्यवस्य वर्षे ग्री-र्नेष-त्रचेद्र-प्राधिव प्रमा देवे प्रमो नादे मा बुम्य सुम्य व्याप्त से समा उत् रे रेते क्षेट व्यापने सावन हे उयारे नयूया ग्राट क्षेट न्या श्यापदेर नाया न्द्रा अंश्रयाद्यावियात्वाद्यायात्र्यायात्र्यात्रयात्रयात्रयात्र्र् निन्न-न्द्र-विन्निन्गी नुस्रान्द्रिन है निर्देश सामित्र निन्ने भी साम ययर सर र्ले व स्थान व से स्थान स शेसरारुव वसरारु पाने क्षु तुवे नशसारा क्षेत्राव पव पिव कि न व व र् सेर्पाय्य के से स्था के स्था कि स्था के स्थ नर पर्दे द रावे श्रेट हे नर्डे अ क्षेत्र विना भ्रे अ विषट क्षेत्र ग्री प्यश भ्रेन केत र्रे इस्र स्थ्रूर्त् चुर्न नर्ष् अर्य कुर्य केंद्र स्टे कुटे नर्रे द्वययः क्रन्सेन्याविवायवुरावरासद्यानेवित्रुस्यवित्रेत्वावित्रवावित्रवावार्धेयान्या

वर्षाभूगानसूषास्रवराद्यास्रेषानसावर्देदाराद्या ग्रव्सास्रवसाद्याः अवर[्]त्रुवा'वी'वरे'व'अवव'दवा'क्केट्र'चर'वरेंद्र'चवे'वश्रअ'स'क्क्वरू'र्ये' के'ने'ख़'तु'नर्डे अ'सेद'वेना'से अ'य'य'यद'र्येद'ळंद'ना बुट'त्'सेट्'य'ख़'ठे' सबदःविचःग्रीःश्रेस्रशः उदःइस्रशःग्रीःश्रृषाः नश्रृषःश्रेषः चः प्रदः नदेः चःश्रुवः पः रदानी सिरात् हिराते। के होताने वे प्रवास विमा पुरहोता प्रवेशहर कुन ૹ૽૾ૢૺ[੶]એસઅઃરેત્રઃર્સે ૹૢેઽ઼ઃધરઃત્રેઽ઼ધઃત્રે અદઅઃત્ત્રુઅઃૹ૽૾ૢ૽૽ૠૢૼ૽ૹ૾ૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૹ૽૽૱ૹ૽૽ૡ <u> पर्यासुरसेन्यामुद्रस्यायात्रस्य राष्ट्रम्य स्त्रीन्य प्राचित्रस्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्त्रास्य स्</u> यप्रशास्त्र स्त्र स्त्र स्तर निष्य मित्र स्त्र स्त वीर्यात्र स्वरे सर्दे प्रदर्शेंद से प्रवेद स्वरे से वार्य स्वर्ध स्वरं निम् व्या व्या के से समाया ने भ्रामुदे समाय प्रमाय के समाय सम्बन्ध नर-देव-केव-बेद-न-व्यथान्यश्रद्याःश्री विद-कुन-ग्री-शेयथ-देव-धें-के वर्ते कुराया क्रेश्वा देवसान बुराक्षे ग्रुटा कुना से समादादादे वात पाहिता वेंग्।रादेःग्वर्थःभ्रवशःद्धंदःकन्ःन्दरःवर्शन्वस्थः स्वर्थः केदःरें द्यः यानवर्द्रायक्यायाक्त्र्वाके विक्रायक्ष्याया

लट्ट्या: श्रुट्ट्या: यह स्थान अट्ट्या: स्थान स्

श्चार-प्रत्याद्वी स्वार्थ निष्ठ स्वार्थ निष्ठ स्वार्थ निष्ठ स्वार्थ स

त्र स्त्र त्र क्षेत्र क्षेत्र

त्तर्भ विश्वभाग्यस्य द्यो न्यायावन्य गुन् क्ष्यस्य स्थित्। विश्वभाग्यः विश्वभाग्यः

यावयः स्थयः के अस्त के स्त्रात्त के स्त्रात के स्त्रात्त के स्त्रात के स्त्रात

श्चें न्यह्वायय। श्चेवायः श्चें न्याः क्वें या कवायः श्चें न्याः विश्वः विश्वः

ने प्यार ग्रुट कुन ग्रे से सस्य से दान वा से सूर पा हे दा ग्री दें न श्रेन है न अ'र्वेज'यर'हेंन्यशत्रायुव'रेट'र्'न्येअशहे'अर्देव'शुअ'र्'हेंन्यशण्टा। बेवा'य'ळेव'र्येदे'र्श्चेर'णट'शे'ळुट्'य'ब्र्यर'वल्ट्'बेव'य'क्ष्ट्रर'र्रे । व्रट्टाळुव' ॻॖऀॱढ़ॺॺॱॺ॓ढ़ॱढ़ऀॱढ़॔॔ड़ऻऀज़ॱॻॖॺॱॻॖॸॱॿ॓ज़ॱय़ॱऴ॓ढ़ॱय़ॕढ़ऀॱॾॣॕॸॱ୴ॸॱऄॱढ़ॗॸॱढ़ऻ सरसः मुरुषः ग्रीः सरः नर्गेरः परिः में स्मानसः पाष्यः पेर्। नेरः सः वर् ग्रहः स्वरः ग्री सेस्यापदी सेदासरा धुर्श्वेसासाद्दा पात्र या खुर्ग या केदा छेदा छेता छ। वेवान्यरः क्षेत्रायः बुदः त् क्षेव्याधदः स्वर्वयायेवात्रात्रात्यत्रः त्यत्रः त्र्याः वरायार्व्यार्वेनाश्चेराण्ये। वेगायाळे दार्यदे श्चेरायार शे कुरावायया उरा सिंदिरमानात्यार्चनात्रभा र्वेदाहेर्नाहेरहेरहेरहेरवरान्तावायार्भाकुमारा वयाष्ट्राप्तृं हु : विवार्टे : वें सहया दु : हु : न वा हि : वें या हु : वा सहया हु : वा सहया हु : वा सहया हु : गहरा है जिंदा है राज्या

मिन्दिने वाल्वरळेर.येन ग्रैहें हेते ह्या पर्वेर प्रालेवा वी शक्त स्वर विवास के स्वर व

न्ययः इ. कृतः यश्याश्रद्यः श्री । व्हंयः ने 'न्या'यः इसः न्धें न् 'उदः इससः ग्रैअ'येग्र'पर'न्ध्न'य्ये स्वाय'ग्र'ग्रेन्य्य'स्वर'हुट'कुन'ग्रे' सेससारेदारीं के हिन्सूरायसासर्वे गाः धेदारारारेसारा गहिरादसा हेना धरादशुरारी दिवाशीप्तरादेग्द्रवामानेवायावयारि विहास्याहा द्यःश्रीदःव्यथाः उदःवहिषाः यः दृदः । भ्रितः यः व्यथः उदः व्यथः विदः। । वैं। विश्वास्य न्य सम्पर्धिक स्वाप्त निष्य यश्राद्युद्दा द्यो निभेशः श्रुया दुया द्यादि वियाद्या यहा सुदा सुदा स्था स्था वर्रे हिंगा क्रें र न हुन द्वा कें न शार्ति र र ने शान श्री मार्थि र र ने शान र्श्वेदा नरःकर्ग्यरार्विः रहानी शासेयाहे। यहे हिना सेरासर स्त्रुराहर ঀ৾ঀৢঀ৾৽ঀৼ৽ড়ৢ৾ঀ৽ৠৢ৽ঀৼৠৄ৾ৼ৽য়৽ৡঀ৽য়৽ৠঀয়৽য়৽য়ড়ৼ৽য়৾ঀৢঢ়৽য়ৼ৽ में अप्यानान्य असे न्यान के से क्षान के स्थान के वःस्टःस्टःगाववःश्रेःदेवःत्रस्यारं उद्गायदे स्वाः तुः वश्यवारायस्य स्वर्धः है। श्रदः कुनःग्रेःसेससःदेनःमें के पदि कुन्यः स्रेसःहेन्दसः स्राद्धः न्यायः য়ৢ৽য়য়য়৽য়ৢ৽য়য়ৢয়৽য়ৣ৾৾য়৽য়য়য়৽ঽৢঢ়৽য়য়ঢ়৽ঢ়য়য়য়৽ঽঢ়৽ৼৄঢ়ৢঢ়য়৽য়ঢ়৽ शरशः मुशः ग्रीः में तयर वितासर विग्रुराय। दे वितादशाद्या सामिते सवतः वियाग्री सेस्र उदावस्र उदाया प्रमाप्त स्था ग्री किट प्रमापित विदाग्री र्वेरातुःचविवःतुःगर्शेवःचःगरःन्रायाःचन्नाःधः वस्रशः उत्वन् सेत्रतुः

र्द्धेयानान्ता वर्तुतानाकेतारी नित्रमाने सम्मानिता वर्षा वर्केंदे मिन्र प्रमुद्द निर्मा अदेश के अरु देत में के पदि प्येत व गर्वे द भ द द न स्व द ग्व द में अ ग्रा से स्व म अ है। इ द स्व व ग्री से स अ रेव रें के परे कुर पा क्रेश रहा है र वश कुष पा दस्सा की शर् पुर न्वेर्याक्ता वर्गायकेन्युरास्यस्यसाधिसाह्याः हुन्यस्य विन् यर गर्वे र श्रे व व्यवा व हैं है व कु श्रवा अद से अ त्या हवा हु व श्रुद व या ह्यर सेस्र सारे वार दावाद सारा हेर प्यर दर प्यस्य रहर सु वो दर से सा धेव मी मार्वे द प्रदेश यह मार्था प्रकेर से प्रवृत्त विता वृत्त प्रदार से सरा देशनश्वरायाद्याग्रीशासुरात्वीतराद्यूरावरावासुरा। ग्रहासुवाग्रीः शेस्रश्रादेव में के पदि वे पर्वे पदि पदि नि भी दारा स्थाप स्थाप के प्राप्त स्थापित श्रानु पीता है।

 प्रभागरायानक्ष्रनाप्रस्तुः वेरावया म्वायाने या सुरात्रायर हिंग्या धरावळटाकु वरावर्दे दाध्या ग्रुटा कुवा ग्री खेस्या श्रुटिया वाशुटा स्नुद्रा धरा यव डेवा रे ववा रेदि वार्षवा यवा विद्या र वत्वारा सदे व्यव केव र र हु सूह हें रिवेश्यत्वर्र्षेणाननयासु रिव्यय्या धिन्या शुः श्वावया सर्वेदान द्रा न्ग्रीयायिन्राम् भूत्रास्य वाषायारार्थे स्वर्त्तान्त्रा वुत्रसेन्यीः न्देशः मुनः अरः र्रे विनः पान्ता हिरारे विदेश रे कुन् उस विनः प्रभाग्ना यरक्षे भ्रम् व्यवस्थान्द्रक्षेत्रहे नुरक्ष्यभी केववाय हैं क्षेत्रम वियाश है के वर्षे श्वेर हे दे खु धोव प्रश्राधी नुषा नुष्य वर्षे प्राप्त । क्रॅरशःग्रे:नर:र्:श्रेसशःडवःग्रे:रॅव:ग्रेट्:यर:दसःकेंशःविवाःवाशुट:नश् त्रुः अःग्रोभेरः त्रीरः नशः श्रुग्राशः यः रेशः धरः अह्र प्रायेः क्षेटः प्राये । यशः ग्राटः व्यायारेयाके नरम्यूरम्यास्ता युनके वर्षीयाहे स्रूरम्यस्ता व्यायाहे के दार्या थी प्रयान् प्रवाद्या द्वारा द्वारा है । या प्रवाद्या की व्याद्या या विद्या <u> न्यमासेन्गी भ्रापराव ग्रुस्या भ्रेट्से ग्रुट ख्रागी सेस्या हे महिमाह</u> क्षेत्रान्वित्रान्त्वा श्रम्याहे केत्रार्थ्यावया अर्द्वास्त्राम्य वया भ्रेय:तु:न्य:पःयेग्य:र्रे:येग्य:र्रे । न्य:ग्रुय:ग्री:यन्य:ग्रुय: वस्र रुट् ग्री प्रायद निर्देश स्ट्रिंट प्रायद स्थित स्थित स्थित ग्री स्थित स्थ र्शेम्शन्तुम्शन्तुद्रानःन्दासुद्रानसूत्रानः क्रुःकेरःसद्दान्नेशानगदः गन्ययार्गेन्यदेगाशुन्यर्गेयाययायगुन्दे । । गुन्रकुनगीः सेययानेतः र्रे केदे यत पेत्र समय प्राया है।

र्श्वेन्द्रमायमा ने पी सम पिन न्या हु से न पा नियम ययार्रे के यथाय गुरावशा दे वयाय गुराव भूरा के या यर गुरावा देया या न्वाराज्या क्षेत्र निर्वारा नेति वदावरा ग्राम क्षेत्र से नर्गे दाया या रैग्या ग्री तु जुर कुन ग्री सेस्या दे स्यर्था कुया ग्री केंया बस्य उर् ग्री स र्नेन भृतुर्दे । वेश ग्रुट कुन ग्रै सेसस प्दे प्पेंट न सहस मुस प्रग्रुट वेट । वर्दे से द न कु जावव जार जी या ग्राट यह या कु या से व सुद न या या ते व सुर तु धेत्रप्रद्रा ग्रुट्रक्र्वासेस्राद्रपदे हुँ द्रप्रद्राह्मेत्रप्रस्रम् त्रश्मित्रेत् वेशक्षाय्याय्येशक्षित्राच्याय्याय्ये वयाचेगामळेवासेवेत्ययान्त्रह्गासम्पर्निन्वते ग्रम्कुनाग्रीसेयया रेवःर्रे : केवे : यव : धॅव : दे : दवा : ले या यर : ग्रुया या दे या या : ल्वा या : व्या या : नह्रवासाक्षेत्रात्वे अपेश के अअअभिवासी के प्यति विषया के वासी के प्राप्त के प्राप्त के वासी के प्राप्त के प्राप्त के वासी के प्राप्त के वस्रमार्थः की सामार्थः विदान्तर स्त्रीत स्त्री वर्देरश्रामानियाः शुरादा हेया माळेदारेवि त्यसा शुरावि हेर् रायरा वशुरा विरा वेगायक्रे रेविययम्भि स्याप्त स्रीत्राचित्राम् वया सेस्रयान्यस्य संस्थित्यादनदाराद्दाः सुदार्श्वसारास्यायाः स्र र्रे ने त्यावन में हो न पाने ने ने ना पाने के न में वि त्य या ही ना न न से ने या पा म्ने धेर्नविव ग्री कें रातु पर्केषा पर्देराया मु अर्के केव में रायह्या या देरा

वेग के द क्वें क्वें र न तु त के ते खे र वें

ते। यःयरःवीःभ्रेषाःहेशःयश्येष्ट्रायित्वितःवीःर्वेरःतुःवर्वेषःविरःववुरःतुःरेः यःदरःवर्द्वो।

ने भूर जुर कुराग्री सेससारे दार्स के हिन चेना पा के दारिय समाग्री वह्यार्झें न्ना बेवायळे दारेदेख्या शुःग्वन् भेनान् बेवायळे दारेदे यसमी र्श्वेन प्रमा वेना प्रकेत रेवि नशुर रन वस्त्र उर्गी श्वेर में प्रमा वर्ळर कु न ता भी व र त् शुर न व दे त्य या की माव द र द या या धी व र खु या कु र छे र र नन्द्राचे द्रवात्य विवादि स्रुयः द्वातः क्वा हो स्र स्रुयः व ৾**ঀ৾৾৾৽য়৾য়য়**৾৽ড়য়য়য়৽ড়৾৾ঢ়ৼৢ৾ঢ়ৼৢ৾ঢ়ৼয়ৼয়৽য়ৢয়৽য়৾য়৽য়ৼ৽ঀ৾য়৽য়য়৽ यदे क्वें विने प्येन वा विने वा ने क्या की निश्च वा या प्राप्त कि वा कि कि वा विने वा विने वा विने वा विने वा वि नरम्बन्यक्रास्त्रे हिंद्रिन्द्रेत्र श्रीकाळान्हेंद्र हुकायार्ड वार्के खूबावा देवे सेसरारेत्रारें के वरेदे पातर साहेंग्राया पीता है। जुर कुरा ग्री सेसरा रेव रें के क्रे नाय क्षेट हे केव रें अळव केट ळट न विया कुट या क्रे न्वें राषा ने वे क्वें अने सन्दर्भे यथा यह वी के धेन न् वें नियं विश्व के नदे न न विद्य न में अभारत मार्थित न में मार्थित न मार् गुरःवरःवर्देर्धिः इस्राधिः श्रुरः हे स्राधीः परः वीस्रावह्याः सन्वाकिरः ग्रीशासर्द्धरशासरावह्यापरावग्रुरायादेवे के हिंग्रायाधेतायश्चेदाहे केत्रसिते केट तर्वे न हे। दे हिन् है ट हे केत्रसे में स्थापते हैं नया ग्रीया शेस्रश्रास्त्रस्य स्त्राच्या वर्षात्रस्य स्त्राच्या स्त्रम्य स्त्राच्या स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स् ह्मायायदे निरक्षा १ क्रिं प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये निरम्

शेर्वेश्चरम्भे है। वेशम्बर्धरश्चरा सविवायात्र सुरात्र स्वायः निव हु या हे सामा निवा पित्याया तु कुत हु ने से साक्षिवाया तस्या नर्डें त'रर'नरेटरा'त्रा'ठ्यावना'रा'क्षु'तु'सूना'नसूत्र'ळन्या छेत्'रें रा सवर्यात्राम् वर्षेत्राम् वर्षेत्राम् स्वर्यात्राम् वर्षेत्रस्य वर्षेत्रस्य वर्षेत्रस्य वर्षेत्रस्य वर्षेत्रस्य भ्रे निर्म नु कुरा वया पर देवे सूया नस्य सेया नवे वनसाय याव्य ग्रीस नश्चराक्षे नर्वो अरमर वनशर्ख्या गुव क्री अरस्म र पिवा रह वी रह वी अर वर्त्युद्र-तःहे क्षुः तद्या वया यावि सम्बद्धान् रात्री से समा उत्र मसमा उत्र वर्षा नर्वे न् त्रुवारा से न् प्रवे स्ट्रेन् हे नर्डे सासा से दारा न्यान्स न्यान्य न्यान्य से से न्यान्य स्वयत्य से न्यान्य से न्यान्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य सबयःद्वाः श्रुवः सः याव्वदः श्रीर्यः वङ्गवः वः यः से वर्षे र्यः सरः रहः वीः हहः गैर्भाने विवादिकार से स्था निवादिक स्थान स्यान स्थान स क्रिंद्र-यंविग्राद्वीं अय्याया वस्रस्य क्रिंत्र स्वार्थी क्रिंप्य स्वर्थः क्रिंत्र स्वार्थी क्रिंप्य स्वर्थः ध्ययात्रवरासेन्यमाळे विदेशकेन्यगुमार्गित्रसेससानिन। वर्षिमानवे स्वःर्केष्ययायापिटाव्यावेवायवेवात् सेययाउवायययाउत् ग्रीनेवात् शरशःश्रिशः व्रिनः सम् श्रुमः देवा देशः मदे देवा द्वा दिशः स्वर् नदेः र्र्सेन्यार्यमा विषा गुरायाया गुरा कुना ग्री से समा कुनाया स्री सामरा क्रिंयपदी हेर्निहिया व्ययमपद्रम्भेटहेर्सेट्सेन्सेन्सेन्सेन्सेन्स् सेससन्दर्भ के सामास्तरम् वरास्तर्भ करास्तरम् विराधिक स्तर्भ हरास्तरम् यहिरान्या विवास्य स्था विवास्य स्था विवास स्था स्था विवास स्था वि

 र्थेव-दे-द्वा-य-देश-य-विद्व-वश्व-देद्द्य-हे-भ्री-य-य-विद्व-य-देद्द्य-विद्व-य-

गहेशमानुमळुनानु सेस्यामेन में के सुमळुयान्में या

गहेशमानुमक्ष्यामे सेस्यामेन में के सुमान क्ष्या में साथ गहेश बुक् ग्री दें कें त्य हे सूर ग्रु न प्राप्त वुक् सक्स राश है सूर ग्रु न दे खुवा वि । ५८.स्.ज.ब्रॅ.४.८६म.मशुश्राच्या ५८.स्.ब्रॅ.४.यह.क्र् वुगाहे सूर वु नदे रहं या वे सूर निवेद धेद या गहे सामा ने सामा वि या गहिशा गलवर्नेवर्नेवर्गहेर्न्छ। ह्यें श्रुट्यान्ट्या इट्रक्यनेवर्गहेर्न्छ। म्नें भूर नर्दे। । १८ र में नावन रें न रें न ना हेर भी में र खें याया न सुरा शेसरारुद्रम्सरामहेद्र्र्प्त्रस्थरामहेद्र्र्प् न्दा न्यायाडेशप्टें व श्री क्रें व प्राविव याडेशप्टें व श्री प्रव पिव नश्यश्राहे सेस्र उदाइस्र प्येत् निव नी के में में मान के मा निरम्बर्यायदे द्वापाउद की थेर देंर मे वुस्य पाष्ठ्र पर उद श्वर कुषान्ता ने त्राचन्या याववा सहसानहे क्षेत्रा कुषा विष् ८८.स्.स्.स्.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं.सं.तं.८८८.

क्रॅ-र्'श्रेश्रश्चर्यव्यश्चर्यायत्यत्र्यं विषयात्रः विषयात्रः र्श्वेस्थान्यक्षेत्रास्य निष्टार्ह्मणास्य स्थानेस्था स्थानेस्य स्यानेस्य स्थानेस्य स्यानेस्य स्थानेस्य स्यानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्थानेस्य स्य वयानर्स्स्रिययाग्राम्यस्य हेन्स्ट्रम्य स्थित्य विष्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स धेन्द्रमुन्त्री श्रुन्त्र नित्र व्याप्ते अपने अपने अपन्ति । अपन श्रेश्र १ वर्ष यादे । यदा इसादवा केवा वर्षे दाय प्राच्या श्रीत्रा स्था देशायादे । यदी वर्षे द्वा न्वें राश्री । नेदे श्रें या दुवा दे भें वा यम मन वा स्मार्थ महें परी माय वा दें न ग्राम्यान्य । जुर्यान्य विष्य अधि । अधि न्ध्रेग्राम्यत्रम् यन् त्याके नम् न तुर्व मान्य स्वया स्वया सेरानमः न तुरः दशस्टान से नुन्न से सरा सूँ सरा मिना नुदे सूस नु से सरा सूँ सरा म नर्झेमा ने प्यासेससार्स्नेससार्यात्रास्टानी सहवानिसार्सेनासाधीन न् देत र्देशः नेशः प्रदेश्येयसः उदः विवाः सर्वः र्तासयः वरः द्रियासः दसः स्रेयसः र्श्वेषरायानश्चिष्यार्थे। निवेरके प्देने वे निवानी महिन वे सूरायवया सहया निनेशः श्रें श्रुस्रायत्या में ग्रायाः श्रें श्रुस्रायत्या वर्ते निर्मायायत्य स्मानेतः य विवार्वी स्रुस र हे स सु कवारा य तुर द से सरा स स्रूस र पित परा ळग्यायाने नययायाये सेस्या सूर्यया नसून नि

देःयः सेस्रस्र्स्रस्य स्वाप्तः स्टार्यः वर्षेतः स्वीतः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

होत् होत् या बिना में सूर्य या प्राप्त वित्र के निर्मा मी माहेत् व्यामार्केत् प्राप्त हित् । होन्याविवार्वे सूर्यायान्या वर्षे वे वनवावी न्यवे हिवास से सूर्यायान्या वर्रे हे हें र परम्म प्येर् र से के के लिए में सूर्य र पेर र से के लिए म वा विटामिन्त्री, नार्श्वायायन् रायान्ययायायान हरिस्स्या निर्मा त्रुदें। ।नेॱषरःशेस्रशःठतःपरेॱषःशेस्रशःसःश्रूस्यशःतःतुस्रशःश्रेटःहेःश्लेः नवे निवे से नि ने से न न नि स्वार स्वार से से सम्बार से निवे स या शेसशास र्श्वेसशाद निर्मा होगा सा केदारी मा तह मा मिता मा किता सामा वर्गुर्न्य राष्ट्रे द्रया गुर्न्य से स्राया ळण्यानान्द्राचात्राचासूदानाः स्रो नायदी सानस्यान् सेस्राउन प्रस्या स्राप्त या शेस्र अर्थे स्थान सदि वन्य से दाया क्या या सूर दे वाहे या वन दार द नग्राग्रास्य अ.ग्रीश्राक्ष्याश्रास्ट्रास्य ३८.व. १५.११ वि.लट.म्रीय.८८.स्रट्रास्य अ. ह्यूर-५-भ्रे-नर-१व्यूर-नर्भा देवे-महेत-से-धे-१व्य-ग्रुर-तर्भ-भ्रे-नदे-वनशःनिवात्यःवनदःदर्वोशःश्री ।देवेःवनशःनेःश्चेरःवर्देदःळवाशःग्रीः गहेत्रस्र से सूना सन्दर्वे सूर नी गहेत् से र गुरुष्य र से साम सून्य निटा शेंश्रेशश्रींशश्राम्यानिति भ्राम्यानित्र निर्माणिके निर्मानित गर्वेद्रायाधेद्राचह्रवासेद्रायदेख्याचस्रस्यावाहेसासुः कवासायाद्रावेदः विं न वि द स से सस स्रू सस पर प्रमुर न स

तुः श्रें त्तुः नः श्रेक्केवा मीश्वाल्या न्या मीश्वाल्या त्या मीश्वाल्या विद्या मित्रा मित्र

निष्यः श्वीद्देश्यः विष्यः विषयः विषयः

व्याग्राट गुरे सूमात् नक्षियाम्। दिवे के क्यायास्ट मी द्वार में या से समा अःश्रूब्यवान्। हेःरेटःकवावास्ट्रायमेवासदेः यतः वाः श्रुवः सेदः सेवः सः वरेः स्रम्यम्भ स्रो यगयः विगायः हे यमः य बुदः वर्षः स्वरः वर्देग्रमः प्रमा वनायः विनाः यः रेटः नरः न बुटः वयः नार्वे दः यः चे दः यः वर्दे । से नियः है। सेस्र रहत शुःरिया द्रया शहर दे रियो स्वाया स्टायी दिया द्रया शहर से रियो स र्शे । अंश्रयाय्वीः देयाय्यायः विवायः हे वर्षः व बुदः द्यायदः वर्देग्रथः यन्दायः विवायः सेदः वसः व बुदः वसः व विदः यः बेदः यः सेः रेग्याने। येययाउदावययाउदान्दे नादर्देनायद्दास्यानस्याये वर्देन्'यर'अद्ध्रद्भायवे'धेरा शेअश'ठव्'ग्री'र्देश'व्यानने'न'वर्देन्' सक्रान्द्रस्यानस्यासे पर्देद्रसक्रान् सक्ष्रम्य सम्बद्धान्य सम्बद्धान्य सम्बद्धान्य सम्बद्धान्य सम्बद्धान्य सम र्देशवर्शाहर्देश्वर्दिन्देश्वरात्। स्टामीन्देशवर्श्यात्रात्रेशवरायद्वरायाहेन्देरा होत्रपदि से देवा रात्रे। से सरा उदा वसरा उदा दर वी देवा उदा ही साला सूना धेत मश्यायाय विना य हे नर न तुर त्रशासत पर्ने नशासा राष्ट्र या वनायः विनाः यः रेटः नरः न बुटः तथः नार्वेदः यः ब्रेटः यः वे ना हवः वयः शेः रेग्यार्थे सूर्यान् न्याययाया निर्देशया निर्देशया निर्देशया निर्देशया ठव वस्तरा उर् या से सरा र्द्वेसरा रा सुरा तुरा रा स्ता सा सुरा ही व रही सा नक्षन हु नार्शेष विश्वार्शेष न स्वार्श न स्वार्श न न स्वार्श न स्वार्थ न स्वार्श न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्य न स्वार्थ न स्वार्य न स्व

देवश्यमः भेशः श्रें याद्वं यादी। श्रें में मात्रायाः श्रें श्रें यादी दर्मा याद्वा श्रें यादी प्रत्या यादी श्रें में मात्राया प्रत्या यादी श्रें मात्राया प्रत्या यादी श्रें मात्राया प्रत्या यादी श्रें मात्राया प्रत्या यादी श्रें मात्राया यादी स्वाय यादी स्व

स्रमानस्रास्री सर्ने त्यसा क्रेंनाध्यम् मेराने त्यस्यामान स्राह्मिनासा श्चेर्अप्यान्दरायार्थेदानान्दरायाः भी प्रवेशयार्श्वेष्ययाने विष्ट्रयायर्थेदान्यः। नगर्दे। । धुवःरेटः सं वद्यायाव्या सेस्या उवापाटा होदः ग्रीः यवस्य सवस्य स् नुत्या श्रेट सेंद्या श्रेंच ट्रिंव वया यावत सेंद्या त्रायया त्रायरे वावराष्ट्रानुरायानुरायाने ने दियायार्वे । वियावार्यात्याया सून् रोस्र राष्ट्र प्रस्थ राष्ट्र प्रम्य राष्ट्र प्रमा मी देव रवत मी स्था प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा स्था र न् नर्झेया सेस्र उत्वस्य राउन् निमानी साहे सूर पीत सूस्र वा विक्र नःयःर्वेनाः संसेन् स्रायन्नानीः क्षेत्रायः यद्यायाः विनाः स्रायः सेन् स्रोतः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्राय दशःग्रेग्'ह्र'न्रुंद्र्'दे'ध्यःर्धेग्रग्द्राश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्या ग्रेग्ग्यूर्येत् भ्रेरायायात्रार्यायीयात्री सेस्याउदायतेते सुरा अ:ब्रुट्य:गु:व:वाठेवा:गुट:येट्। ब्रुट्य:य:य:गुट्य:गुर्य:ये:र्केट्। येयय: उदायदेशायद्यायो सासाग्रसाग्राचार्या यहिया ग्राम्सेद्रा ग्राम्साया ग्राम्सा ग्रीयाधी केंद्रा येयया उदारे रेया ग्राम्यीय हेदाया निवानी याया नुयानु न'मिडेम्'ग्रट'सेट्। ग्रुस'स'य'म्रह्म राग्नेस'से रहेट'हेट'ट्र्'ट्र्ट्'सेट्र्'यस' क्रॅंबरअ:बद्राग्री:वर:र्रेअअअ:उव:वर्दे:द्या:वीअ:वद्या:वी:अ:ब्रेट्रप्यरः वशुरावर्षा वर्दे द्वा वर्वा वी देव उव शी सारे राग्र पीव सूस रू नमसमाय। सेसमाउदात्रसम्याउदारम्यो।साद्वेदाउदाकेदाद्वानिदादमा देश'लेश'वर्द्देदश'यर'ग्री देख्रर'यर'लेश'ग्री'हेंगश'य'ग्रिट्'यर'ठत' धुरन् कुन्यः भ्रेन्यर सुराध्रयः विवाधीया विवाधीया याले प्येत प्रमा त्या प्रमा विष्य के प्रमा के त्या के त्या विषय के त्या के त्

 दशस्याचे स्रुवा राज्याची का के त्याचे राज्याचे राज्याचे

हैं में हे से सम्भारत्य सुना नस्यान सुन्द विनान विनास ग्राह्य स्व से निक्ष मासुहर सदे नासे न हु सम्बेत मासु निक्ष स्वान स्वान

स्यानश्चित्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्र स्यानश्चित्रं त्रात्वर्त्ते त्रात्वा व्याप्त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्त्ते त्रात्वर्ते त्रात्वर्त्ते त्रत्ते त्रत्ते त्रत्वर्त्ते त्रत्ते त्रत्

ने स्मर्ग्यक्षें स्मर्ग्यके स्ट्रिये स्वेर् देव स्वर्ग्य स्वेर स्वर्ग्यके स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ग्य स्वर्ण्य स्वर्ग्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्

ग्वितः प्यान्त्रः भी स्थाने स

वेगा के तर्में भू र न तु तर्मे वे स्ट्री र स्ट्री

है। नःश्रुः अः मन् वः वर्षे अः वर्गाः वः यम् वः यः न् रः वर्षे अअयः हेः श्रु मः ग्रु अः यः नेः यव या प्राप्त के से सका वर्ष भूर कुर कु जुका के सूस पुर कु का की वा की भेगावश्यके सम्बुग्याय सम्बुग्याय स्तुर्या निर्देश स्वरं सेस्र एउत् इस्र राग्नी इवानस्यापराद्यावेता इवाइवाद्यी हैं ते सुरासुराद्युराता सुराया सुरायरा मुःअःभूरुः चैरुः चैरुः न क्रुनः हुः नर्रेषः विराम् स्यानः निम्यानः निम्यानः नि गन्नर्ने ।ने क्षरदेव नगमम्बर्धिय विश्व में में मान्य विश्व के निरम् इव्राम्चीयानभूरयायदे याम्बर्मयम्ययारीयायानुयायिर्दर्यानरे वर्षेत्रापरायः यशन्दर्हेत्रस्त्राचि प्रकेट प्रान्य स्था स्वाप्तस्य गशुस्राग्रीसाधुदार् स्वराविदाष्ट्रसावनामायरे द्वस्यसाधयानरार्देरादा नन्गाक्षेत्रविषासेत्रसम्बस्स्य सुरव्यू मः विदाययानमः वर्दे मानाया सित्। नेशक्षात्राचिश्वास्त्रीत्राच्याः देवाच्याः इत्राच्याः इत्राच्याः व्याप्ताः व्यापताः विष्णाः व्यापताः व बर्या मुन्त्र मेर्या यदे वरे वाया वर्षे द्राया मुन्त्र मेर्य मुन्त्र मेर्य मुन्त्र मेर्य मुन्त्र मेर्य मुन्त्र मेर्य मेर्य मुन्त्र मेर्य मुन्त्र मेर्य मेर्य मुन्त्र मेर्य मेर्य मुन्त्र मेर्य म याध्याचित्रचीयानक्ष्या वियापर्येषानानुना र्ने॥

याहेश्रान्यन्यायाहेश्रान्द्रवाण्ची श्रीत्रान्यावाल्या यहेश्रान्द्रवाणे स्वराधेत्रान्यस्य स्वराधेत्रान्यस्य स्वराधेत्र स्

श्चुनःद्धंयःयः महिश

धेन्दिन्ने नुस्रम्म विन्यम् उत्सूत्र

नन्गामारेशपद्देवाग्रीः श्रुवानश्रमान्ता माववामारेशपद्देवाग्रीः यव विव नश्या पर्दा । प्रमासी श्री ही में मिस साथ श्री साम विव परि प्रमास स्था वर्रे सूर नश्या स्री राजी अवतः र्से रात्रे के वर्रे वे त्वा गरे वा नराया र्शेग्राश्राश्रीस्राश्वतः वस्राश्चार्यः प्रमाश्चार्यः स्टामी ह्रिः ध्रायः त्र रदःग्वितःगहेराःगदःगहेराःगरःवहेत्।गदःधयःगरःवर्देरःसूसःतः नहग्रास्याम् र्याचेस्यस्यहेत्रचेराम्बन्धयानस्यहेरानवे हें। रअरअः भ्वारा श्रीराञ्चे त्या देवे के स्टाया विराधस्य स्टिन स्वे क्लिंट्स वर्षे अरवन्वाः र्वेवाः अर्थेन् स्वयः न् रक्षेत्रे वरः न् र्वियः वर्षेत्रः वरः यं त रे वा रे वा रे वे स्मान अपदे र प्यार हैं प्रत परे अपन हैं अपने हैं र प्रिय यद्रःस्त्रुवःक्ष्यायाः कष्यायाः भिरावेवायान्या क्ष्यां स्वितः विश्वास्य विश्वासः विष न्नर-त्-अँर-भ्रे-भूँ ब-ळन्-न्य-च-भूँ र-यँ वा-तु-अँ र-यन्व । न-वे-वा हे अः वहें ब वर्गे द में वदे वे द्वद द्व अद के वा ग्रह के वा न्हर के दि हैं प्रवाद दे हुए वर्षार्चेव पावेगारे या गुरा गुरे सूसा रुप्त वा प्राप्त वा रिष्ट र्वेगासेन्द्रसर्गेस्र प्राया के साम या वे साम है ता से न से न है न दें सूसाय

र्त्ते स्ट्रिंग्स्ति विश्व वि

शुँ नःयह्याःस्था यहेयाःहेवःनयाःवःयक्तेः नःयानःर्णेनःननः। यहेयाशः ना यदेःकेवःनेशःर्गे नन्याःयः वे विया श्वा विश्वःयाश्चरः स्थाः स्थाः के यदेनः ना यदेःकेवःनेशःर्गे नन्याःयः वे विया श्वा विश्वःयश्चरः सः स्थाः के यदेनः याववःश्वेशः स्टायःश्वे श्ववः सम्माहेनः वे न्यस्य स्थाः स मर्देन्यः हे स्केन् हेना वर्ष्युन्य नाम सम्बन्धः स्वन्या मार्चे सायहेन वर्षे यशयवुद्रा गर्देव नवीवाश श्रेवाश शे साधीव ग्री गर्दे द सद्द है नर वज्रुम्। सुरुष्य वर्ष्ण द्वार्थ स्वार्थ स्वार् वर्तुरानात्रस्थाराज्यात्राचित्रां विष्याद्यात्राचित्रावित्रां विस्तादान्ता न्यःक्षेत्राः १ सम्भागः स्थानाः स्थान् । स्थान्यः । स्थाः । स्थान्यः । स्थान्यः । स्थान्यः । स्थान्यः । स्थान्यः । स्यान्यः । स्थान्यः । स्थाः । स गडेशवहें व वरे वनव विगमीश ग्रुमा श्रिसर दव सेंट ग्रुस श्री स्वा नर्याश्चित्राचार्यम्याप्ययाम् अस्तित्राचित्रः नदेश्चेताः नर्याः स्रेत्रः स्रेतः द्युद्रः नः त्रस्र संस्तुः ग्राद्रः वद्याः विद्याः विद यथा शु.पर्ट्रेट.स.र्टर.कैया.यर्जात.बश्चा.कर्.ग्री.पर्वेट.याय्यासवर.विया. यने माडे अप्यहें व प्यों र में प्यहे किं व प्येव प्यर माश्रुर । हे प्यर से वे मार्वे ह यःहे श्रेतः वेषाः वेदाया वस्ता वद्या माने सायहे वादि । वित्याय सा वर्जुर-वन्त्री यव्यक्ष्व-विद्यान्य-प्रम्ट-क्ष्य-वर्ण्य-वर्ण्य-वर्ण्य-प्रम्ट-याडेया त्यायाडेया। या बेराया वर्षे । बस्य अया उर्ण ग्राराय द्या या वे अयह दि ता वर्षे । वि वःषशःवतुरःश्ले। सरःग्रेशःधरःवतुरःवशःसरःवरेःवरःवर्देत्। सरः स्व-श्रुय्यक्ष्यायायावियायर्दित्। यात्रयाय वात्यायावियायर्देत्। स्व्यायायाये न'विग'वर्देन ने'व'र्शेनाश'रा'नने'र्भेन'स्व'श्रुश'र्स्टनाश'रा'व्रथश'रुन' ररायाळरानाविषापर्रेत्वमाने नम्भूनामने भ्रीरातु प्रमारम् । गर्सेगा हैर ग्वाब्र त्य हिन गर्सेन न्दर है मुल होना ग्व्य सुव सुम रहें ग्रम यन्त्राविष्ठायायेग्रयास्यास्यासे सर्वेत्या स्वान्त्रे वास्त्री प्राप्ति स्वान्त्रे वास्त्री प्राप्ति स्वान्त्र याक्षेत्राप्त्राञ्चार्ये से हो स्पर्धे स्थाया स्थाय हो स भेगानी अन्त्रकृत्युना अन्येना अन्ते अन्तं अन्धितः भेन्ने न्यम् सुम्यायाः । ग्वितः वस्र राज्य स्त्राची प्राम् स्त्र राज्य प्राचित्र विवार्षेत्र स्त्री प्राप्त स्त्री यः अन्तरः यतः रहेतः अभ्यत्व नुः रहेत्यतः यतः रहेतः अभ्यत्व पुष्यः स्रेः यतः दुवासी समुद्रा ध्राया से मारे मानी सी इसका सी समुद्रा से प्रस्ति वरा स्वर कुंवाभी सम्बन्धा सम्भवादा स्वता कुंवाभी सम्बन्धा नर्भवा पर्भवा विदास सम्बन्धिया भे अ श्रुवा त्रु अ ५८ र र्रेजिय अ अ अ श्रुवा क्रेविय प्राप्त र अ के दिया विश्व अ अ समुक्रमायदी मस्याउदाया हे या यही का यवी दारी वित्र वित्र या गुरुषा या धीवा गाडेशप्रहें तप्रों राये भी राये की राये ही ताया ही तायत हिंदा सह ताये विषय बेर्ने न्वे नवे नके माहेर कुर्ने नवे लया दश है है र र र या न्यर अःअर्वेदःनदेःनेदःयःत्वःअःर्येग्रयःशुर्यःग्रदःयदःवेग्रयःशेःत्रयः न्दःयः न्यारः अर्वेदः व सव विवाधः शुः धेदः वाशुदः व स्वा वा वे अ विदेव विवादि । वर्रे श्वेरमी स्वायाशुमात्रया श्वेत त्रु या श्वेषाया श्वया ग्राप्त श्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स व्यायमा व्याप्त व्याप्त या के माय दिव पर्यो प्राप्त माय सुव से व विदे <u> ५२८.२.शूरावश्राचा ११८.०८.८.५८.५५.५५.१५८.१५५.५५.५५.५</u> र्शेन्यान्त्रायानेते हे शाशुप्तह्यायायशास्त्रास्ते याशुन्यी हे शाशुप्तह्या धरक्षे हो द्वा विवाय द्वो प्रदेश्य के या हे द इसय हो या प्रस्था पर

न्वायन्त्रः भे भ्री क्यायागुन्न वया स्टायने व स्थ्रयाया या किवाया स्टायी । र्शेट्रायार्श्मेवर्त्र्यार्श्वरायार्थित्यमा मेविमानाविक् मेर्भयापटादे याविरावि भ्रेष्ट्री नाया परिवाया हेया शुराय श्रुवाय मार विदेश साथी विदेश वालवा वस्र रूप्ति निर्मा निर्माण विष्म वस्त्र राष्ट्र राष्ट् वर्चरा देव.क्र.सर.मी.श्रॅ्रिं रायारवायवे.श्रॅ्रेंब्रम्में स्ट्रम्स्ट्रिंस्य क्रिया धर:रदःमीशःगदःषदःसःयदःसःयःगवदःग्रीशःगर्देदःसःग्रुशःसःयदःनः विगार्देर स्रे। ररमी गडिस प्रहें व प्रदेश में वसायव राधिवा गवव ग्रीस र्दायाम्बर्धित्राच्या वर्षेत्राया वर्षेत्रावर्षेत्रावर्षेत्राचित्रवेष्यश्चायेत्राचे रदा हेन्याडेशायराव बुरावशायाववाया छन्या र्याच्या याववा ग्री हैं। ८८.श्र.भ ब्रुव.राष्ट्र.जश्र.भीया.श्रश्रामश्रामात्रश्राट्य.श्रीट.य.लीव.ब्री । यक्कि.ज. कें विदेरायरें वार्चे दे वा विदान केंद्र दिरान केंद्र रावे विकास कें निकास भ्रेअःग्रम् केःस्वयःष्ट्रःयःयःग्वत्यम्यःद्वर्देःष्ट्रसःवर्द्वरःवदेःययःदेयःयसः नमग्रम्भः मदे समु धित सम् ग्रम्भः स्वा । क्रिमः सम् प्रमान सम् उर्-गुर-नर्गाम्डेशन्द्रिनन्दि-निन्सानुसामधित्रमन्।

ग्रेशप्रदेशप्री मिंतप्रश्चा स्ट्राप्त प्रेशप्रदेशप्र म्या स्ट्रिय प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्यायायवियायार्देवायाद्वायार्देवायार्देवायाद्वायाद्वायायार्थाया स्व-श्रुयः र्क्षेण्यायः विणा हो दायर पर्दे दावया वर हो दायी हिं रायद द् नयम्यायाः निर्मा दे त्या श्रीरावया विवारे हरामावया यात्रा के या मुवाराया हिराना ८८। भ्रियार्थे अर्थेवा अर्था ५८। भ्रेर्वे वावत ग्री अविवा अर्थे ८८८। वात र्शःदेवाःवीः द्येः नः रहेदः रहेदः ग्रीराःवार्देदः सः श्रीः द्राः साद्याः श्रीः वाद्याः वाद्याः वाद्याः वाद्याः धेवा वैरान्देशरी या निश्वराव्यवस्थाया वर्ते सेन्यरा वर्ते न्या ने न्या गरः षरः वज्रुरः नवे क्षें से र दे । या हे सः वहें तः वर्गे र से वर्षे सः पे र न क्षें र ः वयारि हो ना के प्रति हे ना गा ना सूर्य स्थान स्य मै्यायान्त्रभूयायम्यायनवानेयायमान्याम्याम्यास्याम्यास्या र्वेन केरा के सूर्व मन्दर मुन्य रामा स्वामा यहार मन्द्री द्रमा स्वास र प्रस्थेया नन्दा वन्यापर्भेनन्द्रस्य न्याय केन्याय केन्याय केन्याय मुन्य वर्ष नक्ष्यायान्द्राक्षेत्राहेन्यदान् होन्याने के से देशायाने वाहेन्या से वाहित्या स्ता गै श्रें न प्रत ने छेन ग्राव श्रे अ ग्रायय न म अर्थे म व्याप म म विव न हैं न प धेवा नमेर्न्यश्चित्रं सेन्दिः विवाहर्त्वा वर्देशः वस्रश्चरं वर्देशः नर्हेन्ग्यमा भेष्यभेर्षेश्वर्मवे र्भेन्यनहेन्यमात्य धेन भेर्षे सम्पीरम नविवाग्ययानमान्हेंनायाधेवार्वे।

त्रे प्रवेत प्रत्ये स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्

न् भूगाः गुरुषः मरुषः स्टः मी स्टः मित्र मित्रः मित

यर्रे सेते मुद्रायया देव सेंट्या इस्य मिया निवा वहें स्था सेस्य उदायहें सरा निराद्धया विसरा पहें सरा । । १३सरा पठरा हे दारारा दसदा विरःश्रुरः ५८ दे नविवः भ्रेंवः मर्थः भ्रुत्। । र्हेन्यः भ्रे स्रुवः दे वे नववः ५ से र्विसम्बद्धाः सुन् विसम्बद्धाः सम्बद्धाः नगरः सुन् साम्बद्धाः स्वरः सुरः स क्रथाचीयाचरार्र्सेन्यम्यह्ना नेम्प्यम्यावन्तुम्कृत्रायेययान्य इसरान्टार्स्यायान दुवे विटान नत्यायान देश सहसासुया इसरा ग्रीया ग्राटा इसामा गुना हुः क्रें दाया सह दान जान ना हु। के क्रिया स्टा हु दाया है सा धरःच बुरःव शः हे र :च गुरः श्रुव : ग्राच शायः कवा शः धः वे : र र : वो : कें शः वे : ग्रुशः ८८.५४.ज्येचेश्वराव्यत्राक्ष्यः १८.क्ष्यां व्यक्ष्यः १५४.५४। या हे अप्यहें तप्यों रार्धे प्यहे अप्रहेरायी स्याय अप्यात्र अप्यात्र अप्यात्र प्रदेश्य नदेः त्वाप्तवः हीवः धरः नेवाध्यरः हार्वे । दिवः हीः प्रचरः वदेः वाप्तवे द्वाः ववः क्रॅ्रें त'रा ब्रुण्या हे 'ठत' दे या बर' वर्दे द 'क्यया वा क्रें द 'वग् र व्या क्याया व वर्गेना मदे वन रासु नारो र ५६ वा वा रेना म र स वदर से ५८ नदे বভদেবামইনার্

न् भूर र्रा विश्व र विश्व के प्रति के त्री प्रति के त्री के के प्रति के त्री के के

नर्शन्त्रस्य द्वान्य विद्याने । प्राप्त क्षेत्र । प्राप्त क्षेत्र

द्यो निर्दे निर्मेश्व निर्मेश्य निर्मेश्व निर्मेश्व निर्मेश्व निर्मेश्व निर्मेश्व निर्मेश्व निर

ग्रीयादि। वि.सी. हेर् वियासया दे सी. यहर् वि.सी. यहर्या स्था दे सी. विवास स्था द्रा । श्रे अप्पेत्र मु पार्वे द्र प्रके प्रदेश मार्थ अप्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश प्रदेश वर्त्वराक्षे रटावी ख्रायेंद्र के क्षेत्र विकास वितास विकास व वर्सेना मिने नार्ने न स्रे न नार्ना माउन सम्मा ग्राम नारे मावहें न उन ने वे खुर्रार्ख्यात्यः र्सें र्वास्यान्य रामिंद्वारा होता है विस्तर्वे वात्य से होता से व वर्देन् प्रवे सूना नस्य र्स्नेन् अन्य सुन् प्रमः होन् दे । वित्र वेद्या सुन् गर्भेग'यर'दर्देर'द्रशाप'ग्रया'गर्दिग्राश्चेर'र्द्धय'दर्देश'र्वेर'द्रह्य' हें ८ पश हे ८ पा पर्के वा पार्शिया अर्थे वा वा के वा वा पार्टि वा वा वा विराधित है ५ ८ दे १ राज्य व र्देर-वेंद्रशः श्रेंद्र-वर्षः वाद्राचे साधिदा इस्र शामिश इस्र पानु विषय वि विरम्बेर्प्य होर्प्त व्यापळें इर बर्पे कुर्य प्रम्प द्याप्य द्वाप्य द् यःश्रेवाशःसदेःद्वुदःसदेः चुः इस्रशः ग्रेशःग्रदः क्ष्यःद्वः श्रुवः स्वर्धेवाशः क्षेत्रः स्वरः शेशशायान्त्रिः व्याशाने विद्या हिन श्रुक्षेयाशाय हुन नाम हिन स्थान श्रुःकैंग्रायद्युरः है। रुःश्रावः द्वायायः वदरः विद्याः हेर् सेंग्रयः नग्राः से नियाना सुर्से वाया चुरानाया दुर्गे राह्याया चुराने या सुर्दे । भ्रिष्य सद्दर भ्रे.पाक्ट.च.श्रेयाश्व.त्रुंट.चे.देंट.च.टेट.के.पीट.क्र्यांट.क्र्यंट.क्र्यांट.क्र्यंट.क्र्यांट.क्र र्शेग्राया निव रुप्तव पा ही है। ह्याया ने प्राप्तया व स्थाप प्राप्त साही निवा याडेशासरावहितासावी पार्वे नार्वे नार्वे नार्वे नार्वे मान्या मुया नश्रूया नश्यूया नश्रूया नश्यूया नश्य्या नश्यूया नश्य देशःश्री।

यन्यायश्यावद्याहेशः श्रीयायदेश्येयशान्यवः इयशायः देशियः धेदः इयशः ग्राम्यः स्थायः गृदः द्यायः अर्केन् स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः

हें निहे न्ययाध्वाका है लाग्वसाग्रामान नामान निहे नामान ने नि नेदेःगविःनन्गः इस्राःग्रेयः नश्चेतः नगुरः ग्रुयः पःन्। श्रुवः सः नगुर्यः यः र्स्रेसः विदः चत्वासः याद्यः वाद्यः वाद्यः हसस्य राद्यः देवासः हसस्य ग्रादः रदःरदःमी'स'सर्वेदःनाक्ष्र-द्यावःनवे क्राव्युरः होद्रिः स्वेदः यासः दुः नवाःसन्रथःत्रथःवात्र्यःसरः होतःसन्तः। सूरःरेः बरःसः नत्वाःस्रथः वात्रवः गाडेशप्रवाद विगार्झे स विद नव्यास पात से साधित गार्गा पार उत प्याद विगामी शमिर्देन या होन यम नहीं श्रायान हो। साम हो साम हो। साम हो। यायदी विदारदायया सुरवगाया या वे या यर हो दाव विदाय या या या हो दा हो रा वरालेंगाः भूता देः पदारायाः कुः चरे से साधे दार्से क्रायाः है से सा मुलार्सि केत्रार्सि निवित्वित्रार्दि न्या निव्या क्षेत्रासदे सेस्यान्यतः इस्यायायायान्यतः स्वान्यत्वा सर्हेर्पादर्या नश्चेत्रानग्राम्झेर्पास्यस्यानेत् स्रमान्यस्यानेत् यर.ग्रेटी ब्रियोश.टट.ब्रियोश.सक्सश.स्सश.श्री.स्रेय.सप्ट.ग्रायोश.स.ब्रियो. धर हो द राया श्रीम् शाया ने र हो द हो। सर्दे द शासद द्वा शुद्र शासी नर्राणे मोर्देर्या बस्य राउर्णा स्वारेश प्रदेश प्रते प्रयाप गुराना प्रीता है। नत्रारेशात्रानारे नामार्थे क्षित्रम्यापान्यम्यास्य स्वीताया विगायःरियात्रयायगुरायाधेताग्री रदामी सेस्रयायर् प्रदेशमापेद्रयाय त्रा हेत्रन्ग्रस्त्रुवः म्यायायायाः कवायायात्रा हेत्त्रत्रस्यायायेयाः ळग्रानिराने द्यायी के विदेश मुन्ने द्रास्त्र स्थाय ग्रीशःस्टः र्सुन्यशःषः कवाशःसः ५८। वाववः र्सुन्यशः श्रूटः चदेः ५ वटः वीशः विष्ठ्याः हिन् स्वासार्वेद सेन् सेन् स्वेदिने निन्न निन्न स्वासाय स्वा उद्दान्त्र्न् श्री त्या अप्योत्तर स्वास्त्र स्वीत्र श्रीत श्रीत स्वास्त्र स् १ने १२ तुते कवा अञ्चर वी व्यक्ष ने नवा ने नर वी वा ने अवहें न वर्वो र में वरे वनवः विमानी अः ग्रुअः यः प्येवः वेष्ठि। माववः प्यदः नर्तुनः बस्रअः उनः ग्रीः श्रेः नर्येवः <u> न्ययः वें व्रः तुः वे कें वर्षे न्यायि यन् न्य वि प्यन्य प्ये प्यन्य हे प्यद्व या क्षेत्रायाः </u> यान्सूर्यायया नर्राचित्रात्रीत्रयत्रे स्यायराव्हेंस्याया वियानस्य मदे नत्त्र ग्री न्यव में है हैं द से न्या मदे नत्त्र धे द सम् ने दे व में व यशन्तन्दिन्। कु:केर:र्यायायशःग्रह्मन्त्री:क्रेन्द्रिन् बु:र्वेदे वर्देन भवे केंत्र सेंद्र अधीव भराग्री । वहिया हेत वार्येत ८८.चर्चेचार्यः ८८.७६ वार्यः सः है स्ट्रेट् विगः खेट सः बस्यः ७८. ग्रटः वट्याः ग्रेशप्रदेत्यने प्रश्नित्य विद्या प्रति । ग्रेशप्रदेत् मी प्रित्र केतप्रदे श्वेदः त्र्वायः श्वेवः वार्देवः ददः वयो वायाः श्वयः उदः ग्रदः वह्वाः या वारेयः वहें व भी महिव वहें से द व वे महिव न में मार्थ मावव मार प्यर से वह मा

ने प्यट अट्य कुय प्रत्य कुय ये स्था प्रत्य क्रिय क्र

वेगा के दार्ते क्वें रावर्त्र के ते के दार्

याद्यात्री । वार्डशायद्वित्रयीः वार्द्वित्रयीः वार्द्वित्रयीः व्याप्त्रात्यात्र्वित्रः व्याप्त्रयात्र्वितः व्याप्त्रयात्र्वितः व्याप्त्रयात्र्वितः व्याप्त्रयात्र्वितः व्याप्त्रयात्र्वितः व्याप्त्रयात्र्वेतः व्याप्त्रयात्र्वेतः व्याप्त्यात्र्वेतः व्याप्त्रयात्र्वेतः व्याप्त्यात्र्वेतः व्याप्त्यात्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्यात्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्यात्रः व्यापत्रः व्यापत्यः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः व्यापत्रः वयापत्रः व्यापत्रः वयापत्रः वयापत्यः वयापत्रः वयापत्यः वयापत्रः वयापत्यः वयापत्रः वयापत्रः वयापत्यः वयापत्

कु:केर:र्रेयायायय। गुरुषायूत्र मुनायादे थी भूगायादे। । र्गार्टा सर्वेद न्दर से प्रें रा से रहे। सर्वेद क वसद रा पा नसरा उद से हिंगा गुरा । डेश गशुरश संभूर। र्वेद गुर कुर सेसस द्वर गुर कुर गी निर इट्ट्रान्व्यायात्रयादळट् मुप्तायायादेत्र्र्युयायायदे छे। नर्ट्ट्रि <u> न्यमार्क्षम्यार्थीयायर्क्षत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्ष्यायाय्यास्ययायाः स्थयायाः स्थितायीः करान् सूर्यः </u> राःक्षेरतृति । वदीः दर्षे अवेर्ष्याः नष्यः वस्यः वस्यः उदः ग्रादः नद्याः याहे सः ठे·तुदःनःत्रस्रसःउदःनद्याःग्रहेसःदह्दादद्रसःतुसःमःशःक्ष्याःधेदःहे। गडेशवहें व ग्री प्रवादाया वालव ग्री से सरा प्राचारा प्राच्या यालव वा गर्वेर्पा क्षें र्पायक्षा नक्षुया नकारे वे क्षा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ८८.श्रेश्वरात्रास्यात्रस्यास्यास्यास्यात्रस्यात्रात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस्यात्रस् मुेव वस्र राज्य पारे वा देश विदेश वि गडेरावहेराग्री सुरायरानश्चित्रात्र स्ट्रिंट्र में ग्वर्य सुग्या राग्री देत नेश्रासाक्षार्वेग । कें प्रदेशियदे सूगार्क्सायार से नेश्रासम् सूगायस्याया वरे वर व बुदा के वार्ड दावार्य वार्ड दावर व बुदा वार्डे दायाय स्व सर न बुर है। बराय शेर वेद केद से राम्म मी खुराय शे वर्षे र पदे बरा व नन्दा अमें अअन्तरे त्र अत्यन्ता स्थाय तु नर दे त्र त्र नार्य अ यद्यात्मान्न वित्तात्म क्षेत्र म्हें न्या वित्ता व

श्रेश्रण्या स्वारक्षेत्र में इंग्लुं हुं स्वार्ण्या ने खूर्र स्वार्थ स्वार्ण्य में स्वार्ण्य स्वार्ण स्

श्रुवः न्द्रम् । व्याविषः वर्षे । व्याविष्ट्रम् । व्याविष्ट्रम् । वर्षे व्याविष्ट्रम् व्याविष्ट्रम् । वर्षे व्याविष्ट्रम् व्याविष्ट्रम् । वर्षे व्याविष्ट्रम् व्याविष्ट्रम् । वर्षे व्याविष्ट्रम् व्याविष्ट्रम् वर्षे व्याविष्ट्रम् वर्षे व्याविष्ट्रम् वर्षे वर्

डेश'र्टा

क्रन्स्यस्य वर्षेयायय। नन्या धर्म्से यावम् न्रं लेया । नन्या म्बरक्षात्रस्य प्रमा विदे न्यान्तर्ते व्याप्य विष्य वर्षेर्यनिष्यान्त्रेयावर्षेत्रावर्षेत्रस्य स्त्राच्यान्त्री वर्षेत्रः श्री स्त्राचित्रस्य स्त्राचित्रस्य वर्त्यान्त्राचित्रं वित्राचित्रः वित्रः वित् अर्भेगाभने निमालहें न प्रभेषिन में । मे प्यम् निमालहें न अर्भेगाभायमे यानहेत्रत्याहेत्राधेद्यापाव्यावयावयावयाव्याव्याव्या यश्चर्यश्चार्या यश्ची:न्वरःवीशःविर्मरःवरःविर्मरहे सूवाःवस्यः कुतः कर्भेर्भर्भेर्भ्राभ्येष्ट्रिं चुर्विए। ब्राव्यविराविष्येष्ठ्र्भेर्भ्य्ये ग्राट्स सेवा संवदेवे सञ्चालया ग्रुट च निस्रया मुख्य विस्रया गुरुस वर्विर्न्तिरेश्वेद्रित्वरुत्वि वस्य अरुत्या रेग्नाय द्या व स्वर्ति विते वर्त्ति । हेत्रत्रवेयापत्रयान्य दुःगहेशार्रे तदी यशसायन्य विदा हेत्रत्रवेया वर्रे वस्य या उत् ग्री इत्य वर्षा वहें दास देवा सवरे पीद दें विश्व में विदे <u> भ्रेर्, भ्रेंब्र, यः श्रुवाश्राह्रे । उद्घर्त । भ्रेर्न । भ्रेर्म वार्द्धवाः व्यवाः विद्रः भ्रेर्म । विद्रा</u> यःरादेःविर्द्रात्रें सम्बद्धेत्रावर्षेत्रावर्षेत्राचेत्रावर्षेत्राचेत्रावर्षेत्राचे याहे अया सवा यो या ब्राया रहत प्राया हेते। या वर्षा यहें दाळवा वर्षा स्वा हेवा

ग्री गा त्रुग्र रहत दि स्ट सुर श्रुर ग्री गात्र ग्र रहेत स्वा दे स्वयं रहत ब्रे-ह्ना-च-ब्रेव-देवि:गा<u>ब</u>्नाश-उव-ग्री-प्यव-प्यना-ध्रश-वब्द-विद-विद-प्र-वद-र्-ु कुन्यान्त्रेशान्वेषाचेशानगवासुवायाष्ट्रमान्त्री । नासूनानन्त्राग्वेशावहेता वर्देशः विवास्त्राचेत्रः व्याप्त्रमः न्याप्त्रम् विवास्त्रम् विवास्त्रम् विवास्त्रम् धर हुराया वाडेरा वहें दार्वी र से पदी पद्वा वाया त्रा पा के पेंद ग्री रा वनद्रायम् तुः भ्रे। द्राद्राविद्राद्रीतः विदेशे द्राद्राद्राद्राद्राद्रायम् व्या नस्यासवरासेन्यार्श्वे रानराद्युरानम्। न्धेत्रकन्तन्वाविसा वहें तर्देर है। रर में खुरा वें ररा हुँ र वसरा उर मान्तर या महिर निर । ग्वित ग्री भ्रेग स्या बस्य उर् र्र राय त्रुर्य है य वर्गे र से प्रा ळग्रान्द्रान्वरुषान् इदान्याद्वीत्रायायाद्यद्वान्तेषार्थे। विद्यान्तेषान्तेषान्तेषान्तेषान्तेषान्तेषान्तेषान् कुषापर्वे र प्रदाशया की प्रवाह्मस्र सात्रे प्यत है वा खुषात्र सा पर्वे त गुर भूनशानक्षात्रास्त्रास्त्राची ग्रेशायहेत्यते प्रियो प्रदेशायहेत् म्रमान भीता कराय मुद्दार मिले मिले मेरारी

द्युम् । निर्द्वायया श्रम् निर्मायित् प्राप्त स्थाप्त स्थाप्त

नर्हेन्या अन्यम् वन् वेया नश्निया स्थान स् गडेशप्देष्ट्रवादिर्धेप्देश्वेरमी सुग्राश्चित्राश्चित्र हेत् सेर्थास यथा ५:रेअ:५व:वि:हेर्वेच्यात्स्यान्यः प्रम्यान्यः वि:वगवःदेवः ग्रीशःनेशःस्याग्रीःश्रेषाःर्वेयःदश्यादर्गेदःर्ये व्यदःरेषाःरेशः श्रेदःयदेः भ्रम्यायदीरार्द्राक्षेत्रयायमें दार्यो प्रदेशित्यदार् से मान्दायरा गुवावयानन्यावहेवावर्गेटार्सेविनेवहेंस्यायास्त्रेयान्वे स्वारेप्पेटा ग्रीसायनद्रास्य गुर्ने साम्वीदा वाडेसायहे त्यवीदारी यदी यद्या श्रीया ग्नेवरहे म्नेवरायर्शेग्यर्थरिहिर्नेदेर्जास्यय्यायात्रहारायादर्स्टर शुरासाम्सर्भायायदाना हेर्सायहें मार्त्वे प्रति । यद्वा प्रति । यद्व । यद्वा प्रति । यद म्यायातक्ष्यायार्यम्यायात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्याः गश्रद्यायाष्ट्रमा चार्

श्रेश्वाराण्ये। विद्यारहें व तर्यो ह सं या हे श्रासंदे या हु व का श्री या श्र

ग्वित्रःसुरः रु: वह्नाः सदेः रुअः १३अभः सिम्। सिमाः हेमाः सिमाः हेमाः सिः सें मिन्तरः हे'मिनेन । क्रिन'डेम'क्रेन'डेम'न्य'नन्म'श्वेर'त्य'नश्वन । स्टा हेन'हेम' मदे सर्वे त्या के समा ने मानिया में ने महे महे ने महे महि स्थान में स्थान स्थान में स्थान स् वेशम्बर्गः नगेन्नेशः श्रुमः नुस्रान्दे वयः वयः युर्गः मुन्दे स्रान्यः क्ष्मामी अञ्चर्रा दे ते तो तो सी निष्मा निष् त्रात्रायरमायासङ्याद्रासकेत्राचन्वसात्वासाद्रायाया वर्त्रे मुश्रम् अर्दे मन्मम् स्टा हैन सुन शुक्ष के मुश्रम् विमा होन सम् वर्देन व्यादित्रानः विवासि सेन्यावयान् स्वीत्रान्यान् स्वीत्रान्य विवासि स्वास्य विवासि स्वास्य विवासि स्वास्य विवासि नशःस्टाम्बन्धीःर्देन्याटापटास्यास्यास्यास्यास्याः स्मानस्यास्याः र्क्षेत्रायायाः विवार्श्वेदायायदे गुरायत्वा विवायासे दाया स्थाना स्थिता स्थाना षरः भ्रेष्ट्ररः नरः नेत्रः पदिः नर्दे नः श्रुरः षरः निरु श्रादिः निरु । पदिः । वर्ग । अर्देन अर्वे प्रारेश योग्या ग्री व्यय वयय उर् कुर्य श्री र थे। वह्रमार्छर। इर वर् रेश्वे नर ध्रिम्य ग्राट रे सावमायस ग्री सेंगा हा गर्डेन्'सर्नेन्'सदे'दर्गेन्'स्रिने'अर्गाडेश'दिन्दने'धेव'सर्द्ग अन् डिगाया क्रमायर होन् यदे शेर ना यदा वहेश वहें वा वर्षे दारें वहें लेव्यान्य । स्राम्बिव्याम्या । स्रामिव्याम्या । स्रामिवयाम्या । स्रामिवयायाम्या । स्रामिवयायायाया

वेषा ळेव क्वें क्वें र न ५ ५ ई दे खे र वें

गहेशमान्त्र गहेशम्हिन ग्रीम्बन पॅन नश्या द्ध्या

महिरायाविद्

र्शेन्द्रमात्यमा वहेमाहेव मने महेर स्रेन्या । ने गुव मावव मने

वर्रेन्'यम् गुर्म वहिवा हेव सूवा नस्य है स्रेन्स । ने गुव रह नने वर्षेन यश गुर्। विशानि नार्रास्त्र सुरार्क्ष मार्शा प्रसार प्रमान्य गारेश वहें त.जमार्चे देशाचरा विष्टमारमा क्षेत्राचे रचा ज्यामारा समारामा वै सः म्व से सम उव म्बर्भा गाउँ भः पर एहें व भः वे श्वेर पर दे लेगा भः वस्र राज्य कि स्वाप्त के स्वाप्त ग्री:श्वेर:र्रे:८८:इन:लेब:धर:लेब:धर:वग्नूर:र्रे । १२:७८:विट:ब्रा:बीव:हः ग्नितः प्रः विग्नाः यः अर्धेत् ग्रुटः र्धे प्रत्यः येग्रयः प्रस्यः येदः नभुम्रात्राक्षेत्रचेता नवम् सम् प्रमुम् नम् सर्वे म् स्रात्रे प्रात्ते स केराग्रेशःश्रुशःशुन्दायाः स्रम् श्रेस्या उदाग्रीः विदाया ग्रुस्य श्रेदाहे ग्रुदा कुनःग्रीःशेसशःम्रेत्रः तुगानस्य निवेदेः शःर्वेत् ग्रुटः र्ये निवान्य स्वराये ग्रायः नशुर्याः भेरानशुर्यादार्देवागिष्ठेयायवराष्ट्रेवायरया कुयानर्देया थूवा वर्षाग्री में वसर वर्ष्ट्र प्रमास्त्री राष्ट्र स्था से स्था उत् ग्री विरायदर के सा केरामिक्र शुर्भा शुर्भा होत्र पार्ता यह सामित्र मित्र स्वापार पित्र दुर्गा पार्थित र दिस्य स्वापार पित्र स्वापार स्वापार पित्र स्वापार पित्र स्वापार स्व याउदार् प्रश्रमाद्रमात्रमायरा ग्रासे

वेगाळेवार्क्के इंस्ट्रिटान्ड्रियास्त्री

डे धि ख्रुंया विश्वानश्चरश्चराष्ट्रम्मे । यर्षेम् निर्दे न्यात्र स्थित्य । विश्वानश्चर्यः । विश्वानश्वर्यः । विश्वानश्वर्यः । विश्वानश्वर्यः । विश्वानश्वर्यः । विश्वावश्वर्यः । विश्वयः । व

दे । धर ही र से समा उद । इसमा उद । दर मी स मुदा १० सूर्या धिव । प्रभा देव के विद्या अप्यव मे उं अ ग्रुअ भ अव असम् अस्य असम् असम् वी अः ग्रुअः हे : त्रिं विष्टुर्यः यः नयग्यायः त्रें दः ग्रुयः विदेरः ये : विदः नः दर् ने^ॱनवित्रःत्ॱॿॺॱॻॖऀढ़ॱय़ॱॸ॔ॸॱॺॊ॔ॺॱॻॖऀढ़ॱय़ॱॸ॔ॸऄऀढ़ॱय़ॱढ़ॺॺॱॸ॓ॱॸ॓ॺॺॱ नश्रम्भारत्यरः क्षेत्राम्भार्यायदेत्रः सी 'र्वेत्रानश्राद्याचेत्राम्भार्याया ळन् सेन हेन। नेन सा बन नि तर्रे दि तु रार्षे न पा त हु या विस्र सहसा सर उवाह्मस्यायार्यायसाते। सेस्राउवाह्मस्यायायार्वे नावळे सूर्याते सवा એસઅ[.] ગ્રીઅર્તે મ: દીત્ર : પાત્ર : ક્રાંચ : ક્રીત્ર : પાર્ચ ના અ: એસઅ: હત્ર : છી: વિદ यानर्भेर्वस्थानी अपेर्वे प्रवित्राचित्र स्थानि । देवे वित्रे देव प्रवृत्ता प्रवित्र सेस्र राज्य के स्वाप्त कर स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत क्षेत्राः हुतः ह्याः राज्याया वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः ह्याः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्ते वर्यः वर्ते वर्यः वर्यः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्ते वर्यः वर्येत्रः वर्येत নাধ্যমে:মা।

ने प्यट पुष्य से सर्वा उदा त्य दिसे वा वा दिया वा वे दि से सर्वा का से व

न्वो नः केत्र में अन् ह्युयानमः भ्री वर्षे मंत्री अपी न्वा अस् भ्री कुमानु अ र्राय्वेरक्षे नरम्ब्रायमा र्राकृत्रम्य स्टावेर् न्याया नश्याद्दे से दिन्दे वा श्रिटा वा दे । इससा उदा ग्राटा स्टा वा दे साम राव श्री दा दे सा गव्राध्यानरार्देरानायया गुरानाया वितारी। देशनविताराधीय शुः श्ले अवसार्या नक्तरः कुः वेवासारे । धारा से श्लिरा निया सार्वा । स्वा नस्य कर्षे अर स्रिट न प्या प्रमान स्वा स्वा स्वा स्वा स्व यासेरासूसाम्बदाया दुराबर्ग्यारमिर्देशसेर्ग्यार्ट्रा सेससाउदानी ह्रअयान्त्रना विवर्त्ती विवर्त्ती विद्या हिन्या विद्रास्ति । वर्ष्यभार्तुः धेव म्यमायाव्य प्रायम् निम्न स्व साम्य प्रायम् विष्ठ सामाय है । वनवः विवानी शः ग्रुशः सः धेवः वे । । देः नविवः दः वाववः वः श्रुदः वार्शेदः ग्रीशः श्चेत्रवहित्दरम्ववर्ष्यश्चरित्रययाययः ह्रव्दर्धः यार्थम्यः ग्च्यः नशर्त्रायम् राष्ट्राय्ये राष्ट्राय्ये राष्ट्राय्ये स्वाय्ये स्वय्ये स्वयः स्वय यायदी जुरानाधीन यथा रम् र्सरामी सूना नस्यान में नुमाया से दार ही र न्वीं अर्धाने । यद्यावन । यथा वर्षे रात्र अर्द्या वर्षे अर्धर । यही न । यदी । वनदःविगानीशः गुरुषः पंभितः देशिनने वर्षे विः हेतः विनान्य विन्या हे निः सुतः शुंबार्ळेग्रायायगुदानादी सेस्राया उदाग्री विदाया श्रे दार्या सामिता मार्विक् त्यमायग्रह्मा न्त्रयाविदार्थेदमायके माव्यायायम् स्वरामये ममस्य बेद्रास्य स्टरम् केम् स्वेरकेद्र दुर्गेदशः श्रेंद्र मार्शेम् स्य स्वेद्र द्वर्थ स्वेद्र श्च-त्रुर्यायदे सम्भाष्टित्। देवार्यास्त्र सुर्यास्त्र विश्वास्त्र सुर्वे नामान्य

च्यात्राच्यां विकाश्वात् विकाश्व

 ध्वेत्त्र्व विश्वत्याप्ताः स्वार्थित्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स

वेगाकेत्र ग्री त्यस र् त्वास त्रास्य स्वास हिंग्य स प्या स्वास स्व उदारिदायारवात्ययाते। याम्बदायेययाउदायदीःम्ययावादेयायराव बुदा वयायदी इसराया सुरायें दर्श क्षेत्र प्रो इप्ता शुराय प्राप्त स्थित सर ब्रिव हैं वार्य सर द्युरा या मन् १९६ । इयय द्येवारा खुवा नु । युरा वर्षा मर्वेद्रावकें स्ट्रास्य केट स्रें रु सावया मन्या मुनया मार्थ क्या विस्रया द्रा ने निवेद नु निर्वेद संप्या अत्र के अश्र उद पदि ह्या श द्ये निश्व शुव नु नुसन्तर्भास्त्रन्तिमा नर्हेन्द्रमुस्याग्राम्द्रम्सस्यान्सेन्यास्याप्राप्यान् नुस वर्षाञ्चर द्वीया वेगाय केव से बुव केंद्र या धेव पदे रवस्य गाइव पद धेव'रा'णर'वरी'क्समार्धियामार्थयार्'च्यमात्रम्भूत'र्वोमा सर्रेर'व' यस्य मृत्राम्य दुः मित्रस्य उत्याम्य सेस्य उत्य दि म्स्य स्य प्रमेत वश्रभून'न्वेव। याम्बन्येययाउव'ग्रेयपन्यम्वद्वाराद्देव'राद्देव'याद्वेयान्व्याया इग्राम्य विवर्षः स्थान्य सुम् विग्राम्य के कुर मे । हिन् मम्याम्य शेशशाउदाद्वशयाविशायरावहितायाविते हेरादशावितायाधिताते। र्रायायान्यर्देरावयायान्त्रयेययाउत्राह्मययान्वेयायरावहेत्रायदे नयसम्भित्रायाः र्वार्थयाः द्वार्थयाः तुर्वे स्वयाः स्वर्थः विष्ठाः स्वयाः उदाशी देव द्रश्चेद प्राविमाया वेमाया केदा में प्राविका महेदा निक्रा सामे वर्रासेर्पस्रस्यारेषास्य है। वर्षे यर्हेर्याधेवर्ते । याययर्ह्ययावय्ययात्ययात्यायात्राम्यान्त्रात्या वियामित के प्यान्य मान से सरा उन्नित त्या महेन न्ये साही सरसा मुसा वहिमान्हेवर्र्ष्येवर्याष्परायान्तवरवर्रेन्स्ययाग्रीरेवर्षिवरवर्धेवर्योग्रा केंशा ग्री वित्र वें निर्मूर ना पर से सरा उत् भी देता वितर निर्मूर दर्गेश वर्चेट.यदुःक्रै.श्रेट्री ।ट.क्षे.रट.क्या.स्थश.शटशःक्रिशःग्रीःश्ले.यद्वट्टारा वर्यकाब्रिटाम् अप्तराम् मिना वर्षकाब्रियान्य वर्षका वराष्ठका वर्षका वर्ष यश्रायत्वराना विन्यम् वेगायः केत्रासेदेः श्रायश्रायत्वश्रानुन्दान्वश्रा यःगटायशःवर्द्धुटःचवेःकुःशःम्बरःशेसशःठवःम्सर्थः।ह्युट्-तुःग्रशॅट्-डेटः षयान्य वर्षे माना वर्षे के सम्मान के का माना वर्षे के स्वास्त्र के स्वास के वर्ग्यनःसदेः कुःने त्याष्ट्रन् नु न्यार्थन् न्यारः वहें व स्यायः गुवावयाये स्यार्थन्य धरःव बुदःवंश कुःदेःदगःगववरःवेगःवशःव वुदःवरःशुरःवेगःवेशः श्रूवः यसप्तेनसम्भःतुः पेत्रम्सर्भे।

क्रिंश.लट.र्या.सर.र्देट.सपु.सपूर्

शेसमारुव ग्री विदावे

यदयामुयाग्री विदासे। यदयामुयाग्रीविदादे त्ययायदयामुयाग्रीकेया इस्रयाय्वेतास्य विष्ट्रम् स्वी देरावे विष्यास्य वर्ष्यास्य स्वी विष्यास्य वर्षे विष्यास्य वर्षे विषया विष्यास्य वेशमाशुर्या द्धाराने न्वाप्यर प्यर नशस्य स्य स्र स्र प्याप्य नर में र हे ग्वित्यावेशःसरःविद्वःवेदः। रदःगीःसुशःवेदशःश्रुँ दःद्योः सःद्दः ववशः राशेश्रश्रास्त्रतानित्रतिहें अत्यापानुतानि नश्रसानि सुरार्श्वेतिन क्ष्र-र्वायनायेत्रयाके वेत्रयात्व सेस्यान्यवः केत्रयां इस्या ग्रीसहर्वा <u> सूर खुर दिंश सु गहिंद व से ग्रायर ने गा से त्रा ग्राट रद में त्राय </u> <u>५८.५%,४.५४.५%,४४५.६५%,४५८.३८.३८.५,५५५,५५५,५५५५</u> र्श्वे दःयम्भाष्यम् । उदः दुः द्वान्वे मः प्रवे दः दः द्वार्यम् भे समः उदः यः गर्वेद्र-सदे नगमा श्रुं र समद द्या श्रुंद विद सद सदे मनग शु हे द्युंद ह्या सेसस उत्र सेगा में स सर्वेट निर्दे के त प्यट पट दि 'द्र गा नद्र गा में स दित उत्र र्वे स्रुयायान्ता वर्ते त्यानहेत्रत्यानन्तानी ग्रुट दुन ग्री र्वे नाया हेनाया धरावशुरावशावद्याची वर्शेदावस्या ग्री विदारी स्रुसात् ग्रुससापाद्रा ग्रां मारे से स्रा की साम होता से स्रा उद पदी द्वा स्रा न्या स्र न्या स्रा न मुलानाश्रमानवसाग्रदासहेसामराद्यूरार्देशसुमानुष्यदायरायरा गुर्दे।।

धरादग्रूरावेटा अःम्बराशेश्रश्राठमायार्वेदाशेश्रशामश्रेदारेटार्धेशः बेर-१८८१६८ मर्बेर-१५४ ते अ.स.स.म् स.स.में स.स.र.१६८ गर्भेर्-चुर्यायर द्यूर्य प्रान्त्। याम्बर् सेस्या उदान्स्ययाया यदासेस्या नभ्रेट्राच्यास्याम् यास्त्रास्य स्वीताः स्वीता स्वीत्रा स्वीता स्वीत्रास्य स्वीताः यव मदे नर्य मर्था ग्वा व राज श्रुत्य है । सर्के द मा कुर द विवा स्वा न यर सर्हेर पदे सेंग्र केंद्र में र प्रमुर या से सम उद य प्रिं से सम नश्चेत्रवश्यास्यामुयायासर्हेत्रपास्त्रवयास्त्रेत्रपायात्रप्रमेश धरक्षे वर्ष्युर वर्षा व्यवस्था वर्ष्य वर्षे वर् नश्रम्भारान्ता देरावेदशः श्रेन् वस्य उत् श्रेव सरावत्ता सा থ্ৰমাষ্ট্ৰীর মেন নদ্দ নদেশ শ্ৰদ্মানী নৃত্যুমান প্ৰমাম তথ্য জী । र्देव किं वर सहर पर पर सम्भाय के साम कर के समा कर के मि वर धेव पर पर । केंब पार्र राज्य पर से प्राया सह पर पर से स्वर उदाशी देव वित्र सह दाया थेव प्रमा सेस्र उदाया में दारा शुरू द र्देव ग्रीश मुन परे द्वार में या मार्दे द या ग्रुश पर दर्श से स्था स्वर या सव यः तुरुष्तः देत्रः श्रीरुष्त्र द्वार्यये द्वारा से त्यायत् या तुरुष्य प्यायेत्र दि ।

नेश्वान्त्रम्यत्रित्तरः स्ट्रिन् श्वेश्वान्त्रम्य स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्य स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन्स्य स्ट्रिन् स्ट्रिन् स्ट्रिन्

मूर-दे-बर-परे-वयान्य। नन्गाने-सेससाउन-वस्था । धीन् निविव वे मान्य व्याप्ति में मान्य विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय ह्वा हु वा डे राय र वहीं व यर विवा । डे राया शुर राया भूर हैं। । दे शुर शेशशाउदाइशशाधीनानिवन्ती र्देनानु भूत्र मुन्तर द्वापानिका भूतरा ग्री पर्देर देव श्रुव पायाय प्रवासित से स्वास्थाय प्रवासी स्वर् श्रुवा वी । र्देन श्रुवायायाधीन विविव श्री कें रातु त्ययायाम् वायेयया उदा इयया छेया ख्याप्यराद्येर्धेर्धेर्द्या ।देण्यरम्बस्यस्य स्वरं हेर्द्राचन्द्र येद्रायाद्रायां वित्राश्चित्रश्चायां वित्रायां वित्रायं वित्रायां वित्रायं वित्रायं वित्रायां वित्रायं वित्रायं वित्रायं वित्रायं वित्रायं वित्रायं वित्रायं इससन्दर्धिन नविव श्री रें र तु निहेस गाय हो। धेन नविव श्री रें र तु रेव-धें के कुषायळव की हे से या यहनाय हे यकेंद्र केट नारे या या यहना विक्तं निर्वित् सेर्वेत्र सेर्वेत् वस्य स्वाप्त विविद्या विक्तं विक्तं विक्तं विक्तं विक्तं विक्तं विक्तं विक् नर-देर-वर्गावन-पाठेरा-पर-पत्र-भेर्गानन-रोगरा-उत्स्यरायकेंद्र विक्तं निरंतर सेर्वेर सेर्वेर सार्शे दान्य स्थान से विकास से विकास

पश्चाव्य पाठेशः श्रें यः पर्देश्येयशः प्रायः क्षेत्रः में स्थ्यः वः क्षंत्रः पा प्राप्तः नकु:वित्रःयःश्रेषाश्रःक्ष्यमुःर्ते केःह्रस्रश्रःद्रा सूदेःकुयःराद्राद्रादर्गेःद्रः वर्देग्'रें'व्'र्शेग्रथ्य अथाउट्'ग्रट विनयाग्री दुट ट्राञ्च्याय द्या मी र्देर तुर्य वित्र भी अद्येय या तृता है । क्षेत्र स्था या रेता स्था वि वेंद्रशःश्चेंद्रायवयद्यायीयायर्केद्राया होद्रायाद्याया श्चेंद्रा इस्रायम्बर्गानायः स्राचित्रं स्रा धिन्यविव मी के न्या सके न्या से प्रमेश से प्रमेश से प्रमेश से प्रमेश से प्रमेश से प्रमाण स्राचित्र स्र वेंद्रशर्श्वेंद्राड्यावगुवाग्री के श्वेष्यम् वेषादाषदायवाया सेदादी वक्वेष्ववेष कें भेर नविव भी कें र सु प्रसुष श्रम भेर गुर महिना ग्रह र प्रिर र नहर बेर्न्स्स्स्य नेश्वादि वाडिवा सुविद्या हेत्र सर्देव हुवर्के द्वीं श्वास्य देवे के जिन्नविव मी वें न्यु अगान जन के सव के । । या म्व से सव रव इस्रायकेंद्र विते कें विदेश्य ग्राय ही स्राया स्व के निते। कें स्वया ही सर-वात्रशः ५८: खुशः ५८: वेटशः श्चे ५: सुतः शुसः क्वें वाशः शः वस्रशः उतः ययर क्रियाय के क्रियायर ख़ुक ग्रीया ग्रायाय विवादित विवे खुया श्रुवायि विद्यार्चयात्रयात्रयात्रयाच्याच्यात्रयात्र्रा । यात्त्रवार्यया धेर्वतिवारी केरान्तरक्षानार्द्र केरान्यायार खूनायर नक्ष्राहे गडेशपराजुनिने प्रविदानु के प्रदेशिसह प्राचलेश इससाय राज्य सुन धरावस्थाने विवाहायरथा विराम् वेशायदे हैं के हुं हुर्दे।

रे.लर.कु.तर्देत्र.याहेत्र.याहेत्र.याहेत्र.याहेत्र.याहेत्र.याह्य अग्याळयात्रात्ते हि.लेत्र.याहात्र.यहः क्रि.यह्यात्रात्त्राह्याहेत्र.यहंत्र.यहंत्र.यहंत्र.कु.चेत्रक्रेटः। क्रि.वर्देरःलरः

गहेत्र न ले शन् श्रम् श्रम् श्रम् राष्ट्र । यहिया या स्व न न न स्व माल्य सर.स्.व्रि.चर्यातवियोत्राक्षेत्रे वस्त्रीयायोष्ट्रेरावेरास्रायाहेराता र्शेनाश्चार्वेद्रपा होद्राया सदान्यश्चाद्याय नेश्वाया कन्याया दे पदि ही। गुव फुस्दा चित्र कु धिव थ। या म्व से यस उव म्वया पा हे सामा महारा मुद्दा व्यायव निर्मायाव परि श्रि गुव हु यव राष्ट्र प्रवाय विमायया मर्वे द राष्ट्र या यरक्षेत्रवृद्दाविद्या अक्षव्यक्षेत्रकारुत्वस्थरात्यः वृत्रकार्यः विद्या नश्रमायवारे उसाक्षेत्रावदाकुषानान् क्रीसामन्दाक्षामान्त्रा अर्केन् प्रवेषावस्य सुरव्यु र प्रारंगिय स्वर्ध स्वर्ध सेन् सेन्स् होने निवन्तु के विनेते ने नावस विनेत्र ने ने के ने के निवन्त समायस सूना न ८८। व्यमुख्य व्यक्तिके इसमायमायूना सदे ख्या सेनामा ग्राटा ने सामा ग्राटा विद्या येग्रस्य नहग्रस्य स्वत्रस्य स्वतः से स्वरं हस्य सन्दर्धाः नुसः ही खूः यिष्ठेशः सर्क्षेताः श्रुदः से १८६६ श्राच्या से १८०० । यसवाशः रा:ग्रु:श्रुन:८८:कुष:श्रूश:वि:न:श्रु:८८:हें:र्ने:हे:इस्रशःग्रीशःस:क्त्रशेस्रशः उव पर्दे क्रियश थ्रुप्ट हैं में प्ट क्रिया थ्रुप्त पीव पीर्य दिया

ने त्थ्रम्यन्याया हे अप्यहें का श्री क्षेत्रम्म या हे अप्यहें का श्री स्वर्ध में स्वर्ध

नुसायायर्गेटारी मिं नुटाषटासूसायानुसात्रमायर्गेटारी यदे सासूरापटा वर्षिरः नः व्रेषाः से नः त्र स्वाः न स्वाः न स्वाः वर्षे दः स वरेवे:न्नर:र्:नहर:वःवहेगाःहेवःग्रीःवि:न्र्यायःवर्गायःवर्गायःन्यः नुसन्सारीयात्यात्रयातायनेनसार्वेरायात्र्रा वर्गेरार्थे वर्ने दिने स्रीटार् पात्रसा ব'বর্থ'বর্ণ'র্ম্ন্র্ম'বড্ম'র্রি'র্র্ম'গ্রীম'গ্রীম'ব্মুম'রম'বর্ণা'র্ম্ভার্ वदे से दें दर्देश पर श्रुर वर हो दर्श है त्य श्रुवा ग्रद वर्षे दर्श वदे दे न्नर-र्-श्रे महिर-श्रुअ-र्-वे न्य-इम-र्य-वर्ष-वर्ष-न्ममान्य- हुद्। ।रे क्षरमाव्रमारेशमरपदिवासियनप्रिम् क्रिंत्रम् ग्वित ग्रेश प्रमादित प्राति स्राप्त अस्ति से स्राप्त स्रोध स्राप्त स्राध्य स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स् धेर्क्षिश्यर्ग्युष्रायायाम्बर्धेय्याउदाक्ष्य्रायाधेर्ग्वेद्वर्देर्ग्यु क्षरःनेवर्ग्याडेशःनेदायदशायाधिदात्रःदिदाववे ग्रुस्रशासान्त्रदाराह्य डे.भ्रे.व। ने.क्ष.वंद्र.लून.व्हर.त्री.व्ययायाविन.त्रम.क्ष.क्षेत्र.रं.क्रेन.ता.भ्रे. नर हुः अः खुर्य ही व ही राज हुन हुः व रिया व व राज रिया न श्वा राज हुन हुः গ্রহ্ম-র্ন্যা

गशुअ'म'नन्ग'गल्न'अष्ठभ'नहे कें अ'र्द्धभा

गशुस्रायान्त्राम्बद्धास्त्रस्य स्ट्रिस्स्य स्ट्रिस्स्

द्यम्भारान्यस्था न्याम्बद्धः यद्धः न्याः न्याः स्थाः स्थाः

र्श्वेर्प्तर्मायमा गरलेगायर्मार्र्यावव्यस्यमात्री । शुर्र् नश्चनः सरः वर्दे दः सः देश । नद्याः द्रः यावदः दः नहेः ग्रः या । या सरः नदेः न्यायाञ्चन्यमाञ्चा वियानमा वहिनाहेवानने नहिस्केनामा विराग्ना मालवरनिरदेरिया विदेश हिन स्वानस्य है से रामा । देश व रदानदे वर्देदायश्चा । सदाद्वान निष्टुं के विवादवें शा विश्वासारदा मी देव हो ५ ५५ । इन या निव हो देव सह ५ या । वर्ष महिरा हो सह हिन्सर हैं या । नन्या नने यावव ही सूया नस्य न्या । यह न्या नहे नर यानुयान्। । यदयानुयाने द्वीयाने दिन्याने प्राचीयाने वा मेर्। विभागम्हरमा स्रूर् स्रूर्र स्रूर् न्यान्त्रामान्य सहस्य हे देश पर क्षेत्र प्रेरिंग ने स्वापक्ष स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य वन्यासेन्यान्या नेरायरासावन्यान्यास्यासीयाः वित्रावस्यास्य षरःषरः नमसम्बन्धः देशः सः नभ्नेतः वेदः। सर्देरः दः रदः उगः इसशः विगः नश्यःहे स्रेन् रेगा ह्या राज्ने वस्य राजन्या वदायया नरार्दे राद्या राज्य

त्रुश्यः वितार्द्रः श्रे।

त्रुश्यः वितार्द्रः श्रे।

त्रुश्यः वितार्द्रः श्रे।

त्रुश्यः वितार्द्रः श्रे।

त्रुश्यः वितार्द्रः श्रे

त्रुश्यः वितार्व्रः वित्रः वित

नर्झेमर्भात्रायदानर्झेमान्नदे त्याय सेंद्राके द्वारा स्वारा सेंद्राया र्रेंदिः श्लेर्यानु ने से सर्या उदाया यदा से सर्या के कुर मी । ह्यून पर ही साय हरा नुःषःकुःकेःकुरःनययःग्रीयाधेःष्ठिनःयःवनुरःक्षे। १वःररःक्ययःग्रीयाक्षेरः केन्या अक्षा प्रमानविषा भ्रेष्युव मेन्यु । एवन्य विष्य विष्य । विष्य । विष्य । सर्दि-शुस-र्-हेन्न्य-ग्राट-वर्च्य-तु-दसद-र-व्यय-स-ग्रुच-र-रे-शेसय-उद-यायवारोस्याकुः केवार्यायदी सेदास्यायवास्यात्राद्या ग्रुटा ग्रुटा सेस्या ग्वावयान्यान्याने द्वारा के त्रीत्र के त्रा वर्षे स्वराध्य स्वर्थ । वर्षे स्वर्ध । वर्षे स्वर्ध । विता वावराः स्रान्याः सुः पादः साद्दाः स्रीतः हित्यादेवः सुसातः हिवायाः दसः हेन्द्रश्यास्याक्र्याची विदानकु स्रवा हु स्रवा स्रवा स्रवा स्वा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा <u> अरशः भ्रुशः न भुः ध्रापः तृः अर्के दः पः दरः के शः १३ वः पः दरः। व्युशः न भुः ।</u> इग्-र्-अश्रशेश्रश्चर्त्वीःर्देव्यह्र्न्-यायःश्रिव्यश्चर्यायरः বর ঐর দুর বর্ত্ত প্রবাণ বর বারী মার্সির সংস্থা

यर्गः म्रान्तव्यावेशः सद्भावाश्वः स्वायः स्वयः स्य

र्तित्व प्येव प्यत्र पाश्यत्। भेषा भ्रवा भ्रवा प्रदेश वा प्रवास प्रवास के व्यव प्रवास के विष्य प्रवास के विषय र्वित्रः हैं नशके है। है गारा है नशके दाने दे हैं गरा यदे ग्रुट कुन सेस्र सेद या । द्रमो मान्द्र मार मी स ने या ग्रीस मार्देद यर वर्मम् । विश्वानाश्चरम् यद्याः स्थानवर् माठेशः प्रवे से स्थाः देवः र्रे के वरे पेरिया सक्समा से र र र हे परि सक्समा से र र र र समा पायि यःश्रीवाश्वादिः भ्रेवाः श्वीवः विदः तुः के ना इस्रशः ग्राटः श्वीदः या यः केवाशः सेदः केटा अंअअन्देव में के प्दी अंदासर व्यवस्याव्य मुंबर के वा क्षेत्र के वार्ष र्रे के ने न्या श्रें न्य निव कुन्यों । श्रेस्य ने वर्षे के वरे वे स्युय श्रेया इस्र श्चेत्र से नवर् पार्शेट प्रमें सम्प्रे एस स्स्र स्मर्ग ग्राट से स्र स्मर्थ है वर्देवे अधु अर्क्षेवा अर्धु र र दे हैं वा अरवंदे विवस अर्केवा हु वश्चुर धुवरा धेंदरी।

नर्डसम्बद्धत्यम् र्वेदिन्द्विन् स्वेद्द्वः स्वाद्धाः स्वेदः स्वेदः स्वाद्धाः स्वादः स्वेदः स्वेदः स्वाद्धाः स्वादः स्वेदः स्वाद्धाः स्वादः स्

नश्रुत्य हे क्वें न्या स्वार्य न्या स्वार्य स

वसम्बार्था संस्थित से द्रा है या है नश्चनशःग्रदःवयःसःसर्वदःनःयःष्ठिःसःर्-सूत्रत्रःग्येदःनःवेगः यविवासारात्राक्षेत्राहे ळदासेदारावह्य स्थाते। वद्यापस्यावव्यावेसा परि सेसमा ग्रेम हि सेरि में श्रून ग्रे प्रतु इसमा मर वी न स्रि परि वर न् वह्यान्ध्रेराध्यायान्ध्रायानेयायत्र स्थायान्य स्थान्य स्थाने स्था यी प्रमुख न् अहे 'र्से 'हुस म्वा पा विवा सर्वेद पा व 'र्से दाहे 'केव 'र्से ही अ हे ' नन्गाम्याम्वरम्वरेयाचेयामे स्थानिया स्था स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिया स्थानिया स्थानिया स् र्रानी कुन ए प्रित्र नर हैं अपाद यश क्वेन द्वा के दे अपना है हे ह्या वर्चेर्स्यदेवयासर्वेर्त्यन्ता हेर्नेदेवस्य इसुरस्त्री हरान्यानावतः अहअ।नहेदे से अअ अप्वाय द्वा में या नक्षेत्र भाव हर हे वा वह त्य हित नशने साम्या मुनाश हे केत रेवि वयानी नशकी र नित्री सामक्रा

मन्द्रा हैं नैवे त्रुः सा गुस्र सा वे त्रुवा वर्जे राम्या नद्या यावत सहसा नहेते नुरक्षे अअ प्रवत् विवा नहीं अअ प्रअ नुअअ अवे विवा विवाय व्यास्त्ररावसूव र्वेन पान्या हि र्वे हे या निवास्य पावव पाठे या परे सेससर्देन में के या बुवास न्यान् सहन प्रसाहे नहुन सार्श्वेयासारीयास ख्यारिदेखुःसररेदिःवयःग्रवेष्यःभिरःकुर्नेद्रमस्य उद्दुर्यस्य वशुर्यात्रे शुर्यात्रा हे रेव में के शह्याव के शास्त्र मास्य शुःसर्रे श्रे सवार्रे के त्राद्युर प्रदेशन्त्रा वात्र सहसार हे दे प्रस्यान क्रिन्य में के दिया विकास के स्वर्थ के स इस्रयायान्स्रेग्यार्ययायदे त्रुग्या श्रुं तासुत्र सेतान् स्रह्मा स्राम्य र्में ८.२.व्यू २.५.क्या श्रमा की श्रें ५.४.क्य मार्स के निम्मा सम् निम्मा सम् वर् विवायवर व्याय सेर् पर हैं र्वाय केर में यर राषीय वहुवा य विगानुरागशुरा देवे के अरमा मुमादरानुर कुन सेसमाद्राय नम्राय यश्रायन्श्रायावयायविषाश्रा वस्त्रम् यादि त्याः भूदि वादे विष्यायाः केरः धरः वयः ग्री वायः विदा क्रियः ग्री वे स्वायः स्वयः यः स्वयः न्यः स्वरः हितः स्वरः बुंबरमासूरर्र्पदेशवरम्भाक्काके कुवरेशयकर्मायरी बुरावर्धिवरेशि

मदेग्वाशुरार्दे। व्हिंयारे द्वायश्वात्यश्वात्या ही खूदे वियास हिंदा यायदर नन्गाम्यान्वरम्वेयामदेश्येययान्तर्रे छे प्रमान्यया बेन्डिन् नेवेडिन्सेसस्निन्सेंके वनेडिन्सम्सामुकारी सम्पर्मेन मदे शुरायमा मर्केना प्येत सरारे मार्था । नर्ना समान्वर मारे सामिर शेस्रश्रादेवार्से के प्देन है। इस्रान्त्र्वाश्राद्या पार्यस्य ग्रीशाप्ट्य पार्क्या ह्यूर्यरम्याशुर्याते। हे नहुन् नुस्यायस्य मिन्से स्वास्य स्वासे स्व सर्वा हे श तु नर शुर पदे हें दे निविद गानेवाश रागा शेर न वर दें द शै इ८.२. श्रुम्याया मुद्री दे त्रया न भ्रुयाया न सुद्रा वि प्रवि स्ट्रिट वि त्रया न सुद्रा यदे द्वर में हा सम्बन्धी यु हि दु सूर हे द द वहर सम्बन्ध के दे न विव वानेवार्यासानुग्राम्बद्धारकेदाग्रीमुद्दार्द्दामुवार्यानभ्रीद्दार्यासुद्द्यास्य विवासर विवास नभीर साधिस्या सम्बन्ध के साम लाट तक टा मिया विवास है। न्वरः में विदे हिन् स्वार हुर वा है वन्या प्रसाय विदाय है सामि से सस रेव में के वरे के अ भ्वाय द्वा हु न क्रेन क्र से सम उव सर्वे व से र प <u> ५८:श्रुवशः भे५:य:५८:५४८:वाहेब:भे५:य:वा८:स:५८स:या८:</u> वर्षासान्साना इससाग्री देवा ग्रामवे श्रिम स्नेषासामे प्रति सावरी मावरी म यर त्रुग्राय मुन् उत्रेत सूर्य यस के तर्रे खूर न कु सह द राये सत्र र নাধ্যদ্রমার্কী ।

याश्चरश्चाश्चात्रात्र्यात्रश्चात्रश्चात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य

सेससम्बद्धाः स्वतः स्वतः स्वतः स्वासः स्वासः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्व भे'दतुरःवेशःहे'नदुवःदह्यान् तुर्यःग्रीशःहे'नेवःर्ये के'वान्।शुर्यानाः क्षरार्दे । यदवा प्रश्रावावव वाडेश प्रवेशेश्रश्र रेव रें के वदे कु द वा हो श न्ना नर्रे अ नन्ना हेन के दारें अर्दे द ने अ न्दर हु नहु य न्या सेन सदर न-दे-इस्रयःग्रेयःग्रदःश्वायःशुःसःस्ट्र-दःर्स्ट्रित्यःसःग्विदःद्वाःग्रेयःक्षःर्छः र्श्वेश राष्ट्रियरारे इस्र राष्ट्रिया यह प्राया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या यदे जुर कुन क्षेत्र अअअ देव में के प्दी न क्षेत्र पा नेव पुर ने में व पर ने अ त्याने। शुरायदेगानेताशी।प्रयायदेरानसूत्रायाद्रायाद्रायादेशयया उदान्ग्रीत्। कुषानदेग्नभ्रदारान्दासद्याद्यास्यास्यास्याभ्रीताग्रीःश्रुदास्य য়ৄয়য়য়য়ৼয়ড়য়য়য়য়ৢয়য়ড়য়য়য়য়ড়য়য়ঢ়ড়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়য়য়ঢ়য়ৢয়ঢ়য়৸ঢ়য় मु अप्ययत्विमापीरायासेससाम् भेरासम्बदास्यार् सुराया म्वर ख्यायायार्चेयायययात्रेदायाद्या द्वेवायरायावयाते खुर्सेयायाद्या क्रुटःश्चें अर्थः ५८। वर्षे अर्थद्रः यद्भायाश्चेताः सः ५८। क्रुः ६ वर्षः विवासीः नगवः ब्रनः हेनः भन्ना हे दुवे न दुनः येषः हेनः भन्ना के सक्समा हेनः सःश्रीम्थायदानुः श्रूदः प्यदाः श्रीदः प्रते स्वादे स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्व स्वादः स्वदः स्वादः स्वदः स्वादः स्वद

देशक्षेंद्रवह्यायमा द्यःह्याद्रियावस्य । सर्धिः हिरासिस्ट्रिरानानविता वेशामास्ट्रिसा मास्ट्रिसा मास्ट्रिसा मास्ट्रिसा मास्ट्रिसा मास्ट्रिसा र्रेदिःग्वन्। कुयःनःश्रमःन्दःन्वसःमदेःश्रुग्रमःन्यःश्रीःसवेय। यदःनदेः अखुरायदे द्युर याद्या वेगा रा केद सेंदि यस वस्र राउन ग्री यात्र नेर नन्गाम्यराम्बद्गारेयाम्बेरान्दे नुम्कुनाग्री सेस्यामेदार्गे के दिने क्षेत्रामा यःर्श्वेर्यःश्वाराष्ट्रमान्त्रभेत्रायरः हुद्री । तेःक्ष्ररः यतः धेत्रः तरायरायाः नन्गाम्बद्धास्त्रस्य हे द्वेसाय त्या द्वेस्तरम् स्वरादि द्वेसाय त्या प्रह्मा यत्र हैंनायर्थेवर्र्योहेंदर्यके अपियाया इस्याय देंग्याय पदि स्रान्ते हो न है। नद्यायाववरनहे नदे नस्याय पदि में स्थाय में दुरा स्था से न्या भे त्रात्वे प्रवर्णा स्वाया वर्षा से द्वारा से द्वाराया से द्वाराया से द्वाराया वे प्यन् प्रमः ज्ञःने ग्राया प्रमा दि । दे में भी ने प्रमा ज्ञा । प्रमा ग्वित्र नहें निवे निर्धास में अस त भेर निर्धा निर्धित स्र निर्धा निर्देश यःक्षत्रशःक्षेत्रः चेत्रः पदि द्वाः भेदः विश्वाद्यः भेरः देत्रः पदि । पदि विश्वादः भेरः

नःविनाः श्रेश्वाश्वर्यमः श्रुशः हो। याव्यः विनाः श्रेशः विनाः विनाः श्रेशः विनाः श्रेशः विनाः व

ह्यें द्रायह्यायया द्राययया ही र व्येवा से हा हो । वदे व्यर वीं सरा यदे समु प्ये अ दी । वार वी से र में अ यह वा अ स प्यर । । ने हे र से र द से । न्यार विद्यारा वेश प्राप्ता यन्यायी खुश है याव्य प्राप्ता । यव्या यप्ते क्षर-दगायन सेत्। विशामाश्रदशायक्षर हैं। प्यदायदी स्रुस र्पावत ही। खुर्यायन्वायी खुर्याधेव प्रयाने त्यारमायी खुर्या द्वरा न्वर्वा वीर प्रमेव यन्दरम्बेर्यस्ये र्र्ते हे स्ट्रेर से द्रान्य दास्य दास्य दास्य द्रान्य दास्य दिन <u>ભદ્દાસાયું (સુત્રાવ્યસાસુત્રાના ખેતુ સ્થાના વૃત્ર શું) સુષા શું રહ્યા વશાયશ</u> गुनामाधेन प्यमाग्री स्याममाञ्चेन प्रवेश्य शुन्दार्थेन में स्थानि नवाःकवार्याश्रीःन्वरःवीर्यास्यते।सिःवियाःयःसरःवीःश्रेस्रशःव्वार्यःहेःस्रेः युश्वालेशायद्या प्रायद्देवाया हो । या स्वालेशाया हो । में अश्रासदे हे शाशु पर्मे नशामावद में ख़शायदर मर में मादहें दारा र्वेषयायम् चुयानः भ्रे से

याया हिन्शीश्रान्य दे नश्रामा हिन्शी । दे निविद्या विद्या विद्या

ग्रीमा वेमाग्रुरमामक्रम्भे । प्यरादिन स्रुमान् निमागविमानहे नादिः देशसरार्श्वेसप्तीं शत्रा वर्ते मुख्यति वर्गायमाराम् त्रशत्र निष्ठा हिर्सा है क्ष्र-र्धिन स्रुस्य वा सहय रेवि रत्ये सेवि या न्या स्रुद् र सेवा या । स्रव र या यदी रथी । म्रोट्याबि धिवा वेश यमुद्द न भूना दे नविव गानेगश सं मूँव सह य निवे র্'র্রম'বেষ্ট্রমে'মর্র'বেষ্ট্রমে'ম্বম'র্র্যাঝ'মনম'র্ক্তুম'র্য্ট্র'বেষ্ট্রমে'ম্বম' वस्था उर् सम्दारमा वरिते क्रिं वर्षी के अन्दर सिर्श समर सुगा धेवर्ते॥ सहयानित्रास्ति क्षियानिया ने निविद्यानिया साम्बिद्यानिया सामित्र सा *য়६ंदर्नेदे*:तुर्रद्विरशर्पदेखें कुंखें खेत्ररें रवें प्रत्या सके समान्त्र प्रतित प्रतित के स्वाप्त के स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वापत स्वाप दशयायमें विवारिशसूरायादा विवादशयादे सर्वे महास्रायस्य है र्शेटार्टे। । समानु हिंदायायमायदेवे हसामर श्लेम परामा शुरु हेगा हेमा อ्रमार्शे । ने ने स्वामी मार्मे सर्वे दे त्यायान् में वित्ते हैं है दायाया नक्त्रभः मुःर्ने रके रहे अन्य अक्तुः अर्के दे रन्दः दुन्य अः सः दृदः । कुः श्रेवः हदेः रेग्रायाध्यायायायाया अहत्रवित्यार्थे याच्याविताया वह्रभावभासवराधिवाने भ्रम्भावार्सिटा नान्दा सर्वेदार्स्ट भार्सेटाव्यू राष्ट्री यश्राभिश्चेश्राम् अर्थे स्रिम्श्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र वयानेवेवनर्तुः व्यायायान्या व्यायायायाः श्रीन्य वर्ते । ने नविवर्तः क्षें गशुस्र देस में कर र् ख्यायाय प्राप्त वस्य स्वर के विकास दे त भ्रे अ तु सुरु र न ह के न विवा मी सर्वी ता सुवारा ही विवर्ष र वि विरायित्रास्त्री।

विरायित्रास्त्री।

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्रास्त्री

विरायित्री

विरायित्र

देव्ययस्य विदेश्य विद्या विद्

इसराग्रीरासर्वेद कार्या हार्यर प्रश्व राष्ट्र विदायर विदाहा श्रूवा'नश्रूव'न'वा दिट'वी'नश्राम्य'वाष्ट्रेश'ग्राश'इटश'ग्रुट'शे'वर्नेट' नश्चरायर सूर्वा नस्यान सर्देरश सर पर्वा नर्वा वर्षा स्था इट्याने सूना नस्यान वें प्रायम् त्रुयाया विष्या प्रति या विष्या प्रति या विष्या प्रति या विष्या प्रति या विष्य है। नुश्रुं सुर इस्र साय वर्षे देश वर्षा साय राज्य निष्य विषय विषय । नीवा वर्वा वाडेवा तुरु इर वर हुदे हुरु चराया रहाय सुर रे र्वा हिरु वया हिंद्रश्वेद्रहे के न विवार्धेद्र हे स्वयः युवायः ग्रे हें न सर्वे प्यानक्त्र मश्रिंदि के पर्से अ हे ख़ूर क्षेत्र भारत्य मुह्म अ सर मा शुर अ स पर हि । दे निविद मा लेगा अ रार्श्व मुलारी गुरुका प्रति क्षेत्र का शुर विद्या प्रति के वार्वे न श्रुव श्रुव था भुःख्याग्रीःवियानीयाक्षेयासम्यह्नाम्यान्। कुषार्थःविराह्रकेवार्यदे श्रेश शु तिविद्या राष्ट्र के स्वा से ता सु त्या सु त्या सु त राष्ट्र । तु या सु ता सी वा सिं र्नेरःविद्यास्तरेक्षेःररःमे सूगानस्याष्ट्रात्र्रात्रम् देश्वेरायाः रंभःभुःखुर्याग्रीःकृतायानभ्रेताने कुंताने सर्वेतानाना अति।तुः नकुन्दिः भुःखुर्या ग्रीः निया क्षेत्रायम् सहन् । या या से निया या महा प्राया निया र्देर्वशाम्बन्गारेशायरावहेन्यवे र्त्तेशायन्त्रम्यायायायाया कन् डे होन् से समाउदार्मि विदे में विद्या सहित हेर प्यार सा वन् हे प्यार हुर नवे न्वो न इस्र ग्राम् से स्र र उत्रिन्दे ने त्र न्या नि स्र र नि

र्मेश्वर्यात्र्येर.खेश.यट्या.ग्रीश.योट.यश्वर्यात्रा । श्रूष्यःत्रयः ह्याश.यर्ग । भ्रीश.य्यमः खेश.यट्या.ग्रीश.योट.यश्वश्वरात्रा । श्रूष्यः त्यसः ह्याश.यर्ग ।

नुःलॅर्पराम् मा महा मिराक्ष्यासकेषा ग्राम्य प्राप्ति । प्रम्य मिरास्य प्राप्ति । श्रेवा । यन्यायी यने या अर्केया विया श्रेम श्रेव श्री । यावव रेव यञ्चेय श्रेम नन्गाने वि देश कें । ने नशनन्गाने वि वि विश्वास्त्र वि वि वि वि हेव'न्या'य'स्या'नस्य'नने 'यत्रूट'न| |याश्य'विट'सून'रा'ह्या'रु'त्रुश' गुरुरेग हि.सम् सुर नमय सूर द्विर त्यानिव हैं। सिर्वेट द्या विव हैं। सिर्वेट द्या विव श्रमाहेशासुःइतःयरासुद्या दिवाःवासावात्रसः द्वात्रहितःसरासुरास्य स्वाता इयायाग्वाहादर्शेष्यायवायदी । वरेष्ट्राय्वायाह्याह्याहार्वेदासूर्या डेशन्दा शुःदसन्वित्रसर्विस्रश्यदे भ्रुं ने वदी विद्यानी श्वसूत्र नवे नर्भेन न्याया वित्र के । । ने विया वित्र निवे न वित्र वि थी। विह्नेना हेत इस्र भार्त हैं या नर त्या पर केना विसान सुर सा सुर \tilde{z}

ते स्वरायन्यायाववान स्वर्थित स्वर्य स्वर्थित स्वर्येत स्वर्य स्वर्थित स्वर्थित स्वर्थित स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्येत स्वर

यद्दा विश्वश्व विदे द्दा श्रृण विश्वश्व विश्व विश्व विश्व विष्ठ विश्व विष्व विश्व विष्व विश्व व

यर्रे सेते क्रुव त्यमा नन्ना नन्ना निमः गश्रद्यास्त्रम् श्रेम्यन्यायाव्यस्यस्यास्त्रम् वर्षास्त्रम् वर्षाः ग्वित सहस्राय वे रायदे दें त्या ग्वित वस्य राउट या सेट यर सहस्रान्दा वसर्वार्वितार्वे नार्वे ना श्रूवा नश्रूवा से पर्टे द पर सिक्रा पर दर्। वस्र राज्य में वी से पर्टे द परे श्रूवा न्रस्याने श्रूमान्त्री साम्यास्त्रस्य स्वाप्त सम्यास्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप यव या से से ना भेरा से सारा उव पावव में सूना नर्य या से या नाय वट या व यासी से पालिया प्रमित्रा यह स्थ्या से समाद्र प्रकेत से पालिय प्रमा वीयाद्दे स्ट्रम् हिंवायायायविदान् हिंवायायायीदायया ग्रुम् येययाविदान्म सहस्रानायासँग्रामात्रक्रमाळुंयासरानु न्निन्द्रिं । ने सूरासहसानिः कुषाद्वस्थान्त्राचितान्त्रेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्रे । नन्नान्त्रव्यस्यस्यान्यः मदी र्रायायेशप्रदेशहें रहे देश ही निर्मा विषा शेस्र एवं प्रस् उद्दाययदाम् हेशायहै वास्त्री पावा विमाया वेदान धीव हिं।

यद्यायावद्यः नहे न्यावेश्वः यहे स्टायावेश्वः यद्यः विद्यः यद्यः यद्यः विद्यः यद्यः विद्यः यद्यः विद्यः यद्यः विद्यः यद्यः यद

व्याप्ताचरात्रुः इयायागुवाव्यास्याचित्राचित्राचित्राचित्राचराव्या थयानरावर्देरानाधीवाया व्यायविष्यत्रात्मात्यानहेवावयारानाहेया वहें त्री क्रें त्रें त्र अप्यायस्य प्राव्य पाठे स्व हें त्री स्व पें त्रें नुः अवशानश्रम् स्टाम्डे अध्यस्यहे वारा वे द्वारा गुवावशः गर्वे र पर हो र पर र मा र र सू ग र म् य म् य म स स र र हो र य हु र सि र स स स सर्वेद्रा ग्वित्यारेशास्य १६६ वास वे सव नि । स्वर्था विद्यारा में शुः अर्वेदः तथा सूरः रदः या गठे या सरः वहेता रा देवे क्वा पुः वर्वे ना गवितः वस्थारा विकास स्वास्त्र वित्र केर स्टर्ण वा नम् वित्र स्वासी में न इस्रायागुत्रात्रस्रायम् अत्राचने वासूनायाने दिस्त्रस्य वर्षे वासेस्र स्वर इस्रभानने निवेष्ट्रम्भानि त्र निश्चन स्रमान्त्र प्रायान्य प्रमान्त्र प्रायान्य प्रमान्त्र प्रायान्य प्रमान्त्र हुर्दर्ध्या नर्देर्व्य र्द्धिर्ध्य स्वर्धे न्ये अस्य उत्वस्य उत्ती भूगानस्यात्रसम्भाउत् श्रीतात्रों माग्रता भी माग्रता से सम्भाउत् ग्वित् ग्री स्वाप्तस्य स्रासे रंसा प्याप्त हिंसा से प्रति प्रत्ये स्वर्धा उद्ग्री:सूर्या नस्यासेयानाया इसाया गुत्र तसायन दार होदा दे क्षर्याम्बर्धेययाउदाद्वययायाधिरावविदार्देरातुःक्षराविदारुवादेया निरम्बर्स्सानविषीत्रविरमी गुस्सामा सुस्तान्त्र देवसानन्त्रामी सम्बद् शेशशाउदायने क्राया है क्षेत्र ग्रीयादायने पार्ट पार्ट पार्ट वि कु विश्वास्था उदा र्टा भेष स्टार्यीय है . क्षेट्र येश व र्स्या यर्ज स्वा यर्ज ये . स्वा यर्ज ये . स्वा यर्ज ये . स्वा यर्ज ये . वस्रकार्वित्रयान्य विक्रम् स्रुसार् । यदायदान्यस्य

ने प्यट नक्ष्मन न हुरा त्या हिंद से स्था में राष्ट्री महि सुवा हिंद या । ग्याया सामा सामा विकास से से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स्वास्त्र से स्व गवर हैंग शुर्त्र गवि। विशेष्त इसमा वेष्या नर्षे पानस्य सर्दि मा विमा गश्रम्भामान्त्रम् वन्यायी सम्बन्धन्ति इसस्य वने वादर्नेन ग्रम् ने वे कु से नेश स्वाप्तस्यासे पर्दि । यह स्वाप्तस्या की कु प्रवर विवाप सुवा वहे नर्स्यापरक्षेत्रन्त्राद्यम् न्र्राच्या न्र्राच्यान्य्यात्रवद्विनाः विन व्यूटा रम्। यम्। यद्गान्य क्षान्य हेव श्री व्यूटा हिटा दूर है या श्री सारी से मारी सारी है या श्चें दायर में या दे । द्वेद श्चें या प्रया नहे वा प्रकें या हे । द्वा सेंदा वा सुया ही । नमा सम्बन्धेसम् उत्रादि वसम् उत्रम् नम् नम् निर्मानस्य मि कुः त्रस्र स्टर-द्रदः त्रयः वः विवा वर्षा वी सः तुर्दे । वरे वः दरं वरे विदे कुः वस्र १८८ द्वा प्रतिवा प्रदेश की स्वार्थ अन्यामी निर्मा के विषय स्थानित कुनःग्रे निन्न स्थरार्थे याययाया मृत्ये यया उत्त स्थयाया नसून हिन्। ने भू नुते नने न अवव नग न भूव व के सा नु म्यूय न नु गया इमा हु न क्षेत्र वित्र न वित्र र् भ्रिट्र हे द्रम ह न के अर्थे । व्ययम पर्ट्य भ्रेट्र हे के बेम पर के कर में दे प्यय য়য়য়৽ঽ৴য়ৣ৾৽য়৽৸৻৴৻৸য়ৢয়৽য়য়৽য়ৣ৾ঢ়৽৸য়ৢয়য়৽য়৾৽য়৽য়য়ৢয়৽ नवे हेत्र न्यामाधित या यह्या कुया व्या ग्रह्म व्या ग्रह्म व्या यह व्या यह व्या यह व्या व्या व्या व्या व्या व्या वर्ते नदे ने कुन से वक्ष प्रमायन विष्टा नदर नुस्र भी र हे दे सन्न थिन नश्रास्याम् राष्ट्रा स्थान्य स मुँग्रायाय द्वेते कुषाया श्र्याप्टाय द्वाराया यभूषा प्रदेश यर प्राया स्रित्राया व स्यानायमा ननेनामेनाम्यास्यास्यान्याम्यान्यान्यस्य नियानाया सेससाउदान्द्राम्यासे द्वाराया सम्भाषा सदी न मात्र मुक्ता साम्य स्व सेसराउदाक्सराया गुसरा श्वेटा हे । धुटा उसा विवा वर्षे सराया यदा धेंदा के नरम्बर्द्धरमाया रहमी देव यदह वनसम्बद्धरमह यस ग्रह्म हुसस श्वेटाहे नश्वायाने। येयया उत्तर्मययाया ग्रुयया श्वेटाहे नश्चेयया तथ्येय वस्रभः उदः सदः व्यादः विदः स्रग् । तस्य । यादः स्रिन् । स्यादः स्यादः स्यादः स्यादः स्यादः स्यादः स्यादः स्याद वदे श्रुट्र अ इस्र श श्री श ह्वा र हु । तुर्दे द्रा वार्दे द्र । यार्दे द्रा प्र स्था अ द्र श्री है । रदाविरावश्यराते। वर्डे अष्ट्रवायद्या श्वदास्त्राशी विदानुदात् वत्याया । यानत्त्र्यीःत्यमार्सेनायात्र्यायात्रे हित्यात्रात्रः सुन्याने त्राप्त नरः कर्नु नरः हैं अप्यान्। नर्डे अप्यन्य यह अप्री अपन्तु राग्नी राम्या कें ना अ

निर्देश्यान्त्र विवास के स्थान के स्था

स्तार्श्वी त्वाका मुर्गे त्या स्वाक्ष्य व्याप्त स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वावक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाविक्य स्वाविक्य स्वाविक्य स्वाविक्य स्वाविक्य स्

र्श्वेट में निर्मात स्थित स्थ

र्ट्स मुण्यस्व ग्री सर्ट्स प्राया विष्ट्र प्राया विष्ट्र म्या विष्ट्र स्थित स्था विष्ट्र स्था व

वेषा के दार्ते श्रुटि न तु तु र से देशे श्रुट से

हे नर पर्के न ने निव्हार कुन से सम्मान्य निवाहित ग्री खुमा ग्री मार्थ मार्थ के सम्मान्य कि न ग्री खुमा ग्री स्

श्चित्रवह्मायम। सेसम्बद्धत्मसम्बद्धत्मायदेश्चर्या । धितः विद्यास्त्रविद्यास्त्यस्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्यस्तितिद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्त्रविद्यास्तितिद्यास्त्रविद्यास्त्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्तितिद्यस्तितिद्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य

देखासुआनाई द्याद्या व्यव्यासुँ द्याई द्याई द्याद्या द्या स्वाई द्या स्वाद्या स्वाद्

दे'वर्षान्दर्गी'सदे'सर्वर्'न्यार्थयान्दर्भग्रार्थस्य सुद्र हे भ्वाय द्या ह य हो द त्य स्यापित यहित यह द स्याय स्था स्था स्था हो । वर्षाके प्रज्ञेया पावता इसराया दे प्रवेता दे प्रयास्ता भी के प्रवेता ग्री सेसम उत्र इसम वादे निविद र निर्मेम दे तम देश ग्रीम मुहे छेर उदान्त्रयशाद्रा देव्याक्ष्रिं प्रदर्भिते सेयया उदान्त्यया द्रा देव्याक्षेत्र गिहेशरादे सेस्र उत्तर्मस्य प्राप्त दे त्र सर्हेर ग्रीस्स मी सेस्र उत् इस्रयाद्रा सन्दर्भेस्रयाउदानस्याउदात्राद्रीयायादार्गेदान्वेदानुसा यानिहरनानिह्नस्य यहारे सावनायान् सुत्यानास्य स्थितान् स्थान सुरा है। रेस ग्रीय सेसय उदावसय उदाय सुय गहिंद पदे प्रोगय पार्श्वे दा नेदे खुष वे न्युय नदे सेसस उद क्सस य नसे नस हे नन्य यो स देव उद्गान्य वा क्षा मार्थे अ नियम मुस्या क नया मुस्य के नये था

नवे वन्य ने ने न्या वात्र व्या में या विक्रा में वाया व्या विक्रा में वाया विक्रा में वाया विक्रा में वाया विक्रा में विक्र में विक्रा में विक्र में विक्रा में विक्रा में विक्र में स्'नहन'क्रे'क्रेर'न। म्रार'नदे'के'व्यम् अ'र्नम् अ'त्र अ'स् अ'मे र्ने र'व हे'ग्रेंश्चर:ब्रेट्राया ५'क्ष्'न्रुख्यःचदे'ग्रव्याद्यः व्यटःग्री:सूग्रानस्यः नर्जेन्द्रगवान्तर्श्वेत्त्वर्तिः इसमाक्षेत्रः मे हो वदे इसमाश्चित्रान्यस्या वस्र अ उर निर्मा में कुर केर र जिस्साय वरे क्स सार्ध्य वरे मान्य यश्रादेशाधरावरावरावुशाने। वदे वादान्दावदे वदे कु वस्रशास्त्र र व्यायावीयावियाचीया चुर्ते स्रुसार् चुस्याया भुग्याद्या पुरवर्द्वेस्य साया ररावी सुराधीर निवेद ग्री सुरागी ह्या या या रास्य स्तर्भ निवा हु से राम न्द्ययानवे सेस्र उदाइस्य ग्री म्या सान्दा सहस्र मा सुवाद्य प्रा यार्श्रवाश्वास्त्रे स्कंत्रम् विया वित्ते स्वास्त्रम् विया स्वास्त्रम् विया नकुत्। है के नन्दरहे वर्षिर नदे से समाउद नुसुयान है स्ट्रेन खेंद्र म इस्रयायायहरावस्य दे वस्रयाउदायासे राद्युराग्री हैसास्यायासे रा र् नश्चर्ता अर्डिंगायार्श्यायेत्रायम् स्वारायार्थः र्देर-वर्त्त्र श्रीशः सुवा पदे अर्थे देश प्येत प्रतावर्त्त वर्ष्ट्र श्री प्रतावर्धे र श्री । खुरा-१ सूना र्वेन पर नरमार्थे । धिन निवेद मी र्वेन नु रेन रेन से के प्रश वर्भार्मे सम्बंधिक स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्र स नुश्रेग्रया, त्या, त्या, त्या व्या, त्या व्या, व्या चक्रेवार्यायात्राचक्कारान्ता व्यवारास्त्रम् सुरास्त्रम् वारावीर्या वेंद्रशःश्चेंद्रायंते हेता ध्रयानार या वेंद्रशःश्चेंद्रायंद्रेश वेंद्रशःश्चेंद्रा न्या प्राप्त

युव डिना वें र रा श्रें न प्रवे प्रवें म् सुव शुया कें न रा म स्था भी न है। शुर्म्सरम्बर्धा ।दे निविद्य दे विष्य के विदेश दे विषय विश्व विदेश र्वेश नश्या मु नवे मिले सर्ने स्माय में माश्रूर र न से माया में दे में न र्श्वेर न न है। इत र हेर माल्या न ले। इ वश्वया की मह र म न ले। इत र से हि। क्रूनर्याः विटः कुनः ग्रीः पदायाः नत्त्र विद्यायः यसायाः पदायाः न मुन् यसन्भून मंदिर्गे के मुख्या व्यय भ्रीत हे दे हैं न उत् ग्री ग्रुत कुन ग्री सेसराकुर्या क्रेराने। क्रेर्याय रेया पृष्टित्या द्वाया क्रुर्या सार्केवारा गहेशसंबर्धेदाहेश्यर्थाक्यात्रावय्यात्राय्यात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्राया इर सेस्र के स्था में सूर कुर पर रायस स्था | दे राविव र में स्था साम हिर वह्याःहेत्रःश्चीःविस्रसःस्रवदःस्याःस्रासेदःदात्रःसे प्रीत्रःश्चीःदेवासःस्रसःस्र र्शे. द्वापी राम्यूरापदे से सराउदाहे से दुप्पेंदा पाइसराय द्वीपार है। नन्यायी अदिन उत्र ग्रुस्य प्रदे श्वाय ग्रीय या वर्ष परि त्र विया नन्या गर्रेशःनिदःनश्रुद्रशःमःइस्रशःदःकृःत्रशःग्रीःस्रदःसदःस्याः नर्याचीराष्ट्रयावनापापदी इसराक्षेटारे है। यादिन उत्तरि इसराया नन्गानी सुरादने न्त्रेत्र हे । पे प्रमार्थ में मात्राया साम्राह्म र प्रमार्थ स्थान है। नरे नर्रान्यने नदे कु वस्र उर्दि स्वाप्त विवास्त्र वा वी शा हुदे सूसर्उन्यस्त्रेरहे नुग्रायाद्वार् नुस्त्रेर्या देन्यायास्टर्यो सुरा नहरानश्रस्य निवारे द्वार्श्य स्थित स्थार से स्थार में से सार्से वादर निवार नः इस्रयः विः विद्य श्चेनः निष्यः द्याः श्चेश्यद्यः श्च्यः स्याः श्चेयः द्याः श्चेयः विश्यः द्याः श्चेयः धरावस्रास्त्री । दे विवर्तः वहिषाः हेवः श्रीः विस्रासः श्रीः तुरावर्शे श्रीरस्य ग्रम्भारान्द्रावादर्षेत्राचात्रम्भभाषान्ध्रेग्रमान्। यद्यायीःभाद्रेम् उद्याद्रा त्युंद्रिःयोवश्रावःक्रियोश्रायक्षाःश्रीःक्ष्यावयाःशःवद्गेः इस्रशःश्रीटः रे हो वद्गेः न्वाःवः नन्वाःवीः खुर्यः वर्तेः चीत्रः त्र्याः द्रान्यः व्यान्यः भ्रान्यः व्याः सुरः न् वर वर ग्रु अ है। वर्ने वर्ने वर्ने वर्ने वर्ने वर्षे कु वस्र अ उर्न प्रमुद्ध पा विवा नन्गानी अ। गुर्ने सूर्यान् । गुर्म स्ट्रिम स्ट्रामी स्ट्रामी । खुर्यानहरानयारे प्रवासिंदि खुर्यासेस्या ग्री हेया क्रेंत्र प्राप्त प्राप्त इस्रयानि वित्र भ्रीयानि स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व यर'नश्रस्त्री । ने'निवेद'न्'र्सिम्रान्ड्दे'व्हेम्'हेद'ग्री'विस्रार्भाग्री'र्सूर' 5511

याविष्ठः प्रत्ये दे त्यावरः यथा श्रुप्तः प्रते श्रुष्यः प्रते स्थ्रायः स्थ्यः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्यः स्थ्रायः स्थ्यः स्थ्यः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्रायः स्थ्यः स

श्री अर्था के अर्था के अर्था है ते की अर्था के अर्था के

तेत्रभाश्चेत्रपान्यस्यात्त्रभावत्रभावत्रभावत्रभावत्रभावत्रभाव्यस्यभाव्यम् स्वर्धस्यभाव्यम् स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वयस्य स्वर्य

न्वायाद्याः तुर्वायाः प्रद्याः प्रद्याः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वया धरावर्ष्यार्थे। दिःक्षरासेस्र १ सम्बन्धरायार दानी सुरायाहिताविः द्वारा वयासेस्रा उवारे रे त्यवदास्य अरे रे वहदावसाम् वदाया मादावर्दे दारीसा वर्देन् ग्री न्देश में न्यम हु सेन्य शुवावया सेस्य उदा इस्य वा महिंदा दे भूर से सम उत्र व सम्मार इसमाय खुम पहिंद निवे दसे प्रमाय सुद्रम वया ययःव्यायःग्रेःगरः वयाः इययः यः रदः मेः ख्याने दिः वदेः द्धयः दी बेना'स'न्सर'सदे'ग्नार'बना'इसस'य'र्र्रामी'सुस'धेन्'न्वेत्र'ग्री'सुस'ग्री' इस्रायरान्धुराद्यारे रे त्यास्यारे रे देखान्या वेवाप्यदानी त्यस्त् वियायायदे १३४ र र र रे १ इस्रया ग्री ख्राया विष्ठ र र दि र द र र र म्या विर विविष्यायायार्थेवायाववेर्भ्रेत्वयययाउदाद्दा श्रुवायाग्रीःश्रेतायाव्या न्द्रायेद्रान्नस्य । इत्राच्यान्य । विवापा केद्रारेदिः सायसा वस्र सार ह्रेंग्राने अंग्राम् विवाय थे भुर्ट विवाय हें या थे भूर शुर्प राम्य राम्य दे निविद्य दे ने ना संकेद से दे कि ना साम अपन साम दे सदे न स् में मुद्र स कुनःशेशशन्द्रपदः इश्रशःयः स्टःवी खुशः धेन विव वी खुशः ग्री इश्रः धरः भूकाश्चर्यात्रकारम्या केसकान्यवः केत्राची भूत्वकान्यः व्यायाक्त्रम् न्याकेयाक्ष्रम् वाद्याक्षर्यं ने स्थायाक्ष्या विद्याया विद्या धुर-५ हैंगशके भुः अळव ५२ वे शः श्रुश प्रवे मा त्रा शः भुः ५८ व्या शः र्रेशः श्चर:गुर:गर:नशय:र्थे।।

ने न्या इत्यक्ष्य न्या इयय न्या हिन हो। वन्याम्ययायास्य प्रविव न् प्रदानी सुयाधिन प्रविव नी सुया गी म्यापा न्यगः हुः क्षेन् स्य न्य व्यवस्थि ने न्या ने ने वि नु न नु वर खु व नु वर खु व खुर्रान्दे ने त्या सर्वे नियं वा हु से न प्यान्ता सर्वे ने रे त्या से न प्या हु से न धरः र्ह्मे अः श्रुवा हे कुः ५८ व्यव्या सुदे : व्यं हे : व्या वी अः नर्रेन्-न ग्रम्भान्द्रम् । येन् ग्रेम्-न म्यान्यस्य विद्यार्थिया ग्रीमा वळवानान्ना धेन्नविद्यी सुरायसासळेन्यते रेंच्यासान्य स्वायन्य स्वयन्य स्वायन्य स्वयन्य स्वायन्य स्वयन्य स्वयम्यस्य स्वयम्यस्य स्वयम्यस्य स्वयस्य स्वयस नसयाग्रीसारी विनाया ग्रुटानरानससमा हे सुवानसा हे इससाग्री श्रुवासा कुर्या वर्षा या सेर्पित ने निर्वे कर्षे सूर्य स्था ग्राम्य स्वा संस्थित सेर्पे विष्ट्रमान्य विष्या विष्या विष्या विष्य ट्यायशायन्यायते रहेया द्वेता देवान्त्र मान्या महामी खुरा सूरा सूरा सुया विदःगर्शेषः नः नितः प्रभा ह्यः द्वः प्रभा क्षेः द्वः प्रमाणः प्रदेः नरः नु चर्वियायाराः इस्रयायायायाया अक्षेर्क्षः सहद्रायाये विष् यश्राद्राचित्रश्राच कु केर प्रयोग प्रमानम्य स्था ।

न दुवे वहेगा हेत ग्री विस्रास्य स्वर प्रास्त से से दिया हेत इस्रायायात्र प्रत्यायाया स्वाधित विद्याया । क्षेत्र प्राय कें राम में में वार्म वार्म वार्मिया विषय साम में वार्म साम में वार्म साम के र्बेन् ग्रे कें व्यवस्था उन् न्या उन् या वस्य प्रमुन है। वहेया हेव ग्री विस्था वस्रशंख्याया स्वारं के स्वार्के वार्षा की स्वारं विदायवा स्वीय व्याप्त स्वारं स्वारं मा मन्तुःके ना धरमामा रेगान वहसाविर नरेना दे सासे र हेर देंर यार्थाया रहेर स्थानी स्रीट संदे हैं नश्टा द्वारा स्रोट से प्रीट से स्थान क्रियायायायप्तर्पत्रयायाया यवदारेवार्ये केदे यात्यायाय्रें रात्रा यायेरा <u> ५८:५५७:५८:अ:५ेग्।मे.वे.अ:म्अ.व.र.न५०:न। अङ्ग्य.५८:ग्.अ.५:</u> श्चेंगानान्गवादित्वेरावश्चेरायश्चानश्चित्रायश्चानश्चित्रात्वेरायश्चानश्चित्रा यदे सर्के प्रमाहित प्राप्त मानी या यहे या प्रमाहिता या या या प्राप्त मान यदे विद्युत्र शुंश कें वाश यर शुंर है। अदश कुश शुंद शेशश हुत रद वसम्बार्या स्वीत स्वार्या स्वार्या स्वर्धित । स्वीत स्वीत स्वीत स्वीत स्वीत स्वार्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स ग्रीश्रासी वितास ग्रुट त्रस्य स्था विदाने दिया विताने प्राप्त स्थित स्थान स्थान शेशशास्त्र इस्रश्राचा ने क्षुन्ति सुत्र शुंशा के वाशास्त्र वर्ते नामाने निवार कुल-८८:कुण्य-४-८८:देण्य-५वे:क्रेद-५:अ८-६ण-ग्रट-से-वर्गे:वेट-ग्रट-क्र्यः श्रूयः पदे : अ श्रुवः क्रुवः अ श्रूयः तुः श्रूयः प्रयः य राया या या वि । वि । वे । वे । वे । वे । वे । व मुश्रामें विरार्भे दार्पाययम्यायाया केरी दे स्मार्भे दाश्रमार्भे प्राथमा विष्

इस्रयायाम्बर्निन्याचेन्याये स्रीत्राया स्वर्धिकासुन्यया थ्व त्रु सान्यामित भू के सहन पायद्वेव यय न न न करा पाया महिन पा <u> चे</u>ट्रपदे से संप्रेत इस्राय चुस्रा भ्रेट हे ज्वारा इवा हु न भ्रेट खास्रा गर्नेट नवे नबे नब स्थान प्या के निर्मा निर्म या हिन्द्रस्थराग्रीसार्चेनासेन्द्रसानन्नामी सानुसाने सुर्वे हिन्दाम्स बेर्'स्थ'नेव्'रुदेव'के'वेर्। नर्गामेथ'हिर्'रुगमी'न्'विग्रें थ'र्दर म्यास्यास्य प्राचित्राच्या न्यास्य स्वर्थान्य स्वर्यान्य स्वर्यान्य स्वर्थान्य स्वर्थान्य स्वर्यान्य स्वयं स्वयं स्वर्यान्य स्वयं खुरायदी हिंद इसरायाय वृत्यायस्य हिंद रुगा वर्षा वर्देद पा वर्षा वेदि वर्देर्पार्यो अःश्रेषाश्रापाराप्तरापारावर्देर्पारवे ह्रश्राह्मश्राह्मेरावेषा । विरा सर यर्गामी सुरादरे हिरायानाया राज्या विमायार्गाता वर्ष्वेदश् रेश्वःत्रःवाद्यद्वःरेश्वःतःश्वेद्र चर्चाश्वःतःत्वादःद्वःचच्यःतः वर्रे हिराया क्रिंत विया दिर्यात हेता यर हैं। क्षे देर्यात क्रिंयाया हैं विया। डेशन्इनि:डेनने सूर्त्वसस्यस्य वर्षेत्रहेनने नवायी सरम्यी स्थानी निवा व्या निवा र विद्या स्था वार्य र विद्या र विवाय स्था र वि मामित्र मुन्ने मार्चे मार्चे मार्चे मार्च ब्राम्यात्वा द्वाराष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र विष्यात्वा विषये वा विषये विषये विषये विषये विषये विषये विषये विषये व देव्यावेद्यार्श्वेद्वार्वेद्वादेव्यययात्र्र्श्वेद्वाद्वी वयार्वेया

त्रियः विद्यानियः स्थ्यः स्ययः स्थ्यः स्ययः स्थ्यः स्यः स्थयः स्

 इस्रश्राशुःकुःकेरानश्रम्भाश्वीता देवेव्यत्वश्राग्रात्ने इत्मेहित्यवदे निव हिमाय के नर महारा दे सूर खुरा वेंद्र स्ट्रीं दिनो इपा शुरा महिंद नवे कुंवा दे चेवा पाकेद सेवे अर्रे हो निरा हिन पर प्रवासे के व्यय है। क्ष्र-मिर्देर्निस्य देखे वार्य स्वार्थ स्वर्थ स र्देव:इस्रय:यद्या:यविव:सहस:यहे :क्वेंस:परे:स्नेयय:पर्देर:हे :क्वेर:हस्र *য়ৢ*ॱॺ॓ढ़ॱय़ढ़॓ॱॡ॔ॺॱॸॺॣॸॱॸॸॗॺॱॸॣॸॱॾॗॕ॔ॸॱढ़हॖॻऻॱॻऻढ़॓ॺॱॹॖॱॿ॓ॸॱॸॖॱॻऻॹॖॸॺॱ निद्य देवे वद्यवया ग्राट में दर्द निविद्य मान्य में देवे वद्य विद्या है से से स्वर क्षा स्वर महास्वर के यानिहरनाद्रा र्रे रेर्ने स्थित्र मानुष्यान स्थान सुर से सान दुते से स्था क्ष्र-ग्र-ग्र-ग्र-ग्र-विन्त्रम्ययाग्रेक्ष्यः भ्रेत्र भ कुराह्मरायायळेंद्रायादत्याचार्रेग्यारीयायादेग्यूरात् हें हेंद्रा र्श्वेत्रायसायने नर्भामित रहेया श्वेत्रायहिषा नर्शे निते यो साम भी ना हान निता ने। र्श्वेन्यह्वारुष्यम्धेन्द्वायोगावन्तस्ययाययेतुःवेवारासुर्षेन् हिटा श्रुवःसदेखेतुः स्वायाश्वः साम्युद्यायात्रे श्रूवायाम् बुदः नदे भ्रूनयः न्ता नर्के.यदु.जुर्भः क्रिशःसर्गश्रेरशःसः वर्षे कः न्त्रीरशःसः लुर्भः गश्रा सुर्यार्येट्यार्श्वे द्वार्यो स्यार्थ्यार्थयार्थयार्थ्यात्र्ये द्वार्थे द्वार्थ्यात्र्ये क्ष्र-मिर्नेट-चित्र-कुष-श्रुँ न-वह्मा-मी-क्षेम-न्द-श्रु र-द्रुग-न्त्र-केश-र्ने-यक्रमःबिदा गहेंदायेययार्से द्रायात्या सेत्राहात्रयायायात्रीताहात्ययायायात्रा वर्दराधी में अरावशायहिना शावशा ही सात्रा की ही ही हिंदा भी हिंदा धीना

ग्रवस्थाययदेन्द्रायायावस्याया वदायात्त्रस्थरायाञ्चर्द्राद्रा थें। जुद् वर्देन्यः इस्रयः व्याप्तिः चुन्यानः व्यापानः नुर्वे यः शुः वर्चुनः नः न्ना व्यापानः धेर्न्यवेत्रः श्रीः र्वेर्न्यः पर्नेर्न्यः पश्चरः प्रवेश्याहेरः केत्रः प्राप्तः र् त्युन भन्न कें अञ्चन भने में व त्यु अ हे व सुव सुव सुव अ अ भ न न न धेदे मेव द्वो पदे प्रश्वेष पादेव द्वा होता स्वाय स गी कुर् त्य ग्रुस्य श्वेर हे ख़्या नसस इसस केस केर कुर में पर्द्र या परि र्शःग्रे ग्रुट कुन सेसस न्यव सेसस न्यव केत में इसस ग्रीस सूना नस्यास्त्रीतस्त्रीतस्त्राहे स्वरानस्त्रीत्रायरस्त्राह्तात्रात्रात्रा स्वरीत्रायते हार कुनः शेयशः न्यवः शेयशः न्यवः केतः र्रे : त्यशः ग्रीशः है : क्षूरः श्रेनः यरः वशुरानाद्या दाक्षराध्यायान इते वहेगाहेतातान व्यायाया । रोसरान्यवासेसरान्यवाळेतारी स्सरा श्री याही सूरा सेना पारे निया वस्र १८८ त्य रा ग्राट के रा के राख्या पित ख्रुवा वस्र स्ट्रीट स्ट्रिवरा के दार्थे भ्रेट्रात्र्यायाद्या वद्याययाव्याव्यावेयावदेशवृद्यक्रवाग्री सेस्यादेवः र्रे के क्रुवशकेव वर्षे शया क्षेत्र या श्वाशास्त्र वा वर्षे द्राय है से समुका कुषाश्रशामी श्रेरिया क्षर्यश्री के र्यया यस र्याय यस है वर्ष विवाय यस <u> व्याया क्षेत्राय र श्</u>रें वा क्षाया न्या । श्रें त्या दे त्या श्रू र त् हे वा या या राहाः याञ्चरा होत्र हो साम स्वाप्त विसाम सिया निसाम सिया स्वाप्त मान्य

र्भ।

चुस्रश्नादे निर्माण इस ची क्षेत्र निर्माण हिन्से स्राम क्षेत्र निर्मा อ्र अव्यास्त्रेर हे दे प्रयोग अस्य ग्री क्षे व्र या वावत ग्री क्षेता स्वाप्टर या येत्रपरि दशेग्राश्चराङ्ग्या द्वाया द्वाया ही ही में मान्ना या स्वार्ध्व सामित परि पर वरायदी सूर नराया से। येव पये में रेसरा रह स्थान हा वेराय हुर नःसून् ग्वन्तुः भैगः भूगाये नः यः यः वास्य स्यान्यः ने यदः से नुसः से श्रुयाना गुरावाने भेगान्तराया यादित्याना वात्र प्रमुदा सूत्रा नश्या ह्या या स्था यात्रासेस्राउत्त्रस्रस्याः श्री श्री ना श्रूपा त्येत्र प्रदे प्रस्या पार्श्वे दाया त्येत्र हैं। |दे'षट'दे'देट'शृदेवे'शृत्युत्य'धे'दें'वर्जुट'कुवे'शृत्य'तश्याह्मस्रस्य येव डिटा रेया ग्री या ह्वा नाय दे प्राया भी रहुव प्राय हे स्वया भी स्वया नस्याम्सस्याग्रामान्ये कुरार्चेना पुरायेन स्वीता देवसामान्य ग्री:सूगानस्यायेदारायायह्यामि।

 स्तिन्त्रीः र्वेनाः हुन्न न्यायाः यहेतः स्त्रीयः स्त्रीय

देशक्ष्म्यायम् इष्यायम् इष्यायम् व्यवस्य विद्यायम् विद्

चया हैं दार्शेर्या प्रथम वर्षा द्राया वर्षा वर्या वर्षा वर्ष वक्षव्यावित्राश्चार्या शेस्रश्चेत्रा शेस्रश्चेत्रा श्चीत्रा श्चीत्र श्च क्षराशुरावादानवे वर्तवादा द्वारी होती । दे निव विव द प्री माना द्वारी वर्त्रो क्षुःसःधेव। भेदेःवर्त्तेःनःम। वर्देनःक्षुःनेग्रभःतुग ।ग्रात्रुग्रभःगत्रुग्रभः बेट्रगुःक्षुत्रसम्भाषाः स्रित्रे स्वाप्तस्याः हे क्ष्र्यः विद्यास्य सम्भाषा स्वानस्याने नदाने नवा वसंस्था स्वान के सार्य स्वान स्वान नश्याने निराने निया त्रस्य राजन वा यी सुरासे विते हो राज हा स्थान स्था ने न्या शुरुन् वर वर होर्द श्रुयान् श्रेट हे न्द ख्र्या वर्षया श्रुयाश्राम हा नश्चेत्रत्रभाने द्वा भेषा स्वा इसमा स्वा दे द्वा भेषा श्रुगा'वसर्था'उर्'र्राय्यावर्था'स्रार्था कुर्यापर'र्यस्थर्था'भेरा रे'ह्रर ल्रिन्सदे त्रन्त्र त्रे स्वाप्यस्य या स्वास्य ग्री मात्र अंदर्श के द्रार निया किया अप्त अर उद्दर्श का विद्या है द्रार वी भुष्यभभूत देवा या वाव या वयुर वया व्याया ग्री भुष्त र व्याया रहेया ग्री:भूर:ग्रुर:व्या:यर्थ:ग्रुय:पर:न्यय। दे:व्य:ग्रुर:कुन:येयय: इसस्य में भी श्रुपार्थ कुर् त्य पेंद्र पिय से निया श्री न स्वर्ध कुंद्र कर स्टर मी कुंद्र त्य क्रून्त्वर्यायया येययान्यवः केत्रिन्तः इययाः भूनः हेवाः यायद्याः क्रुयः धरःवस्रमा देःवसःर्स्ट्रेन्ःग्रेःवहेगःहेवःग्रेःदसःर्ग्रेगःन्दःग्यदःसःयः र्शेग्रथायथान्तरामेशानुरानवे र्भ्भेत्रवस्थाउन्सरामे सुरासे विनेवे ब्रेन्द्राह्म स्थान हुन्त । वेश मुह्न प्राह्म स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

नेवे छ्याने स्रामी छे वर्षे वे सारे हे न सर्व र्या माया नर नुभेग्रास्य साने हिन यस हिंदा ग्रीस स्टान्न समेन सम्या हिन्स निरा स्वा नस्य ग्री अ १५ स वर्षा पदे स्वर रहेया इस अ ग्रायय पत्र न न ता स्वेट हे नियायार्गारियां भीरायया यास्यायर्गार्थाय मियाय्यास्याय्याय्याय ঀ৾৽ৠৢয়ৢঀৢঀ৽ঀ৾ড়য়৽য়৻য়ৢৼ৽য়ৼয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়৽ঢ়ৼয়ৡয়৽ঢ়ৢ৽ৼৼ৽য়ৣঢ়৽ ग्री नदे द्वो व्रथ्य उद्दे द्वार म्यार से दे इया पर से दाया से दे खू नुवा गर्धेद'स'द्रश्रात्वार्थास्यायदे 'य'हिद्र'सर'उद'द्रद'ध्रद'सर'त्रुर्थार्थेद' स्रुसार् नर्स्स्या सुरार्द्धराह्यायार्द्दासहसार् सार्देवास्त्रीया वस्र १८८८ देते सुर्वा नायश्वर द्या सुर्वा राज्य र में स्था है। सुर्वे राज्य र विर नदसः भ्रुः मे अः गैं नानवरानानवे तात्र नासुरासुरासुरा सुरान्य स्राप्त भी स्रा नुगामर्थेवासवसाल्यासाते। श्वेदायी वदानु दाश्वसाय वेसावहेवा ची गिर्हेर खेत हेर गिर्ड गार्ड या ससा निस्त स्थान । विस्त से खेर विषे सन्दा हे.र्.वाववःइसस्नन्दा वरःसःइसस्नन्दा न्वाइसस्नन्दा रेग्या र्याया में अस्य उदाह्मस्य या स्वेटा हे प्राया राष्ट्रित स्वाया स्वया स्वाया स्य म्यान्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषय न कु नडरायान कु हैन न तर्वो न सम् नुदे सूत्रान न समाया सूर कूर गर्हेरायेत्र भुग्र रज्ञा पुरन्त्रीय। यर रे अ दग्र र र जी सूर्या गया थर यात्रश्च्रात्यायिवायिः वित्रान्यामः स्वित्रम्याया उत् श्ची प्रित्रम्याया उद-ग्री-ग्रन्थ-५८-अ६अ:धर-र्श्वेअ:दश-शेअअ:उद-इअअ:ग्री-श्व-तुगः गर्षेत्रव्यात्वायाः हे सेयया उदा इयया द्वी पा प्राप्त प्राप्त विष्या ह्या र्द्धराह्यायाद्रायह्रयाद्रायो सम्भावतात्रयायायात्रयाच्यात्रयाची मेवारार्ट्रव्ययर्थ्या मेवार्य्यायस्यायस्य स्थारा स्या स्थारा स्या स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा स्थारा नुगानाध्याय्यस्य नुमा स्टानी स्रानुगानाधिव यात्र सात्रात्र स्रीट वटानी वाडेशप्टें त्रिं शें विवार्ष वेशप्रश्चा हेशप्टें त्र वर्ष वापर वर्ष या पर रेशरवायररम्कुन्यः क्रेश्चिरावः क्रुम्रान्देशेष्ट्रवायायः इस्रयाययः विवायः याम्वरशेययाउव म्ययायायर निर्मा शेयया उव म्यया ग्री मुन्या थॅर्न्सदेन्त्रवाप्ट्रिक्न्र्र्न्स्थेन्वो न्य दुःद्युयः तुःन्द्रन्य यथा संयाया दुर न्नरमा भ्रेम:नु:वर्तेर:वी:ह्रेग्रम:न्रस्यमःग्रम:नहन:वःवर्तेर:नःवर्मः वर पर्दे द ग्री देश प्रजुद द्वार प्रथा न सूच प्रामाशुस से वा सामान से सस रादु प्यश्र हुँ द्र प्रचेश चे देर प्रचेश से प्रचेश से श्री श चे र छे र सिर्श से से श्री श चे र छे र रेंदे नग्रमः न्द्रश्चें द्राया इस्रमः ग्रम्या नहाराया सन्दर्भे समा उदा सेसरामभ्रेत्रत्र्भेत्रायाधेत्र्ज्याह्मस्याभ्रेत्रायर्भेत्रा सम्बन्धेसरा ठवः इस्रशः ५८ १६वः २८ १ इस्रशः ग्रीः क्यू ५ १वः व्येषः १६वः भ्री वः ५८ १ वेशः भ्री वः ८८.४८.१ूच.लूट.गु.चश्रम्भश्यक्ष्र.भूटश्रम्भ। ट्रे.८वा.वश्रमः उद्राचेगापाळेद्रासेदेरवसाद्राळुद्राचेद्राच्चेत्राग्वेशाचुद्राद्रसासद्रसाक्त्रसाचीः र्वे त्यर वें न प्रे कें का प्राची वार में का त्या कें वी का वाय के प्राची कें कि विकास के प्राची कें कि विकास नड्दे न सार्हे हे प्रमुद्दे हिट दे पहें न ही नर हससार से सान विदासें सिंदे यर्देवःह्रेग्यः र्र्वे :ध्यः ५ : ग्ययः निन्न वयः यानवः विनः ग्रीः यः निवः से ययः उदान्रस्य उदाया देसान विदान हरान्य यस दे दराहे द्वा सेस्य उदा र्शे र्शेते मुद्दाया देश मुक्ता रादे र्शे रायदे रशे रायदि रशे रायदे रा इयशःग्रे:कु:रुशःग्रे:ध्वापाद्दाद्वशःरुशःग्रे:ध्वाप्वध्यावयशःउदः ८८। विरायरायसायाव्यायसम्बर्धान्यसार्श्वेष्यस्थिते स्रायानी स्राया इस्र रहें र ब्रुट्य है। दे द्वा अद रेवा या यस वेदि सावेद स्र रहें रास दे र्श्रेश्वारा नित्र वात्र श्वार द्विर सम्बद्धायान्य सम्बद्धा से सम्बद्धा समित्र सम्बद्धा समित्र समि है। शेस्रश्नात्रकेत्रारीनित्रासूरात्राश्रास्यामुश्रासदेश्रीश्रासान्। धरा रटाची खुरायेंट्र श्रेट्र प्रेट्र प्रेट्र प्रेट्र प्रेट्र श्रेट्र स्टेट्र श्रेट्र के दारेट्र स्टेट्र स् द्यायाम्वर्यययाच्याययाच्याच्यायाच्यायाच्यायाच्या

वर्चेत्रश्राभ्रेट्राच्ये पर्वे विषयात्राच्ये विषयात्राच्ये श्राच्या विषया उद्दायासर्केद्रायदे श्चेत्र श्चेत्र श्चेत्र सर्वे त्रसास्य मद्भावत्य मद्भावस्य सर्वेद्र दे द्रशेषाः यर गुरा देवे द्यो इ दे या म्व से सरा उदा वसरा उदाय ग्री दारा रा म्या मुरा मुरा हिंदी है । स्वाप्त के स्वाप्त है स्वाप्त है । स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ब्रॅंशना हुर्ने । ने सूर कुर वी पर्वे केंट या न क्रेंन करा द्ये वा या पर्वे दिन नेश्वाह नद्वाह स्वाह निष्या है निष्या । स्वाह स्वाह निष्या है निष् नर्याग्वा । सास्य अपना स्थानिया स्थानिय । वन्या वी निर्माणी । वेशमहिंदायेवादे सूराव्यायराम्यायायायायायायात्वारा ।दे यःवर्ने स्रुसः न् स्टामी खुर्यार्थे द्रशः श्रेनि इसस्य मान्त्राया महितान द्रा म्बर्ग्ये भूगास्याप्तर्यात्याये वर्षि क्वें द्रान्ते प्रदेश शुर्गार प्यर नहरःनःन्रान्येवं यासेन्यस्य नस्य याने सूरार्श्वे रानान्वे साम सुरार्थे धेव है।

त्रुःसःयःवह्वाःसःयय। सेस्रःहिन्ःग्रेशःदेःसेस्रः उदःदिवाः हेदःन्। श्रिंन्गःहेदःभेदःहिनःस्रेः व्याःस्रेर्याः । विस्वाशुर्यः क्रियः विस्वाशुर्यः । विस्वाशुर्यः क्रियः विस्वाशुर्यः । विस्वा

বতমানারমমাত্র শূদামী মমাশ্রী বেধ্বুবার্টি ব্রেমাবরুদানমাশ্রম या न्रुयानाळात्राम्यो पात्रशान्दाने मास्रुशानि से स्राया स स्यानस्याववृद्दारावे में दासे दिन्द्रान्ता न्यायास्यायास्यायास्यायाः नः अरः र्वे द्रा गर्वे दः याषादाना र्वे दः से दः यादे द्रा वा त्रस्य र वा त्रस्य दे र श्चेरामने सेसरा उदाहमारा है दिन्ही सेवा सेसराया नहेदादरा हुटाना धेव भी गववर्र ने नगन कें न में शुष्पर से न ने नि न वेवर्र न ने पर्योदे ग्रम्भास्य अर्थेन्य श्रेन्य ने प्रदेश के में स्ट्रेन् के मार्थेन्य प्रमास्य अराउन् ग्राम देरःश्लेखःयः प्रदःश्लेश्वरः विद्यारः विदेश्येष्रयः उदः ह्रययः ग्रीः श्लेवः ग्रीः प्रोः सेससाग्रीःसमुख्यसाग्रुटानाधेदाग्री ग्वितान्ते नामें नामें सुध्यर बेन्ने । श्रेन्य ध्रेन्य श्री वार्य वार वार्य वा नमयामित्रव्युवादेनावमानर्मिनामान्यावित्रके। नमेनासर्केनानामान <u>ढ़ॖ</u>ॖॖॻॱॻॖऀॱऄ॓ॺॺॱॸऀढ़ॱय़ॕॱऴ॓ॺॱग़ॖढ़ॱढ़ॺॱॸक़ॗॖॖॖॖॸॺॱढ़॓ॱॻऻढ़ॕॸॱऄॺॺॱॶढ़ॱॸऀॸॱॸॖॱ नर्सेस्रमाने नेते स्वार्हेग्या रायमार्श्वेतायते सम्धितान् वर्धेमार्गे ने स भेवासमाभेभभारवार्यम्भामाम्भभाषाधाः जुन् ज्ञेवाने ने न्यायी न्युया न'वि'नश'श्रेव'सदे'सर'धेव'र्'पश्चर'र्गेश'व'श्रेव'सेसर'धेव'र्हेगश' यव्यापर से से दिने से सम उदा इसमा ग्री प्रमानसमा ग्री मासी हिन मसन्तुयः विदः सेंदसः मः द्दः द्वः सेंदः मी मानसः या समयः से द्वारा समा ने निवेत्न, स्वाधिस्यान्त्र निवेत्तर विवेत्तर वि उद्रासेस्रसाग्री वसुवाहेदावसाहेवासादवीसामराह्येदावह्याद्वादानस्य यहिश्वाहिश्वालश्वाहिरश्वहीं त्राच्याविष्टा स्थान स्था

ग्वित्यार्थेत्वत्तर्भेत्रेत्वर्थे के मुन्याय्या वह्यात्वे क्षेत्रः वित्रः क्षेत्रः के मुन्याय्या वह्यात्वे क्षेत्रः के म्याय्याय्याय्याः क्षेत्रः के म्याय्याय्याय्याः क्षेत्रः के म्याय्याय्याय्याय्यायः के स्थाय्याय्यायः के स्थाय्यायः के स्थायः के स्थायः

स्यश्राण्णे ते न्या त्र्री निर्मा के न्या त्री निर्मा त्री निर्मा

 यहीत्रमानिष्यास्त्रेत्वेत् स्क्रीट्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रीत्राचे स्क्रीट्रस्ते स्क्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रिस्ते स्वरस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रीट्रस्ते स्क्रिस्ते स्क्रिस्ते स्वरस्ते स्वरस्ते स्क्रीट्रस्ते स्वरस्ते स्वरस्

कु विटादेर क्रे प्रवेश्वेयय उदार र र र वी देया दया सुराद वी यादा वर्षे र यःक्तुःकेवःर्यःम्बदःक्षःर्वेम ।म्बरःयःमरः वर्देनः धेनः चर्वेवः न्यव्यानः वर्षेः न्यमान्यस्य श्री भेटाम्डिमामी कुष्पटा श्रस्य सामानी साभेदा हु सून न्गवान्यकालेटानेराञ्चे पाक्षेत्रीत्राच्या दाक्षाने प्रतिवा ग्नेग्रथा भ्रुव क्षेत्र हो त्रु हो द्वु हो दिन् की कुष से दि सक्षव न हे न हे न ग्रें या नन्त्रन्यस्यस्त्रीश्राग्रह्तिहर्नेरःश्चेत्राह्मा म्ब्रिस्यहर्ष्यस्य ब्रैंयः अ:८८: तस्या अ:यः श्रुव:रशःया वेया अ:८८: हे : यद्धं व: इसः क्रुयः सः इस्र भे में स्वरंत में दिन के दिन में स्वरंत र्श्वेत यय नित्र केट निर्वास्य या नित्र पार्च या मी या मानि हिट हेर हो निर यश्रिस्याम्या विरानेराञ्चे प्रवेशकुष्ट्राञ्चराञ्चाविराञ्चे पाळे या अराप्ता प्रवेहायः वर्ने वित्रार्थे साम्बुर नवे कुया में हिन साग्री सु हिन ग्री सार्थे व श्वास नश्चेत्रपादेवे सञ्ज्ञाधित सम्माशुरा

ययः में किये समें त्यमा वर्ते निये से समान्त हुँ न्या ने सानित अर्वेट्-उट-श्रेन्। विट-इस्रय-ह्य-तु-नक्ष्याय-हे-नग्रट-नर-तुय-ग्रट-श्रेन्। नरःश्रूरःश्रुःधेशःसर्गावयःनरःत्राग्यूरःश्रेन्। । ग्रुरःकुनःशेस्रशः सर्केना पेत्र प्रत्यसम् भीत्र से त्या स्वा विष्टे प्यस प्रस्य महास सम् मुरुष्य प्राप्त विद्वार्थ । विद्वार्थ यह वा हेव ग्राय में प्राप्त में प्राप्त विद्या वहिना हेत प्राप्तिना हेत त्य अप्य अभिनेत स्व प्राप्ति । श्रम् अर्थ उत् ग्रह्म खुन ग्री । शेस्रशरेद'र्से के पर्दे विंद प्रशादतुर वर ग्रास्य विर सर्य कुरा ही । <u> हे 'ठत'ने दे 'दब्बुरस' र्वस्य अस्य उर्' ग्रुट' वर्षा' यस्य प्रावद पाडेस'हे '</u> स्रमःसहन्यदे द्धयः १ सूर्या धेतः विमा नन्या यवतः सहसः नहेते से सरा रेव-र्रे के पर्ने कुषाश्रश्यो श्रुं न पा वस्य य उन् ग्री पावि न र श्रे र र्रे न र अर्केग'न्र-पाव्र-'नेर'धेव'र'न्र'। र्ह्हें श्रेंश कुर र ह हस्य श शेया नेव ह हैंग्रर्भायान्यये म्वर्याधेन स्वरं द्वाया स्वरं वेगानाके तर्रित सर्रे से समयात्या है सूर ग्रास्त्र संख्या द्रा ग्राम्य <u> - ना विदेशमालु - श्रें न वह ना न न न सुन न हुया महिया सु ने ना या हे न </u> ८८. पश्चात्र स्थान कुव:५:बेश:बेव:हैं।।

ग्वित प्यट से समार्थि हैं । देने हिंग्या या सहय नि ही मान्य नि

यहिश्वा हिन्द्वा हिन्द्वा हिन्द्वा हिन्द्वा हिन्द्वा हिन्द्व हिन्द हिन्द

कुनःशेःशेश्रशःशेःशळ्वःहेन्ःशःह्वाशःस्था ग्रुनःकुनःशेःशेश्रशःसळ्वः हेन्रळ्टःनःविषाःश्चेःनःयःपाववःद्वःद्वःपहेनःन्दःग्रुनःकुनःद्वःपहेनः महेशःगःन्वेशःशें।।

ने स्यर्गविदार्च देवा में के स्थेन के स्थित के स्थेन के स्थेन के स्थेन के स्थित के स्थेन स्थेन के स्थेन स्थेन

त्रेयन् न्यान्य व्यान्य व्यान

हीर-दु-नङ्गायानवे नर-दु-सदर-सेद-शे-से वर-दु-मद्यान्य-दर्गे या ग्रद-ह्री-दयः सेट्र प्रेटे स्ट्रेट्र श्रुट्र श्रूट्र श्रुट्र श्रुट्र श्रूट्र श्रुट्र श्रूट्र श् हे.क्षेत्रः श्रेषाः वर्षेताः वर्षेताः वर्षेत्रः वर्षाः वराः वराः वर्षेत्रः वराः वराः वराः वराः वराः वराः वराः शुर्-र्-त्रुव-भेर्-पदे-ग्रुट-कुन-र्वेन-पर्-प्रगुर-श्रुभ-र्-न्यसस्य-पन् र क्षेत्रे.रर.ज.भूभभ.वय.वभभ.वर.क्षे.बूच । भूभभ.वय.चेवा.चर.प्रूर. यद्रः वावस्यः वसः नृहस्यः सुर्वे स्वरं व्यायद्रः से वर्षः नर्डे अ.ग्री.ग्रे.तसर.ब्रेंच.ग्रर.श्रे अश्वाउदाकुर.बर.सेवे.र्देव.श.गार्देगशः रोसरारुद्राचसरारुद्र ह्यायाये द्रायायो हो विष्टार्य हम्याया ग्राया के श्चेतायमामार्ग्रेयानमामेममारहत्त्वमामान्त्रात्रामेरामेराम्यान्यादर्गेत्। धरायात्यात्रमा देशादात्रभारादे सुरायार्थे द्वाधराद्या धराई या भारादे यरयामुयावित्यापित्ते। यरयामुयावे भ्रायळवान नरित्युया दुःहः गिहेशन्दर्भे ग्रुन्नवर्भे निक्त द्वार्थे निक्त में निक्त नक्षान्य कें ना से निया स्थानित से निया से निय अर्वेदः अद्यान्य अर्थेद्रः अर्थेद्रः श्रीः मत्द्रः या वि विदः अर्वेद्रे अर्द्रः वरः यदे अर्चे दिश्यम् वेनश्या अवियान्ति ग्रीशेस्र अवस्य विन्या ग्रान्याग्रान्यत्यामुः श्रुवायिः वर्गेत्यमानुवायम् सम्प्रान्यम् वेष्यमः वह्रानुः त्रीरः वर्देरः सह्दः या दुः या देशः ग्रीः द्धृतः या द्दारः द्रारा या देयाः हुःदिद्देगाःहेत्रःश्चीःविस्रसःग्राद्याःस्यान्त्रः । ज्वान्त्रः । ज्वान्त्रः । ज्वान्त्रः । ज्वान्त्रः । ज्वान्त गिहेशःग्रीःकुंषःठेगाःठरः ५ देवाः विरःगठेगाः ५ सू नक्ष्रश्रापदेः कुंषः

क्रेंत्र'य'त्र'वेद'य'यर'र्केश'यर्विर'नक्रेंत्र'ता य'यर'सु'दत्यत्या य' यर'न्याय'यूव'व्यायनन'रावे'र्ख्य'र्स्ट्रेव'रा। विर'याठेया'रु'यर'सहंन्'रा' नडुःगहेशःग्रीःद्धंयःश्वःद्वेनाशः नुशःग्रेनाः हुन्। नेरःशः वदः विदःग्रीः न्ग्रेयायिम्यादेवा हुः धरार्शे सेवि विस्तान्य प्रत्यावि प्रत्य वि यशन्वादःविषः वश्वाचयशः सम् अव्दा यः यश्वाक्षः व्यव्यान्त्रेमः नम् सबूटा जाताश्राश्चेतां श्रीतुःकः चिट्टा राज्यश्राद्यां साम्याद्यां नवे क नुन्न् अर्थेन। यायमा द्वन् र्वमा ग्री क नुन्न् रामेंन। यायमा सर उद्याचस्र अत्र त्या स्ट स्ट मी 'द्यट से 'द्र विस्र साद्र त्या प्रदे स्रुवा या न्दायकं सामा सुवि न में निष्या सुव किया स्टास्ट मी सुवा न न्दायकं सा धरः नश्रुवः धरेः श्रुवः धः ने 'नृषाः वी शः शें 'शेंदेः ने व ने नः धः व प्रवनः हें व 'नृरः इसार्हेगायार प्यरासे सदय यस है सूर दसासावि हु या पिरे पारे दि सहसा नुदे सिर्पो कु सुर वस्र ४ उर् ५ ग त्र मार मह्र प्रकर पर ग त्र मार नक्ष्वादे द्या त्यायाद्य हिं या द्रा क्ष्या हिंगा से दाया विवाद ख़्रा ही या गुना धर डेवा उर र में व धर र । अदे र श्वेर तिर र व व व व र श्वेर নষ্ট্রিদ্রেরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তর্নার্ম্যান্তর্নার্ম্যান্তর্নার্মান্তর্ন্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্মান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্তর্নার্বান্ব हे सुनर हेग हर र दें केंद्र र र र विकास के स्वास के से साम होता है साम होता है से साम है से साम होता है से साम है से साम होता है से साम है से साम होता है से साम होता है से साम होता है से साम <u>ব্রুবেরঝার প্রম্বার্থর প্রার্থর প্রার্থর প্রার্থর প্রার্থর পর্যার্থর পর্যার্থর পর্যার্থর পর্যার্থর পর্যার্থর প</u> ग्रम्यान्य । वहिष्याः हेत् न्त्रीः विस्तरास्य । वहिष्याः हेत् न्त्रीः विस्तरास्य । वहिष्याः हेत् न्त्रीः विस्तरास्य ।

ग्राम्य भूते विम्तु मेर क्रिंव मान्य सुर्व स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत वर्तु दे केर अर्थेट वहेग हेत श्री विस्र शहस सम्बद्ध दिया हेत्रची विस्रसास्त्रवराणसासु से दाये पर्यो दारा क्षेत्र पर सहित पर दिन अदि'न श्रुदे'तिर नु'गठिग'गे'दें र ग्री अ'ग्रट पहेग'हेद ग्री'विस्र अ' श्रस् उन् श्रून नम् अहन् छेन वा अया प्रते श्रून में में तेन प्रमें यान उसान् प्यान क्रॅ्रेन्यन्त्र भूते र्दिन्ने न्वा ने ने न्याय र्शेवाय यान वीय ग्राम्से भ्रेत धरःश्रूटः वरः हो दः धः दृदः। विदः देशः रेषाः धवेः श्रे स्र शः उदः वस्र शः उदः खुर्सः श्रेश्रश्चीःगर्रः वित्रस्वेत्रस्त्रा वित्रस्त्रगर्यात्यः वुर्धः द्वेत्रस्र निवेद्रायात्रावह्र्यायासहदायदे।वयाग्रीःश्चेष्त्रयादेद्रावेरावादेवाःश्चायाः हुरक्षेप्दिना हेत् ही प्रस्था वस्य उत् द्वार वस्य दित हेर ही के त्य श्रुवारवि नर्गे दारा नरा सा हो या से प्राचार प्रमुखा हो। द्राचार प्रमुखा हो। क्र.चार.ची.क्रेचा.चर्षत्रदर.चार्च्र.ता.वश्यश्यश्य वि.चर.चेश.हे.श्चेव.च्याया वर्गे न सर सह न सन्य रेवा सेव ही ख़ेते नर रेवा य हुवा से से र वार य यारावर्षानीःश्रुवाधश्रास्टास्टानीःश्रुवावश्रवाह्यश्राद्धेवास्या द्र्यः व्राच्याः श्रमः द्र्यः श्रे अर्थः क्रुयः व्रिनः ग्रीः श्रुः वः व्यवः ग्री्यः द्र्यः व्यवः व्यव्यः व्यवः नः गुरुष्त्र रुषः भ्रुष्यः त्वारामरः त्यारः विद्या देः प्यदः श्रेषाः उतः द्यायः वरः भ्रेषेः वः विगाः खुरः क्षेत्रः यसः चवेदः तः वेदः वेसः देः विनशः ग्रीः अविषः दः त्वाः यः दरः। थे द्वाराशुः क्रुं न विवा खुट क्रेंद्र सर नवेद द व्यय ग्री सबे रेंद्र त्वारा <u> ५५। ५५ वर्षे रः भ्रे</u> नः विषाः सुरः श्रें वः धरः ववे ५ व व व व राग्रे हिरः धरः व् वः यन्ता भेरःभ्रेन्यराखुरःभ्रेवायराविदावावयश्ये सुभार्थेराव्याया ८८। क्रॅनशःग्रीःवित्रःवेशानश्चरःनवे कुवार्वेरःख्राःक्र्रेनःपरःनवे दार स्वागिल्य्रात्राम्बात्राचेतार् वेचातार्या विस्तर्वेषायश्चरायप्रमा खुरःक्र्रेंत्रः धरः नबेदः तः सुगाः गाध्याः धदेः सम्रे वादः तुनः धरः द्वाराः द्वारः सुरः क्रे नरः खरार्श्वेदाधरानवेदादाष्ट्रेष्टरात्र्वाधादा। व्रदार्वेद्याः सुनार्त्वाः र्देव:यर:पर्वेद:व:वय:ग्री:वद:र्,व्यःय:ददः। रद:यदय:ग्रुय:ग्री:ग्रुदः कुन हु खुर र्द्ध्व सर निवेद व सर्दि द्व्य स्व निव निव स्व से द स्व स्व से द स स्व स <u> नवाःसरः हेवाश्वःसदेः ग्रहः कुनः हुः खहः श्रृंतःसरः नवेनः तः नवदेः वाद्धवाः हः</u> त्वायरार्द्धेवायान्या अळवान्येते श्रुकायते श्रुपे अर्वेदावान्यारे वाया <u> ५८.लू२.ज.२४.स.सम्भारत्याराख्याम् सम्भागीःयार्ट्यायाः वि.विटासर्वेः</u> रेशन्दरवर्धिः अर्वेदरेशस्य वेत्रश्चरा वर्शेद्वय्य वर्गः तुःअःषशःनञ्चनशःमवेःधुमाःमध्यःभःत्तुदःरेवेःकुषःरेवेःश्वःक्षःतुरःरेदः र्शेग्रारादे न्या निरामी दे से हैं । स्याय संदे ना दर पदे मुला से दे त्या हुःसुरुष्रेश्रेस्र्याश्चीःमार्ट्यायस्र्यारुट्यावे विटाश्चरास्त्रेताश्चीरा वासी सेवा सम्यानेवास निमा देव ग्राम वाम प्रमान प्रामेवास सम्मेर विनशः ग्रीः हे शः मङ्काः सुः तुः भी वः तुः धी नः नुः दिनः नः युनः नः नि

गहिराद्मया ग्री महा वहरा । या गवि वही है है या ग्रूर मा । यह उद ग्रीया हे भूर अहे या वेय पाशुरया हे भू तुवे विनय ग्री हेय हे पर सेवा कवाय शुश्रानेना ग्राम् नेना सामना हु खुश्रा शेस्र श्री मानुमान वि वि मानु सामन र्शेट-५-अ-११८-१-४-१८वेदि-हेर-विनःधर-अह्-५। अटश-कुश-ग्रे-भ्र-यात्राच वादार्क्षेत्रार्गेत्राम् विष्णापटार्से सामित्र वासीत्राम् वासी गर्यानु इस्र अर्गे अरम्भ अत्र दान वर गर्भे वर नर सर्वेटर ग्रा सुदे द नवदःक्रेंशःमें शर्दे मिंदःधुमा केव सेवि सः देवा की वर्षे दा कुट द्वारी प्र यन् ग्राम् के रामे रामे प्राप्त स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप वार्रायानवे के कुराञ्चाया के रेवा के रावानुया चुवे सूर रेरा ह्या वार्राया नरःश्रूरःन। गर्णःग्रःश्रुतःश्रॅरःनदेःश्रूरःहरःश्लुःश्रुन्।सरःनश्रृतः ग्रम्से अर्घमा नेमस्य वर्षेमसे मिया अर्धि राज्य वर्षा या वर्षे वर् गड्गार्हेराग्री हेर्सि से सर्वेट विटा वर्गे नासू न्यान स्ति वर्ग नास् निव्यानियाश्चादि निव्या द्वा द्वा दिन् की है से अर्थे निव्या स्थापन येद्रम्थार्श्वे महिम्से से सूर्या वेषा ह्या दे निवेद द्रायळेद नवर सुया इन्दर्भे ग्रुन्न कुन् इन्देन्द्रे स्थालें द्रान्य स्था श्री साम्री साम्री निया महिन ग्रीयारी व्यटाचा द्राप्त वर्षा वर्ष्य हो द्राप्त से से स्वयास्य स्वयास्य हिंदि स्वया यदे पर्युत्त व्यवस्था सम्मान्य प्रमान्य प्रमान्य सम्भागः स्त्री व्यास्था सम्भागः

पदे से समा उत्वसमा उत् ग्री न से दात्रमा के पे दानमूसमा ग्राट दे नविव ग्निनेग्र मदे अळव नवट ग्रिक् ग्रे में के दे न से द वस्य ग्रे छ छ स र्'लर.भु.क्र्या.स.र्टा अक्ष्य.चन्नर.यावय.चन्नभू.वर्.ग्री.चस्र्र्र् क्रॅंटरवर्गुरम्भेरास्ट्रिंट्युवर्यावर्यात्रा सहित्सुवेरवर्रेट्वस्यार्स्ट्रेटर वशुरशोशन्त्रवेशम्डमार्देरवशुरायान्य। महमार्देरवशुरायवेशवर्धिन व्ययः द्वेट वर्गुर ग्रीय यह या मुया ग्री य ग्रीव रावे के या ग्री द्वा वर्ग या र गश्रा यरमाक्रमाग्रीः भुने त्यानावान्तः इत्यन्ति हिंदान्तः सकेषःसूनसःर्सेनासःसेःनाउदःनवेःदेनासःह्वःस्रःसें उसःधदःसेदःहेदः थे ने शक्ति स्टानिव प्येव प्या नित्य नित्य नित्य नियानिय नित्य नियानिय प्राप्ति स्टानिय नित्य नियानिय प्राप्ति स्टानिय नित्य नियानिय स्टानिय नित्य नियानिय स्टानिय नित्य नियानिय स्टानिय स्टान नमः श्रूमः ना विष्णीः ममानिवार विषण्य । विष्णि । हेर्से ग्रेग मेश्रेर र्या ग्रम्य प्रस्य प्रस्य म्यूरी ग्री निर्देत्र भे मे प्राप्त हो। स्ट्रिन ग्री स्ट्रिन स्ट्रिन स्त्री स्ट्रिन स्त्री स्ट्रिन स्त्री स्ट्रिन स्त्री स्ट्रिन स्त्री भ्रुदेग्वी होत्र भेगायम् स्थाया भूम दुवि वा पुष्टे न्या हिंग्याय हुदे कुषानाइस्रयाग्रीयायाने हिंदे ते रदानिव त्रानिव की यान सुनयायया यावराने ताई हे दे यान्व लेखायाया अन्य कुषा ग्री याश्र दे प्यव यया इना इन्द्राध्य मदे कद्यामदे द्वर्या वया प्राप्त विना है। गशुर-नी-नग्जरस-नेति-भ्रान-से-सेस-ग्रान-समामान-सम्भागिन-सप्त-रोसरा उत्राचसरा उत्राच राम्या ने विस्ता विस्ता स्तरा स्तरा ने विस्ता स्तरा स्त षरः धुः इस्रयः वः खुदेः स्नूरः ५८ः तुः इस्रयः वः तुदेः सूरः ५८ः से दस्ययः वः सेदेः

अन्त्यःश्रेष्य्याराःश्रेय्याराद्यस्य स्टार्स्याः अन्तर्तिः वि विस्रश्नित्र्त्र्त्र्त्त्र्वा व्याप्त्रयः हे खूर व्येत्र यात्र स्रुव्य पर हे। भे ह्या रा नहूर रामा वर्षा नर दें भारा हमा या भे ह्या रा नर । ह्या नर्थाः नर्भवः प्रशादर्थः प्रमः देशः पः इस्रशः पः स्वाः नर्याः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः बेट्रन्नून्यरायर्द्यानरर्देशायात्त्रस्यरायान्त्राकेट्राट्या गुस्रास्ट्रिटा हे निश्रुद्द प्रशादन्यानर देशाया हुस्य शाया गुस्य स्ट्रीट हे दे कि वाया नहन वर्जुराश्चे। वर्जनार्केषान्दाक्राहेगान्यादाध्यदासेन्यम् नासुदानी नान्द्रसा गडेग'यथ'रर'रर'गे'भ्रय'न'रर'वळंथ'धर'ळेंथ'ग्रे'रग्रुरथ'वगुर'न। त्रअविते प्रीट्यापेट्यासु वाट प्रते पर्वे र शिष्य वित्र केता से दे । न्तुरुख्यः कें राष्ट्रित्र यम् अहं न्यात्र भुन्ति है। नाम् अराया सुन्दि उत्तर हे नर्भे भूटा कुट रेट न इस्र शाय कुट नर्भे भूट नर्भिर छी. न्ग्रेयायिम्रन्यावयायावस्याउन्ग्रीयासम्यायम्भेयायेन। नेम्या बर्'अर्थ'क्रुंश'ग्री'ग्रस्ट्रिंस्थ'रादे'र्घ्ट्र्य'य'सबद'सेर्'प्रश्चात्य' तुःरदःगेःदेशःत्रशःगशुदःर्वेशःपवेःश्मवःयःविदःतःतेःत्रशःस्विःस्ववः वस्रभः उदः वाशुदः वी 'द्र चुद्रभः वाहिवा'वी सः चितः या। वाशुदः वी 'द्र चुद्रभः देः षरःवयःग्रेः श्चें पाठेषाः सुः अवः सम् सहें दः श्वः दरः द्वेदः पाद्धं पार्हे रः श्र्याश्राभेद्राक्षःवश्रश्रावद्यात्रात्रव्यात्राच्यात्राच्यात्राच्याः वर् नरे रे वुश्वा दे वस्य उर् ग्री व्यव ग्री रामित्र मारी मारी स

र्शे रेवि ने र्कें अ नस्य अ उद्गार्वेद स्य स्थार्द्र सं स्थे वास्तर मी वास्तर न नश्रमा अरशः मुश्रामी अरशः मुश्रामी अरशः मुश्रामी । श्रम् गहिसान्दाध्वापायमा अधिवापादी निसान्दियावसामस्याउदान्सा गरिगा हु अर्देन शुरा दु 'यहिन पा श्री दे 'यद न सामित सम्मा मारी ' शेशशास्त्र विश्वास्त्र स्त्र स्त ग्रथायम्याविष्यार्थित्। देमस्याविष्येयस्य उत्वयस्य उत्रीः सूति वन्यासवे न्या सु । धुवा र्से वाया वादा न । वादा क्षें गर्अअ ग्री क्षें न पा के निर्देश ग्रुया पा त्रयया वर्ष निर्देश या तर पर रदानी व्यक्ष ग्रीका नादाददानादादु क्षेत्री निर्माद ने प्रदार निर्माद ने प्रदार निर्माद ने प्रदार निर्माद निर्म स्याः है स्रूर हिंद न सेया सर्भाग सुसा ही लेश हिदे या त्रा वस्य स्वर यम्। अञ्चला श्री श्रु र र १ दूर र दूर गाठिम र हुर शुरा र गाया र म यवियायाया वयायायदे सवया सुरायदे पदिया हेत् सी । प्रया वयया उद तः अवे : ह्या श्रार्थे : विवा : यद : कर : दि श्रे द : हे वा : ये द : या या अ : उद : गुर-रुश-माठेमा-रु:सर्देन-सुस-र्-मावेम्स-निर्। धेर्स-सु-मह्मा-स-म्बुर-म्रे। वह्रमानुविन्त्रीरावदिविन्द्वानिरान्वानास्यान्यस्य उदानम्भाने सेरा नश्चेग्रान्यत्राम्यानाम्ययाम् सर्वे स्टेन्स्ने स्टेन्स्ने स्टेन्स् <u> न्युग्रयस्य हे निवेदाम्नेग्रयः या वया नायदे इस्रयाध्या स्वित्रयः </u> गर-१८-गर-मी-धेत-वेश-व्यापात्र। यग्र-१ईन्य-१८-१त्याहेगा-येन-धर-भूत्रचेषायाकुः अर्ळे केवर्ये देवे व्यत्वयावयावते ह्यायार्थे क्ययारे दे

वशायदी खुया खुँ वाशायदी विश्व स्वायति सुरायदी विश्व स्वायति खुया श्री स्वायति खुया स्वायति स्वायति खुया स्वायति स्व

युः नाडेगा नाया नाडें नाया नाडें नाया नाडें नाया नाडें नाया क्षेत्र नाडें नाया क्षेत्र नाडें नाया क्षेत्र नाडें नाया क्षेत्र नाया नाया क्षेत्र नाया

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्त्रा हेवार्स्य स्थ्रीतार्थे।

डेग्'ग्रद्रास्त्रे त्र प्रम्हे। वस्त्राविःस्रवस्त्रिः स्त्रे स्त्राविः स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्र वस्र स्त्र प्रम्थित्वः प्रम्हे। वस्त्र स्त्रे स्त्रे स्त्र स्त्र स्त्रे स्त्र स

खुर यथ। कु: श्रेव पावश ग्रे र् पा उव पा । र् स यस पर्व पर वर्गुर-श्रेर-ग्री विरुष-मुग्गत्यायायग्रह्मस्यायने । र्यायसायर्वः नर्भारमुर्भे विश्वास्य वर्षेत्रयश्वादन्दियासेर्भराष्ट्र ग्रीशःगुनः हेरः वसः परः क्रुवः से १ वसः सिन्दे सम्राह्मनः सिनः सिरः सेसराउदायदी वसराउदाया पादरा स्नानरा निर्मा स्वापी पर्दे दार्चे व ग्रीयानाराययायर्गे नार्वाप्याद्वर्या स्त्रित्यारे वारायळेया वारार्द्रा वहिना हेत साञ्चर प्रदेश सिंद कें नाम देश प्राप्त निना सके मा वेस विश्वरुषः राष्ट्रम् स्टारुवा विस्रका विश्वसः विविद्यः विवेशके स्रकारु स्वरुषः व नदे न संस्थिति व त्रुद्दान प्यत् कद्वान्य स्थान्न स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान <u> ব্রি.রয়য়য়৻ঽ৴৻য়ৼয়৻য়ৢয়৻য়ৢ৾৻য়ৢয়৸য়ৢ৾৾৽য়য়৻য়য়ৣৼ৻য়য়৻য়য়ৢৼ৻</u> हैं गुरु राजे स्वरंश कुरु राज्या या हे या धीव राज्या स्टर्यावव याहे राजा दे रें व द्वीं अः सरः दर्वा स्था वर्वा वी अः अ अ अ अ अ इ इ अ अ उ द र छै र दे द <u>लर.रेचा.तर. क्र्यांश्वात्रात्राच्याः भर्षाः भी भी ख्यर. सुव.सू. कु. कु. वंशा भीरा</u>

र्चनःसरः ग्रुर्वे स्रुसः तुः ग्रुरः क्ष्यः ग्रुः स्रुसः ग्रुसः ग

गहेशमाश्रुव अळअशाश्राहे खूरागुना

गितेशमा श्रुव सळ्स्र शाही भूमा श्रुपादी श्रुव श्रुव हो गुर-कुन-ग्री-शेशश-देन-घॅ-के-हे-क्ष्र-निक्षेत्र-घंदे-कुन-घंदे-वाशुर-दन-न्वीर्याववीयान्दावस्यास्थ्रीन्दा विन्यस्यर्भेस्यास्ये केन्द्र गन्ययःनगःवनेवेः इन्ववेःगल्नः ग्रुनः क्वाः येययः निवेः श्रुनः पायः वह्नाः इस्रमाणराणरान्त्राविरा इत्रानेमानराष्ट्रतार्वा क्षेत्रात्राच्या र्श्रेम्य राष्ट्रिम्य विषय द्वारा स्थान स् गुर-नद्गान्यश्माव्य गाठेशन्यदे गुर-कुन-गु-शेयशन्द्र-सें-के-स्-श्लेश यानश्चेत्रयाद्या श्चेश्वायार्वेदाद्येयात्र्यकुरानदेष्वनशासुः हे व्यक्त्रात्व ब्रुत्र-द्रिंश-ग्रिवे त्या ग्रुस्र स्ट्रेट हे न्यू ग्रास्य गर्ने दा त्ये त् ग्री । <u> न्रीम्थान्स्यानसून्यान्या मुन्यस्यस्ययाशु न्रीम्थाया हे सूर्यसून्यने ।</u> ध्ययाम्बर्ध्यः द्वाराम्बर्ध्यः द्वो स्यामुख्य । ह्रेश्वराष्ट्री स्वर्षः स्वर्ध्यः

मा । श्रु दायमा गुर हिं वा मी मा श्रु दा। विभाग श्रु दमा है। दमद में द्वा मी धुयान् धुयाधिन न् वेदारी वेदान स्थान सुसान स्थान यशरदें दिक्याया धेदर् से सेंदर न यश ले स्ट्रा नर सन्दर्शे सर शुःग्रवश्यायश्यानि सुग्रेश्वा स्रेश्वा दे द्या मी द्यर द्ये यो हैर यर वर्गेमारेटा देः पटार्केरायादे या भे अर्थायाद्याया मे या विदार नक्ष्रायाने या श्रेन्यानगान्य साधीन वर्ष्य स्त्रीत हैं राज सूना नस्य भ्रेश्वान्त्रात्र्यात्र्रात्र्यात्र्रात्र्यात्र् निवन्डन प्येन प्रमा ने प्यम में नुरमें नुरन्तु खुने खुन् राप्त निवन थी। व्याः हुः भूरः सूयाः वस्याया सरः यः भ्रे सः यरः वसस्य स्याः ले स्टः भ्रे वः नगमान्यान्याः भेरावर्ष्ट्राः भेरान्याः विष्यान्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विषय यान्द्रभूषा नसूषा क्री सार्वे दाउदा न्दर हे दा उदा वा नर विद्वार नर नक्षराया दे यस गिरे सुना गी देवारा यह से न से हुन सर हे त से ह त हो या वर्ग्यः नियासंदे नियास्य है भी ग्रिंग

र्वेत्रः न्या शुर्या न्या शुर्या शुर

स्यान्तः श्रीतः हं नित्तं वायायात् भीयायात् वित्तः श्रीत् । स्यान्तः श्रीत् । स्यान्तः श्रीत् । स्यान्तः श्रीतः स्यान्तः श्रीतः स्यान्तः श्रीतः । स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यानः स्यान्तः स्यान्तः

नाव्राण्यायर्ग्ने स्थार्थ्य के त्याप्ताय्त्र के त्याप्ताय के त्याप्ता

षयान् नश्चुरानायाध्याधीनान् रहेंदाशे देंदानरायान् शुयान्याना गिर्हेरिये तर्हे स्थूरि क्षेत्र क्षेत्र रिक्ष यो निर्मेश्वर मित्र विकासी स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स नःयःनहेत्रत्रभःवर्देद्रःळग्रभःश्चेशःभवेरळे। नद्रगःनवेत्रःदुःध्ययःधेदःदुः देंद्र-च-व्य-द्रधेम्ब अव्यक्ष्य-वर्षेद्र-क्रम्ब अन्त्रेय-विक्षेत्र अव्यक्ष्य-वर्षे व्यव्यक्ष्य-वर्षे यथा दे द्वा वी पर्दे द कवा थ इस श वद्वा प्य प्रदू श दश शेस्र श उद दे इससायर्ने न कवासासे न प्रति न वो न वे सामान्य न समान्य मान्य स्थान न न्यस्य वार्तेर वे न्यू या ध्रय धिर से दिर य न्ये व्याय वि स्र भ्रेशमंदिके। नन्यानिवन्तुः धुवाधिनः भ्रेटिन्यान्भेग्रास्यावे सूरः भ्रेशमधिरशेस्रा उत्रम्मा दुःसेन्या प्रिम्म ने न्या मे ने न्या मे ने स्मा नन्गायायन्त्रात्राक्षेत्रकार्यस्य वित्रम्यावे सूर्ये न्यो प्रित्रे स्व स्याः भे रामदे स्ट्री नन्या नविव नु स्थाय भी न नु में दिर न म साया न्धेनायान्याने सुना क्रेया के याने ये याया रहा सेना प्राये दे द्या यी याहे अ्वा इस्र यद्या त्य त्र्र स्व स्त्रेस्य उद दे इस्र याहे र्शेग्राश्राम् भीत्र द्वित्ता न्या ने विष्य श्राप्त । विष्य श्राप्त ने विषय श्राप्त । विषय श्राप्त । <u> अरअःकुअः८८:वृदःकुतःशेसशः८५८१३सशः८८:दसग्राशः५५८:८८:</u> म्ययायायकेंद्राचरावन्यावेदा देख्रास्याचवेद्राचे सम्ययाग्रद्या

म्बर्भेययारुव वययारु प्यापित्र प्रत्ये प्रयापार प्राया है प्र ने भूर निर्देशने के सम्बर्ध ग्रीत अर्थ के अर्द्य के दि से स्था शुराते। अदशः सुशाह्मश्राह्मश्राह्माद्यादे प्रदे प्रदे प्रदेश स्था सुशाह्मिय प्रशाह्मिय प्रशाहमिय प्रशासमिय प्रशा सहेशपान्ता वृत्रकुतासेससान्यत्वस्यसासकेन्यसहेशाविता सर्केन्यने न्या ग्रम्कें या शहें या श्रायते द्वेत त्रमी सत्त्र केता ने स्वार हो। रदारदावीयाययाद्वययाद्धरादुःहेवायायद्दा देविदादुःदुदारदा द्रअशःग्रदःसदःमीःयअःनर्गेदःदेःयत्रअःतुःश्रुसःतुःर्वेनःपवेःक्रेदःतुः वशुरावाद्या सेस्रयाउदाद्वस्यार्थार्थेदेशस्यास्यार्थाः वाद्यादावाद्यस्य उद्दाने निद्दा होता संक्रित स्थित स्थान् । यह मा संदे हि ते क्रिन् प्रो प्रदे प्र भेषा गहेबर्ना वरमी क्रेंबर्न्यम्पर्ने अप्यव्यान्य वर्षेत्र क्री सेस्रस्य য়৾ঀৗ৵৻ঀ৻য়য়৵৻ঽ৾৾ঽ৻ড়ৼ৻ঀ৵৻য়৾ৼ৻৴৾৾৾ঀয়৾ঀ৻য়ৢ৾ঽ৻য়ঢ়৻য়ড়ৼ৻য়৾৻ नर त्युर नवे र्से सार भ्वास इवा हु चुर विद विद त्ये द वर्से सा धर र्श्वे द्राध्याधेत्रास्यास्य स्थे स्थित्राम्य स्थे स्थान्त्र स्थित् स्थिति स्या स्थिति स्या स्थिति स वळग्'स'न्राक्ष'न'न्राक्त्याचान्यते श्रुं न'त्राक्ष'के होन्'ग्रान् हुर कुन ग्री शेसरान्त्र रें केरा बेदायम गुराद्या पहिंदा पेदा पहिरा ग्री केरा बेदा मःकेत्रसितेःश्रमः निश्चमः के स्वान्या देवे कुंश दे मार्ख्या श्रमा प्रमानिमः मी दमः न् पर्वे न पर्ने भूर से समाउन वसमाउन हा प्राप्त प्राप्त में प्रिर नुमानुमार्निः स्रुसानु सेससाम् स्रोता द्वीमायनुमान स्रोतासामा स्राप्ता स्रा

वस्र राष्ट्र पर्वि र पर्वे पर्वे द र द र पार्वे द र दे र दूस र र से स्र र पर्वे र र र र र र र र र र र र र र र र ग्रवशायर ग्री क्वें प्रचें र त्र परि स्रम परि ग्राहेत एक प्रत्य परि के प्र ग्रीयानने पर्यो वस्या उदा ग्री क्षे प्रति दे स्था द् से स्था न क्षेत्र क्षे पार्वे दाव वर्ने सूर रत्र वर्गे न्यस्य उर् ग्री क्षे क्स्य गाउर में सूसर् से स्य गाउर नगुः निया हो नावने । सूरा से सका उदा मसका उदा ग्री । हेंदा से निका परि हो । यदे र्भेन इसरा नगुर्दे सूस र् से सरा न भेरा वा पारा नगु न पर्दे सूर सेसरारुव वसरारु न् ग्री हें व सेंद्र रायदे है दान क्रस्य नराय वे सूसर् रोसरानभुत्। मदायानगुन्दि । भूत्र सेसराउदावसराउदाग्री हेंदा ब्रॅट्यामंत्रः ह्याह्यामञ्जूकेष्यायाययायायाः सूत्रान् सेययान सुन् वेर निट' ब'द' प्रदे 'सूर' शेसरा उद' वसरा उद' ग्री' दे 'स' इस' पा श्रु' कें प्रारा निया वें सूर्यान् सेस्यान सेन् वित्रामिन वित्रास्य सेन् से सेन् सेन्या स्वा वळ्यान्यत्रे सूर्रे सेस्राउन वस्या उत्सू न्यान्य सारी वहेगाहेन ग्रीशास्त्रमान्त्रानरः र्वेमान्डेमान्स्रसान् स्रेस्यान स्रोत्री । सर्देराव स्राया ग्री शुःनर्थेवे॥

ने 'न्या'यो श्रां शर्कें त्र त्र श्राचा ना निर्मा या नि

धरः हुर्दे । ररः उषा द्षो र्श्वे रः हु र । हुवः के । हुवः ग्राटः षरः श्ले र । श्ले र । वरः ह्में प्रवासीय प्रतिवास करते सुव सक्त स्था में प्रती हो स्थान प्रति स्था र्शेट्यर र्श्वे तर्गे अश्रायदे नवा कवाश्याद्या में वाश्याद्या स्थार्के वाश्याध्या नक्ष्र-भवे अनु अ नु द अळ अअ शु र दें द से द ग्री ग्वें द ग ह स द दे वे । नुनेत्रश्चर्क्षम्याम्यायेदयान्त्रा देवाययस्यम् स्थान्त्रम्यान्त्रम्य नशः बुदः नर्देशः गविदेः भ्रम्यशः यान्गे : श्रुं रः यः यमनः श्रें : ग्रुशः ग्रुटः श्रें : यः नेयावरायरावध्रेवावयाद्वरासेवाञ्च द्वारासेवायायादवरायानेवातः वायाके विद्या भ्रवास्य द्वर्या र्वे प्रवासि स्वासि ढ़ॖज़ॱॻॖऀॱऄॺॺॱॸऀढ़ॱय़ॕॱक़॓ॱढ़ॺ॓ख़ॱॸढ़ऀॱक़ॖॖ॓ढ़ॱॸॣॱड़॓ॱढ़ॹॗॸॱड़ॖ॓ॸॱय़ॱढ़॓ॱॿ॓ॴॱय़ॱ केत्रभित्रे व्यवस्थायात्र भी त्युवा सुत्र से दाराधेत प्रया से दावसा वेपा पा ळेत्ररेंदिःषसायार्स्ने नायरायर् दार् दाया हसस्य ग्रीसा कुषा श्रुसा वि ना खूदे सद <u> द्या:सद:स्या:यी:सर्क्या:द्र:या बुद:दें। ।</u>

नन्नाःगाल्वन् सहस्य नहेते से सस्य देन से के हो से हिस्स स्थानित सहस्य नहेते हो हो त्या प्रत्य स्थानित सहस्य नहेते हो हो त्या प्रत्य स्थानित हो हो त्या प्रत्य स्थानित हो हो त्या स्थानित स्थानित स्थानित हो हो त्या स्थानित हो स्थानित हो हो त्या स्थानित हो स्था

नर्डेशायशाद्युरानः इस्रशायरायरायर्देत्।

ञ्चनाः सरः नञ्चनः न तुरुषः यथा न न सेरः देनः न सः यथाः व नु हः न देः อผมายาวุราผู้ราहे र्स्नेसाया भूवायाये क्षेत्राया वर्षा स्वर्थाया सेस्या गशुरुरा । यार्थर दिन्द्रायात्र साम्यान्य साम्यान्य साम्यान्य स्थान वह्माः श्रेम्या यस्य म्यूर्या सदी महिंदा येत् मी : क्षेम्या यस्य स्था यह <u> ५८.लट्ट्रेय.बुट.रच्यामञ्जूषाचा विष्यक्षश्चा ग्री.ग्री.याम्बर्यस्</u> बेर्'र्'भूर'रेग्'ग्रर'से'ग्राहर'वर'त्रर'तुर'त्वारी'सेसस'रेद'र्से के'र्सेट'वरे' नदेः भ्रम्याश्यः शुक्रः न्दिराणिले । नदः शुक्रः सळ्याया श्रम्या । स्त्री नः न ग्रथंके नर क्वें अन्त्रे अप्यथा क्षेट हे ने के निर हे पहें व प्याप्त्रा ग्रह र र्श्वे द्रायम् वसम् उद्दुः प्रदास्त्री द्रमः वसम् उद्दुः मेसमः उदः वसमः उदायानश्चिमानम् नुदेशि विशादरा

द्वा निर्माण महेत्र क्रा प्रमुद्धा निर्माण मि निर्माण

हे:रेव'र्से'केश'ग्रटा यथ'ग्री'द्रियाश'रायादाद्दरयादा क्रींट्रायद क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र्य क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र'त्र्य क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र'त्र्य क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र्य क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र'त्र्य क्रींचा' व्यव'क्षेत्र'त्र'त्रेच्या' क्रींचा' क्रिंचा' क्

गहेशन शेश्रशन श्रेन्य राष्ट्रिया श्रुया श्रेन्य श्रेना ही या श्रेना हिया

गहिमाना से समान से निर्मा से समान से निर्मा स

यहिश्यः प्रदेश्याविदी हुं कें महासाध्यक्षेत्रा प्रविद्या प्रत्या स्था के स्था प्रदेश स्था के स्था के

ध्यश्चार्यात्वेषाञ्च निष्यात्वेष्ठ व्याप्त निष्यात्वेष्ठ व्याप्त निष्यात्वेष्ठ व्याप्त निष्यात्वेष्ठ व्याप्त विष्यात्वेष्ठ व्याप्त विष्यात्वेष्ठ व्याप्त विष्यात्वेष्ठ व्याप्त विष्यात्वेष्ठ विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्य विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्य विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्ठ विषयात्य विषयात्वेष्ठ विषयात्वेष्य विषयात्वेष्य विषयात्वेष्य विषयात्वेष्

दे प्यट श्रेंद्र पहुना यथ। यदना ने या गुरा कुना ना या ने या । श्रेंद्र ख्याः सर्वे से मुः हे। । यरे स्ट्रर ने निवेद या ने या सर्वे। । यरे द संया सुर नयाननेवादने मार्यस्य। अत्रात्रान् अत्यान्तरान्ता । ने निवनेवार्येवात्ररा यार:शुर:या |देश:शुर:वर्डेंद्रायंदे:ब्रेंद्र्यश:वश्चेंद्र:दा | व्रिट:क्रुव:ब्रेंद्र्यादा व्यः सेन् विन्या विन्या व्यः नेया स्रा सेन्यः स्रो स्रा विन्यः निर्मा क्षेत्रः स्रो सेन्यः विष्यः वया विरः कुनः श्रें नः या यहरावा यह या यो या वहरा कुनः हे या शे रहें वा डेशनाशुर्र्भायाष्ट्रमा र्वेत्रायाष्ट्रनामा हैन्य स्वामान्या स्वामान्य स्वामा ग्रास्टित्। ग्रेग्, रेन्रेय्, रेन्य्येयत्व्या, व्याप्तित्व्याप्त्र व्याप्तित्व्याप्त्र व्याप्तित्व वःश्रेंग्राश्रामवे:रुप्रावर्शे:रुय्राकुप्प्यामीशःग्राप्प्यानेवे:प्रवेशप्रियामेवः ब्र-्रक्यःक्रॅंशःव्रेशःहे नर्हेद्रायदे द्वेत्रयान्त्रेन्द्रायरया क्रुयःव्रयः धर्याशुर्यात्रा यद्याप्ताः स्वाप्ताः स्वापताः स् वेगापाळे दार्रियायाया देरा नरा क्षेत्रायदे प्रतेश गहेदार्या पार्टा सहया रटा में दिसाय साम्ना दिसाय में स्थान स्थान

ब्रामान्वावादिन्द्र्यान्यम्भेन्यत्त्रम् अस्य विवाद्यम् अस्य विवाद्यम्य विवाद्यम् अस्य विवाद्यम् विवाद्यम् अस्य विवाद्यम् विवाद्यम्य विवाद्यम् विवाद्यम्यम् विवाद्यम्यम् विवाद्यम्यम्यम् विवाद्यम्यम

वेगा के दार्ते क्वें रावर्त्र के ते के दार्

क्ष्यः अर्द्रवः सरः ह्र्या अरस्य र त्या विष्यं या श्री र सः स्था विषयं या श्री र सः सः स्था विषयं या श्री स्था विषयं या स्था स्था विषयं या स्था या स्था या स्था विषयं या स्था या स्था या स्था या स्था या स्था

ब्रैंट्रवह्मायमा क्रेंट्रस्य स्प्राचा श्री वर्षेत्र प्राच्या वैवासरक्षेरियरसहि। दियावीसस्य वसाधिसवस्य है। दिसाधिसर्द वी-निः पार्निः। विरक्षे ररावी सुरुष्वे विर्मे स्वार्थ सुरि हैं। श्चेरामा । दे के लाय सँवारा वाहिराया । दे त्याद गाय वाहिर विवार विवार विवार विवार विवार विवार विवार विवार विवार राश्चरका भ्रीत्र सूचा प्रस्था केता । सामका सदि भ्रीत्र के की प्राप्त केता । वर्षे क्षराविषायरहेँगायप्ता क्षेत्रायकाक्षेत्रकार्यकार्याविद्य । वर्केदा वस्य भी यात्रे । स्था स्थापय माध्य या स्थापय । स्यापय । स्थापय । स र्देव पर्वि र प्रयम् पाव र गाय हो। । श्वेर हो उव प्रवा के श्वे श्वे । वि र प्रपा के । नशः भ्रुविरम्यः गुवः शेषः नदी । ह्यमः ख्वाः शेस्रशः ही महे विष्वा । नहे विश्वा नदे नर वर्ते न या । अध्यय ने या शु निवा श्री द ख्रा विवा । विवा वाशुरुरायाः भूरार्से । वञ्जयायाः वारुरायो शुरार्ये वार्यात्रार्ये रा यसायानसूनान्वे सामसाने उसासी त्यासूसान् त्यामरायरासी ग्रासू स्वा नस्य क्रम्भ के त्री अ वार्ट्र अ त्रे र् अ स्ट्रा हु र र स्य स्य

वेगाळेव क्वें क्वें र न ५५ के वे खेर वें।

विना में रहं अप्यादम भी व पह क्षेत्र विमाधिम भी प्राप्त में कि मा क्षेत्र प्राप्त में कि मा क्षेत्र प्राप्त में कि मा क्षेत्र प्राप्त में कि मा कि मा

ते.क्ष्र-र्ल्य-प्रचित्रकृष्ट्यात्रक्ष्यः क्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः व्यवक्षः विद्यः विद्यक्षः विद्यः विद्यक्षः विद्यः विद्यक्षः विद्यः विद्

 वस्रश्चा वर्षेत्र वर्येत्र वर

न्तुःसायायह्याःमायस। हेःसूनःच्चित्रःचेयाःचेसःसूर्वेसानसससः यथा। क्रियः श्रथः नदेः प्रमुद्दः देः श्रुः श्रुनः इस्रथः य। विः नरः व्वायः प्रथः नदेः नः हो दः श्रेवः वा विश्वश्रः विनः श्रेवः विनः श्रेवः विन् । विश्वः गशुर्यायाष्ट्रमार्से । पर्यायाव्यायह्यायहेवे सेस्यारेदार्से के सूर्या केशकेर कुश्यिते के। यन पहिन वेजा परि पान्य भूत्र सुन्य स्तुन कन नुवन नर्रेन् न्ययान्य स्वायाप्य प्रमान्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्व न्दे हैं न न हो न खुया अपने अपन में नाम के न में दे खें न न हा अर्के थ न क्रयशर्वेयायात्। ने प्रत्रासुयात्यासुयात् । त्यायासुयाता सेवाया सेवाया सेवाया सेवाया सेवाया सेवाया सेवाया सेवाय यसयस्य के समेदानम् वर्षमा विसासनगामा दसार्श्वी ना से दिसा व'वे'र्धेव'नव'वस्र अठन'से'न स्र अर्थेन स्यूर्ट प्रेयेय'नर प्र व्यूर्ट या व्या त्रानसून्यात्रे ते तापान्या स्वतः विन्ने (व्यान् प्रमे न्या ग्रुनः कुनः सूनः यदे वित्रम् अराये विया या सम् भे या सम् नुया त्या हैं वि वे द्या न हैं दि त र्देन इस्र अप्तर्युन सायमान प्यें दारा दहा है।

श्री । स्वर्तित्रावर्त्रावर्त्रात्र । विश्वास्थाः स्वर्त्त्र । विश्वस्थाः स्वर्त्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्य । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्ते । विश्वस्थाः स्वर्यः । विश्वस्थाः स्वर्यः । विश्वस्थाः स्वर्यः । विश्वस्थाः स्वर्यः । विश्वस्थाः । विश्वस्थाः । विश्वस्यः । विश्वस्थाः । विश्वस्थाः । विश्वस्थाः । विश्वस्यः । व

वेगाळेव क्वें क्वें रावत्त्र के वे खेर के

न्वाद्यसा है न्या । है प्रमान क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र क्षेत्र

स्कृत्यसम्ब्रुत्यम् कुत्राचा स्कृत्यस्य स्वाप्त स्वाप

इ.स्था व्रवाक्षदश्याः क्षेत्रः स्था विषयः व्यव्याः व्यव्याः स्थाः क्षेत्रः स्थाः व्यव्याः स्थाः क्षेत्रः स्थाः व्यव्याः स्थाः स्याः स्थाः स्थाः

ने भूम जुर कुन ग्री सेसस मेत में के त्य पीन त्यू म ग्री हीं र न में त

विरः क्रेत्रः यारः यो अः ग्रारः नश्चिरः श्रेः नश्चित्रः यो स्विताः प्रवेः नश्चान्यवः नह्रवःरीः ग्रुः तुर्यापादार्श्चेत्रयेययार्के ग्राया ग्रुट्ययादेवे प्रसूता ग्रुह्यया याळ्यानवित्रप्रेंतिरेटा हिन्यम्भेससानभ्रेन्से १३ससामिते कुनवि ५८। क्रुं न न विदर्भ के समानक्षेत्र प्राप्त के स्वापान विद्यान क्षा न क् हे र्श्वेद से समासी हमसा निर्मेर देश में रात्र से मिला निर्मेश के से मिला निर्मेश के से से समासी में से से से स য়য়য়ৣয়ৢ৾৴৻য়য়য়য়য়ৣড়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়ৢয়য় यदे तिर विर विर वर व्यापाय वह वार्षेया के वाया व वह से। देवे वसूव मते श्रुट सळ स्था इस्र राजे शासर हिसा ला श्रुवा द्वी सालेटा व्यासिति सर्भागियामाराष्ट्राम्भाग्य अस्तराष्ट्र स्वास्त्र स्वास्त नन्गामी अ'वि'नर्नु। शेस्रश'ठव' वस्रश'उन्'माव्रश'भूनश'न्र्सवर' व्यानी ने ने न तायान ना के वा सुका वर्षे दासर हु । बे का कु वा ना खुका नरुषाग्री:शुनुःशूनःन्यानरुषायाधेनःपषानरःग्रीषादेःशूनःन्यानरुषायः ने प्यर प्यर इत्र पर ग्रुका वा साम् त के सका उत्र पर्ने म्हसका व्यव का ग्रार विगामी अर्थना नर्या प्रशास्त्रा नर्या है १ १३ मा स्वास्त्रा स्वास्त्र से सरा उदायदी मुंबेश यावश भ्रान्य शाद्र रास्य मानी प्राप्त विष्ट । स्य स्वर् स्त्रसः नुः परः नृदः परः नृते । नृते । वन् सः वर्के वः नः नृतः नेते । वन् वः मुन्रसेयानदे भ्रेरानर्हेन्या सूर् हेना ग्राट्से खूँदाया द्वीं सालेटा रूटा ग्वित्रसेस्र उत्वस्र अरु उत्ति र प्रिया प्रस्य सेया से या से र प्रम्य भूतर्थाग्री सूना नस्याद्यार्थे रहा नर्जे न नर्जा नर्जा नरा नित्र रहे साम उत्राचसर्या उत् ग्री सवर वृगा मी दित त्वात् से दाय दे ग्री सक्ष मा सुन ही रासे वर्देदे हेर्न्यग्रम्सून ग्राम्य सँग्याम्य म्राम्य या ग्री प्राप्त से स्र वरः एषः वरः वर्देरः द्वी अः यः द्रः। देः क्षरः अः वु अः यरः वाद् अः भ्रवशः केः वर्देदेर्देव्र इं अ.चाईर्देर् च बुद्द चुद्द खुन्य श्रे अश्चर्द्द च श्चन स्थान वन्यासरावशुरानान्ता क्षेंग्यासुयाशुः ग्रानाचे ग्रेन्सेयया उत्रार्वे न्ते र्देन'त् नु नु के अप्यानमा ने भू सेन यम मान्य र्देन त् नु से मार्थ प्राप्त ने प्र र्रानेंबर्षित् होत् श्रीप्तरात् स्वरात् स्वराह्य स्वराधिय स्वराध यश्यद्रश्राधरावश्रुरावदे द्धया इस्रश्राधरा दराधरा दुः वस्र सा विदा इत नियाक्षेत्रायर हो दाया है। ह्या कुरा के समाद्राय महिरा हिंगा या धेता धर नक्ष्र न त्राय्य प्राय्य प्रद्या स्ट्रा क्ष्र में नक्ष्र न नु स्वर प्रय ग्रम् अर्देन् नर्भु त् ग्रम् से स्राम् ग्रम् स्राम् म्याम् स्रम् स्राम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् स्रम् ग्रीयानस्यापा साक्ष्रेरानर्रे निक्क्ष्रान्द्रिया ग्रीयान्त्रीय विष्ठान्त्र । राम्ययार्श्वाप्टरावर्ष्ट्रयाते सुरावाविरावविषावया ग्रहास्त्रवार्थयया न्यदे श्रुन्य वस्र उन्सर्म न्यू राय र स्तुन् श्री व होन्य रेवा हु धेव'म'र्मावव'कुन'भ्रेव'रोन्'नश्च'म'रवे'य'र्ख्य'मवेव'मश्चन'

नवे द्वापान्या दे प्रमासयान से प्रमें माने ने प्रमास्य में प्रमास्य इस्रमासी स्मासीय मिन्नी मिन्नी स्मासीय न्वीयाम्बर्धान्वेयान्वीयाम्या हे नद्वन् नुस्याम्यास्रिते क्रितः क्रुवः नु कुयानयानुरायेसयाने क्षेत्रायान्यस्य स्यान्त्रितानुगानु नस्यायाने परा मी देव श्रुवारा यवर दे द्वापी या केंगा या दरा मावव श्री देव श्रुवाया ययर दे द्वा मी शक्रिया प्र प्र । प्र मावव मादे श मादे देव प्र स्था सु र्हेग्रथायद्यायम् ध्रेत्राच्यायोशः श्रुवानुष्यायाद्या श्रुवानुष्यायद्याया वस्र १ व से १ व देश खेवाश वार श्रुव ग्राट दे द्वा वी श श्रुव तुरु स दरा वा श्रुट रवा वस्र राज्य के के के त्रा के कार्य के त्र नुःदनुःनश नक्ष्रनःयाशुक्षःग्रेःन्नरःनुःग्रुक्षःवदरःयरःध्रेवःनुगानीकः कैंगामितः स्वाराह्म स्वराहिता हुन स्वाराह्म स्वेराम स्वराह्म स्वेराम स्वराह्म स्वराहम स्वराह्म स्वराह्म स्वराहम स्वर उव वस्त्रा अर् भी देव र सुर न सुर नर अर निया सर है ग्राय सिर सरसः मुसः ग्रीः में 'वयर 'देव' से 'के 'हे 'वस' ग्राट 'वें न' यर 'हा देवे 'हे र है. क्रॅंश ग्रे श्रेवरम् वे प्रदेगवाय प्रते श्रेवरम् वर वेर मे श्रेवरम् श्रेवरम इयायाग्रुय। क्रियायदे रुषा विस्रमा नगे न रेके समून ग्री रहे वा विस्रमा सेस्र एवं देव हो न हो र है या विस्र में इंया विस्र महारा पार्स मार्च न व्रेन्यःहे से सूस्रायदे वर्षेन्या स्वावस्यान्य सेत्र के त्री वर्षेत्र यादेशारोस्रशाचीं नर्ने नर्ने नर्ने नर्ने नर्मे स्थाना न्यास्था में किये नर्ने न स्वाश न्वां नाम्याय्या विकाय के स्वाया के स्वया क

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्ग्न स्थित्र स्थ्रीतार्थे।

क्षेत्रच्योश्राच्या श्रुव्याध्य द्वा क्षेत्रच्या क्षे

बुव सेंद्र सेव पादी केंग्र ग्रे केंद्र पादी द्राप्त प्रदूर प्राप्त प्रदूर वयाग्वनार्वित्वे केन्न् कें या के वा केन्य के वा केन्य के वा क यदे खुंवा विस्ना न्या इसाया बस्ना उत्यावित यदे पो भी मा बन्या प्र नरुरानायार्थेरान्त्रेरान्त्री सेया स्थानायार्थेरान्या नश्यार्दायायेव केटा सेससा उदा इससा वरा नदे हिरायन प्राये नहेंदा वशुरु। रम्द्रियो न्या हे न्या वर्षे का स्या वर्षे का स्था है। गडिगामश्रान्गे नार्हेगशा ग्रुटान् नर्थे नदे नश्रामा निवास गशुस्रासी प्रसेग्रासाय सेंद्रासेंद्रा हेट स्ट्रीट सेंद्रा सेंद्रा सेंद्र रास्ने द्वा थ्व द्वा वि । दे १ क्षेर द्वा राष्ट्र वा थ्व द्वा राष्ट्र स्व वि वि वा वि वि वि वि वि वि वि वि वि व त्रुप्तते : स्वाप्ते प्राया स्वाप्त स्व र्श्वे द्वारा विकास विका स्रे निव निव निर्मास्त्र राष्ट्रे हुँ न राज्य दुः निव सार्वि निव निव स्थार ग्राम् स्ट नर'वशुर'र्रे।।

द्वी निर्मेश क्षेत्र संदे विषय विषय विषय क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र संवि क्षेत्र स्वा क्षेत्र संवि क्षेत्र स्वा क्षेत्र संवि क्षेत्र संव क्षेत्र संवि क्षेत्र संवि क्षेत्र संव क्

न्गे'न्ने अर्दे यामदे वियान्य । न्यस्य मानु यान्य स्थाने स्थाने

ने द्वार्या क्रिया क्र

यद्यायाव्य स्थल यहे ते हिं त्र स्था ग्रह्म स्थल हिं त्र स्था ग्रह्म स्थल हिंदि हिं त्र स्थल हिंदि हिं त्र स्थल हिंदि हिंदि हिंदि

गशुस्रामित्रिः नवे नस्यान इयान् नित्रम् स्थान स्थान स्थान क्टरनाने हिंग्या हो। दे प्यटा बटा बेटा वी श्रुवारा है। खुरा वेटिया श्रुवार विषय उर्गिर्हर्नरने धेव बिरा ग्विव य र्गे इगिर्हर्म व के के शा है व रा ८८ से १८६ वार्य संदेश के द्वारा में १८ से उद्दायाग्रेद्दि प्रकेदे नश्रयाया विद्दार नरस्य स्था विवासे स्यापा गुर दशम्बरमदे से समार्श्वे दान दे रहेला विस्रया ग्री क्रिस्या पेदा पेदा दे । । स म्बर्भ्या १८वर इयम भी सूर्या नस्या मस्या १८ ५८ ५८ । यदियाः शुरु व्यक्तिरः वदिः सूर्याः वस्यः वस्यः उत् श्चितः वरः श्चेतिः वरः सूर्यः नस्यान्द्राचेत्रान्द्रा श्रेत्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राचेत्रा ग्रेन्द्रस्यरायाग्रुस्यापदेरसेस्यान्सेन्द्रिन्देन्यम्नुन्द्रम् वर्वायाः भ्वायाः विष्याः विष्यां विष्यां विष्याः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषया क्याश्रमाग्री स्वेदास्त्रित्र स्वत्र स्वित्र स्वत्र स्वित्य स्वत्य स्वत् यदे से समा से न मे हुन सम् स्वार्थ के से न मा के ता ही न न न त सा है। क्षेत्राचाश्चर्या क्याश्चरा क्याश्चरात्राची स्वेत्रस्वरान्त्र स्वित्राच्या र्रे के इस्रयाय हैं न पर हैं न दे के याय देय से स्या ग्री न हे न परे दस्य येव धेव दें। । शेश्रश्रा ठव मे मे दे ही म नु न मूल मदे नम नु श्रवम शेन नु ग्रवशन्में अ'ग्रन् र्र्से न्या सेन्य रेर्सेन्सेन अपन्तेन्य केन्य विद्या अ ग्री क्रिस्य राये व दर्श प्रत्य प्रत् नन्गानावन अष्ठभारा हेते से सरारेन से के हे गडिगा हु क्रें माने ता है । बुद

ब्रॅट्सेन्सिन्स्ये न्या मिन्स्य मिनस्य नर्वेन्यायार्श्वेनास्यान्या के निर्वाचिनामी क्ष्यायेव देयाव्यानस्व प्रया नर्हेन् त्युराय र्सून रहेय ५८ । भ्रे देन नार्य या हमा हा नसून रहेरा या न्या महिरासे श्रीमान्य महिराने स्था वेरायाय श्रीमाराय स्था विस्रयायाचे याञ्चरासु चेट्रा व्ययमान्द्रान्य ने साम्याया र्श्वेनःद्ध्यःमें ८.र.च-१८.रा.क्षेत्रःलेवःम्या द्वेवः इमामे स्वेदःसेवः मवरः इस्राधित्रें वित्रयाराने उसायीया केंगायरान बुराद्या धेता तुना से र्शियाविवानुर्द्धिवायार्देरावाक्षीयुरावया वीरान्।वान्याक्षराव्याः यसामी देसामा केता से त्या निया तुरा तथ्य सम्बन्ध स्वा से त्या से सित देस सामित ग्रेन्द्रुयाद्मस्रसान्वेसास्य ग्रुविदा विसाद्साग्रदायमायोदाया हे वेदसा গ্রনী।

यूर्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य यूर्वित्राच्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

गश्यामाष्ट्राचरार्नेवान्यासेयसाञ्चरावेरानुग्याच्याः स्वार्थाः निवासियः स्वार्थाः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वरं स्वरं

गशुस्रामानिर्सर्स्त्रस्यास्तरस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस क्ष्यायार्श्वेतार्ख्यायायिश्य व्यवस्त्रीःरेनेयार्द्वास्त्रम् नुवः सक्तर्भश्यः है 'सूर' ग्रु'नवे रहेवा वी । न्द्रा सं श्रु र'द्रेश सह्या या श्रुसः यथा नरार्था र्रेर में रानदे के या नुगा है । सूरा नुग नदे खुया ने सूरा निव । धेन वा विन्यम् सुः अन्दर्भुगायदे भ्रुन्ते म् अन्ति । व्यानिक स्वर्भाग्ति । इवार्धेशवार्शेयान कुन्देर दुर्दिनश्राम द्रा नश्रवाश्चर या द्राप नीत हु नाय के नर ना शुर्य स्था इट वर रेथ के नाय के नयर निव हुन हिन्देन्यार्थेवर्न्यार्थेवर्न्या श्रेन्देवस्याय्यास्य स्ट्रिन्नेवर ग्रीशानक्षत्रशासदे से शासान्दा स्वापित नरदक्षे देः परक्षेत्रन्देवः गाः सायाः वृष्यसान्तुः सार्श्वसाने सान् हे स्थूरः गर्रद्यासाक्ष्म ख्याग्रीक्षेत्रायसार्क्ष्यानकृत्व्यत् ग्राक्षे मदासार्हे हेते क्रुल गुर द्या क्रुल गुर छेत्र याप उत्त्वा अगा ५ उट छे न ५६ नर्द्वस्थानास्त्रेत्राचराञ्चा हेरागहर्। खुश्राक्चना हुर्न्चो नार्ट्यस्त्रात्त्रात्त्रात्त्रा

नन्द्रम्पर्याप्यस्मित्रम् । स्वान्यस्मित्रम् । स्वान्यमित्रस्मित्रम् गर्गव्य । अर्वे अर्थे नर्द्रिंग्य र्युर्य केर्य केर्यं प्राचीय प्राची यर्गे न्द्रासुराद्दर्भेर्न्य स्ट्रान्य स्ट्रिस्ति स्ट्रान्सि स्ट्रिस्ति स्ट्रान्य स्ट्रिस्ति स्ट्रान्य स्ट्रिस नरायां वेगा इर सेरायर्देर या परि रहें न्यु वि से प्रतासकुर स्यान या स्था गलग । भेरे दे से से प्यामन पा श्वरा निर्मा श्वरा निर्मा श्वरा निर्मा स्थापन । उटा-भुग्राक्षेत्रायान्या श्रिव्हान्य क्षेत्रयाने स्त्रीय व्याप्त स्त्रीत्य स्तित्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त उद्गःतुः अः श्रॅटः नरः द्रायः नुः प्रायुः श्रायनदः यः श्रेदः यरः रदः ननशः शुः हुः नः क्ष्र-पावनामें । दे क्ष्र-सुरामन्द्र-चठरान्यान्त्र-छरान्यायने नर्यायदे निव हि नाय के नशा दे सूर रह नगर श शु नवग नविव राये हह नश म्मार्यायहेव विद्युद्ध वर्षे विद्युष्ट वर्षे अयायहेव वे । दे प्यद दे वित्व के द्या न्रीम्यान्तरे स्वार्थेन स्वार्थेन स्वार्थित स्वार्थेन स्वर्थेन स्वार्थेन स्व विस्रशः इसः सरः द्वाः छेरः वर्दे दः छ्टः छेवाः ने सः यः वादसः सः द्वाः भीः वे सर से निर त्यों वा स तरे स हैं र न से वा स वि वा त स हु न स वे हु हैं वा स इस्र श्रुवारा निवाताया के है। कुं केंग्र में प्राप्त स्वार स वहें तर्श्वेस्य प्राप्य वन दर्शे हे रहस गुरु गुरु वि ग्वात्स्य वि गुरु प्राप्त से शेट दें। यसः ह्रें त्रयमा वि ग्वमायमाय यगा ह्रा १ समा । स्य पुरवा । ने नर्से समा गुरुषा गुरुष । वि वे से रास्ता न्या यो भाग्य । । वि राय है व त्या या

धराश्चीरार्स्य वेशप्ता

न्नो नने अ द्वेत प्रते लिय तथा रूट ठगा सत हमा वि तथा यत द्वारा धेव अव रगि विंव नर्या नर्या निर्देश निर्देश के राधे पर्दे दारा दे किंग या वा ग्रवसारासेन्यसायवाराधेवाग्रुन्दे। विग्रवसाग्रीन्सेग्रासावेः सर्ने त्यर्था सरात् प्रासुर्था प्रथा द्वीवार्था पाविवात्य देशा वा बुरासे प्रवेशि या गुरःसेससायकर्।पानावसानकुर्पते र्ह्हे रार्देव नत्वासे हिर धेनाः सहरायदे त्तुः सार्वोद्दार्सा सद्भार्त्य स्तुदाद्वे दिदाया द्वीन साम् सेस्रयान्यम् सूनायरान्युर्यायान्। वसाम्यान्यान्यान्यम् त्यसार् वी क्रिं स्थानित अपके निर्देश्या हेत् से नित्र अध्या स्थान सेसरावहें त्रायराम् सुररायमा इस हैं ना न्या के नय कुराया द्वीनया वर्शक्षियायायदे प्रश्चारायेटा सर्देवायास दिन्तरा स्टार्स्या हेवा प्रश के निवे गुहेत् सॅर्कुर वर्गे रेंदर या हो सहा वहेत् पा वहे तरा सहसा मुर्यापते मुद्रासेंद्रासेद्रायते सेस्यापदे द्रान्यास्य मुद्राय स्वाप्ति । वसवाराक्षा नेरायरावी वार्या ग्राया केराह्या केवा क्षा के नया हुरा वर्ते दिराया शेस्र अपदि तरा वर्ते । नस्य मार्थ प्राप्त विष्टा न्त्रग्रायायमें दिनात्रग्रायान्त्र क्यारे नम्रान्ति हे स्या नदुःनविःरं अर्दरहेराग्रेगारेवारेवे नर्तुः नग्रद्धि । देः व्याहे अरातु वहर क्षेत्रे अअयावहें वा के त्या के अयावहें वा पान्या कुत्र-त्रदेवायायार्श्यवायायार्शेययाय्यात्रयात्व्यात्वायाः

प्यत्यत्याः क्षेत्रः विवाः कष्टितः विवाः विवा

र्श्वेस्त्रस्यस्यस्य ने त्याक्ष्यः विक्रम्यस्य निष्णः विक्रम्यस्य विक्रम्यस्य

भ्रानिश्चात्रक्ष्याच्यात्रक्ष्याच्यात्रक्ष्याच्यात्रक्ष्यात्रम् व्यान्त्रक्ष्यात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्यात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्ष्याः विश्वात्रक्षयः विश्वात्यव्यः विश्वात्यवे विश्वात्यविष्यः विश्वात्रक्षयः विश्वात्यवे विष्यत्यः विश्वात्

श्चित्रात्त्र्य हेम्पहिनाः हुत्यादेन् । अहस्य स्ट्रिं श्चित्राः हुत्यादे ह

देखक्ष्यमञ्ज्ञी केक्ट्रिंद्या नहेद्रस्यद्या हिरक्त्रिंद्यक्षिय <u>५८१ ५५.भ्र.ब्रेट्स्प्ट्री ५५.ब्रेट्स्स्स्र्य्य्स्स्य्य्य्य्या व्रिय्यस्त्रेर्</u>यामीयाहेत् र्रेश्विर्वित्र्त्र्वेर्वित्वक्त्र्त्वे। ये वेदि वाहेन्स्रित्र्यंत्र्यः <u>५८१ वर्डे ब्रायमुभा५८१ विवास्त्रु स्थानवि। वहे ५८४१ मे १ वर्षे ५५४५१ ।</u> वेर्पित से समा वर् वेर्पित वित्र में निर्म से समाने वर् वेर्प नकुर्दि ।रेर्नायुर्द्वरुग्तुन्ने क्षेत्र्यः हुनाने क्षेत्र्यः क्षुत्र दर्गे यायराम् सुर्या है। र्वेशरादे क्रेंनशर्मा नश्रयाये क्रेंनशर्मा इत्राये क्रेंनशर्मा नेश निव्न श्री क्षेत्र भारता निक्र वित्र मुश्राशी क्षेत्र भारता धेर भारती भारती क्रूंत्रशः इस्रशः श्री । देः पटः सेस्रशः प्रवसः दिः क्रूंत्रशः ग्रीसः नश्चन। सेस्रयान्यान्त्रानिहरान्यसायदे हून्या ग्रेस्र नश्चन। सेस्रयः यात्र या शुरुष प्राप्त प्राप्त है या प्रवेश हैं प्र या ग्री या प्रस्ता से स्र या यात्र अप्याप्त प्राप्त विका विका की अप विका ग्रम्भः नर्मः प्राप्तः प्रमुर्या गृहेशः नर्स्ति । द्युशः ग्रीः स्निशः ग्रीशः नर्भुग

श्रेश्वराष्ट्रम् स्वर्त्ता स्वरं स्

दे 'प्यर'र्झ्या' स्रम्'र स्रेग्या शहेत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम् । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम् । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम् । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर' हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये श्राम । हिन् 'यर 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'न्ये हत 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'वर्ळे व्य' नवे 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'वर्ळे व्य' नवे 'वर्ळे व्य' नवे 'के 'वर्ळे व्य' नवे 'वर्ळे 'वर्ळे

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्त्रा हिता खेटा स्थ्री

यश्चात्रवि । विश्व क्ष्या स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

त्ते रः ना वुः कॅरः ना व्रश्नः भिरः क्वें क्षां प्राप्तः क्ष्यः व्याः विद्याः विद्याः

द्वायायायह्वां प्रायया हें द्वायायाय हैं द्वायायाय हैं त्यों वा प्रमाने प्रायया हैं त्यों वा प्रमाने विषय हैं वा प्रायय हैं वा प्रायय

यहें तरह वालय। हुनान हुन पर्ने स्थित हुन पर्ने स्थित हुन स्थान हु

वर्त्वेदेः भ्रम्यश्राम्य निर्मा भ्रमा भ्रमा भ्रमाया स्वाप्ति स्वापति स्वाप नःवर्नेरःवर्षिरःहेःसूनाःनस्वानस्यानस्यान्ध्रिःसून्यःकन्सेन्यर्यःस्य क्वायाधिन्यित्रिम्ब्राश्वाति। यदि सुन्ति स्वायस्य नम् सळ्यसः ये द्राप्तर श्रीद्राच प्रदेषे स्वाप्त है विवापी वार्ष सुया द्वाप्त स्वाप्त प्रदेश स्वा नस्य त्रस्य राष्ट्र स्ट वी यस हें द वाहे स यस हुट विट । यस द्र क्रेंबर्सेट्र अप्रस्थ उर्जी सामानिया वहीं वर्जी ही क्षेत्र सम्मेश वर्जी वर्गेग्।रायान्हेंद्रायाकेराङ्गेरायां विमान्गेंद्रायां । विदेरानवे सामा रेगानर्रेशवहेत्रद्धयायार्ट्यो श्रेन्य इस्रास्य स्थान्य सुरुते। हो ज्ञा सुर्व व्यान बुदः सदः कुद्रारादे न्यार व्याया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्व र्थेन्न् प्रदेष्ट्रियाः क्षुर्वित्रः विते स्वायः स्वायः स्वायः वित्रः श्री यानः वग-५८-सु८-से ४८-६ अ व अ ग्रुव-धर-वहें व ध-विर्वर-विरह वर्षे वर्देराया श्रेंचर्चेवरञ्चरायायायायाराद्रावीर्वराष्ट्राद्रार्थर्भात्र्याञ्चर्या इस्र अदे 'वाद विवादित सुद र्से वास्र ग्री के सामद दे साम साम प्रदेश यायदी केनाय विस्ताय ते सामान स्वाप्त स व्यानुवासरावहेवासावदे सावर्त्ते वाद्यादे रावदे स्वाप्यस्या हिवासदे वनशः सेन् प्रमानित्रं ने ने ने प्रमानित्रं सुन से निर्मानित्रं प्रमानित्रं प्रमानित्रं स्थान धेव है।

यः त्रित् श्रुत्र श्रुत्र वर्षे वर्

गुर्वा नह्म शन्दा श्रुरा श्रु

वेगा के दार्जे स्थ्री रावर्त् र हिये ख्री रायें।

मिहेशायायिं रायदेश साया से गाया र्श्वे राश्वे राश्व

महिरायासेन्यते स्वते स्वायासेन्य स्वयासेन्य स्वायासेन्य स्वायसेन्य स्वायासेन्य स्वयासेन्य स्वायासेन्य स्वयासेन्य स्वयासेन्य स्वयासेन्य स्वयासेन्य स्वयासेन्य स्वयायासेन्य स्व

स्वान्यस्थित्वर्षः स्वान्यस्थित्व स्वान्यस्थित्वर्षः स्वान्यस्थित्व स्वान्यस्थित् स्वान्यस्यस्य स्वान्यस्य स्वान्यस्य

त्यानःश्चित्तः हुनाः श्वास्य ने त्यावे त्रस्यः सम्मन्धितः स्यायः स्थितः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः

मुः अवरः मुना भिन्ने । देः भर्ने । देः स्वरं क्षेत्रः स्वरं निः स्वरं स्वरं निः स्वरं निः स्वरं निः स्वरं निः स्वरं निः स्वरं निः स्वरं

र्शेट्रवह्यायमा हे सूर्यमें राष्ट्रेया ने मार्यापदिर हे द्वाया यर गुः शेव हो । यदि र वे स्वा नस्य गुर गुर या । वदेव यर हैं वा य नर्ह्मिना गुःधेवा वेशसानहर्ग्यासान्धन्यते हिंत्यासूट उसावने वर्गेना हुः शेर्द्राचर्म नदेवरमर्भूरविरवेदर्भरदेरेरवेष्मार्मेश्वर्भराधर निवः तुः या रायः या सुर्यः स्वी । दे १ द्वरः द्वाया ग्रः देशः वेदः यरः ग्रुयः हे। दे नग्वाप्यदे नद्वा से द क्षेत्र स्थाय नद्वा से द क्षाय पादि स्थाय में विष सर्यार बर्गा यो पर्या से दर्शे सर्वे साया देवे छुत्य वे पर्र प्रहेव सूव भ्रेशःग्रीशःहेः सूरः न बुदः नः सूरःग्रीः दः रदः देशः दशः ग्रुवः यः विषाः धेदः द्य र्रमी खुरा से सरा पर्ने मिहेरा ग्री से र मु पर्ने मिहेरा पर्ने मिहेरा पर्ने मिहेरा पर्ने मिहेरा पर्ने मिहेरा पर्ने वैवायासुः वेद्या वेद्यायासुः वेद्दिः द्वार्या से स्थानिक स्थान नवे हे अ शु र रे विदेश विश्व मह्म कुर कु र मिं श्रामाया हे वह र न सून कु से र नशर्वेग्राश्चित्रं सेन्यम् वर्गान्यन् सुर्याश्चेय्यत्रे महिरात्री सेन्द्र

व्यन्ति सुरायने वे से मान्या से सरायने वे से मान्या स्थायने वे क्रेट-र्-पॅर्-द-सुय-ग्रे-र्स-र्-सेद-सेन्-र्स-प्-र्सन्य-र-सदे-प्रसय-ग्रे-कः इयशरः धेत्रत्या विगार्टः कुः शेरः दृदः श्रूयश्रः यः श्रें ग्रश्रः पदेः कुदेः विस्रशः इसराराधितात्रमा र्देराग्रीयानस्यापित्रमेतात्रम्यसाराधितात्रमा स्या में मुर्ग के म्या राधित वया स्यामित में राव्या स्वापित [मस्रशः ग्री:ळ: इस्रशः दः पीतः श्रुसः द्वातं वा नातः देः द्वारे से द्वारा सीतः यर में क्षु बिटा एका ग्री क निकारे हो तका नह वा निहास का शुका ग्रें कः नुषा इस्रयार सेदार रामा वर्षा ये स्रया ग्रें से रादा पेर प्राप्त स्रया वा भेगानी द्वरायर लेगाया सेंग्राया द्वरा लेगा जुगारे रे द्वरा र रे धेव सेव नरं यान दार से हे राम शहरा ने शरी राम राम मा नरुन्सुरार्शेस्रामहिरारे से निर्मे नि र्जिर्द्रमञ्जूराम् रेरेष्ठ्रम्पर्वा रेरे व्याप्यक्षाप्रया के में द्राप्त के व्याप्त के प्राप्त के प लट. सेट. सर. हे अ. या शुर्अ से सर्था गहिरा किंग्या या है र दे पार्याया वी र लेव.रामायोयामावे.यथेयामाकु.म्यामाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमानाकुमान ग्रीभाग बुदानाष्ट्रसातु स्रोदार्ने स्रुसातु वर्गान वर्दार्ने ।

वेग के त क्षें क्षें र न तु त के ते के र के

८८.२.व्ययायार्थसायार् स्ट्रेस्से स्वीं राष्ट्री ह्यायार्या है साम <u>५५.लुच.लट.घेश.स.जम.बेर.२.सु.स्या.स.५.वर्ट्स.बुस.ट्स्य.वहूर</u> बेर-र्रे। । नरेव-धर-ग्रुन-धरे-घ-५५-धेव-व-वे-ग्रवश-दुःव-दुःव-समुद्राया वियाप्तर्वे सामस्य हिंग्यायहोत्या सेपार्से स्थ्रिया नविदार् दिन यदर दर्रेय से र से से र पात्र स र विया र में स त्या यात्र स र सूर कुषाक्षेत्रसम्बद्धान्यस्य स्वर्थन्यस्य विष्ट्रम्य विष्य यावर्थाः सुरान्द्रस्थाः समुवासी निश्चित्रे भूवर्थाः मन्त्रा र्विः सुर्विः मान्राने रामानिन हिमाया के है। दे सूराया ने यादा सुर्विः <u>२८५'म तुर्रापदे के गुर्राहें न इस्र अविवाद्य पर्देवा से लेख मद्दा वा</u> श्रू ५ वर्हे वा प्रदे के विदेश सूत्र विवा विवा विश्व के से स्विवा विदः विश्व दिया विवा विवा विवा विवा विवा विवा ठु:येग्ररासर्देश:बेद'रा:वेग्रान्त दे:दर्गेग्रासदे:देग्ररास:संसेदे:ग्रद् इस्र भेरा भेरा भेर मिया केरी | ने सूर प्रस्य नुमाय नहमार स्था नन्गासेन् क्षेंसाद्धयावने ने नन्गासेन्याने सामा क्षेत्र क्षानान्ता क्षेत्र केन् नर्स्सेस्यराययायस्य वर्ष्या होते स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स मी दें तर्रायकर नदे अव प्या बन कें निव हु नश्नाश्राम विया धेव याश्री रा

गहेशमार्केशमीः नन्गासेन क्षेत्राह्या

महिरामक्रिं मार्च मार्च

दरसें लाने साले साध्य से दान्त् हो दाना सुसालस्य दरसें ने सार्थे सुराष्ट्रात्यायर्क्वेदाद्या भ्रामार्ड्डान्यदेश्च्यार्थ्यात्रात्यदेश न्तर्भाईसान्यसाग्रीपुरार्से विदेश्याद्येग्रस्स्याद्ये । स्र र्ह्मेश्रायर प्रतिनाश्राय श्रीत स्मर देव श्रेर त सुश्रार्थ से पा विना र्थे द सर र्श्वेत्रभेर्र्यादळराया रेष्ट्रर्भूरायदेख्यारे हें यानन्ग्रयार्थया सेत्रासर रटारेश्वर्यास्त्र्वाचार्यात्वेषाः विष्याः ने विष्युक्षाने स्वर्षे प्रदानिक्षा वनामःश्रेन्याः सुर्या ग्री कः निया इस्ययाव्ययः वैन्या सार्या प्राप्ति । प्राप्ति । स्याप्ति । इसराद्राचिया धेवा वेयारासु खेद्राव वे सर्वे द्रान्य मह ख्या सेयारा है। रे'त्रशन्ययानदे'हेशसु'खुर्याने'वर्नेदें'वेशनसूत्रकु'नुर्वेशराया ने' क्षर्रावस्त्र कुं सेर्पास्य रूटार्टेश दशायुवा प्रवे खुर्या दे प्राप्त वा वित्र वि येन सूसान् नर्सेसा सुरा ग्री क निया इसरान्य गरिया गुना से। सर्गे र्ने प्यटा सुरु से महासदह सुरु से द्वा स्वा सदह सुरु से दे । सूर क न्यारे रे द्या नर्या द रे क्षु नुदे खुयारे न्यू द कुर हे से द रि । यह खुया वर्रे या सर्वे के दरायवा पा से वासायत यवा सर र् खेर् पा वितर् । यत यग् वस्र अरु रहें वा अर्थ दे खु अरग्र म ने खे न के वा पे न न वे अर्थ म र द्यू म 到I

न्द्रिन्यन्द्रात्त्रं वाश्वर्यन्ति देश्येष्ठे विष्या स्थानित्रा स्थानित्र विष्य हैंग्रथःप्रश्चान्न्यायःपंद्रयःतुः वत्ःप्रयः खुर्यः स्टःहेर्यः द्रयः चुनःपः येतः यर नर्झेया । ने स्ट्रेर खुरारम में राज्या ये राज्य वितर् प्राची प्यत्या यग्'र'र्र्म्स्राय'ये'र्सेग्राय'त्र्स्रय्य'ग्र्र्र्प्यद्यं से हेर्प्यय'र्र् वर्षायुवायासेन्ते। वैनिन् सुरायान्धन्याहे सुराग्रसाय स्राप्त यगः इस्रयः ययदः दे विव दः दः द्युदः वशः सदः विव सेदः सरः वर्षे सः हे। यग्। सः वेशः ग्रुः नः वे स्रवे में रः द्रः सह् नः से र्दः स्रवे दुः कुरः से ग्रासः र्क्षेत्रायायायहेत्रत्यायह्यायायायाययायीत्राची ययायायार्यात्रेत्रचीया गुनामाह्यार्थसायदासेदादी ।देग्विवाद्ःस्र संस्थार्गादार्यदान्याः क्षेत्रायाः श्रीः क्षेत्रायाः या निहेदाद्याः या निवायाः या स्वायः यो निवायः विवायः विवायः विवायः विवायः विवायः देशवर्शन्त्राचाराः सेट्ट्री विद्याराग्यटः स्टामी कः न्यादार्शे हस्यराय्त्राः यायानन्त्रायारार्ध्याधीत्राची। स्टार्टेयात्र्यानुनायान्त्रात्र्यायेट्रायया खुरु:८८:खुरु:ग्री:प्यद्र:यमा:बस्रु:४८:८८:सट:मी:म्यम्यार्थावी:यः नम्यायारार्थ्यायार्म्यायार्भ्यायार्भ्यायार्थ्यायार्थेर्यायर নমমার্মা

य्यात्रा विश्वान्य स्त्रात्र विश्वान्य स्त्र क्षेत्र स्त्र स्त्र

महिरामानेरामायारोसराम्मारोसराम्मा सेसरा रदःचित्रसेदःसरःगान्त्रःयःसयःत्रशः र्श्वेसः स्वृत्यः दे। रदःस्याः हसस्यःयः द्वे सेस्रानेश हेंग प्रशानवग्या उसासे दारा ध्वा से दार दारी हैं। निवरश्चेशःश्वरायः विवार्धेन् दिस्रीयाः यः श्रेवाश्वर्यदे न्वरार्थे द्वार्यः वैवाशःशुः थेन। नवरः वैन्दाः खुवाने नवानी क्षेत्रः वासेन ने। ने नवाने से यी वराव भेरार्वेया यावशासाय विवाद प्रेंदावा वेरार्वेया वर्षाय विवादेश शुःतिवरःयोर्वेटःदटःयिवरःयोर्वेटःयशःस्याशःशुःशेटःव्याःवश्वरः कुःर्येदः यःनविवःत्ःश्रेगःगेःत्वरःर्येःनश्रयःनदेःश्रयःत्ःश्रेगःगेःह्रयःवेशःतेः वर्देर्देखेशनक्ष्र्वःकुःद्वेश्वायायादेख्याक्षेत्रःकेन्द्री क्षेत्राक्षेत्रःक्ष्याचीःक्र नेशग्राटा सेदासरावश्चराता सर्देवा सुसादा सुराता नविवार्ते। ।दे नविवादा न्नर रेविः ने अप्यामान्य इस्य अप्यय रेम्य अप्योग्यया ने सूर महम्यया

वःशेशशःविशः चुः वः र्ह्वेशः वहवाशः इशः शः वाहिवाशः स्टः वविवः ग्रीशः ग्रुवः या सेन्यम् न स्था । ने प्यम् स्थम् न से स्थम् न से स्थम् । सेन्यम् सूर विदःविदःसदेःद्यायाः चुदेःश्रूदः ख्यायेयायाः सदः देशः वेदः सदः चुयः दया देः बेट्र्यून्य भेष्ठ्यी द्याया ग्राया स्थित साहे साम स्थिता उसाग्री हे सा शुष्त्रद्वर्याने सेस्यास्य राष्ट्री द्वरायार तृ प्येत् हेसात्री त्राप्तर । पुरा *ॸॸॸॎॸॸॎऀॱढ़ॺॺॱॻॖऀॱॺॗ॓ॸॱॸॖॱ*ऄ॔ॸॱऄॸॱॸॖॶॸॱॺॺॱख़ॱढ़ॖ॓ॸॱय़य़॓ॱख़॓ॱऄॺॺॱ शेष्ट्यार्वे सूर्यान् प्रहेत्या यात्रवाद्या शेष्ट्रमा ने सूर्या वरावा सेसरामान्द्रसेट्र्न्च बुट्य धेद्रस्य कट्यू र देशू र देशू र देशू । मान्द्रध्य न्याया ग्रुःर्रेश सः बेद परः गुदः हें यः ग्रे खूरः द्धं यः यः क्षुः नवे न् श्रुन् यः वेन् प वे निर्वे व निष्या मित्र ५८। श्रूर्या हेत्र वहीयाया वार्ते दाया हो दाया धेताय से क्षेत्र प्राप्ते ता हो वा म्यायायायायाय स्वापाय स्वापाय द्वापाय द गश्रम्य भेटा क्रेंच द्वेंच वे च क्ष्य ग्रम्य सूर सूर र स वरे प्राची से रुट्यान्त्रन्त्रात्र्यान्यान्यास्य स्ट्रान्यान्यस्य ।

सेसर्गः वृत्तः क्रस्य स्तानिव सेत्र स्तानिव स्थानिव स

प्राप्त स्वास्त्र स्वास्त

स्टायश्यावद्यात्रे ह्वा विवायोश्या स्टायश्ये श्री स्टायश्ये ह्वा हे स्टायो ह्वा हिता विवायोश्या ह्वा स्टायश्ये ह्वा स्टायश्ये ह्वा स्टायश्ये ह्वा ह्वा स्टायश्ये ह्वा स्टा

खुलाने विनातुन निना स्वाप्त स्थान विनाति स्थान विनाति स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

ने सूर न् श्रुन्त के क्षेर न सूना न श्रूना न श्रूना क्षेत्र के न् श्रुना न श्रूना न

र्श्वेययाययाश्चेन् स्वेन् त्वीद्वान्य वास्य स्विन् वित्र निविन् वित्र निविन् वित्र व वश्चनःसदे में व स्रोदःस दे 'द्या यो स हो दःस मा व दिन र न दे स न या है दः वर्देन्-सः इस्र अः ग्री अरदे : नुषा पाश्च अः ग्री : क्रुं : क्रें रः नः नने : सूषा निरः सूँ स्र अः गशुस्रायदेवायरासूरावेदावेदायायायात्रसार्यावेदासेदायरास्त्रसारा वर्रे नेव ह नवर के नर दर्गे दश्य वश्व महाराष्ट्र मा गिहेशरशुःक्टें र न नदेव बेव वर्षे गानवे देगाया रा कुया सर गशुरया राया वर्देरःषरःदे नविवर्तः नर्गेदःदे ।दे स्वरः केंद्रः नर्दा में दे ने दि स्वरं केंद्रः नदे कु द्वस्थाय नहन् श्राद्य र प्रमुद्द र प्रमुद र प्रमु र्<u>टे. पूजा सर ब्रूट विट विव संदे द्याया ग्रु</u>दे ब्रूट छुल हे या विट य हुट वयःरेग्यायःययः न धरःयः रे 'र्या छेर्'यः भेवः छै। र्याया छवे स्वरः द्धयः हैं। धुवात् सान्यान्य प्रवास्त्र विष्य द्वार के साम्य स्वास्त्र साम्य स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास क्ष्राचुः शे रुपः क्षे ने क्ष्रान्धन्य वास्त्र सूरा ख्राया वार्वे न या चुराया र वर्गुर्न्यराक्ष्यायायादेशायात्रीः भ्रेष्ट्रीयायायादेता यः ग्रुअः यरः दशुरः तथः दग्रागः ग्रुः यः ग्रुग्रयः तथः रेग्रयः यथः दशुरः यः होत्रक्ष्याने सूर्ये ने राया ने त्राया के दें। । ने नि न ने तर् ने राया श्रीवाश्वारादे श्रेस्र प्रचित्र क्षेत्र स्मान्य समान्य समान ध्ययः इस्रश्यः यहमा छेटा ५ सः सृ स्रे : इट्ट : कंट्र से म्रायः नहग्रास्य सुराना क्षेत्र से दास्य रहा निवासी सामाना निवास से सामा नश्चेर-र्रे॥

गहेशमान्त्रासानुशामे केंश इससारमानितासे मार्स्स सार्ख्या

नन्ग्रायाधिन् सेराउसान् देशायम् नुसाया स्टान्ने व स्वास्य स्टान्ने व स्वास्य स्टान्ने व स्वास्य स्टान्ने व स्व कुषायादेशायासु वना केंद्रायर न हो दि । दे १ द्वराया वेदा यदे हैं में या ग्रीया न श्रुत्याया नहेत त्या पर र पर्दे त ख़्त क्रे या ग्रीया न हुत नःसूर्शीःरःसेर्धररेश्यान्य देशःलेश्यनेक्षित्शीःकुन्धिरःसेर्द् वयानर हे गडेगा हु न भूटानर होते । दे प्यट देश लेश दे हेट ल्याश इट वर कुट र् रेसेंट पान प्रशादिर में पान सम्मा ग्री सार्थ मा सुम र त्रुर्यायायायहेवाव्यायदेवायेदायीप्रेर्या वेयायदेवायरात्रेदाया क्वें यार्षे नः इस्रायः ग्रीयादी रद्भायद्दितः सूत्र स्त्रीयायः दि स्त्रमः सूदः नः सूनः ग्रुवः सः ग्रुवः न्धन्या ग्रम्भायाया महेवावस्या मवन्य विदेशन्धन्या ग्रमाया स्वर्णन्य नदेव से द ग्री देश के शायदेव प्रशा देश के देश में मार्म मार्ग विव से द यर देश यदे देश नेश द्या श्वेर दे न दर सूर दें र द्याया ग्रु न देव ग्रुन नगाना रं अ ग्री क्रेंट अट दे निय हिट सर गाहि अ खून ट्र ग्रु अ तथ हे गाहिना तःश्चेरिः नः अष्ठअः माव्याः वयाः अमियः व्युः नुतिः श्चेरिः खुः यः धोवः माश्चरः दे। ।

यह्ने व र ते स्वास्त स्वास स्वा

ने सूर नन्ना स्थान्व ना हे या परि हार कुन ही से स्था भ्राया त्री:पकेट'न'षशःर्श्वेषःप्रीर:व्व'स'न्ट्रम्'मदे'ख्र'न्त्रोर'स'सकेश'म'यः गर्सेल'न'भुग्रार्था'रु'नहन'हे। रटक्ट्रिट्'ग्री'नद्गा'व्हेंद्रमहित्र'ग्री वहें व रहे व धरः श्रुष्राया रेषाष्रासदे द्वाराष्ट्रस्य स्वर्थं स्वर्धः द्वारेष्ठ्रः हुन्रभुद्रा श्रवःक्षेणःहेशयन्द्रदान्यदेःमें निर्धं अर्थः श्रीः क्षेत्रश्राह्मः वर्षः देवे समुरासम्बर्धेसरा उदायदी मसरा उदायश हैं दानी पकेट पायश युर्-र्-ह्रियः त्राधरः त्राध्याध्या हित् ही या न त्राप्तार्थया वियापार्थयः नः श्वाराज्याः ज्यान्यः वै।।

त्रमः क्रुनः श्रेश्रश्चादिष्टः विष्ट्रमः विष

वेगाळेवार्क्के स्थ्रीतावर्त्रा हिता खेटा स्थ्री

क्ष्र-शि:हें हे पावेग्रायदे नेग्राय प्राप्त प्राप्त वित्राये हो प्राय्त वित्राये हेग्र्य रान्दा हेत्रवियाग्री देवायायायार्थेवायायादेवायायदे ह्या ग्राह्यायाद्यायाय प्यास्त्राम्यास्त्राम्याम्ययाम् द्वार्या म्यास्य म्यास्य । वित्राम्य स्वर्तामानि । नन्त्रसेरे इन्हेंगान्। केंश इस्राही त्यस क्षेत्र राजस्य । साही साही साही यदे मिनेश्व प्रमुत्र । मिनेन्से हिन् ग्रम्स्य स्मिन । यस ग्री मिन गुर्नाविदेरदर्यानवग विद्यासस्य भू सदे भ्रेस न्या विद्या गशुरुश्यायायदी ग्वाल्याम् व्याप्त हेत्र त्रश्या स्ट्रिंप प्राप्त हे प्रमानी देव वस्यासुरयेदरद्वयाद्वा यूर्वदेर्वेषास्यावेदरद्वयावस्याकेसाविवासर र्त्वे क्षेत्रिं के किन् के मार्के निवास के किन्ते के किन्ते किन् यदे स्थानित वित्र वित्र स्थित । यस्य विश्व स्थान स्थान स्थान । यस्य स्थान स्था क्रिश्रानञ्जूर्यान्दराञ्चान्यायायायान्दरावे । नाञ्चानायुया ग्रीयार्चे नायायरा <u>न्यायानवे में तान्यामेवे विनाविन यदिन कें या ग्री मुखाये कें मान्या के ताये या</u> र्श्व से द राये विद हिते यस र्श्व या से ना सर्गे व र्शे वह साम वे द सुद सामी यव:रगःयःनहेव:वयःहे:कृरःवययःशुःयेव:कृयःग्री:गवरःश्वरःसेवः राइस्रान्ति द्वादाष्ट्रवास्त्रमा कुः केवारेदि विदायेषा पृत्वे सावेषा विद्या मःसह्याः हः हे १ सूरः ग्रुः निष्के । सूरः निष्के । भीवा ।

गहेशना बुद्रासळस्य राष्ट्री होता

महिरामा त्रुव सळस्य राष्ट्रा है । सूर हा निर्मे खुया है। इव निर्मे प्राप्त

हिन् धर हेत वहुर वन सेंदे वात्र अ सुवा अ देव पारे वा सुर रन न वे र अ वर्षेयान्द्राचरुरान्यान्यः विदा नेते वदावरा ग्राम् क्रिंदापान्द्र हेवाव ग्रुद्र गठेग र्शेग राष्ट्र गठेग पर्शे न कुय नदे न्वे र राष्ट्र र ने र ह के द रे सूर <u> नर्रेश शुः र्रें दः धरः ने : यदः करः नुः गशुरः नुः श्रेनः यः सर्वे दः ये : यह सः यदेः </u> न्चर्याण्ये सर्द्रायाया महेरार्या मार्यारेट दिन्दिर स्ट्रियाणे कुयारें र्डें दावाया के दारें या देदायदा वी भी के दिया वी या वी या दे प्राप्त के दिया वा या व नरःसहर्भियोग्यान्त्रभावत्तानीः इस्राम्यन्ति सेत्रामि इर-व-इर-देश-धवे-देव-इय-धर-वर्ग्चेन-धन्न-ध्रीर-धे-दर्ग दे-न्वा वस्र अ उन् ग्री क्षेत्र से दे ने दिन दिस्य अ अ अ खेत्र खेत्य वा स्वय न स्केत्र स भ्रगाः अर्वेदः के कुदः क्रां या प्यदः प्यदः निद्रां श्रुवः अर्वः अर्थः श्रुवः नुरन् वेशम्बुर्यायाष्ट्रम् ह्रें त्याम् निरम्बस्य उन्दूर्विरहें र्ह्नेट विट सूट निते सूट र्ह्नेट गिहेश र्ह्म ग्रास् मुं साम् नुते हिससा से दाया अन्याम्ययार्थित्र प्रमान्त्र विद्या

ने प्याः श्रीरः से प्रश्नुः नाया । श्री विस्ता स्थानितः श्री । या विस्ता स्थानितः श्री स्थानितः श्री स्थानितः श्री स्थानितः श्री विस्ता स्थानितः श्री स्थानितः श्री स्थानितः स्थानितः

मल्दःर्देवःगुरुष्वगुरुष्वः । भिर्वः केष्ठः ग्रुरः क्ष्यः श्रेशः स्त्रीत्वा । विशः मिष्ठः स्त्रेतः स्त्र

श्रुट्रिय त्या दे स्ट्रम् स्वा नस्य से सम्बद्धा । नर्से द वस्रश्चेत्रायसायेग्रसातुरावये। रूटामी वदे वदे र्स्टिम्सा स्टर्म्य । वि होत्रयर्द्रमात्रयः विमात्यम् । त्रयः विमान्यमायायाये दः संयान्। । म्यूयः यश्चर्यद्वर्यस्था स्थान्य विश्वास्था स्थान्य स इसराया । र्हेट राष्ट्रेट हे र्हेद राम रायगुर लेया गुरु या स्मा वर्षा हुराने वर्षा तुन्त्र से दुर्भ निष्य प्रति । यह वा वी राहेत वर्जुर:बनःस्वि 'देनःस्व-र्न्। चुरुष्या सःम्व-वद्ने-द्याःयवरःदेव-दे-हेदः नस्व हे सूर र वर वर वर सूर र से सर न से र ज्या र व र व र व यर्रेर-व्यक्षर-क्षेर-क्षु-युदे-दर-व्यक्ष्याच्याय्याः क्ष्याच्यायाः क्ष्याच्यायाः व्यक्षाः **উ**- ধ্রন' রুই।।

ने भूर श्वें त पर्वे ते गुव श्वें र पर्वे श्व पर्वे श्व पर्वे श्व पर्वे श्व पर्वे श्व पर्वे ते गुव श्वें र पर्वे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे ते प्रवे श्व पर्वे ते श्व पर्वे ते श्व पर्वे ते श्वे पर्वे ते श्वे ते श्वे ते श्वे ते ते श्वे ते ते श्वे ते श्वे

स्वास्त्राचे द्वा के वा स्वास्त्राचे स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

मुेन न्न गुर कुन गुे त्यय नु न कुर क्या

र्द्रवाद्यवाद्यात्त्रियात्त्त्त्रियात्त्तियात्त्तियात्त्तियात्तिय

स्विन्तिन्त्राच्छा क्षित्रः स्विन्ति स

देशक्रिक्टर्विष्यश्चित्रश्चित् ८८। श्रु रान्यानश्रुरानानिया नयसाम्यानश्रुरानाया सेस्यानश्रुरा ग्रे:र्र्भेद्रशर्मेग्राश्चर्यात्रश्चरान्दा क्षेत्रदेःर्र्भेद्रशर्मेग्राश्चर्यात्रश्चरानः गिरेश न्दर्भिते। ने प्यर्भुगानस्यान्दर्भावर्द्दर्भावर् मुद्रामस्यान्दर रदानी नद्रना वहित वर्गे दार्भे वदि । वित्र शास्त्र शासा वित्र सामा दे सामिका धरःगव्रवः विगागी अः स्टायः गर्वे दः धः ग्रुअः धरः में व्रश्रः अः वर्दे दः धः दृदः स्या नस्य रे जुर पर ये त्यव ग्वव विष्य प्रमान पर विषय विषय । शर्तेर्याधेत्रविद्य यश्राद्रायत्र्यश्राद्धेत्यायादेशायायादेर्द्राया लेव.हे। रट.ज.र्ज्या.यर्जा.यट.वैट.वश्रश.वट.कु.रयश.र्ज्य.श्रंव.श्रंव.राथ. ग्री'दर्श्वरातु'विं'त्'पेत्'पर्म्स्र्र'प्यरादर्श्वराग्री'स्र्वराशु'न्वर्न्'वेत्'रा क्ष्र-धित्या सूगानस्य न्द्रिं तर्ने न्या सस्य उद्दर्ग मारे साय है त वर्गेट सें वरे किं वर्ग ग्रुम माधिव मर सूर निवा गरे मावहेव ग्री क्रिंव नश्रुव परि भ्रूनश शु विन हु न विन भेष भेष न भेष

ग्वित या यो यात भी मन्द्र मन्द्र मन्द्र मी या अन्दर मा हे अ दिहें तु दर्गे हि से गहिरायाये यह निवा यस महामार महिराये स नश्चाश्वाराधित प्रशासन्न प्राप्ति । त्राया प्राप्ति । त्राया प्राप्ति । त्राया । त्राप्ति । त्राया । त्राप्ति । वर्ने विंत्र वा नर्दे । स्टाया वर्षे न्या ने न्या ने न्या के नियम के न श्चिरः विवासे दावसः देवः श्चिरा वस्तुद्रसः यदे देवः ववः निः स्वाः धेवः यद्राः ञ्च्या सर त्रु त से द र से दे हिर कु न सू न र प्या पर र दे र मा कि त र य र या र य मश्राधित्रविवाग्री कें रातुः क्ष्र्रामा हेशा सरामा बुदारी माश्राभी दाक्तुया वा नवित्रः त्रा्राय्यायळे दः देवायायाया नद्याया हेया यहे दः वर्षे दः देवाया नसुरा निर र्ह्ने सेवा पहिषा परे रचा रेवा ग्रीसा वर्षे नसा दसा रावी हेवा उदाम्री अयान्यार म बुरा वर्रे र र्म्या वर्गुर मदे थे र मिने में में र मुखा क्ष्याद्वानु न्य व्यास्त्र विदास्य विदास्य विदास्य विदास्य विद्वानित्र विदास्य विदास्य विदास्य विदास्य विदास्य न बुर वर्गा प्रभा ५ वे साम् व वर्षे मुस्र सामी हो देव दव सामि प्रणाया गर्देन्'सदे'नश्रस्'भून्'हेग्'ग्रून्'से'भ्रुेन्'हेन्'सद्'स्'नश्रुव'सर्'हुर्दे' नभुवाने नन्यात्वार्यम् वित्राचित्राय्यायने नुष्या निवे म्या श्री व स्त्री व स्त्रा श्री व स्त्री व स्त्रा श्री व स्त्री व स्त्रा श्री व स्त्रा यान्त्रस्त्रम्भूत्रभूत्रम्यानस्यास्रवत्सेन्त्रस्तिस्यास्त्रभूत्रसे है। र्नेत्र-त्र-वर्न-न्या-वर्या-वर्नेन्नेन्य-धेत्-वर्या-वर्न-न्या-वर् यर्वेन होन न् अंतर वर्षा प्रमा न वे निर्माणी मार्थेन प्रमानी पार्वेन प्रमान <u> सूग् नस्य प्रसम् उर् नस्य विराधित प्राप्त निर्मा स्थाप्त स्य प्राप्त सूनः </u>

चुर्स् श्रुयान्तरे श्रेयान्तर्भ यात्र्या । निः श्रुयान्तर्भ यात्रे स्थ्यान्तरे स्थ्यान्तर

लट्यार्च्ट्र म्हार्य । स्ट्रिंट्र स्थार्थ स्यार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थार्थ स्थ

यश्रास्त्री | ने क्षात्र विश्व विश्व विश्व क्षात्र के विश्व क्षात्र क्षात्र के विश्व क्षात

न्गे नित्र ने श्रे महित् महित महित् महित

गहेशमायाम्यते हें वशक्ति न्वायम् न्या स्था

महिश्यास्त्राचि देश्वे त्र्या के व्या के व्या

वदायार्श्रेवाश्वरास्वानस्याद्वार्धिः चुदावा स्वानस्यायदे से दा नन्याः कें विदेवे या के सारायाः सें हात्र सार्के सा से हता पर विद्या पर विद्या वर्रेशकेंशःइवः र् न दुवाः प्रशःवरे न्त्रः सः न गेंवः सकेंवा वीः वद्येवः व्यशः पेवः सूसान् नसमा सर्ने रात्रा ह्वा साया नहेत त्र सा ग्राम हुन ही से समा हुन । मर्वेद्राचेद्राद्यासूमानस्यायदे द्यायाया महेद्राद्यायाया चुराद्ध्याची शेशशानिश्राक्षेत्राक्षेत्राच्या यदे द्या योश यो नवद सुश्राद् ले वया रात्रशान्यसार्थे । पारास्याप्यस्यायस्य प्रस्तिरानायाः ईवास्य स्वा नस्यानेते सेटानुने यान्येन्या वया धेन से ननेते सूना नस्या वरेता नमायस्यानु सुरासेसमायिकागामिनु स्याया नेस कुन प्रस्वासायस्य वे सूर भ्रे अप्यय है। यर प्राया पर सूर पर हे प रे अप के व रहर वर रे. भ्रे. नर्डे न् पर धेन भ्रे नने होन पत्रे पत्रे ही गड़िका गर ने व हा गर्डे न प्रभा द्धयाने ने अप्यम् ग्रुअप्य इत्र ने अप्यक्षेत्र त्र अप्येन् से प्रने हिंदा प व्यव्यन्दर्भे॥

त्रेष्परःश्चित्रित्वह्रवाष्यभा वायःहेः वर्षेशःशुःषित्वः हो । तेः त्यः श्चेः त्वादः हेः विवार्षेत् । वायःहेः वर्षेशः शुःशेत्रवः प्यतः । । तेः त्यः श्चेः त्वादः हो । वायःहेः वर्षेशः शुःषेत्रवः वेः वर्षेशः वर्षेः वर्षेशः वर्षेः वर्षेशः वर्षेः वर्षेशः वर्षेशः वर्षे वर्ष

र्मायक्ष्याम् अप्तान्त्रीय्ये । स्वाप्तान्त्रीय्ये । स्वाप्तान्त्ये । स्वाप्तान्त्रीय्ये । स

र्श्वे द्वायया पाववः यदः स्वा नस्य प्रवः ह्वा । श्वे नयः देवार्यायासेवान्यराहोत्। विविस्तायायास्त्रेताहेरस्रो सिवावावहेसाहिता <u> नर्धेन ने यन विस्था वाश्या विस्तर मा स्रोत्र यह विस्तर स्वा नर्षा व</u> ग्री:ररःनविदायसासायर्थासँ स्रुसार् प्रिंग्नायारेसायग्रूरास्री देवेः मेव ग्री अ दर्गेव सर्वे वा ता भ्रुव अ तर्वे प्वा अ द्वा त्वु हा रह वी ह मुख न्दः हेग्राराः सेया भेगाः या यहे सः विदः न्गे नः भूनः या या नगरः नरः वशुररराषी क्ष्ययाया द्याया या है वर्षे या वाब्र वा खेटा है हो। स्वाप्यर ररानी सूना नस्या देवे सेट र अस्तर सेस्र उत् मस्य उत् मिन् केर वशुर नशा नश्यश्य नेश्व मार्वे द मार्ट सूना नश्य वे सव नदे न्यग् सेन् सेर नदे थेन् न ने के के से स्वा से स्वर से ।

वेषा ळेव क्वें क्वें र न ५ ५ ५ दे थे थे र से

स्वान्यस्थाने स्वान्यस्थाने त्रिः स्वान्यस्थाने त्रिः स्वान्यस्थाने त्रिः स्वान्यस्थाने त्रिः स्वान्यस्थाने त्र स्वान्यस्थाने विष्यस्थाने त्रिः त्र त्रिः त्र त्रिः त्र त्रिः त्र त्रिः त्र त्रिः त्र

गहेशमार्श्वेरानशायशनुनम्बुराद्धया

महिराया है नाया है ना

यःश्वाभायात्रेवः संग्वाद्वः हुन् विद्याद्वः द्वाभायात्रेवः स्वित्वः विद्याद्वः स्वित्वः विद्याद्वः स्वित्वः विद्याद्वः स्वित्वः विद्याद्वः स्वित्वः विद्याद्वः स्वितः विद्याद्वः स्वतः स्वितः विद्याद्वः स्वतः स्

गश्यामाने वानगे गया गरिं राया के निवे हुँ राम।

वाश्वर्यास्य दिव निर्मा निर्म

र्श्वेर प्राप्त विष्य के अर्थे द्वार विष्य के प्राप्त क

यास्यायार्केशाग्री त्याया मेत्रावी नान्दाय श्रुवामेता वश्रुवाया स्थाया गन्नःम्। ।ने प्यम्कें अःभ्रिन्यायद्वेत्य्यश्यक्षयानायने वित्रुत्यायाकेः हे। देरायर है गयायायायायीय देश है नायायायायायायाया न्वायनः इस्र अः क्रूं न अः क्रुं अः प्रदेः सम्रु अः क्रुं अः निव ने क्रुं नः पः इस्र अः यः वर्षेट्र प्रके से सुर्के वाया न्या ने प्राप्त मान्य वाया मिया निया वाया मिया या प्राप्त के या स्वाप्त के या स्व इस्रभाषास्र केंद्रा पहिंदा सुया द्रश्या पदि व । यस । यदा यह । वस्रभारुन् वि'नर् एकुर्ने । १८५०१न खुर् प्रभाग्रम् परिनु के वि न्सॅन केन सें खूरा हेन या र्रेग्या राज्य राज्य राज्य मुदे कुया सें पन्या प्र हे द्वादायार्श्वायारम्ययात्री सेटाव्यार्श्वयाहे यात्राया स्वायार कन्-नर्ह्मेग्-डेट-क्रेंश-ग्री-अष्ठ्व-ह्रेव-ह्यश्-व्युन-धर-ग्रुट्श-विट्य मुयारी केतारी निलायारी नामाया इसमा ग्री मार्से तासे सुतास्त सुनास्त मुया नवे नगव न न सम्बद्धा सम्राक्षेत्र स्व व न वित न मुन सम्बद्धा सम्य सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा शेयाविदासमुद्रामुद्राम्याप्तराप्त्राम्यान्त्राम्याचेरुयायायीद्राम्यादे प्रवा यायमेवायमानर्षेयावाम् । सेवामे नियामान्यान् स्वरामा वै। वर्र्र्र्यार्विर्र्र्र्य्यायाः श्रीम्थाः स्त्रीं तुर्र्र् तुर्व्यास्याः इनार्से चुरावा वहिनारहेव छी निस्र शाव विराधित सुना नर्था चुरान न्यग्रापुर्भेन्यार्भेन्यम् ने स्वयं ने स्वर्भेन् हे स्वयं नु न्या मी सूर्या नस्य प्रस्थ रहा निर्माण य तुर्व राष्ट्री य प्रमार्वे द हो द वर्देश नद्या ग्रुट कुन ग्रे शेशश श्रें ट नदे में यश ग्रुश प्रश श्रुर

नगायः देव र के सूत्रा प्रताया या वात्र सूत्रा न सूत्रा न स्वाय स्व वया हु ने नया यो सूया नस्य इस्य नन्या या सूर बिरा रर या हुँ द से रस इग्'र्रे' भ्रे अ'रा'वया ग्वित्'व्यं हैत् सेंट्र अ'रा'इग्'रें भ्रे अ'रा'सर्वेट त्'पट ग्वित ग्री हें त से द्रारा प्रसम्भा उत् प्रत्या या वत् साम ग्री म हि या सुसा त् नश्यापार्गे यश्चरार्त्वेदिः द्वेनशा केशा केरा कुरा पात्र व्यायापदे यश्या गितुग्राराये से सरा उत् वस्रारा उत् ग्री त्या पत्र पत्र हिं से दे डेवा:ऍर्-रा:वस्रयः उर्-र्रा ययः हेत्रे रे-र्वा:वी:यत्रयः तु:यर्वेरः वरः यूवाः नस्याश्चिरानरावगुरानापा पास्रश्चिरानिवरामाहे स्रेपार्थितामा वस्र १८८ स्ट त्या के त्र पिते के कि स्त्र के स्त्र के स्त्र कि स्त्र के स्त्र के स्त्र के स्त्र के स्त्र के स् सेससान्यवात्रस्य सामान्य प्रतान्य प्रतान्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व सेससाउत्प्रस्य राज्य वित्राचित्र वित्र उद्दर्ग देवा सुर्या हीं द्राय स्था द्राय क्रवा है। वर्षे दे दे स्था से के खरा वाश्रद्यायदे कुषाश्रया ग्री श्रेट श्रेवया प्रमाप्य प्रावाय वार्वेट वासेट प विगासे। यने सुर्वे सेन्सेन यासेन त्या सुरास्त्र स्थान स्था स्था सुर्वे न यास्त्र न या र्रे के न्यमा धर न्याय न के यह विमा यय ह व्याय से न यर क्षेत्र न्या मशायदी भू तुते नशसायते में काया र्रेत यस क्रिंत कर ग्रीश श्रुट दें। यर्र्न्रन्त्रुत्नुत्रन्त्रन्त्र्त्त्वार्ष्यर्त्नो श्रुर्न्त् यात्रास्य

वेगाळे दार्से सुँ राच तुन् से दे से दार्थी

यहिराना विगान्ता अगामरायनेरा श्रुवा स्थित स्थित

निव मार्के मार्के मार्ग सिक्स सेव देया ना

द्राचे त्ये व्यव स्थि क्षेत्र भाव क्षेत्र भाव क्षेत्र स्था क्षेत्र स्य स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्

णतः के द्धं या सून् स्थान नित्त नित

र्ग्स्थर्थः क्ष्र्रित्रस्ति। ज्ञान्द्रस्ति। ज्ञान्

वेषा ळेव क्वें क्वें र न ५ ५ ई दे ख्वे र वें

मु:न्वर:नु:र्श्वर:श्रे:र्श्ववा:श्रेन्द्रशःन्वर:य्र्यःवर्षः व्यक्षःन्वरः व्यक्षः विष्यः विषयः वि

श्रॅ्व त्या में क्षेत्र त्या क

गहिरामायके।पदि सहसायेन गुः द्वा

याहेश्यायायके। प्रति हम्माये विष्ठा क्षेत्र विष्ठा क्षेत्र विष्ठा क्षेत्र विष्ठा क्षेत्र विष्ठा क्षेत्र विष्ठा क्षेत्र क्षेत्

विगायान्यस्य ने देवे के त्रस्य स्थान्य नियम् स्थान्य नियम् स्थान्य स्

न्यो निर्देश के श्री । यह निर्देश के श्री हैं निर्देश के स्थान के के स्था के स्थान क

देशन्यत्के। विन्नुं न्या विन्नुं न्या विन्नुं न्या क्ष्या स्या के विन्नुं न्या क्ष्या स्या के विन्नुं न्या विन्य के विन

वेगाळेवार्क्के इंग्लिट नित्र है दे खेट हो।

या श्री साम्यान्य स्तर्ति । के प्राप्त स्वार्थ । स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्

र्श्वेद्रायमान्नी । सुमान्त्री सुमान्त्री । सुमान्त्री ।

श्वायत्त्रेवायते श्वेत्रयाते । तत्वायात्रे श्वायत्त्रे त्यात्ते त्यात् त्यात्यात् त्यात् त्यात्यात् त्यात् त्यात्यात् त्यात् त्यात्य त्यात् त्यात् त्यात् त्यात् त्यात्य त्यात्यात् त्यात्य त्यात्य

यसेव्यतिः स्नित्राची । त्रान्यतः दित्यानः कृतः श्रीः श्रे श्रायाः स्नितः स्नित्याः स्नित्यः स्नित्याः स्नित्याः स्नित्याः स्नित्याः स्नित्याः स्नित्याः स्न

म्रायात्रः क्ष्रियमः वी क्रायन्त्रायः स्रायन्त्रायः स्रायन्त्रायः वह्स्य राष्ट्रेत्र हिता व्या क्ष्य क्ष्य राष्ट्र के स्यापाय हिया स्वाप्य इमा श्रेन पर होता नेवे के श्रेन व्यय दे नार्वे गया प्रयापय प्रया अहे द कुर-दसः श्रेव-त्यना नी शःश्रु-तुना नापशः नगना तः कुर-नार्धेव वयः कुः नरः ह्य यगारामधेर्वनक्षेत्रेरात्र्वस्या म्हारामध्यापयारादे सेटात्-गर्षेत्रःयःचवग । सर्वे : ग्रुटः द्रायः त्र्यः हुं ग्रुयः थ। क्र्रेतः प्यटः द्र्याः यरः ই্ল্স'ন্ট'শ্ৰম ক্র্ম'শ্রীম'শ্র্ম'ট্রেন্'স্কু'ডব্'ন্'য়ু'নব'লম'নন্দ্রন द्धयार्श्वेत्राचि के त्वरावरे सूरासहर में सूसार् स्वापि स्वाप्य स्वाप्य धरात्रा र्श्वेरायमारे भ्रात्रमात्रमायम् वर्षायाय वर्षायाय वर्षेत्रमाय वर्यम्य वरम्यस्य वरम्यस्य वर्षेत्रमाय वरम्यस्यम्यस्य वरम्यस्यम्यस्यम ग्राट पार्वे द पर से तु अ मे द रें द से द साम साम ग्राट से न है न द द । से द परे क्रानरहेशासुप्ततापितास्य स्याप्तरास्य स्थाप्तरहेरा स्थाप्तरहेरा स्थाप्तरहेरा स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स ऄ॓ॺॺॱॸऀ॓**ढ़ॱय़ॕॱ**क़॓ॱॶॖॻऻॺॱॸ॒ॻऻॱऄॗॖॱॸॱख़ॱऄ॔ॻऻॺॱय़ढ़॓ॱय़ढ़ॱख़ॕढ़ॱॻऻॶ॒ॸॺॱय़ॱ द्रस्थान्त्र स्थान्त्र स्थान् स्थान् स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान मुद्दार्वि दिद्दाद्दात्र स्त्रुव व्यामिद्दा यो व्यामित्र विद्या व यःश्रेष्यभाराश्वरावादी व्रथमाउदावदेव परानुवारा स्वाउधायार थेदा धरादेशाधराज्ञशायाक्षार्वेवारु।वर्देवार्छ। वुनः वुनः कुनः ग्रीः सेसरामहेरार्से होयाविराङ्गेसामदे तर्झे यादमें मुनामम होते । ने सूम त्रुनावावी भीवार्तान्यस्यायाते। त्रुनायदे प्रनादार्थे क्रियान्यदे भीटाह्ये वर्ते व पति शाप्त प्रति । व विष्य प्रति । व विष्य प्रति । व विष्य प्रति । व विष्य प्रति । व विषय । व विषय । व

यश्राद्युद्राचाःकृत्राचावव्याचे नदे नदे नश्रश्राचा न्या के शामित्राची स्व वी वात्र अत्र वर्षः श्रेवारायत् व्यव व्यव वर्षा या वा शुर्र अपन्य स् । शेस्रश्नान्यतः केत्रः से दि दि न्या सु प्राप्त त्या स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा सु माने। श्रेयश.१४५.भेंचश.भेंट.स.४४४१.ग्री.भेंचश.शे.ग्री.२१२० । श्रेयश.१४५. अर्वे विरसे दारा हुस राग्ने अर्थे विर्मु स्टिम् से सर्था उदाया वर्षा से दारा इस्रयाग्री पात्रया सुराग्नुर हेग सिस्या उदान्नीर से दाया हा निर्देश गुरुरेग । श्रेस्रश्रास्त्र प्रदान्य हेत् से दारा इस्रा ग्री प्रदान महेत् प्रमा ठेग । श्रेस्रश्रास्त्रास्था स्रोत्रास्यस्य ग्री । यहा स्राप्तर्भः स्राप्त । यहा स्राप्त । यहा स्राप्त । व्याशुःदवःवयायद्वयायद्वः। ह्याः सेस्यादकदः।वानायानेवायावम्। हेः ग्रद्यायार्वेद्रायर्थह्दाद्यायह्याविषाःविष्ययाद्रायदेद्रायाद्वेषाःया हुरमाशुरा हेमावसाग्रीसामुगासायासीयर्देरायाचे हुराव्यायाचा हुसा ह्वा. हु. शेस्र १ २ व. इस्र १ स्वा वस्य वस्य १ स्वा वस्य १ स्वा १ स्व उदाग्री देव द्वात्र स्थापान स्ट्री नाया हैं ना विषाधिव साया दावे नदे न रे न ग्री सूर न विया पर याश्र विर न न या या विव सहस न हे ते ग्रुट कुन ग्री शेसरान्द्रियं के श्रें सानविदायंदे सुन्यामियायाने। शेसरान्यवक्रेत र्रे दे द्या ये हे अ शु न सून पर होते ।

नथा गहेशगाः कद्रायदे याद्रशासु असे अस्ति वा गुरान द्वा गुरा शिकार्गे षिरःगेॅं विःयादेवाःवीः वदः त् : वद्धं वः यः त्रुवाः तदः वदः द्वि वः यः यादेवाः (वृवार्यः वयार्गे नामहरामया द्वीराम विष्ठा द्वारा स्थान में स्थापन सामे द्वारा क्षेशादर्गात्रशामुयान्वेशायार्ष्य द्वावेगाय्याद्वेतः र्याशामुया धरः वर्ष्णकार्य्मेव्यी। विद्रारुवा विवायी वर्षा सुर्वा बुद्रवा वेर्द्राया वर्षा उद्ग्रीक्षामहिकामासी विकासका है इमा हु सुरासन्। यदा सुदारा दे दारी अविष्यात्रहतः त्रुवा से 'हेवा वी कर विषय है। कुष्य से स्वेश गुर है 'विवा सूर याकुः अवर वित्रास्य भी थे। पावव स्वर श्री क्विं ह्वस द्या वर रे स्वर दे वर् नुरम् वर्षे।वर्ष्यर्र्न्य वर्षे।वर्ष्यं वर्षे।वर्ष्ये वर्षे वर्षे।वर्षे वर्षे।वर्षे र्श्वेश देवनेन्यायन्वेर्यस्य वर्षायकन्त्रायः केवन्यवित्वयः वर्षा वर्षः गशुरःदे॥

ब्र.म.ध्रुं.पर्चेरश्रासदे.क्ट्रा

वहें व श्री महेव से र अ से र व रहे रायय र न अ से र य र र । है र मार श्रू र नन्गायहेत् मी गहेत् से स्राह्म तिरायहर मु निरे मु स्यमे पीत्र प्रमान म्निः क्रिन्यः क्रेश्रायदेः ह्वाश्रायेत्। नेः यः यदः विवासरः स्टायः येवाशः यं के जुर द्वो प्रदेश्य के शामा हे व की प्रमाद है व द्वे के श्वास हिमा द्वा वर्चे र त्यव हे गि वें न र तदी दें व से र र गोर्ने र न सहस सूस परे हैं रहा गैर्भः भ्रुः न विगान्ता कें प्दी प्रश्न र्से प्राप्त र से से साम कें प्रश्नि स्व वर्षिर-व-वर्दे-व्यथ-वर-श्रुय-वदे-ह्ये-दर-वीथ-श्रु-व-विवा-ह्युद्र-व-ह्ये-श्रु-द-वी-र्थेव पर्वेदि र्केश पर्वेद्ध राज्य होत्र में होत्र में निर्माण है स वहें तायान्य मार्थे मार्थे के हो ना से सका उता ही में तान हो ना हिमा हुमात र्त्ते क्वें र प्रदेश ग्रिवे हें र प्र क्वे के विश्व के अप्र के अप्र के विश्व के अप्र के विश्व के विश् ममारेगाः तृत्वर् सम्बद्धाः देवाधाराधीवार्वे।

ग्रीश्रासाद्वियानावियान्द्रप्रमार्थितार्थि में भित्रात्वे । दिश्रात्वार्द्वे या त्रात्वे । येग्रासर्गर्म्य्रास्थार्यरायः स्टायः स्टायेश्वास्याद्वेयः वः तुराद्वेद्रसः यदे ह्वाराधित यस्त्र वाहेत् में न्सू न्या स्टाया स्टावी सामावियानाया वनद्रायम् नुर्दे । महायामहामी अया वियानायदे । यह मुखानदे मा शुहामन ग्री-दर्गेरश-देव-म्रायदे-सव-दर्गाव्य-वहेव-वश्वायेग्रय-पर-देश-पर-ग्रुशः है। इरार्ट्यान्यके रेटानवे श्रम्मा स्था स्था स्था निया है से स्था निया है से सामित र्राने हें न्यान्य के अवस्यास्य स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक न्त्रान्त्रम्थाः वाद्यवेदात्याः नसूत्र द्याः म्ह्रान्य स्टार्थे स्थाः साहित्यः नः विनाः तुरक्ष्यर्भे मुर्के में भी के भी दे भू भी का सम्भूत में द्वा मी पि स्थार मर स्रोस्यायाम् द्रिन्सेन् वेर्त्यान्ता वर्त्तेन्यसेन् वेर्त्यान्ता नर्गेवः अर्क्षेनान्यराधेराधेराबेरावार्श्वाया बुदाकुषान् श्चायाधिरावह्दानाः यानुदा देशकहें में हेश अदारेंदिकदानुद्यायानह्या याडेयासुदा वर्वादाशेश्रश्यावह्य । हेशायाशुर्शायाधूर। र्शाञ्जवशाग्वाहारः गी क्रें मार्यसाय महमारा दर्श के सान्दा समुद्रा समुद्रा समुद्रा मार्च प्राचित स्वित रु:केर्दे। । नवी नदे न ने अ वाहे व त्यव शी वियाव या न वे से अअ शी आवर क्कॅर्याहेव सेवि अर्र अद्राम्य विवा अवव या नश्रूर सं सेव सं वावव हा हु बेन् विन्नुस्रम्भन्यः प्यान्यस्था विस्तिन्तः न्यान्सिन्यस्य रहा रोसराद्यराधेरानुसादसार्यार्याच्याचेत्राचेत्रास्त्राचेत्रास्त्राचेत्रास्त्राचेत्रास्त्राचेत्रास्त्राचेत्रास्त्र वह्यायमा स्मार्ट्य वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे । यावर रे मार्थ वर्षे वर्षे न्त्र विस्वास्यस्यस्य स्वरम्य होन्या । इत्रस्य ने स्वर्षित्रः हो। वेशाम्ब्रुद्रशायाष्ट्रम् द्रार्मित्वो नस्रेवाची स्थायायेव प्रित्रास् स्था न्स्य.मी.भिय.क्र.क्ष्य.स्यार्यर.री.यथ्या.भी.भीयशायम्तुप्रायश्या र्श्वेन:धर:विश्वः सुरशः विदा इत्यानविः करःदरः वरुशःधःदरः सरः नविदः शेः पिन्दास में निक्त मिर्या मिर्या मिर्या मिर्या में निक्य मिर्या में मिर्या मिर्य मालेव मिते के स्वापत क्षेत्र भी कुत क्रूम क्षेत्र मान्मर नु नवना के त्रूम स वन्यः शॅं : जुना : नृतः देवे : स्रें न्याया स्रम् स्रमः नृतः नृतः निवः स्री : पि'त'अ'र्चे'न'ह्रअअ'र्सेट'नर'पिअ'त्वट्य'नेटा दे'त्रअ'द्वो'र्सेट'वी'र्सेअ'रा' येव'मदे'के'सम्बर्श्वेन'ग्रेन्थ्रम्भूव'म्'न्न्नो'वन्व'ग्रेन्थ्न'न्य्न'न् नवगः हे विस्रा हे सान हु हा न हु है न सुस सुर नर निस हुर स निरा वसग्रास्य रे रेग्रास्य निवास मान्य स्वरं द्वार में हुँ दर्से स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स नरुषा अर्देर-द-त्य-नदे-नरुषाः अळ्यश्यः सम्द-द्वाः श्रुद-नर-विशः त्रूट्या देवसःश्रूवःसेससःयेवःसवेःकेःश्रुवासःवद्धवेःसद्यःकुरुःद् नुरः कुनः शेस्रशः न्ययः वस्रशः उनः न्यरः नुः नव्याः क्षेः शेस्रशः उदः सः नङ्गयः न न भूया न से न भारत करा न भारत स्था न स्था य्रथा में द्वारा स्वार द्वारा स्वार त्रुर्यायात्र्ययात्रीयाते प्राकेषाप्रार्थेयायायवराष्यासुःसेर्पानेषाः पिशः स्ट्रास्त्रिट हें दे सम्दर्भे रामा के वारे द्वार देवा रमा स्ट्रास्त्र स्था यात्राह्मियानाल्क्यान्ताल्क्यान्यात्रात्ता व्यात्राह्मियानाल्क्यान्तात्र्यात्राह्मियानाल्क्यान्तात्र्यात्र्

ने भाव गावव की श्वर दिन ही खं या अहे आ की आ अहे की साम की नाम में स्थान की स्थान की

लट.लट.लुट.क.चेट्रा विट्रू.कं.कश. ईश.रव.रेंग.वर्शटश.सपु.यट.यश. यर्याक्त्र्यान्त्रः हेयासु इत्रायासुर्याययर देताने प्राय प्राप्त वयाग्राह्म संभित्राचे प्रवाद विवास्त्र विवास्त विवास्त्र विवास्त विवास्त्र विवास्य विवास्त विवास्त विवास्त विवास्त्र विवास्त विवास्त्र विवास्त्र विवास्त्र विवास्त विवास विवास विवास्त विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास वर्रे या ये गुरु पर्म श्रु हरा पर्मा में स्था मे गरः हुरः धरः हैं। श्रें रंगे। श्लें व्यय्ययः दुः विहेरः वयः केंगा श्रुयः दुः गरेरः र्वेन'यर'ग्रु'वेर'। क्रेन'र्रायर'यरे के नवर क्रेन'यवर'रन यार यो याग्रर क्रिंग्दियोग्रास्य से वर्षे नर्स्य सुत्र क्रेत्र न्युर सुन मानिष्य ञ्चनाः सम्मेतः द्वाराः अत्याद्यायः नायः वर्षे अविना वर्षे ना हेत् छीः विस्रक्षात्रः क्रेत्राद्या पद्मी प्राप्ता ग्रुट्या प्रदेश से स्रक्षा उत्रास्य में प्रिया । मी क्रेन्द्र द्राप्त देश निष्ठी द्राप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र वश्यन्यायी क्रेव प्रवासिक प्रेम प्रमानिक स्थाप्त क्रिया क्षेत्र प्रमानु स्थाप सूसर्न् नसस्विद्यार्नेद्र येत्र नर्सेस्स्यार्थे।

ने स्वरक्ति न वह रहत न ज्ञान क्षेत्र स्वरक्ति क्षेत्र न क्षेत्र क्षेत

क्रवशर्से के गर्से ग्रान्त्रा पा विवा दें र वर वसूत व तुरा यश वासुर स्र वित्रावर्द्धित्रायवे क्वत्र हेराम्स्रुत्राय है। क्विं क्वेंत्र में हिंदिन क्षे क्वेंत्र वित्र है। भ्रेशमित्रम्यार्था के विष्या ने स्थाने सार्के वा समान बुदान सार्के के दिन के क्रियानार्देरान्नेनित्रहासी स्वासी क्षानी सामित्रामित्रामित्र महिनामित्र न बुदाक्षान क्षेत्रायवे नरावदे दे अदश्राया क्षुश्राणी नरात दें रात् येत्रायर क्रम्भाये व में दाये व द्वाप्त द मानद द में मान्य व स्वाप्य व स्वाप्य द स्वाप्य द स्वाप्य द स्वाप्य द स्वाप्य ढ़ॖज़ॱॻॖऀॱऄ॓ॺॺॱॸऀ॓**ढ़ॱय़ॕॱ**क़॓ॱॸ॒ॸॱॸ॒ज़ॖॱॺढ़॓ॱख़ॗॱज़ॱज़ढ़ॆॺॱढ़॓ॱॿ॓ज़ॱय़ॱक़॓ढ़ॱय़ॕढ़॓ॱ यमग्री ग्विर विर धेव प्रमास्त्र होर न स्रे नेवर रे स्रे मार्थ से कें वा पर सरसासामुसाग्री नरार् में रायमेयार् वर्गे पर्मे साने। हे नहुन ग्रुससाम यर्गेव रें या यहें व हें गया कुव र प्रायुरया या भूरा है या यह से या यह है र यः र्त्तेः श्रुटः त्रशः हैयः सेट् ग्रीः र्रीटः या श्रीटः उर्ग्ये गिवि हेत्र अप्राप्ति सेस्यान क्रेन् त्र या त्रुत्य सम्राहे या ग्रेन् हेत्र स् नुवे सेसस नभ्रेत् ग्री नर सेसस नभ्रेत् में द्विय न् नित्र देश सायस त्रुग्राश्राहे क्वेत्र में किंत्र शत्र स्वायायाया अन्तर ग्री न्या न्या निवास है । यन्ता ने निवित्तः वात्रयाया में वायायते स्वायाया में वायम् वित्राया न् अर्थानर्थान्याहेन्याविषान्ता हेन्त्र्याग्रम्हेन्याहेन्याहेन्या श्रुरायरासी केंगायर हैयासे दारी हीं दारा हेताया विया दा। दे उसारी रा गुरः भे रें वा पर गुर कुर ग्रे भे सम रे द रें के म गुर द म र सुर म हे पश्चाल्यान्यान्त्र स्टान् न्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

ने ख्रिम् नुति त्यस्य नु नि नु क्षियः मुस्य स्था व्याप्त नि स्था नि स

तुमामार्से श्वें रामी त्या के म

त्रुग'रा'र्ह्में हुँ र'मी'र्या क्षेया'या यह र मकुर्या शुरू शाही हे 'या हुँ ' र्देव'या शुरु 'वें|

र्त्ता विकासिक्ता विकासिक विकासिक्ता विकासिक विकासिक

यान्तर्नु त्रयत् ने स्ट्रामी अध्ययन्तर ने याक्ष्या व्यान्तर निक्ष्य न्यान्तर निक्ष्य निक्य निक्ष्य निक्ष्य

ने भ्रामित्र प्रमान स्थान प्रति । यह सामित्र स्थान स्

र्त्ते क्षेट के किया के मान

क्ष्म् स्थित् स्यात् स्थित् स्य स्थित् स्य स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित् स्थित्

वेगा के दार्ते क्षे रावर्त्र के देशे हर वे

र्से र्से निया रामेरासा सुराया

त्रें श्रुं त्र श्रुं न्य श्रुं त्र श्रुं त्र

ग्रेन्यार्श्रेम्यार्श्वेम्यारेन्यात्र्यस्यात्रम्यात्र्याः वर्षेत्रात्रम्या केदे वियावया नसूर पा वस्राया उदा गुप्त विषया ग्रीया प्रिया विया प्राया वि त्तुः अदे : नगदः कुट् : क्षेत्र : या अट : न्या अट : ना ची अ : वर्षानायानहेवावयास्यायारावज्ञेरास्यायायानहेवावयावर्षानारा वर्चे ५-५। वर्षानः स्वायः ग्रे में वायः स्वायः वर्षः में वायः स्वायः वर्षः में वायः स्वायः स्वायः वर्षः में वायः स्वायः स्वयः स्य द्वे त्रु अदे नगद कु न अद रा अने न अहर न अहर क प्रथम उन् देश कर नः विगा गुर्दे। १८५४ मा न मुस्या स्टार्सिम ग्वाविग हेसाम दे। नससमा सूर-रदाविसाधरादिकायादे प्राप्त देन प्राप्त विद्यापित स्थापित स खुर्यात्वा वी क्वें द्राया वेवाया के या यह व इस्यया द्रायदा वर से विवासर त्रः भ्रे। भ्रें नः वस्य अरुनः अर्देनः अर्द्धनः यः स्रें नः के नः विवा तः निवा सः गश्रुम्। ने प्यम् स्मारम् हेन् के विवेदाने न नम् श्रु अविवने न नम रदाविवासुःविवर्तरायश्रावरावरावर्देदासःश्रेवाश्राम्भः मुद्द्वासः मुद्दासः दे। दादे स्ट्रिस्से होदास्य निवास्य निव्या हे या प्रति न्या या या है। होदा शेशशास्त्र ही देव त्वत्र विवा हु हो द पदे त्त्व पर वश्व र वश्या स्वा वर्त्वूटःश्रेषाश्चारुटः वट्टारे भ्रेश्वेशः धारु द्व्यूटा व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्र ग्रे-बूद-देर-अक्टे-अ-दिनुद-अर्जन्य-ग्रुअ-त-तर-कद-द्द-ग्रेद-य-अद-विद्या देशविद्यार्शियाश्चरव्यात्राचित्राचे प्यादेश स्थाप्त विद्या देश विद्या देश विद्या विद्य श्चेत्र'न्ना द्धयायकें अःशेष्म्याची हे अःश्चेत्र' सन्दुन्हेत पेन्या

गवर ग्रीश्रास र्कें र नर रर कुर पर्शेर्स रा विग ग्रुप्तें श ग्रुप्त रें। यत्यम्'द्रम्य प्रम्य प्रम्य विष्य प्राप्ते। मान्त्र या स्था में क्रिंत् वर्ष यःश्रेष्यश्चान्द्रःक्ष्यःग्रेःश्केष्ट्रित्रःक्ष्यःवक्षयःयःश्चिष्यःयःश्चेःश्वेतःवदेःक्षेष्यः इस्रायागुवावसाक्षी विष्यु । विष्यु द्विवासावादायदासी विस्तरासी वेशयादी श्रेम्सेस्राउद्यस्रस्य उद्दर्ग हिन्यम्द्रिस्सेम्ब्रास् राक्सरायाक्कें वासर्वेदावादान्य स्वादायायाधीवासी विदायादे पद्वे श्चेंत्रसेट्रपेट्रस्त्रस्त्रात्रस्त्रस्यायाश्चेत्रहेषायदे सेट्रिन्से प्राप्तरस्ति ।दे षरःश्चेरःश्रेस्राञ्चर्रा, ययदः श्चेतः हैं गानी हैं। संस्वेरः निवानु नाया के म्रे। ग्वर ग्रे सेसस कुर से जेस मर भ्रें दार है दार है साम जेत हैं है विरा भ्रमामराध्याने ग्रह्मक्रमा सेससा द्वारा विमाधित सर ग्रह्म स्वते । <u> न्ययः वार्षिरः विः भ्रमः केषाः याः मेः भ्रे याः वयरः मरः वीः न्योः सः वर्षे ययः वीरः।</u> धुःसरः इसः श्चेतः रगः पुःरुं यः नार्हेत् ग्री सः से त्यरः विरः द्यमाः परः दगायः नः न्वार्श्चेर-न्वेशन्य वात्रशन्दि त्यः वयः वर्श्वार्यवार्थवार्श्वार्थः से दे हो से र र् मानन नर्गे अर्थे। व्याप्य के अर्थे र व्यायप्य के प्राप्त निवेष्ट स्वर ग्राट-स्टान्ट-क्षुःश्चेत्-अर्द्धद्रशासदेःश्चेत्रायाः स्ट्राच्याः सद्धद्रशासरःश्चेत्रायाः क्रयायार्भेवाहेन होनायायने निवाहायहार हे विराह्यायर श्वेवाया निवा एक्चर्याके प्रमा हैं हैं रादरे या है राद्या हम्मा येव हा परेंद्र पाइस्य ग्रीसायदेवि:बद्द्राचाव्यायायाः केदि। | स्टारुवा दुस्यायेद ग्रीद्वा ग्रिया ग्रीसा

अ.रीट.य.रेटा क्रेया.तर.स्रीयाश्वाता.सैट.श.वर्शीटश.तर्दशायर्था.तर् गश्रद्यान्य प्रमाञ्चर श्रें दाय नेव पुणाय केरी विव सेद्या गदा के श्रेंव याश्वरा वेशमत्री रटक्तरायार्षेत्रस्यायारके यहवाशत्रश्य वारके ननेवे नाहेत् सॅरळें अ वस्र अ उर्धूर अ त्र अ रे हिर वें ना सर वर्षा <u>|देःषदःसदःकुदःषःवहग्रयःस्यःकेःवदेवेःश्वदःत्यःवेदःहुःकेःवयःग्रः</u> वेद्रावस्थारुद्रादेवेर्द्रवर्द्र्याः स्वाद्र्याः द्राव्याः द्राव्य यदे र्भूर त्यावार्षे र्वेर त्वन रहेरा नवी र्भूर वार हो र बस्य रहर ग्रीय रे निवा के विदेश सूर निरादर्य न वार्षे में राज्य हो। द्वी यनि सार्वी दारा यदे। वयावया हैं में ग्वां मुर्या अर्थ न द्वां न ने प्यें विवाया प्रके न विवास से स्राय ८८। क्रिंश खें दे त्यश्र दें द्यो याशुद्र दे नवित द्य ने श्र याहे त त्य द्र द्य <u> द्धरानराञ्चरात्रायेग्रायार्क्षेग्रयाची सानाकराम्यारे प्रेगान्</u>यायदे द्वया वर्चेरायाम् रेनेरावर्षेत्राविदा न्यो श्रेरायाव्य मस्या उर्गात्रास्य । क्यादर्हेर्ने रामें राद्येयार् प्रमुरानदे में ग्रामा सुरहे प्रमुराहेता दे निविदार् र्भेग्राभः भूराम्वर वस्य उर् यदर विश्वासर मुद्दे विस्तर स्राप्त रेप वस्रयार्वि क्रायंत्री क्रिं स्वे दिन क्षियं स्वर्धि स्वर्ये स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर् वेदान् मेर्नान्दा श्रेषाञ्च भेदेरनदेरना सम्बन्ध मन्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्र ग्रिज्। शुः वि । यदे । यदे । यदे तुः पृष्ठे रः यः श्रिज्ञा शः रहः । वहे हुः । श्रा श्रा श्रा श श्रम्यात्रया नन्नामयान्वनान्वेयान्ते सेस्याने सम्मिन्ने स्वाप्ति से

वेद्रासेस्रसाउत्वाची देत्रद्रास्य क्रुसार्चन प्रदेश्वन सार्वि त्र राद्युर नर ग्रुन्त्रीयार्थे। द्वाउद्याग्रिम्य स्थर। देयायादी न्रेस्य संजनेदावहेदा ८८.यर्याः यो देशः यहे व ग्रीः इसः हैं याः ५८.यहे शः धंदेः ५ यो : श्रें ४. यस्थाः ४८. बर्भार्माप्रायदेश्याप्राप्तायम् प्रमे श्री रामार होत् सार हिंदि स्वारे न्यान्दरसायदेशसम् नुर्दे। यात्रान्य वारामें सामक्षेत्रा वेशसादी सामेया ग्रीशागर्वेदायाग्रुशायायाविदात्। न तुराव्याविदावद्देवादे व्यक्षाव्यापरा ब्रेंद्रअप्रास्त्रवद्यत्यात्यावृद्यन्त्रवद्यात्री हेत्रव्रेंद्रसः कुट्या श्चेरायायायम्यायदे श्चेर्याय प्रस्ताय स्वेर्यय स्वेर्यय स्वार्य स्वेर्यय स्व षरःसूर्यायः तुर्यायः रिवः तुः न तुरः व्याः सुरः त्र नः गुरः कुतः वत्रुतः तुः सेः वह्रमाधरवत्ररवहें सम्मानुदी । मानमामाद्या सार्ते । हे माधि मानम ग्रीभार्याया के पार्वा श्रुप्त श्रुप्त विष्टे हो हो त्याव स्तुप्त विष्टे श्री हो त्या पार्वे प याञ्चन । हेरायादी नाववाग्रीयानार्देन्याग्रयायेन्यानवनावयान्यान्द्र्यान् मदे यत सहया नदे त्या तुरा ठान वार्ते न त्यत तह या न ने श्वें न नदे।

यावन्यः भ्रीः न्या हेश्यः यावे। भ्रीतेः श्रीं व्याक्षेत्रः व्याव्याः व्याप्ते व्यापते व्

नशुर्यात्र न्याया क्षुः विद्या विदेर क्षें द्यो प्रया क्षें या क्ष्या स्वार्थ र विद्या स्वार्थ स्वार्थ र विद्या स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ हेशराने नियामी क्रें वाकी शहें हैं नियर्के नामित है वासी हेशराने निया वीर्यास में या पा प्रेचा पर र् क्षेत्र र वे या या या या स्वार्थ या प्रेच या स्वार्थ र या स लेव की क्रें रव क्रियानदे नक्ष्र राया व्याकार अहि रवका हमारा गुव ह गुःशे रुद्र नवे हे या प्येव हो। या ने प्यदा क्षूत्र शे या ने। विका गुदा क्षूत्र शे वि निर्मार्था ग्राम्य स्थानिय । सर्वमा सुर्वा ग्राम्य स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स वर्रे द्याद्यो र्श्वेद्र यो र्र्केश यिव धिव सम्याश्वर। द्राक्ष प्रस्थ सम्याश्वर। यःहेंग्रन्धेन्छेन्यळेशःहर्ने ।नेन्य्येगेनेन्ययेग्रयम्यम्य व निर्वाक्ष सुदे र्या सबदे र्वो क्वें र वो वा सुवाय पर्दे व समय है की व हु र्रे मार्वेर स्रे। हेश प्राप्त ने प्रमार्श्वेर ना प्रमार्थ राज्य स्थान स ळ्ट्र-ट्र-चल्या-धःधेद्र-ध्रश्च-द्योः श्चे टःळेश-चले लेश-याश्चर्याधेद दे॥ दे । यदः रदः वी शः वा वदः यः विं नः ददः श्रद्धः व वुः नः श्रें वा शः वृः हे । नन्दरस्रह्मरत्तुन्व तुः रासेन् हेटा ने सूर्य से तुः न ने पूर्व से हिंदा धेव'माश्रुर'नर्दे। ।गावव'षर'रर'ठम'र'ख़'न्नेअ'भू'रे'वन्ने'ववर'क्रुन लेगात्। नर्हेन्यन्गवः श्रुनःन्यः यार्हेन्यः दे। । श्रुः न्द्रायन्यः यास्तर्वेगः हेश्रास्त्रामुस्यान्स्त्रा । स्वाप्तुः हुस्याव्यायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्र यायळें नान्ने क्कें नाय धेन कें। विकास पर्ने नेकास समाय पर्ने ना धेन केंना

ગ્રીઅ ક્ષ્મઅ ત્યેન ગ્રી ખન ત્યના દુઃવને ભૂ નુવે ન્ય જેના નાશુન્ય માસ્યયા व्यक्षः क्रीः देः निष्ठा देः द्वाः देशः स्वरः श्रुदः द्वीवाः सः वरः नश्रुद्रशत्रादेशयाचे रावश्रुरानवे नावरात्र्यशाने शासरावश्रुरार्रे । दे सः नुवे ग्वन् इस्र सास ने साम प्रमे प्राचिया के तार्ते हैं हैं हिंस साम में वे प्रम क्षेत्रा हु ना शुर्य पद्वा प्रयान्व नी या शुर से प्रवेश सुया हु में वि वेर नः भेव रहा के भेदा प्राया शेषा वदा प्रया अराउदा प्रश्वा प्राया प्राया । प्राया प्राया प्राया । प्राया प्राया प्राया । प्राया प्राया । प्राय । प्राया । प्राय पियासूरायासायर्भे विसामादी सरायायननामदेगाई गायायसार्विगारमः गर्भे श्रुदे श्रुं दशमावद या नश्रुर न मिंट श्रुं द उद ग्री श्रुं द पर दे श्रु तु श्रूं ट नर्दे । अर्ग्रेम् अप्रे हे अप्रिम् हे अप्रिम् इस्प्रिम् विद्यालय वुत्रस्ट-तुः भेट्र प्रायाभे विरुष्ठ व्याया श्री क्षे त्रायह वीया विरुष्ट वेद्रायदे नश्रमार्श्वे मार्श्वे प्राया विद्राया । महायायन मार्याया विद्राया गर्भे वर्षा ग्री अप्त श्रुर्य न प्रमा विष्य श्रुर्य श्रुर्य श्री प्रमाय विषय श्री अप ररामेशार्चितासराचेरायादी महिशादी माववायामधि श्रु चेरायाधेता धश्राम्यायाग्वाम्यायाः स्वाप्तान्यायाः स्वाप्तान्यायाः स्वाप्तान्यायाः स्वाप्तान्यायाः स्वाप्तान्यायाः स्वाप्त व्यार्भे न प्रेन प्रमाने मार्मे व्याप्त के मार्थे व्याप्त के निष्

ययायार्त्वे र्ह्ने दाना इसराया दे से सरा नहीं दार हमा परि हु द्वा रेदि रहें रा शुःदशुरःतय। ने सः तुते र्श्वे नः पारवः पारवः त्वे या यस्वावया र्शेनः है। क्रें विवासी ह्या वियास दी स्वाय स्टा वास निया स्वाय स्व वससाय से वास्तान से निष्य से निष्य से से निष्य स क्रें नर्डे अन्दरवर् नरादे क्षुन्तु वे स्टर्वे दृष्ट्वर वस्तु वे विषे इसर्हिनायानिहरायेवरङ्गिसायायदे रहाने वहानिहराने वित्वते व्यवस्था देस न्ना गर्नेन् ग्रेन् यास्य मार्नेन् निर्मे क्षेत्र निर्मे प्रमेन्य प्रमेन्य प्रमेन्य प्रमेन्य प्रमेन्य प्रमेन्य वनशर्यं विवार् में निर्देश ने द्वार में किन ने निर्देश बेट्य केंब्रा ग्रुप्त हेंद्र सेंद्र अपने पाहेद में द्र पर्में पादेवा द्वीं अपने पेंद्र गश्रा अन्तर्रात्रेशन्तना हेरामही वहेगाहेताहिरामाह्रस्थरान्द्राची ब्रुः अः अग् व्रुषः स्टायः वर्षे द्रायः ग्रुषः वर्षः वर्द्रः द्रायः वेसः वः व्रुस् वर्षः र्शेट्याधेवा क्रें क्रेंट्योशस्ट क्रुट्य दुय द्वेंशस धेव या श्रुटा यदे वे यदे के त पर वर्ष में र हे द हा नर नर सं हे पहुना य दर। व्नार दरा র্ষমানমমার্শ্বমানাম্যমানান্ট্রনাগ্রনান্তানের দেই দিরের ক্রিলামান্টর নার্দ্ব वयानेन्यन्ता नवेवयम्रस्टिश्चेंस्ययिकेष्यरकेसह्यायाकेन् नग्र-भ्रुवःग्रम्थारे देंदः द्रेने वश्चें या प्राप्तः पुरादेवे मिले नद्या रे <u> ननरः नुःवन् अवः अवे सः वश्याम् सुयः वेहें यः यः विनाः वेदः नुः से वश्याम् वः </u>

कर्ता।

सर्रेर्न्न क्वें क्वें दर्के सामार्थे साचे रावेत् वस्य साचित्र वर्षे नवे वन्य श्रु हो द केट स्ट हे द गुव त्य य द यद न स द है व । ज्व द न व ट <u>८व.५३८.वाश्रयात्रयश्चर्याद्रीट.री.विर.धे.चे.वे.वि.वी.वी.वी.वी.केशया</u> न्ययःनवे सेययःन्रः यायानहेरःनवे सूनः सुन्तु स्त्रायः गुन्त्वयः न्ययः राष्ट्रियामा विवादमें राष्ट्रिया श्रीता श्री वै। रम्पी हे र्प्त्र में नाम सके राय से नाम सिन्दे रे प्रापी वस वेर ८८ भ्रीम् अप्यस्य अस्म अप्यादाय व्यवस्य व्यवस्य विक्र स्थित विक्र विक्षित्रभावार्भेवार्षेत्। स्टान्दासहस्रासेविः स्वास्य स्वेतः निवादायाः र्रः श्चेत्रप्रे व्यवस्था स्वावित् स्वाप्यर पर्नेत्रपः श्वरः रिष् । प्रवेत्रप्रेः ग्रम्भःशुःग्रम्भःभःम्स्रभःयःर्देदःशुःखुभःश्रेंग्।यःग्रेद्रन्यःग्रेदःभवेद्र्यः या गुरायर। र्गेनाया वरायवा र्वं वा या र्वं वा सेवा ये रामेरा में वा में या

न्यरायहें वाया वे प्रमुद्दा है। देवे के प्रमाय विमाया न्यारा स्माया विगायाहे नरान बुरासे। विंदार्के न्दारेन र्के विशासे ग्रायारेन। ने या महेन न रामने यन्तर श्री से यहिना यहूमा नने यन्तर श्री से यहिनारा वः इस्यायरः श्चेवः यं भीवः तुः ळवसा छे । वर वाशुरसा ने। श्वेवः श्चीः न्याया वीरः सः इसरा ग्री विवादया न्यो वर्त्त्य ग्री से विष्याया परि के या ना विष्या पर होत्रपाते स्थमा अवरा येत्र त्यों ना सृष्ठे र्स्स्या याते राष्ट्र यात्र यात्र र्से या कवारावावर इसरायदर विरावि कुरा है निस्या वर वर्षे वर्षा वादरा दे अक्षिना य वे अ ग्रुप्तर त्यूर न शुर् दे दे अक्षिन य त्य शुर् न् शे भ्रे प निवर् नुष्रे विष्या ग्रम्भारे सारे सारे सारा स्रुवारा ग्रमा ग्रमा ग्रमा स्रुवारा ग्रमा ग्रमा ग्रमा स्रुवारा ग्रमा ग्रम ग्रमा ग्रमा ग्रम ग्रमा ग्रमा ग्रमा ग्रमा ग्रम ग्रम ग्रमा ग्रम र् केंग्य से त्रुट नर म्यूर्य हो वर्ष न स्रुट स्थान स्रुट स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ग्रीशन्तो प्रत्व ग्रीन्वेव ग्रुश्मित हो स्ट्रिंट ग्रुश्म प्रदेश हेव ग्री प्रस्थ यदेर-श्रुवाःकवाशःश्रुवेः कुट्राययदः द्वो वदेः श्रेश्रश्राशः श्रुशः याश्ररः दुः श्चे नवे कुत कर पर नश्चर राष्ट्र र दि

देशव्यावस्थान्त्रीयाधीत्वाचहित्रान्ते स्थान्य स्थ्रीव्या स्थ्रीत्य स्थ्रा स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्रीत्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्रीत्य स्थ्य स्य स्थ्य स

ने अवस्थ विवास के पश्चिम मी निर्मेद ग्रुअ समा निर्मा निर्मा स्थि । वयारवे प्रयायया ने वे प्रायायया ही या ने प्रायायया है हि वे वे दि है । र्बेन्यासुस्रायावियाः भिष्याधितायायासुरा धरान्यो प्रभेरार्थे हिंप्यासु द्यायश्वराद्याराद्यो वर्षा स्थात्यावया वाद्यशावदायां वि रदारे गर्हेर्स्य केत्र से विगानवेद क्षे अवद विगान क्ष्मा दर्गे शास पेंद्र देखा वुरा राष्ट्रेवाळरासूनारुष्ट्रनासानवाळेष्ट्रिक्साहेनाधिवाससारेसे वर्तेर्रे अद्याक्त्र्याची न्यून्यात्र्यात्या स्वाधियाया निवर्तेराधिताया गर्हेर-न-ने-ननो-वर्त्त्र-श्री-श्रे-विद्या-वर्त्त-धित-र्ते-मश्रुर। ने-श्र-त्वे-महर इयस'नसम्बन्धः मुन्देन सेसमाउद्गु प्यत्र द्वासमासी सुन्देन इस्रास्य गुरु द्रस्य मारायदा द्रमा भ्रमायर स्टामी सेमायस प्रमुस्य द्रि म्यायाक्ष्यायह्रम्भययायान्याः स्टार्ट्यायायाः द्वासी पर्वायाः स् र्श्वेट्टाने र्श्वेच न्त्रुःय र्श्वेच रहेवा

न्तुन्यः र्र्त्वे ह्रिं त्यो न्यूयन्तुः यः हेर्याहेश्यः यहर्ष्यः हो। देः यः ह्याः वर्त्वे र्यः वर्त्वे व्यायो श्रात्वे व्याये व्याय

नग्रेश्यदेवन्न नश्यानदेष्ट्वेर्न्, नश्चेन्या श्चन्ते ग्रीयद्वेषाया र्शेग्रायन्त्यानात्रमाग्रुद्यायात्रुर्यायात्रुर्यात्र्यात्रीयाः विद्यान्तेयाः भे केंग्। पर नेगा प केव मेंदि प्यम श्री ग्वर पर समुव पदे प्रमान पर विष्ठेर से विषाद्वेस सम्बा रह वी खुर शी वह व श्रीव तु व श्रीव ति वि वि क्रॅंट प्पॅर पर वाश्रुर अप्य अप्रेर्प वार्थित वार्य वार्थित वार्य वार्थित वार्थित वार्थित वार्थित वार्थित वार् ने न्वान् भ्रावन् वेदावी या वसूया दया या दित्या या दे किया ग्रीया यदा नन्ग्राने श्चेत्र्येयायायमें दायर हुदे श्वयायाद्या स्टाया वरा ने दिस्या शुः श्रेर निवे श्रे व पार्रे इस्र र दा निर त्या नुर निवे श्रे व पिर निवा में इस्रयायायदायान्ययास्य जुटे स्रुस्य सन्दा स्ट वी स्रुर्य स्ट्री मुर्भाद्रामुद्रास्त्रास्रेस्राद्रम्यात्रस्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्या शेस्रशास्त्र वस्त्रशास्त्र वा भीता प्रशास्त देवा निष्य वि निष्य भीता वि निष्य वि नि शेशशास्त्र मुश्रा ही देव दु सुत्र से दु प्रदेश हु द स्त्र न सूत्र परि ही द सुरा वर्रे मार्शे सूसर् राजवयन र हार्दे।

ने त्यून विका निका ने त्र व्याप्त के त्या के ना विका निका निका के निका निका के निका निका निका निका के निका के

नर्झें अरु प्रशास्त्र अप्यादा कं न्दर वहे मिर्देव ही मिर्देद प्रान्दर से सूर न न्दर र्राने हें व से र्राय के र से र राय से ग्राय सुर व रा हुं र व रा हैं हैं र खेर से वर्देन्या बुद्रान्त वहिना हेन् छी। निस्र सान निर्मा नी हे सामा वदि । सुन्तु हुद्रा नदे सेसरा उदासर में पेंदासरा दे दसरा श्वेर में हे श्वेस द्वार नरा स् दे द्या वी हेश पर दे इस्र यन्या व त्र्य पर् स्य र कुर हेया सूस्र र न्यस्य रॅर-वुरुप्रस्थारे विवादिर वार्रे दा की प्रकेर ना सेवारा स्वाप्तर रदानी हिंदा सेद्रा केरा सेदा पा सुर तु तु द्वादा दे ते हुँ दा सेदा ही। पेंदा हुदा वर्चरायदुःर्राक्ष्रभाते। स्राक्षेत्राद्याद्याद्यात्रात्रात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या नः सून् र्रे र्रे र हें न पदे ने य र न ग्रीय र ग्री र व य मीर्य य य र र ग्री क्रिंत्रस्थायायात्याक्यायात्त्रस्थरायद्यायस्य स्वाकेर्त्रे सूराद्योः र्श्वेरायासायन्यत्रप्रेत्रायन्यद्रायद्वेते त्ररान्यासेन्यायेरान्यान्या यदे छे देव सेंद्र स्ट्रा द्वा हैया याद धर देव सा ने के सेंद्र के सेंद्र के सेंद्र के सेंद्र के सेंद्र के सेंद्र नविवागधेरान्या हिरानाया ननेवायदेगाव्यासुरान्यव्याहरान्यव्याहे न्नो र्श्वे र व्यावन र केर र र र नी सेससाय महनास प्रवे के कें कें तर साम है। क्षरः भ्रे ने अप्याधीय दें। । देवे के सु अप्याया श्रेया न भ्राया श्राया न केटा न्यासी भार्ते त्यमा हु बेदाय सूर हेंदा सेंट्य देया बेदाय दे हिटा ग्री याहेत्रसं त्यन्त्रभानस्रेत्रहेत् स्याप्तर्याहेत् यो त्रात्र व्याप्त वर्षे वर्षे वर्रे भ्रः तुवे मान्द्र सः ने अ पर्र द्वे त पर्र न स्ट्र प्रश्र से स्र अ माणे द र्

वर्ते नियन विया नियन के के मान्य के स्था नियन विया है। सर्वेद्रावस्य द्वेवायवे पावसासु हुससायेव हो द्वार्ये मार्ने व स्वार्य न्नो क्वें र मान्य थ प्यन् क्वें छेन् य वे प्यहेग हेव छे । पर्म माया क्यें मा पित्रदर्त् व्यूरावा खेरावस्या वेरावा दे व्यूरावा धेरा विवास वरा वाहेरा या ग्रामा विश्वास्त्री स्ट्रिके हे मेर ग्राम स्ट्रिक स ळे इसप्पानिक्षामे प्रियाम्य इसप्पर्मा स्थापन्य स्थापन्य स्थित स्थितः यनहरम्बर्भा हेर्नायराग्चीः स्नान्या वस्य रहतः दे निविदः दः द्वारे विद्यानीया विवासम्यास्य न्वेर्यास्य न्वेर्यास्य न्वेर्यम् श्री न्यास्य स्य स्थायः नहनाशाही व्हारक्ष्याची श्रेस्यान्दात्वावाया वृद्दावर्गाया व्हारावर्गाया यद्यःचर्यारःविदःच-१वायःयःच्यायःच्येयःदेःसुःतुःश्चेःद्युदःचरःचुःचदेःह्येः नश्चेत्। साववायायत्वात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रश्चेस्रात्रात्रेश्चेस्राग्धात्रात्रात्रेत्रात्रात्रात्रात्रात्र श्रुय:५:नश्रय:स्।

ते त्यदः क्रॅं से दश्यायदश्य अप्रवादश्य प्रावहित्य विष्य क्रें से दश्य प्रावहित्य विषय क्रिया क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया विषय क्रिया क्रिया क्रिया विषय क्रिया क्र

ग्रम्भःशुःवन्भःमःर्नेमःन्दःध्यःवेभःस्दःग्रीभःस्दःवःग्रोबेद्भःनर्द्धृदःद्दः केंशन्दरत्यायान चुरावर्गान सुः साद्दास्य केंशावरे वर्षे वेनाग्रद्य नःवर्ने निवेद्र-तुं हो द्राया हिंद्र-वर्द्या स्थान् स्टर्म स्टर्म स्टर्म स्टर्म स्टर्म स्टर्म स्टर्म स्टर्म स् ळॅर नडर पर्केर न भवाया हु न र वो नदे न भेया वहेत न सूत ही सुवा वर्देन् प्रवे क्वें कें ग्रम्भे अप्यान धुना नाष्या प्रथानार्षेत् प्रावनेत क्वेत न्ववःग्राःकुषःगशुर्यात्रम्यः वर्षः प्रदेशः वर्षः प्रदः वर्षः गर्डेट्रा हेंब्रसेंट्रश्यायास्ट्रास्त्रयायास्ट्रास्त्रयास्त्रियास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास्त्रस्यास् য়য়ৢৼয়৻য়য়৻য়ৢয়৻য়ড়৾য়ৼয়য়৻য়য়ৢয়৻য়ড়য়৻য়য়য়৻য়য়য়৻য়য়ৢয়ৼৼ৻ড়৻য়ৄৢ৾৽য়৻ नश्चेत्रप्रस्मह्त्रे । गहेश्ये ग्राट्यूट्य वेद्या व <u> ५८.जूटश.श्रें २.ज.शूचशास्त्रश्रंशक्त्रां वाशास्त्रीयशास्त्रीयशास्त्राश्रं वाशास्त्राश्रं वाशास्त्र वाशास वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाश</u> धर-दे-द्रमाञ्च-अप्यु-त्र-नेयाध-द्र-पाव्य-प्याध्य-प्रदे-व्यव्य-श्रु-द्रम्यू-र ठा नेव.धे.भेर.टे.प्या.वश.तज्ञ्.यक्ष.तश्चर.श.चेर.वतर.टे.त्तर.क्ष. क्षु-तुर-लेश-प-दि-ग्वित-ग्री-मुद्द-प-त्रस्य राउद्ग्युद-पद्दा-भू वश्वायासेन्यर मुद्री।

न्त्रः प्रत्याः इतः वर्षे रः वर्षे प्रवर्षे प्रयोग्याः वर्षे प्रयोग्याः वर्याः वर्षे प्रयोग्याः वर्याः वर्याः वर् प्रयोग्याः वर्याः वर्याः वर्याः वर्याः वर्याः वर्याः वर्याः व

र्श्वे द्रायाद्रवा स्ट्रिया हेवायाद्रया ग्राया प्याप्त स्ट्रा होद्रायाद्रया याद्रया स्वर वह्रमान्यः विमार्देरः वर्मामन्यः वर्धेरः यः वर्धेरः यं वे स्वेतः तुनामा । दे खः न्वीर्यात्रयार्श्वरायाश्चर्यायाहे उत्राने हिन् ग्रीयान्वी श्वेराह्ययाया श्वर म्रोस्प्रतृत्यायायमासेमायारास्यायम्यम्यायास्त्रम् केंत्राम् त्राध्यास्यस्य उंसप्पर हित्र क्वत्र साम्य विकासमान उत्तर्त से स्वापन हिता सित हैं। वटार्सेन्सायायम्प्रिं रासे दुटानदे नस्त्रन विस्रयान रहतानर सहित्ते । यहा इट वर रे मुर्द थे कर हेट व्यादय र दर राय र वर्षे हैं र वा या देंट सूसार् द्वो र्से र नर्ने या नरे से र्से द यदि वे रहस सामे व र शे पावद सामे सा याधीवाने। वर्शेत्राया श्रूप्ताने सुष्यळवात् राश्रुष्टा वर्शेषा वरा ขิงเผลุราจารุราสงาศัจงาขิงาสัรงานาจัญจาสุรานราตูราสาพรา यथा वर्चेर स्ट्रान्य अर्थे न्यय है भू तु विषा द्वार व पर पार्टेर खेत गिहेशःग्रेःश्चें दशःग्रदः द्ध्वःग्रेःशेश्वरादेवः सेतः देवः विषाविः मेुदः विदरः नश्चरानानगदान्ययाग्चीप्रयाभात्त्रययाग्चीत्रयाभ्यान्याभ्यान्यान्या नर्ने अः श्रें तः प्राप्ताः पुरक्ते अपन्त नुप्ता विश्वेष्ठ अर्थाः स्वर्षाः विष्या विश्वेष्ठ विश् ८८ से नि स्रुव ५८ से स्रुव ५८ । । निर्दे ५ सूर हे या निर्दे वा या हे वा के स नक्तुन्दी। नन्नानी धेन्धुय सेन्यन्सर्मी स्रूस्य सर्दिन् हे यान्युन्यः नवितः र्से अर्मर्स्य रेअर्मायय स्मार्मित अधित संवेश स्मेरि

ने निवादी ते अप्येता त्यका ग्रीत्व प्राप्त के अप्येता के अप्याप्त के अप्याप्त

वेश्वाराची ह्र्याच्यात्म स्ट्रीयात्म विष्यात्म विषयात्म विषयात्म

धर-दगाय बःसर-क्रुवःगर्डेदःधर-दगायःवस्य दर-र्धेःवसःश्रुसःधन्दर्भः विवासरागुरुषायानगाना है। श्रुनागु। नरानु गाहेव सेवि । स्विरुषान से नु ब्रूट्यःश्चेत्रःयःवयाःश्चेतःदव्देरःदेशःयवियाःसरःदव्ररःदर्धस्याःश्चेतःहेः वर्तेन'दर्गे राजी हें दे से दूर राष्ट्री राजा वर्गा या या या या स्ट के दे वरे वर विद द्धवासेत्राधेन् नेन् ग्रीसाम्बर्धसायनेनसामरास्य स्वादेत्रास्य स्वादेत्रा कुरुवरुष्विनायः निवाहानगवानया स्वाहार्वेवार्ये स्वाहित्या क्षेत्राचित्र के नन्द्रन्तेशः द्वेनशः केन् नभेन्ने ने देन सेन्यः भेन्यः से प्रम् भ्रुभावतराने सामगायर्गे गाउं मुना गुर्दे। । ने सु गुर्देराना या ने गुभावसा ग्व-एर्वेव-बेंद्रशायदेर्वेश-द्येग्य-इव्य-इव्य-इव्य-क्रुंव-र्-च्य-वेद-<u> श्रम् नुम्या स्थराय पर्वे म्यो स्थरा मुन्य वित्र कम् भी ने म्यो स्थर</u> स्रेस्रसायान्यम् निस्ति निस्ति विस्ति न्ना वेशयदी क्रिंशसूनयदे कुरेगिर्डें ने न्संसन्सम्पनः ८८। रट.गे.मैं.जम.में.२८.यम.क्रम.क्ष्य.यविष.२.४मम.में.जूटम.म. ८८। क्रिंशञ्चरायायाद्वीयायदेशस्त्रमुदार्स्स्यायास्ने देवासुसारमः यः क्ट न्द्र न्वायः न स्र्रीयः विटा वाववः ययदः ने वाशुयः क्ट न नः स्रीवः ययः गन्ना रम्पाने ग्रासुसासार्कम् न प्रमिन् मेन मेन स्थानिस्य स्थानिस् मुदेगिर्दे ने ग्रियासार्क्षात्रमार्क्ष्यासार्क्ष्यासार्या मुद्दानासार्दे पित्रम्यादे क्रम्भारे क्षेट्र हे स्रुम्भार् प्रमामा दे क्रम्भारी कु प्रमास्य साम्बद्ध प्रमास्य हेशरा वस्त्र राज्य वा त्या क्षेत्र त्र राजे प्राप्त क्षेत्र वा स्वाप्त क्षेत्र विष्ट राज्य विष्ट र ठेगासूसर् दुःवे वारा द्राया राज्या दे द्राया ने द्राया ने वार्या कुते गर्डे में लेश माने वेगाम केन में ते क्वें माने कुन ला के नवसास र्वेर-नरः क्रेंब्र-मदे-न्यो नदे-न-नेय-पाहेब्र-विया-य-रेय-प्र-रया-यय-प्रथा नदे ने रामहेत न्याम न्यास न्या यह या यह स्या में कि यय शुराय मुहान थी। यव प्रमा ५५ माया सेवासा प्रदेश से वसा से प्रसास स्वाप्त विदान माया प्रदेश से प्रसास स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व श्चनःपरे श्चें न्या व्ययाये व श्वेर में र हो द पा विवादर। क्वें श्वेर परे श्वें या मं या देशासन द्वीं शालीन या ना सार्कन वि से सारी वु सदी साम्रव में व र्रेन्द्रेशः वेत्रयम् व्यापाने प्रवास्य व्यापाने व्यापाने विश्वास्य विश्वास् येन्यम्यान्यस्य नर्स्या वेयायते। वेनायकेन्येने पेन्त्रम्यस्य उट्-मुःसदे-स्राम्यायान्यायम्यासमाम्यदेनस्यान्यम्यम्। ५८। नन्नाम्नव्यस्थरमहेदेः ह्ये स्विन् हेन् हो हे रामेना हिन् हो हो स्विन् हो स्विन् हो स्विन् हो स्विन् हो स्व धेव-य-दे-वर्श्वेय-य-य-र्श्वे-य-व्यय-य-येद-य-द्रम्। रद-वीय-विय-सुद्रयः यदे र्श्वेय पाइयय ग्री प्रस्ता ग्रुप्त से रहेत्य स्तर्भय स्तर सुर पा से सि अप्याद्यान्त्रम् अप्रकारम् विष्येत्र प्रवादायान्य साम्यान्त्रम् । अत्याद्यान्य साम्यान्य साम्यान्य साम्यान्य स ब्रूरापेरिक्स्स्याग्राटाष्ट्रस्यायरावश्चराया वराद्राचीर्वायार्थेवासायरी वर्देन्-सः सम्वरःन्याः वर्द्धाः विदः वित्रः वित्रः सव्यः सव्यः सेन् ः नुः स्त्रे । वर्षाः विषः दक्षेत्राश्चात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्राध्यात्र क्षेत्राध्यात्र क्षेत्राध्यात्र क्षेत्र क्

हें.चृतुःचितायया व्याःक्षेत्रःगुःलूयःधेतःकुराश्चेत्राव्ययः उद्वास्यायानहेवाव्यास्त्रीपाया हिदार्वेदायात्वास्यायात्रायात्वात्याया नेशायश्राभेन्यादशःभ्रेषाश्रुन्ति। भ्रिःसरःसः वनःर्मेषाश्रास्तः वर्त्रेग्रायाम् ने त्यान्या सूरान्दरम् स्थान होत् हित्या सूरार्ये दे त्यान विदा न्ययः अः न बुदः वयः दवः वयः नुः नरः यदेः श्वेः ययः नशुद्य। वर्ते यः देवः से के वित्राम् के वित्रम् के वित्रम् के वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् मया मिकटाई केयाये गुराद्या विंतरो न्नी नम्रे दारी पाक नाम् वेरःवर्गःक्ष्रमःविर्यःविर्याद्यायःक्षेर्यभूरःवर्या वर्ग्वीर्देःवाश्चरमःवर् हिरार्चेद्रायम् श्रेषानु नवे द्वो प्द्तु इसमा ग्रीमानशु नवे से रार्श्वेदा चित्रासःस्वात्रास्त्रास्त्रास्त्राच्या वदेःद्वःषीतः चेत्रः ताया विः विः वात्रस्यः वः ग्रेन्यते वन न्यान्य म्यून्य स्या वि भ्रेन्य वित्यहेम्य हे खूरा विया रटावराज्ञाव्याचेराचेर्याची क्षेत्राचा गुराची देवा हुनस्टाय्या कुयावा वस्रभारुन्याव्यायाक्षेत्र वस्रभाषात्रस्रभारुन्यन्योगा न्वीयावास्ता नःक्षास्यासे सुर्गान्यः वर्षेवायास्य वर्षेवायास्य वियासस श्चित्रायमयाविषा मिर्हेरासे अप्टेरामायदे स्वतः खुंतान्षा श्वरान्तान्त्रा गुर्भा बेन्यस्य व्यवस्य धेवा वेवा केव्य क्री केंस वसस्य उन् में वासन्दर वर्षे वास अ.नेश.रा.ज.यम्रेय.यश्वश्वश्वार.यश्चर.यर.यश्चरश्वश्वार्थायः गुरुपायायाकेरी । भ्रिक्षेट्रायाक्षेप्रयायायाक्ष्ययायाके प्रदेखाक्षेप्रयम् ग्रु श्रुयामार्चयाम् अभिया यदार्थेदान्माहेशान्येग्यानययययात्या वह्रमान्यः विमान्ने या नः क्षान्यः में क्षेत्रं के मान्ये वहें मान्या मनुयायाः नहेन्न्, वह्ना अनहेन् ग्रम् कुस्रा केन् होन् से वर्नेन्य इस्यान्ना वर्षे बेर्'यश्यक्र'यव्या र्गे क्वेंर्यार'ययर'र्गायविर'क्वेंप्वविर'र्र्अ धेरसम्मिन्यः विवादर्वेषा दाक्ष्यः साधेन सम्से समा सुन्यः स्था व्यान्नो र्श्वे र उदा वन रे वेन र्श्वे व्यापाने प्यमावियायह्या थू तु प्रकर र्राने होत्रायमार्सेत्याराधरामे व्याप्तान्या । स्टानीमार्देश्वर विश्वास्यायदे वसूर्यायायाया वित्याद्यस्य । से से स्ट्रास्य । বাপদ,র্রুবাপ,গ্রী,বর্ষব,ন,বাদ,বিপ,প্রদেপ,নান্ত,র্রুপ,খ্রিপপ,রেপ,শ্রম, হুবা, ग्रम्से माधेयानम् सुमान्में राते। नासु सूसामानमानस स्वास्त्रा स्वास्त्रा स्वास्त्रा स्वास्त्रा स्वास्त्रा स्वास र्'श्रेश्वरायाद्मस्रसायाळ्याच्यासायाराधाराधारायां साम्याया मेन्यासुसन्दर्ध्वरम्राच्च वेसामान्ने सुसाम्याधिन्यासुसान्यो नान्दर श्चित्रयानरान्त्रेत्रास्त्रे स्थान्त्रास्त्रेत्वनर्थात्रेत्रान्त्रास्त्रेत्रास्त्र न्वो नवे यश्याय नर्गीया नवा भुन्य पर्मे न्द्र हैं न्द्रे वे के वा वि हैं न ५.५५ूँ व.स.२८.५ .चबुव.चान्यम् वास्तर्थः सक्ष्यं २८.चा ब्रह्मः स्वास्तर्थः स्वास्तर्यः स्वास्तर्थः स्वास्तर्थः स्वास्तर्थः स्वास्तर्थः स्वास्तर्यः स्वास्तर्थः स्वास्तर्थः स्वास्तर्थः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वस्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वास्तर्यः स्वस

यम् त्राचा स्थान्य स्थान्य स्थान्त । स्याप्त स्थान्य स्थान्य

ने प्यटः ने अः श्रेट प्यश्रा बरः रा निवा पार्या प्यश्वा प्यश्वी । वाववः

ग्रीअःग्रेंपायः पश्चीरः हे प्यटः यस्त्रेयः यस्य वियापाशुरयः पः सूर् विपायः बेर्'रा'त्रश'विस्रश'विस्रुस'विर्मर'वर्षिर'त्रश'सूव्व'वस्य'हे स्रेर्'ठेवा' श्चिर्यादर्वे वारावया याववा श्चिरास्य प्रतास्य स्वर्याः नश्यान् नड्यामा अवाग्री रामी अध्या हिंदा अप्यापि न न न नि यदी त्यश्राचर प्रचार चित्रायार वार वारा वात्र वी श्राञ्च वाश्या श्राच्या वा व्य त्रश्चरःयःवर्देत्रःयःक्ष्ररःसरःक्षेत्रःवर्विःववेःवात्रश्चात्रशःवर्देतःव्यवशःवारः न्वेशनह्रवःर्रेशप्पटःद्यापदेःयस्यःयःव्यावस्य वस्य स्र न्य हो द्र द्र्ये सः श्री ने निव्न न् चेना पाके न रेवि सायसारे साम्री सामर्मे न प्रतर र रामी से ससा वदे वनव विगानी वसुवानी अनम् दिन्द्रमा वर्षा यश्रिद्यःयःस्ट्रिंसःर्दे ।

त्यात्रात्त्रेत्रात्त्र्भ्वयात्रात्त्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

यदर से द रावे : भूवरा से : श्रेद रा क्षु तु र खूट वर्षा वर्षा ता सूँ व रावे : भूवर्षा येद्रायरावश्यूरार्से ।द्रारेशाम्बेर्डार्से व्रथाम्बेर्या अ'Àन'रा'त्रश'सुश'हे'स्रेन'त्रूटश'रा'व्यथा'उन'र्नेत'सेन'त्'र्शेट'वर्गान' रेश ग्री कें प्दी प्य दें त्री पार्टें कें विवा श्रुव द्वीं श्रायम प्दिवा श्री कें वरेदेरेदेन्यमार्केभाग्वे केंभायानं निर्भुनाम् केभायमार्भुनामार्थे। म्नुन भगविष्ठ भग ग्रह्म कुन ग्री सेस्र म्रेहिन न न किन के स्राप्त मिन मी मान्ससारमा सम्राध्यस्य मान्य प्राप्त निया । स्वी मान्य । कुःर्ते नाशुस्रायदेशाग्री नान्स्रसाम्बान्धन सम्राज्य स्वयाकाने । न्त्रान्त्र्रास्त्रास्याम्यान्यान्यान्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्य यव रगाय महेव वया सुर रहंग्या श्रार्श्वे र न पार्टी वर् पर्दे वे वर रहे के नमार्रे में में इसमा क्रममा सुरमें निमान में मार्के सुर खुर र्डसप्देने पर्रे दिसे निर्मे पाये दिन विस्था में स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन र्ये नसू न प्रश्ना शुर्या प्रम्य वाश्वर स्व की से दि से वि मे वा पा के व रिदे यं या ग्री देया पाळ दाया या रे राजाया है या न या या श्री या ग्री वर्षायन दे।

देःलटः ईवः अट्यायः श्रेटः वस्य स्थायः अद्याद्य स्थायः अव्याद्य स्थायः अद्याद्य स्थायः अद्याद्य स्थायः अद्याद्य दः स्टः क्रुट् हेवः अट्यायः अद्याद्य स्थायः अद्याद्य स्थायः अद्याद्य स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः विगार्दिर हेत के नशा निव रादे ग्वाव शासा या का कंदा या श्वाप रादे रा ब्रॅट्स्यक्षे क्रिंश्च्रियायदेश्यायक्षात्रीयव्यस्तरम्यादर्वायर् याहेत् क्रिंट्र नः वः श्रेवाश्वः प्रवेष्ट्र गवः श्रुट्र नर्वेट्र पः वेष्टे नर्वेट्र पः वेष्टियाः वेष्ट केंश्राम्यान्याञ्चनायायाधेनार्श्चेतान्दायन्त्रायायाधेन्तेता वे । विश्वान्ययाञ्चियानाश्वयानी श्वीत्याक्षेत्रानी में स्थानिया हेता ग्री:नदे:नदे:र्रे:ग्रुट:नदे:र्रे:ग्रुट:वें:वेंगार्गे । श्वेग:य:ग्रेट:य:व:श्वेट:हे:शे: क्षें या पर के या ही रादगाया हुन हो दाया खेटा हे क्षें या पति खेटा हे की किया वे । मराया क्षेत्रा मिरो के के त्या की क्षेत्र माना के त्य के वनशयार्श्वेरिन्दिन केरा शेस्र श्री स्वीता में विकित्त वर्ष भी निर्देश की निर्वेश की निर्देश की निर् न्वो निया वात्र निर्मे अस्तर न्वात्य स्वानस्य नुराद निवाद निर्मे अस वे हे शर्शकी रूट में किया है में किया हैया में सूटशावशास में या पार हैया क्रयश्राञ्चरारे । दि द्यायश्याव्य इयशर्वे श्राया वर्षे द्रायी वर्षे वार्यो र्देव-विव-तुःग्रायायायम्।वर्द्देद्दाव-भ्रो-र्वे-स्वयःक्षेम-त्ययःह्व-स्वरे-द्वरःगीयः वशस्यानस्यानर्षित्सी मने निर्मित् होत् हेरा से वसन्दर्मा वर्षान-निम्निकेतः श्चित्रिन स्टिन्निक्षित्र निम्निक्षित्र विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास वेद्रायायात्रेवासळवागुवातुन्यायावाचे प्यान्या देखासूना वस्याद्रा

धेर्भे नरे न सेर्पर र्वाय बिर हैं नर होरा वाब्व हसस्य भे हे हैं स् कें क्रूंन या वें या पाय प्रतान केंद्र के क्रूंन या वेंद्र केंद्र के क्रूंन या वेंद्र के क्रूंन या वेंद्र के क केर खेंवानवे क्वरों प्राप्त के वहेंवे जुन रे वार वा निक्र मायानभूयापदाभ्री नर्भेदान्दास्या नस्या केसा केरा नेदाना गुत्रे ही। भ्राचित् । नेरायह्यास्त्राची वेरायादी क्रियायादेशालेरासास्रीयायरा रेशायगायगाव्याच्या विष्या ही त्यवा ही प्राप्या स्था ही प्राप्या हो प्राप्या हो प्राप्या हो प्राप्या हो प्राप्य वेत् रेशायमयत्मे श्रूरिः वेत्यये यत् व्यापं व्यापद् शे वेत्यर हैं दिर वश्यदेवायने यद्भी होत्यर हे वाहेवा हु कुव शे वकत्यर हैं हैं त नर्दे। दिया केंद्र दुर्भुद्रा वेश या दे। क्वें भुद्र हेद्र या क्वें येदश नश्चर दश र्श्वेनश्यादेवा हुर्श्वेर्ट्स । दक्षिक्षेश्वाय देश नेशयादेट्स या न्गॅ्व वित्र नेवे वत्व राग्य वेवाय केव सेवे क्वें त्वने वृत्य वेया रास्ट्रीट वर्गा सन्दर्भ वें नामा श्रीन सवद सुन्तु नास्ट्री मान्त्र श्री स्थान स्थान वयावर्डेरयाने क्वें श्वेंरावरे वाकेगा श्वेया र वनराया नेवा तुर्गेव के।

नेश्वात्ति त्याक्षेत्राञ्ची त्याप्त वित्या प्रत्य त्या क्षेत्र त्या त्या क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या त्या क्षेत्र त्या त्या क्षेत्र त्या

नगदः कुन्दे अः भेन्या दिने दिन्य निम्या स्थानि । यम् वर्दे द्रास्यानायापरास्यात्रान्यं व्यानाराम्युसारहें साम्ये निनेशामित्रेत्रामान्दासम्यात्रशाक्ष्यायदेविःसत्राम्बनामान्दादे क्ष्र-सः विनः पः इस्र सः ग्री विनः परः गुतः ग्री सेना यः सूरः नः क्ष्ररः पीतः पराः कुलाने न्या खेया या सम्प्रस्था ने खा प्या प्रमुखे वि सम् न्या या सम् न्वेव सर हे गडिग हु श्रुव पदे हिन् सर् क्रिंव ही न्या पर्वे त्यदे ह्या बर-८८-८-१५४-भ्रेग-७४-५-५५-५६-४४-३८-४४४-४-१५८-५५-५५-५५ श्र.म्.मूर्टायरे या क्रेना मेया र् । चुरा द्रा में या या में प्राचा है। प्राचा र । नश्चेत्रवर्षायदे त्यरामावदार् मारामेशा ग्राटानश्चरार्थे श्वारा विमा ग्रादे विर्मरहेंग्नर्धेन्यहिश्राधिश्वराचराचरा वेश्वराविषान्ता वहेंग्नर्धेन गहेशाग्रीशावरावराग्रा वेशासक्ष्याक्षातरायाहेशावगुरावश सक्ष्या हें दार्शे द्या यहित शुराया ह्या या विष्या से से भी में ना से तुरासूदा ना दा हें वर्से द्या श्रुद्या श्रुया त्र्या पार्टे दासे ग्रुप्त श्रुप्त श्रूप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रूप्त श्रुप्त श्रुप्त श्रूप्त श्रूप यात्राहें त्राह्म अर्दे त्यू राष्ट्री अरे भ्रे विया तुर्यह्या द्ये अर्थिया हें त र्बेट्यासर्वित्तुरातुःसे क्षेण्याराहेवार्वेद्याद्यवास्त्रेयास्त्रात्याद्वेदास्त्रात्याद्वेदास्त्रात्याद्वेदास् यदे खुष इसमा ने मायम गुमाया दे प्राप्त होते पहेन समा हेन प्राप्त होना समा माया हैन समा होना समा समा समा समा समा र्बेट्यः क्ट्रेंट्यायायवर्यः केर्युट्याविषाप्रों याची देख्राया गुराव्या

श्रम्यायम् श्रम्यार्थः श्रुयायदे यदेन्यदे मदे । स्रुवा श्रीया न्युया न्या स्रम् नरत्यूरविटा वेगायळे द्रिते भूनशादिर्शं भारत्युर्शं या अर्थे नामर् नर्डे अ'अ'र्चे न'मर'र्'र्हे द'र्बे र अ'स्यान्य अ'र्बे र'से 'त्या प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प क्रॅंब-ब्राट्स-श्र-अ-ब्राव्हें स्वादी द्वार क्रिया तु : श्रुप्त स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य इसस्य मुग्रस्थिय वियाविस्य स्था हिंगा न स्थित मिर्मा किया मिर्मा वेशन्ति। र्रे.श्रूर्वात्तिःश्रूयामवे के रात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति वात्ति व इटरायदे देव सेटराइसरा हु से हो दूर हैं हैं दार्स सराया वर द र्शेट्यार्श्वेट्याय्याय्याः हेन्या हेट्या हेन्याया हिनाया प्राप्त हिनाया प्राप्त स्थित स्थारी ह्य-प्रमन्त्री र्देव श्री में में म्याय में या देखा पर्वेद प्राय में प्राय के प्राय के प्राय के प्राय के प्राय न्धिन्यमे ।धुरायानर्स्या विरायनी यर्स्यायान्यनी देवार्षेन्या ५८। २नेवःसदेःगवस्यःशुःश्चनःसःधुवःरेटःग्रुयःसः५८। यावयःसः५८ः नदुन्यःश्रेम्राराणुः ध्रुश्रासे नुन्यः स्रो नन्याः प्रशान्त्रम् ने शः स्र्रियः प षाध्यभाग्नास्यादे । प्रमारे प्रवेदास्य द्विपान्न स्थान । निवरहरविद्यार है। यह वी के दिस्त में वी का के निवर के ब्र-पद्मेशःग्रीः क्षे : इस्रश्रायः यद्याः द्वेतः यदे । यद्याः स्राक्षेतः यदे ।

सेससान्सान्नेतामरानसून्गुरान्दान्त्रं सेससाम्पेरानसान्निरानाकेसा यरम्। ।रेशक्षेत्यसेयाकेख्यायाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष्यावाक्ष धेव गशुर्। दे प्यर म्वव यश हे द स दे द दे से म गुर दें र न दे देशमासेन्दिन्। स्टामीसेस्यारेन्द्रम्यास्यास्यास्यास्यास्या वयाकुन्त्रह्त्वर्यर्व्यूर्यः रेन्व्यया रेन्व्यया न्गॅ्व सर्के गारे व रें रें के र हैं नगय है नवे व रवे या व श शु हु व रव रव है नश्चेत्रत्रान्त्वाची नश्चराया कें राची यात्र स्थ्री वा सें रानवी उसायकरा नदरःनवदःनहुरःनअअअःयःनविदःअःर्वेनःदःनन्गःगेअःअरअःकुअः রমমাত্র্বারম্বারমামান্ত্রার্কার্রার্র্রার্ক্রার্ক্রার্ক্রার্কর यहर्डिता वियापदे भ्रें ने वयया उर्ग्ता । येव सेंदि सेट र्वेट सेंद ग्रम्। ।मधिःस्वर्तुः ग्रुम्या इस्सा । वर्क्षः वस्याधिम्साधाः वर्षुम्सी । वेशमाशुरश्रायश् रदामी देशस्य सुन प्रदेशनगदाय हैं द्योय त्या स् न्वेव प्रवे म्व्या शुः हे म्विम् पुः श्रुच पः होन् पः त्र वर्षः नयः से न्या प्रशे शेर दे।

र्श्व में द्वा नियान म्हा स्था में में स्था मे स्था में स्था मे स्था में स

नरः कर्न् नुः शुरुषान् अप्याने निष्णु । यदाः शुरुष्ये विष्णु अप्याने स्थान र्गे विरायार्थेया वेयायादी स्टायापाववाग्रीयायीयरायरा र्सेन्य नुरु गुर दे त्य व्यवस्थ नु विद में विद से नु से में विद नुरु गुर ग्वित ग्री अ से ग्रेग् अ न रहर बर से ग्रु अ य ज में ग्रेंट से प्रवर्ग न प्रूर <u> चे</u>र्-स-दर्भ-स्ट-पाव्य-बस्थ-इर-स्ट-र्-द्वा-स्थ-में-वेट-से-चु-त-वर्रे नेतर्ताया केर्दे । दे प्यर विंदि विं के हो द सूम्राया क्या विवा वी मा कुर बर-रे-वि-प्यम्। प्यम्क्रेत-रम्बर्के से-तुरु-स-विम्विन्त्रान्या से-ब्रुन धरावश्चे वर्षास्य स्त्री मान्य के लेखारवा के सार्व हिरा है । ग्राट्स्य संस्थे द्रिया देश मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ द्राय मार्थ मार्थ है । केट:स्टायाम्बेट्रायाद्यास्यास्यास्यास्यादेशस्यात्रयाम्यास्य । इंटास्टायाम्बेट्रायाद्यास्य स्थान्यास्य । इव उव धेव विदा भ्रमा पर विदाहिक रहा द्वार से दार व भ्रमा है किया <u> द्राञ्चात्रः श्रीम् शान्ते अपदि त्र पर्वो दः श्री दः तु त्र म्या स्व शास्ता द्र प्र द्र द्र प्र स्व स्व स्व स</u> येद्रायम् क्रिंच प्येव्यया वद्याची याम्वर देव उव वदे क्रिंच्या महाद्वर बेर्यरत्रे क्षर होर्याया वर्षाची शतरे हुँ वायश्वर वरे वर्षा <u> चे</u>न्स्य त्र्याण्टाने त्यावितान्दान्द्र सेस्यानात्या स्नेन्त्र त्रुदास्रुसान् प्या

येन्द्रम्यायाक्ष्याक्ष्यात्रम्यायाक्ष्यात्त्रम्यात्त्रम्ययाः येन्द्रम्यायाक्ष्यात्त्रम्ययात्त्रम्ययात्त्रम्ययाः येन्द्रम्ययाक्ष्ययात्त्रम्ययात्त्रम्ययाः

कुन्। गैं वेंद्र वार्डद वर्ष राया द्या प्रमान्य के। देया के या ग्री वें की केंद्र मभा क्रेंशनन्नायहें त्र्यी महेत्र सेंस्यमें न विवादमें शमश्रासें। । यह र्गे विट क्रिंय या भी वा विट पारे वा वर्षेय द्वी या वा श्री है वि वा वा क्रूर द्रे'स'सेन्'स'यनेदे'क्स' वर्'न्र से समुद्र'स'विग्'तुर्'द्र सेंग्रिंग्र'नवर्'न्द्र शुःवर्विगाः धेवः पारः देवेः रमाः वः शेः १३वः यः विमाः दर्गे शः विश्वः यः श्रेषे देः पारः वर्षानाम्भारत्याम् । वर्षान्याम् । वर्षान्याम् । वर्षान्याम् । वर्षान्याम् । वर्षान्याम् । वर्षान्याम् । वर्षा सक्समायम्य न्या स्या त्या स्या निष्ठ सुर न निष्ठ न निष्ठ स्या निष्ठ स्या सुर स यान्त्रेत्रायरागुः न्त्रीयायाया भेःद्वित्रायात्रयाश्चिरायान्यायाया वनुन्नुन्स् कुःवनेन्यायास्याम्याम् वास्त्रिन्यस् नेन्यस् स्त्राने विष्यास्य ८८. इस.स.गीय. वस. ही ८.स.स. में सकेट. गशुअःग्रीअःनगदःनर्गेअःसह्दःद्याःदःस्वाःदःभ्रेतःस्वेःसदेःसर्हदः यावर्याक्षे म्या वर्षा वर्षे वे वर्षे वे वर्षे व वर्षे यायार्सेम्यायार्सेन्यारम्यायदेन्नरात्र्भूत्रकेम्यारासेम्यार्देन्यात्रा हें में हे दे नगद कु न है । असे न प्यादित है । इस प्याप्य विद्या है । विद्याप्य विद्या है । श्चन्यान्व वर्षा श्ची निविद्य निविद श्चन्थ्ये न्त्राच्या नेदेवन्त्र्याण्यान्त्रन्थेन्त्राव्येषाकेव्यस्थे नुप्त <u>५८। ५मे नर्त्रभी विंद्रद्रिय क्षेत्र अर्ड के नर नर्य यात्र यात्र यात्र स्वास्त्र स</u> इर्न्स्रिम्रायाने क्ष्र्रा होत् स्पर्म्स्र स्रुवान सुद्धान स्वासाने त्र नदे। वित्वत्त्र्यात्रव्यस्य वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वित्वत्यः वि

मुँग्रायाव्यक्तिकार्यात्राप्तिकार्यात्रायाः व्याप्तिकार्यात्राप्तिकार्याः न तृराञ्चन के गा तृ जुल्या बेराना रा नी से स्था मितर स्थाया हुनाया धरः शुरुष्यः व्यव्यार्भे व्येटः व्युत्रः द्वः प्राचे व्यतः द्वाः वर्षे व्यवः शुः वाः वः सुरः वेशम्बनार्केन्यरम्भन्ति सम्बर्धरम्भ । धिन्यस्य सम्बर्धाः विश्वास्ति क्रेतः इट वर में ल द्याय के द्याये इस वर्ग में के वर्ग कर वर्ग में वर्षायहं सन् सुया ग्रीयायमें विदागित्र वर्षाद्याय प्रति के पाञ्चा मे व स्ट्रा बर-रे-ल-पानिर-वर्थ-बिर्बाने-पानिव-बी-सर्मिप्यकुर-निर-इस्रप्यकुर-सूर क्रिंग्रार्श्वराने प्रतानिवन्य राधे ग्रासे। ने प्रताग्राय रामित्रे न्द्र-त्रशुर-विद-ध्रुवा-धर-वेविष्ठ-विद-तुःवा बद-ध-धिद-वेवि । द्वी-वदेः निक्रामहेदार्रे हें नाया ह्रेनिया मार्थर र ल्या निक्रिया निक्रे मार्थिया निक्रिया यम् सहर् द्वाराके अ हो नु साया सी यावी यो या साय ही रहा या या सी वि हर्ष्र्रसेर्युर्यायर्र्य्यर्वेयाय्याकेष्याये विष्येव्यय्यः वःकुर्-रवः अःस्र-अः यशः स्र-जाववः त्रस्य । उत्। सुर-र्-रह्णाः जासुर्। देशवः भ्राम्यान्यः प्रमान्यः विष्टाः स्ट्रान्यः विष्टाः स्ट्रान्यः विष्टाः स्ट्रान्यः स्

र्श्वे द्रायाः ह्रणाः श्रुवायाः द्राद्राची रश्चे द्रायाः श्रेषायाः र्हेन भूर के वर्धे र होता रेश र वा वहर य सुन्दर होत य पर होता सळ्द्राविराधुना हुःदनदासुयाद्या रेशाययानरार्देराहे गाव्दाद्या सूत्रा ठेवाः कें वाश्वास्त्रायम् विद्यानम् विवासी श्वास्त्र विवासी श्वास्त्र विद्यानी स्वास्त्र विवासी स्वासी स्वास रेशमान्यन्त्रो पर्वर्त्र प्रमाध्य क्षेत्र विष्य पर्वा प्रमाधित के बेर व्य विविष्यास्य स्वित्राचात्रा ने साविष्यास्य विविद्यास्य विविद्या स्वित्र स्वित्र विविद्या स्वित्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य यर हुः त्रीया अर्थे र स्रोदान र हुँ। यदे रहें दार् हो दाया प्रदे र दर यो अरदर या हुः यगरेटा मैंग्रायाव्यस्ययाग्रात्र्रें कुन्तद्वाये मेंत्र वेदातुके प्र कुत्रस्यावत्रद्राच्छे अद्भार्धे । व्याविद्यायस्य वात्रवा विद्या यर्द्रमायायाः विदानार्थेदः ये द्रान्य प्रान्ति दे । प्रान्य स्कृतः विस्रयाः विदेशा नश्री वाषीट नर्से से रूप्यो नदे नु न । केंद्र से द्या सदे देवे हे शाशुः भूदः हे गाः ग्रद्धार से प्यादार स्वर प्याद्धार भिदः वी से से स्वित र र जि नरः हेरित्द्रमायश्माश्रद्या देराके सादर्त्य हेशाया दी मान्नाया सन नन्ग्रास्यायाय्व व्यव से न न न व्ये न स्व स्व स्व से न से न स्व स्व स्व से न से न से स्व स्व स्व से से से से स नःश्रीष्राश्राश्चा ह्या हुनः कुनः तुः श्रेश्रयः नश्चीनः या स्राश्चीयः विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा खुर्यावेद्यार्भेट्राच्ययाउट्रायेययाउद्यायर्भेयाराधेदाराय। वटावेटा इतः चतः त्रेशः व्यापात्र विष्यात्र विष्यात्र विष्यात्र विषयः विषय

देशन्द्रद्यासर्गेद्यास्य स्थान्य स्थान्य स्था के त्रदेते स्थान्य स्था

र्नेन्न्युर्निन्ने अवग्रेश्याने देशके वित्यम् गुरुष्य वित्र मेन দিমঝরে ক্টে বের্ন বি শ্বুর প্রমান্তি মান্তির বিশ্বর মার্ন ক্রির ক্রের্ন বের্র বের মার্ন <u> पर्याप्त विवार्षे द्राप्त्या दे द्रवा वी हे या क्षेत्र हे प्रस्थ यह प्रदावी वी वाहे या</u> वहें त्र ग्री विंग ए श्लेव वर्ष मान्तर वस्य र उद द्वी श्ले र हस सम्द्राप्य द्वार प्र ख्र सर्जुर हेगा स्रुस र्गिर्म स्वेत श्वा राज्य हिया है सा सर्वेत । वर्षान्याक्षेत्रान्दान्रञ्जना गुःग्वित् स्रय्याययदाने नवित्र त्रेयायर गुर्दे अर्देरशमायाह्यार्गेकायमें विश्वान्यादी प्रिनेक्टरश्रम्भान्या র্ষন'গ্রী'নম'র্'নব্দা'নম'দাব্দ'দাউম'নই'গ্রহ'স্কুন'গ্রী'মীমম'মির'র্ম'স্টি' ५८:भू५:डेम्। ग्रूट: श्रें त्र्यायात्रम् ग्रुं विद्य क्रें वा वा ग्रूं वा ग्रूं वा ग्रूं वा ग्रूं वा ग्रूं शेशशरेत्रमें के परेदे में ग्राया हो र हुन मा विगा हुरे श्रुधा र पर्त्राया न्वाराज्या भ्राप्य स्वाराम्य स्वाराम्य स्वाराय स्वारा के स्वारा स न् नुराया मेन्द्रायदे न्दरायदे नुराके हें हें राधे क्रयरायर वर्षे दाये कें का <u> ५८.श्रेश्वराग्री, पश्चिरःश्रूरत्वे, पश्चिरःश्रूश्चर् पर्वे संस्थारः स्टर्</u> र्भेर्यायावरः भेवर्रिकेर्दे।

 यहेते : क्ष्याचित्रकृता ग्री श्रे स्वर्धा वित्र स्वर्धा वित्र स्वर्धा वित्र स्वर्धा वित्र स्वर्धा वित्र स्वर्ध स्वर्ध वित्र स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स

ययान्तीः देशायदे त्यों निवाय विवादे निवादे निवाय के या के य

नश्चनः ग्रुःच्याः व्यादः विवादे । ग्रुःच्याः श्वेदः स्वेदः स्वेदः स्व । व्यादः विवादे । यादः विवादः

देशन्यान्यश्रास्यायदे दे नश्रुवायात्रस्य श्रास्य स्था स्वत्रायाया से दार हैंग्रथः सन्दर्भ मुख्रदः स्वान्दरः मृत्युदः खुम्रुयः वस्र अञ्दरः मृद्यस्य स्वाः हुः वळर्नान्दा कुलानवेन्नोद्यायानदेन्त्रमानुःहेन्यन्दा हेयार्हेन् केव में न्दर प्रमामा अ अ पर्यो न स्री के न केव में निवि न द स्व में । स्रिमा अ अर्थः में निर्मा विम्र क्वायम नुम्ब मार्थे । अवरम्या निर्मा ग्रवरः ने याया विगा से रावा के यायया रुपर्यो नार्या सम्मिता या निवाहः न्गायः नाया वान्ययः नवाः विनेतेः क्षेत्रं वयः क्रेवः नवः वययः उनः ग्रुनः क्रुनः ग्रीः सेससर्देवर्धिकः वर्षे क्वेंटरवदेर्धेषस्य सुरिह्न वर्षे क्षेत्रा वेस्त्व क्रेंवर न्द्राहे रुषायरान रुषा रूपि श्री रावसेयान विवादिरानशा र्वाश्लवर् नश्चरःनवे नर्रः हे सुन्। कुयः श्रभः नशेरः श्चरः भर्ते दारें । अर्जे । नितं त्रुवार्या श्री वित्र वित

म्बिन्यक्ष्यः नहेते द्वान्यक्षः न्याः व्याः व्य

दे.क्षर.जश.विव.क्ष्ट.च.ज.व्.क्ष्ट्रें.क्षेट्रश्चर्या चेत्रया विवयः विट.क्ष्यः ॻॖऀॱऄॺॺॱख़॓ॺॱख़॓ॸॱढ़ॺ॓ख़ॱढ़॓ॗऻॎॸॸॱॸॕॺॱढ़ॺॱऄॺॺॱढ़ढ़ॱॸ॓ॱॸ॓ढ़ऀॱॺॖऀॸॱॸ॔ॖॱ न्युयः नवे से न्दः न् नभूयः संस्वदः धरा सराम् नवसः न्वे सः ग्रुटः व्यापः बेर्'यर र्र्धे र्वायायह्वा त्यायरे श्वेर स्वेत्या विराग्ना यादेव उदा इयशःसृगाःनसृषःग्रीशः६यःत्रगःपदेःद्धंषःनशयशःपःतःभ्रदःदेगःग्रदः नर्जेन् सुग्राम् भेन् प्रम् साम् व देव उव म्हस्य प्रविम् नरे नरे व स् वर्देन'य'य'नेन'रुदेरअ'यथ। याववः द्विन'ग्री'याम्नन'सेयथा उन्दाययथा उर्-ग्री-र्नेत-र्-श्रु-र-र्-हेन्ग्य-ग्रुट-र्वेन-पदे-वन्य-हे-क्रु-तु-वेना-पेर्-न्यस्यान्त्र न्यूत्राक्षेत्रच्यात्रास्यासे देश्याम् स्रीत्रायात्रा की कि ब्रदाग्रेगाया ब्रदाळ्वा स्वान्त्रायदे हे त्यस स्वासे दिहे दे वेगायर वह्रमायर हार्ये । हे त्यय रें र वह्रमाय व हुर हे वया नन् र पहर ही हैं हे र्श्वेन नर्रेन अळन केन नम्बन या विनायन नम् न्या वर्षाया नम्म र्श्वेर्ग्याहेशः ग्रीश्वास्ट्रेत्रः ख्यास्ट्रायशः ग्राटः केश केरास्त्र्याः या विषा ग्रास्त्री

र्रे हे श्लेन न्यें न ने हिन श्लेन श्लेन खेते यह या क्र या वस्य उत् श्ले या गठेग हुन्यू अपिरेटें में हिन्दु अपिरेट में हिन्दु अपिरेट में मुक्त प्रति में मुक्त प्रति में मिलेट मिलेट में मिलेट म न्ह्येर्स्येर्न्स्यून्म्यान्त्रां संस्वेर्ध्या श्रुव्यास्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स र्विः वृतः नगतः द्वेवः यथः श्ववः द्विषः यथा अहे अः यः ग्राश्वः श्वीशः अहे अः धराग्रानायाक्षेत्रानुदे स्या हे प्पॅर्गीयादवर्षित्राययहे सामराग्रुरायात्र न्नरमी देव द्रमार्थे वा नाम निमा हो द्रमा निमा हो दे.लट.घट.क्य.ग्री.श्रेश्रश्च.लियाश्चा.धे.यश्चेट.यश्चा.या.प्रिट.टी. वह्नान्ने राते। न्येयावर्षिरान् वह्नायवे के में हे क्षेत्रन्ये स्थित के विनेतिःस्त्रार्क्षेत्राश्चार्यं विनार्देत्रः न्याकेराना ही अवि अर्दे अर्दे अर्दे अर्दे अर्दे अर्दे अर्दे अर्दे विगार्ने व र् गारे र य र र । र र रे र य विर य य अ र् य य य उ य विगारे व र र योद्गेर.च.र्टा श्राचय.विच.क्ची.श्रुश्रश्चा.वर्ष्चर.चर्ष्च.स्वा.चर्च्य. यश्रियाधिरात्वाभेदाग्रहारद्धनार्देवाद्गानेरानानाधिवादद्वी नेरासहदा डिटा देवे के रदानी शासु साददाद ग्रीयाविष्ट रवि खुर्केन शामी सुन स्र कें विदेव सुव केंग्रा श्रुव पर विदेव पर श्री वा राज्य राज्य साम स्वरं पर सेव यम् अम्बद्भेस्राउद्ग्यस्याउद्ग्यिम्नाय्याः स्वार्धिम् नुम् स्वार सर्केग्। तुः र्र्क्षेत्रायसायन्या स्रे ग्रुट्। कुया ग्री। यसाया सेट्सायर हेसाया विवा। धेव सम्विरायेव द्वे राम प्राप्त कृषान स्र राम मुः अर्दर्द्वाचे व्यव्यादित्रं की वार्षे के दिन्ने में अदि स्वर्ध मुक्त स्वर्ध मानवाद्य निया ही ।

वर्देन विद्या सूर्या नर्से व्यापा मस्य या उद्यापित विद्या सुर्या सुर्या प्रमासी व्यापा स्थापी स्यापी स्थापी पिर्यायेव दर्गे या प्राप्तेव त्या दे सुर् तुवे तुर कुत ग्री से स्या क्वर्य केव दें ने केन अन् केन का कार केन का अने अने का अने ग्री विवय अवियाया वहेत् त्या शुरात् हें वाया यर ग्राचित ही र श्वेट वारा वा बुवारा शुः वर्गे दावरा हु। वा दे दे दे दे स्याधरा वर्षे या वेदा । हु। या या से वा या नडुदे कुषान वस्र अउदाग्री नुदा कुन ग्री सेस्या देता दें के इसाया पित्र ग्रे.व्रेव.क्यम.सय.वंश.व्रेव.ग्रेश.यक्ष्यम.श्वेट.यहेव.सर.वेश व्यट.क्य. ग्री सेसस देव में के देवे से ८ र से १ विवेश सम्बन्ध स्थान लुयंता र्यायाम्भायायायायाचेत्रयाम्भायायायायाया र्श्वेर्प्यः श्रुर्दे हिन्न्यः ग्रुर्ध्यः र्रुष्ट्रम्यः ग्रुर्द्यः स्ट्रियः येग्रारानिरायमध्यम् के नान्दा यान्यम् नया ग्राम् हेराया येन्या स्यान् सी नवनाःसरः तुः सः ५८:५ ग्रीयः वर्षिरः नवैः खुः र्क्षेना सः नगवः र्सूटः सुदः सरः नरुरान्द्रप्रान्द्र्वा स्रे में हे दे सद्या में रावेदा से सरा उदाहरा श्रुवायते भ्रित्रस्वाया ग्री व्यवसायात्रा भ्री श्रुत्याया व्यवसाते । ज्ञत्रस्व ग्री । यसायारेटसामराळसामायदे यसाम्बन्द्र मुँग्रासाम सर्वे दें र्ळयामा स्तिःयाश्रेनः हिःदर्शे नः सूरः सूर् छेगा ग्राटः गाव्य र प्योट्यः व्ययः सेर् सर सेससाउदाइससाविंदानाद्यावदेंदान्चिरानेदानुर्देदसायराङ्गासेदान्नीः यसायाः कर्मानाधीतः द्वी।

ने भूर न्वर इस पर न्वा पर ईव के र न्वर नु स सु । विस नु स नदे-द्रमःक्षेम् द्रम्भ्रमःभ्रम्भ्यः विष्युक्षः तुः क्ष्रमः श्रुदः नः निष्यः निष्यः विषः यसम्बन्धियाष्ट्रिकार्स्स्र सामायायह्वापात् विवासम्मेसामान्द्रास्य कुर भ्रेत-धर-ग्रा देः धर-ग्रह-कुन-ग्री-भेस्रश-केश-भुग्र-१ग्रा-५-१ नुभुद-द्रशः शेस्रश्च त्रम्स्रश्ची देव दुः हैं ग्रश्च हुट श्रुव पाय नेव हुः देदश प्रश्च क्षे.यश्वायायीयः क्र्याया श्वादायी अध्यायायी श्वादायीय विष्याय श्वीदाया वावर्यावर्या याम्वरसेय्या उत्तरम्यया स्वाप्त स्वीर्या व्याप्त स्वीर हेशयान्त्रेन्द्रश्रेष्ठ्रश्रेष्ठ्रश्रेष्ठ्रश्रेष्ठ्राः श्रेष्ठ्राः स्वाप्त्रश्रेषः व्याप्त्रश्रेषः उद्दर्भन्त्रुशाने प्यो भेशा भी नद्द्रा है साद्या प्रसाही द्रापा है वार्था न दुवे स म्व से सस उद वसस उद नग्गा न स व्या स गी दिया विदर र् नड्गाक्षेत्रवर्नम्भरद्रशक्षाक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष उदावस्था उदार्दा मी स्वेदाद्दा प्रमाणा दयार्दा से स्थाद्दा द्वीर से द र्'विश्वारे क्रियान श्रश्नान दशा ग्री विदास्त्र स्वार् हे पा स्वार् श्री न ८८.र्म्या.यर्षाः स्थरा.श्रें ८.यर.वे८.त.८८। रट.यो.प्रश्रांद्रश.श्रें ८. न्वो इ वस्र उन् न्वा पदे हेव न्य वहेव पदे हस्य पर हैं र हे हैं वार न दुते से समा उत् न समा उत् न्या गाँ दिन विता से समा उत् क्सा गी न सा क्रॅंबर्ट्स्स्रिट्रावस्थाः भ्रेष्ट्रे सस्य स्थ्रास्त्रे स्थ्राच्या स्थ्रे स्थ्ये स्थ्रे स्थ्रे स्थ्ये स्थ्रे स्थ्ये स्थ्य ८८। अ.स्व.श्रेश्रश्राच्य. स्वर्थायायश्चात्रः हेव.श.८या. राष्ट्रेत्रः इस्रशःग्रदःश्चर्यः हे द्याः पदिः यविषः प्रशापदः तुः वश्चरः यः ददः। कुषः यः श्रभागठमाणी श्रुवामानभूवानदे न ह्यमापदे सश्रम् श्रीत होत हानमान हुन है यन से श्रे र नर हेर य से न स र्रेन न इर श्रे र न य इय र वर्ष न विरा श्चरमानि श्चेरिः हो रार्से राय दिरा भी मार्थ अपया अपि राष्ट्री मार्थ राष्ट्र र नवे रेस मान्दर सेवे क्षा वर्ते र ल वनद प्रमा कु द क्षेत्र पर नुमान रेसामान्त्रेसामदेखसामञ्जूसामात्यावहुनामान् हें हेदेख्सायान्त्रम् नश्चरविदा नायदावर्याचे द्वानियान्य साम्यान्य स बुव सेंद सेव परे जुद कुव ग्रे से समा कुस मानिक से क्षेत्र पाय प्याप परे इ८.क्रुनःग्रे:शेस्रां .ल्ग्रां ५ न्या से सामायः हिनःग्रे:साम् दासे स्राया उदः वस्र अर कर क्रिन् श्री प्रहेषा हेव न्दर न कर्म या प्यर न्दर प्यर नु रेदिन या स्थान् । नसूर्याने द्वाप्य हो द्वाप्य द गशुंशः हैं : वाशुंशः शुः नद्याः १८ दः शुंनः यरः शुंदः यः श्वां या राष्ट्राः गिरेश्यादित्यस्य व्यवप्ति स्वर्त्ति । स्वर्ति गुनायान् सेटान्याः क्रिनायि दिना गुना क्रे क्रिना से से त्यादा या मन शेशशास्त्र मुश्रायित्र प्रति पात्र शास्त्र वाया यात्र विता प्रति वाया यात्र विता प्रति वाया विता प्रति वाया व र्वेग्रायासे दायर ह्या द्वासे से देवे दिए दुवर द्विग्रया व दुवे कुया वास्रया न्दः नडरु। चत्रे नर्गे नः स्ट्रेन् पान्दा अनियः विनः ग्रे साम् न्ये सर्था उत् वर द्यापायर द्याद प्रश्य स्था श्री अ से हिन स वें न विश्व सूर विष्यानि निष्या कर्मा अस्त्री इसमा श्रुप्या है । से सिन इप विष्या

रिव केव से समासकेवा मुनामाया सदय इसमाया । इसामागुव हु गुमा मश्रास्त्राप्तर्शित्रिं। क्कि.सेट्रेंद्राया श्रुवाया हे उदारे पी। विश्वरावी वायर नःगुक्रायान्वरावर्धेरान। क्वियाळनाक्षेत्रसमासमेवित्रप्रावहसान्वरसा गुरा ग्रिःश्वरः र्वेगरा सेरावेश्या । वसूयः वदेः वेगः सर्वेगः ग्निस्ररायंत्रे कुर्ने ग्रास्या । ग्रिका हु प्रतियान ग्री र स्री र सर्वे के त यु:रन:नवेश:है। अवदःअशःवर्त्तें त्यःयवःनदेवेः व्युःकरःयन। विस्रशः त्रुग्रास्ट्रेस्य द्ये प्ये दे नवर मेशा विवासर ह्या नवेर त्या वहें वर गुवर नवाय विरा । नशेषाध्वार्धेरशायदे कुषानदे श्रशामीशानगर। । सराशे सहरा नमयाविरायनेराश्चरार्धेवाम। ।यहसासमैवाकुयानामिक्रामयेक्षेत्रार्धेनार्धेना सबुर्या विचानस्रेषाप्रेर्यास्यास्यास्य विचानम् विचानम् विस्रश्राष्ट्रवामुत्यानवे सुन्तु मा विद्वान विद्यान विद्वान विद्यान वि चुरा | नसूर परे पहुरा र्र्स सुन्य पर्मे र या न वुर से । कुर् ग्री सवर विगायर्श्यसेते बुद्रयह्मायम् विगायः सर्वेनामी नर्वेद्रयश्यमेत् वर्देर्प्यवे। भ्रियाध्वाचिषाची क्रम्याचेवाची प्रम्याचे येग्रथान्त्र निर्मात्र हेते द्वाया हेत्या । विद्यायवे कुषा श्रुषा देववार्वे नग्राम्या । विवायकेवा विवायकेवा विवायके स्वाम्य । विवायकेवा विवायके विवायके । वर्षिरः वरुषः श्वरः पार्यानेवाषः राविद्या । वार्षः रेदेः व्यूर्वः यदिः वसग्रास्य भेत्र तु न मुन्या । से से नि न महास न से से नि न महार में नि स न नि न

श्र. यह वाश क्षेत्र श्र. यह श्र. यावश प्रते क्षेत्र श्र वाश क्षेत्र श्र वाश विश्व स्था श्री श्र वाश विश्व स्थित ज्यायान्त्र मुन्नुहर्याकेर नमुन्यायाया द्वित्र ग्राव्याययाये सुन् रेसारायार्चेयारादे त्यसार् यानेवाया विवासकेवा त्यसारी स्रीट सेदी वादर इस्रा ही । सिट उस वहें व सवट दर्गे व सवे द्रावदे केंद्र मा । हो सा बुव नसूत्रभेरावी खूवा सान्। । शुरारावे से नवन न्त्र सामवा वर्ने वर्त्तर शुरा। ग्री फ्रिं पर्वे प्रिया वार्य स्वास्त्र स्वास् वर्रे में म्ह्या वर्षे क्षेत्रे नुषावर्षे माह्या कुमानम् वर्षे वरमे वर्षे वर्ष यदे ग्रुप्त न ग्रीन हिं सामा । सुन न ना सुना हु हु हु न परे न साम न ने न । सर हेर्सूरर्र्ष्वयायार्द्वेत्यरः वर्षि वित्युर्यस्वर्यायव्यविवायारेया धर-८र्गेट्या । याडेया-ए-८र्गे-यः यडे-यदे-८यट-शुर-पदे। । यद्या-छेद-ळेव-रेंदिःगशुद्रःग्रेशःनञ्जूषःनशःत्र । । श्रेश्रशःद्रधदःशर्केगःग्रेः शुग्रशःनश्चेदः समुः नरं नः स्था विवास के वारी वारा ग्री व्यापायहरू ग्री क्रिया न न्ग्रेशमदेखसायाधिनाहें वासदी । हिं स्वादमदायादायासवासदा होन स्वा वया क्रिन्थ्वस्य स्यान्य म्यान्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास्य विवास धर्मान्ध्रन्याधेत्रस्त्रिन्यामा विवासकैवात्यस्य वन्यन्वार्ह्सः विवाहः र्झेट्या टि.हीर.वर्ट.वार्च्याचारायक्याचा वियायाई.क्र.याच्य इसरायाक्षेट्रावरायन्वारा विष्यायदेर्ययन्यराक्षरार्वेन्यवे प्राचे नेश । देव रुव रुव म्वा सम्बन्धि रिव रेम्स स्वा । देव र रेमिन रामिन रामिन वर्न् भाग्रम् मुनामदे नमूनामाने न्यां के भी नुनामदे मुलासक्त मुन्य रहेग।